सम्पादकीय-



संत ससार के लिए आशीर्वाद हैं। सतों का परम पावन चरित्र दुनिया के लिए सुखशान्ति का मार्ग प्रदर्शन करनेवाला अनूठा आकाश-दीप है। उनकी जगमगाती हुई जीवन ज्योति जगत को नया जीवन प्रदान करती है। सतों को पाकर दुनिया धन्य है। संतपुरुष अपने पवित्राचार और पवित्र धर्मोपदेशों के द्वारा जगत के पाप-पुञ्जों का विनाश करते हैं और जगत को कल्याण का पथ-प्रदर्शन करते हुए मानवता का अमर सदेश सुनाते हैं। यह विश्व ऐसे परमोपकारी संतो का परम ऋणी है।

जन समाज में धार्मिक भावना के स्रोत को प्रवाहित रखने के लिए युगानुसारी धर्मोपदेशक ही जड़वाद के बाह्य, कृत्रिम, तीव्र प्रकाश से चकाचौंध बनी हुई दुनिया को धर्म की पवित्रतम झाँकी का दर्शन करा सकने की क्षमता रखता है। आज का नव उदीयमान समाज जड़ विज्ञान के प्रभाव से प्रभावित हो कर चैतन्य रूप धर्म के प्रति उदासीन बनता जा रहा है। इस वर्ग की धर्म के प्रति अरुचि बढ़ती जाती है और नास्तिकता का उनके दिमाग पर तीव्र और तीव्रतर रंग चढ़ता जा रहा है। इसका कारण यह भी है कि धर्म के सच्चे और व्यवहारिक स्वरूप को युगानुकूल शैली से जनता के सामने रखनेवाले धर्मोपदेशकों की खटकने लायक कमी है।

: પ્રકાશક :
શ્રી ધર્મદાસ જૈન મિત્રમંડળ
રતલામ

પ્રથમાવૃત્તિ	મૂલ્ય	વિ. સં
૧૦૦૦	૧-૮-૦	૨૦૦૯

: મુદ્રક :
શા ગુલાબચંદ લલ્લુભાઇ
શ્રી મહોદય પ્રેસ—ભાવનગર

सम्पादकीय–



संत संसार के लिए आशीर्वाद हैं। संतों का परम पावन चरित्र दुनिया के लिए सुखशान्ति का मार्ग प्रदर्शन करनेवाला अनूठा आकाश–दीप है। उनकी जगमगाती हुई जीवन ज्योति जगत को नया जीवन प्रदान करती है। संतों को पाकर दुनिया धन्य है। संतपुरुष अपने पवित्राचार और पवित्र धर्मोपदेशों के द्वारा जगत के पाप–पुञ्जों का विनाश करते हैं और जगत को कल्याण का पथ–प्रदर्शन करते हुए मानवता का अमर संदेश सुनाते हैं। यह विश्व ऐसे परमोपकारी संतो का परम ऋणी है।

जन समाज में धार्मिक भावना के स्रोत को प्रवाहित रखने के लिए युगानुसारी धर्मोपदेशक ही जड़वाद के बाह्य, कृत्रिम, तीव्र प्रकाश से चकाचौंध बनी हुई दुनिया को धर्म की पवित्रतम झाँकी का दर्शन करा सकने की क्षमता रखता है। आज का नव उदीयमान समाज जड़ विज्ञान के प्रभाव से प्रभावित हो कर चैतन्य रूप धर्म के प्रति उदासीन बनता जा रहा है। इस वर्ग की धर्म के प्रति अरुचि बढ़ती जाती है और नास्तिकता का उनके दिमाग पर तीव्र और तीव्रतर रंग चढ़ता जा रहा है। इसका कारण यह भी है कि धर्म के सच्चे और व्यवहारिक स्वरूप को युगानुकूल शैली से जनता के सामने रखनेवाले धर्मोपदेशकों की खटकने लायक कमी है।

पूज्यपाद प्रवर्तक श्री ताराचन्द्रजी म० के आज्ञानुवर्ती, शास्त्रविशारद पं० श्री किशनलालजी म० के प्रभाविक सुशिष्य प्रसिद्ध वक्ता पं० श्री सौभाग्यमलजी म० अपनी युगानुरूप उपदेश प्रणाली से इस त्रुटि को दूर करने का सराहनीय प्रयत्न कर रहे हैं। पण्डित मुनिश्री के व्याख्यानों में धर्म के व्यवहारिक स्वरूप की सुन्दर व्याख्या मिलती है। आपके विचार बड़े ही उदार और साथ ही शास्त्रानुकूल होते हैं। आप अपने विषय का प्रतिपादन इतने मनोहर ढंग से करते हैं कि वह श्रोताओं को बड़ी सरलता से हृदयंगम हो जाता है। वक्तृत्व शैली का प्रदर्शन अथवा पाण्डित्य का दिखाव और शब्दाडम्बरत्व आपके व्याख्यानों का ध्येय नहीं है परन्तु आप के उपदेशों का एक मात्र उद्देश्य जनसमाज का कल्याण करना है। जनताके धार्मिक जीवन का मापदण्ड ऊंचा हो, जनता का जीवन नीतिमय और प्रामाणिक हो यही आप के उपदेशों का आदर्श है। समाज की छिन्नभिन्न परिस्थिति को देख कर आप के हृदय में बड़ा उद्वेग है। आप के व्याख्यानों में इस बात की पद पद पर झलक मिलती है। पण्डित मुनिश्री की यह उत्कृष्ट कामना है कि अखिल जैन समाज वीर संघ के रूप में एक ही झंडे के नीचे संगठित हो। आप अपने व्याख्यानों में संगठन, शिक्षा, प्रेम, एकता, नीतिमत्ता और प्रमाणिकता पर विशेष रूपसे जोर देते हैं। जीवनोपयोगी तत्त्वों की आप अति सरल एवं सारयुक्त मीमांसा करते हैं।

पण्डित मुनिश्री के प्रवचन लोक-कल्याण की भावना से ओतप्रोत होते हैं। और साथ ही लोकप्रिय भी होते हैं। आप की लोकप्रियता का कारण आप की वाणी का माधुर्य है। वाणी मधुरता, प्रकृति की शीतलता और आचरण की उच्चता आपकी खास विशेषताएं हैं।

हिज़ हाइनेस श्री कृष्णचन्द्र राजेन्द्र वाडियर बहादुर, जी. सी. एस. आई., जी. वी. ई. महाराजा मैसूर, हिज़ हाईनेस महाराजा भावनगर, महाराजा पालीताना, जसदण नरेश, अमीनउल-मल्क सर मिरजा इस्माइल, दीवान मैसूर स्टेट, हैदराबाद के दीवान तथा उच्च अधिकारी वर्ग तथा राष्ट्रनेता राजगोपालाचार्य जादि बड़े २ कतिपय सज्जनों ने महाराजश्री के प्रवचनों को श्रवण करने का लाभ उठाया है और उपर्युक्त नरेश, दीवान, एवं नेताओं ने आपके प्रवचनों की अति मुक्त कंठ से प्रशसा की है और वे आपके व्याख्यानों से बहुत प्रभावित हुए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में आया हुआ राजधर्म विषयक व्याख्यान मैसूर नरेश की उपस्थिति में दिया गया था। इसी तरह राष्ट्र धर्म का व्याख्यान आलन्दूर(मद्रास) में मद्रास के प्रीमियर चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य की विशेष उपस्थिति में ता. १०-६-१९३७ को दिया गया था।

महाराजश्री के द्वारा भिन्न २ स्थानों और भिन्न २ समय

पर दिये गये व्याख्यानों के नोट के आधार से सम्पादित करके यह प्रवचन-संग्रह पाठकों के सन्मुख उपस्थित किया है। मुनिश्री के मुखारविन्द से झरी हुई वाणी-सुधा के इस सग्रह में पाठकों को जीवन-सुधार की अनुपम सामग्री प्राप्त होगी।

अगर पाठक ध्यानपूर्वक इन प्रवचनों का वाचन, मनन और निदिध्यासन करेंगे तो उनका जीवन ज्योतिर्मय बन सकेगा। आशा है पाठक वर्ग इस सुधा-सग्रह का रसास्वादन करके अभीष्ट लाभ प्राप्त करेगा।

एक बात का उल्लेख कर देना उचित समझता हूं कि मुनिश्री के व्याख्यान मुनि-मर्यादा को ध्यान में रखकर संयमित भाषामें ही होते हैं और उनका सम्पादन करते हुए भी उसका पूरा ध्यान रखा गया है तदपि अज्ञान, प्रमाद और असावधानी के कारण प्रस्तुत पुस्तक में जो भी भाषा या भाव सम्बन्धी त्रूटियां हों उसके लिए सम्पादक के नाते मैं जिम्मेदार हूँ।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवन्त्यैव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

सुज्ञ पाठक यदि उसके लिये सूचित करेंगे तो मैं उनका आभारी रहूंगा।

१५-११-१९४६ } बसंतीलाल नलवाया 'न्यायतीर्थ'

दो शब्द



प्रसिद्ध वक्ता पंडित श्री सौभाग्यमलजी महाराज के व्याख्यानों का यह छोटा सा संग्रह पाठकों की सेवा में रखते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। यह समह विनय मुनिश्री के परिश्रम का फल है। हम कई वर्षों से इस प्रकार का संग्रह प्रकाशित करनेका विचार करने थे परन्तु कतिपय सयोगों की वजह से हम ऐसा न कर सकें और अब हम अपने विचार को मूर्तरूप दे सके जिसकी हमे बड़ी प्रसन्नता है।

प्रसिद्ध वक्ताश्री के व्याख्यान बड़े हृदयपर्शी और जीवनोपयोगी होते हैं। व्याख्यानों का लाभ अनुपस्थित जनता भी ले सके और सत्साहित्य की ओर समाज की रुची बढ़े इसी आशय से यह प्रकाशन किया गया है। वक्ताश्री के दिये गये व्याख्यानों के नोट्स के आधार पर पं. बसन्तीलालजी 'न्याय-तीर्थ' के द्वारा सम्पादन करवाकर हम यह प्रवचन-संग्रह पाठकों की सेवा में उपस्थित कर रहे हैं।

आशा है पाठक इस पुस्तक से पूरापूरा लाभ उठाकर हमारे प्रयत्न को सफल बनावेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन के लिये युद्ध जनित परिस्थिति के कारण बेहद बढ़े हुए मूल्य पर कागज़ खरीदना पड़ा है। अतएव पुस्तक का मूल्य १||) रखा गया है। पुस्तक विक्रय की आय साहित्य प्रकाशन में ही खर्च की जायगी।

इस पुस्तक में छपाइ की जैसी चाहिये वैसी सुन्दरता नहीं आ पाई हैं तथा अन्य भी कइ त्रूटियां रह गई हैं। प्रूफ संशोधन में सावधानी रखते हुए भी दृष्टिदोष में बहुतसी त्रूटियां रह गई हैं। इसके लिये हम क्षमाप्रार्थी है।

प्रकाशक

અનુવાદક તરફથી.



પ્રસિદ્ધ વિદ્વાન વક્તા પૂજ્યપાદ મુનિશ્રી **સૌભાગ્યમલજી** મહારાજનાં વ્યાખ્યાનોના સંગ્રહનો અનુવાદ કરવાની તક સાંપડે એ કોઈ નાનું એવું સદ્‌ભાગ્ય ન જ ગણાય. મને આ તક મળી છે, એને હું મારું પરમ ભાગ્ય સમજું છું. મારા ધર્મપ્રિય મિત્ર શ્રી કાન્તિલાલ ચત્રભુજ શેઠની ધર્મશ્રદ્ધાએ મને પૂ. મુનિમહારાજ પ્રત્યે આકર્ષ્યો અને બહુ જ થોડા પરિચય બાદ હિંદી "**સૌભાગ્યસુધાસંગ્રહ**"નો અનુવાદ કરવાની મને આજ્ઞા થઈ. મેં એ આજ્ઞા મારે શિરે ઉઠાવી તો ખરી, પરંતુ એનું પાલન કરતા પૂરા પાંચ વર્ષ વીતી ગયાં.

આખરે એ સદ્‌ભાગી ક્ષણ પણ આવી. અને ગુજરાતી ધર્મપ્રેમી ભાઈબહેનો માટે આ સંગ્રહ ગુજરાતી ભાષામાં આજે પ્રગટ થાય છે.

પૂ. મુનિમહારાજે આ નવ વ્યાખ્યાનો ભારતને સ્વતંત્રતા મળી એ પહેલાંના દિવસોમાં આપ્યાં છે. સ્વતંત્રતા પહેલાંની અને આજની પરિસ્થિતિમાં સ્વાભાવિક રીતે જ ઠીક ઠીક પલટો થયો છે. એટલે વ્યાખ્યાનોમાંની અમુક થોડી બાબતો વર્તમાન પરિસ્થિતિ સાથે સુસંગત થાય તેમ નથી. આમ છતાં એ વ્યાખ્યાનોમાં માનવજીવનના સનાતન પ્રશ્નોને સ્પર્શતા ઉપદેશની બહુમૂલ્યતાને લક્ષમાં રાખી વ્યાખ્યાનો જે સ્વરૂપમાં હિંદીમાં લખાયાં હતા તેનો જ સીધો અનુવાદ અત્રે કરવામાં આવ્યો છે.

આ સંગ્રહ પ્રગટ થવાની સ્થિતિએ પહોંચાડવામાં ભાઈ શ્રી મહાસુખભાઈ દેસાઈએ જે અમૂલ્ય સહકાર આપ્યો છે, એની સાભાર નોંધ અત્રે લેવાય તો એ પણ જરાયે અસ્થાને નથી. શ્રી ચુનીભાઈ કામદારના સહકારની પણ અત્રે નોંધ લેવી ઘટે છે.

ધર્મપ્રેમી ભાઈબહેનોને ચરમ કલ્યાણ પ્રતિ ગમન કરવામાં આ સંગ્રહ યત્કિંચિત્ પણ સહાયભૂત થશે તો એને હું મારી સાર્થકતા માનીશ.

મુંબઈ,
તા. ૨૪-૩-૫૩ } "નિર્ભય"

अन्तर्दर्शन



ले. सा शि. मंत्रीश्री पुष्कर मुनि न्याय साहित्यविशारद

भागवत में समुद्र मन्थन की एक बडी रोचक कहानी आती है। देव और असुरों ने मिलकर सुधा प्राप्त करने के लिये रत्नाकर का मन्थन किया, उसमें सर्व प्रथम जहर निकला। प्रजा की रक्षा के लिये दयालु शङ्करने उसे पी लिया। फिर क्रमशः कामधेनु, उच्चैश्रवा घोडा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभमणि के बाद लक्ष्मीजी के नुपूरों की झनझनाहट कर्ण कुहरों में आई। इतना मिलने पर भी देवताओ को सन्तोष नहीं हुआ। क्यों होता? मूलवस्तु नहीं मिली थी। वह थी सुधा। सुधा के लिये पुनः मन्थन चालु किया, तब कहीं अन्त में सुधा के दर्शन हुए।

यह कथा हमे स्पष्ट बतला रही है कि प्राणी सुधा प्राप्त करने के लिये क्या नही कर सकता? वह पहाड की चोटियों पर चढ सकता है, समुद्र का मन्थन भी कर सकता है। रेगिस्तान के लम्बे चौडे मैदान में घुमक्कड की तरह घूम सकता है। जंगलो की धूल छान सकता है। आकाश में विहगेश की तरह ऊची उडान कर सकता है। और तो क्या! यहा तक कि जमीन और आसमान एक करने के लिये तत्पर रहता है।

इस विशाल विश्व में किसी भी प्राणी से पूछिये—तुझे क्या चाहिये ? उत्तर में वह कहेगा कि और कूछ नहीं, केवल सुधा। सुधा का सेवन कर मैं अमर बनना चाहता हूं। किन्तु पड़ी कहां है सुधा ? रास्ते में ? उसके लिये अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता है।

परम प्रसन्नता की बात है कि चिर प्रतीक्षा के बाद आपको सौभाग्य से ही सौभाग्यसुधासंग्रह मिल गया है। यह श्रद्धेय पं. श्री सौभाग्यमलजी म. के प्रवचनों का सग्रह है। आप श्रेष्ठ वक्ता है। आपकी वाणी को सुनने का सौभाग्य मुझे इन्दौर, नासिक, इगतपुरी और सादडी सम्मेलन के समय मिला था। आपकी वाणी में सुधारस वर्षाती हुई सरलता है और यह वाणी सरलता के साथ प्रेरणा और स्फुर्ति प्रदान करती है। श्रोताओं को अपनी वाणी द्वारा मन्त्रमुग्ध बना देना आपकी खास विशेषता है।

इस संग्रह में नौ सुधा—कुम्भों को संग्रह किया गया है। एक सुधा कुम्भ का भी सम्यक् प्रकार से सेवन करने पर मानव अमर बन सकता है, तो क्या मैं आपसे यह आशा न रक्खूं कि इन कुम्भों का क्रमशः सेवन कर आप भी अमर बनें ?

चातुर्मास स्थल,
सिवाना-(मारवाड).
१५-१०-५२.

सौभाग्य-सुधा के बारे में



जन मानस को विकसित और प्रगतिशील बनाने के लिए नया-चिन्तन, नया लेखन तथा नया भाषण आवश्यक है। जब तक हम अपने पुरातन सिद्धान्तों को नयी भाषा और नयी शैली में व्यक्तीकरण की कला को प्रश्रय नहीं देंगे तब तक आज का नवीन जन मानस हमारे सत्यभूत सिद्धान्तों को भी सुनने के लिए तैयार नहीं हो सकेगा।

सन्तोष के साथ लिखा जा शकता है कि व्यक्तिगतरूप में हमने इस दिशा में पर्याप्त प्रयास किये हैं और किये जा रहे हैं। जब तक हमारे श्रमण सघ की ओर से साहित्य प्रकाशन के विषय में किसी प्रकार की ठोस योजना नहीं रखी जाएगी तब तक व्यक्तिगत प्रकाशनों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाना श्रेयस्कर न होगा। साहित्य-सरिता पर प्रतिबन्ध लगाना उसके प्रवाह को रोक रखने की चेष्टा करना हित-कर कार्य न होगा। यह बात अलग है कि हमारी संस्कृति, हमारे धर्म और हमारे मूलभूत सिद्धान्तों को विकृतरूप में प्रकाशित करनेवाले प्रयत्नों पर देख-रेख रखी जाए।

मुझे हर्ष होता है कि हमारी समाज की ओर से प्रकाशित

होनेवाले साहित्य में 'भाषण-साहित्य' खासी अच्छी प्रगति कर रहा है। "सौभाग्य-सुधा" उसी लड़ी की एक मनोहर कड़ी कही जा सकती हैं। इस में संस्कृति, धर्म, समाज, राष्ट्र और नीति सम्बन्धित प्रवचनों को रमणीय रूप में प्रकाशित किया गया है। प्रवचनों में, भाषणों में जो सौंदर्य है, जो माधुर्य है तथा जो सौकुमार्य है उससे इन्कार नहीं किया जा सकता। सफल प्रवक्ताने बडी सफलता के साथ अपने विचारों को नयी भाषा और नयी शैली में जनता के सम्मुख रखने का एक स्तुत्य प्रयत्न किया हैं। मैं इस प्रशंसनीय प्रयास का हृदय से स्वागत करता हूँ। मुझे विश्वास है कि साहित्य-प्रेमीजन प्रस्तुत पुस्तक को अधिक से अधिक अपना कर लाभ उठा सकेंगे।

विख्यात प्रवक्ता, पण्डितप्रवर समाजनायक श्री सौभाग्यमलजी महाराज का क्या परिचयं दूँ? उनका कोमल स्वभाव, उनकी मधुरा गिरा, उनका सौम्य व्यवहार और उन की चमत्कारिणी भाषणभङ्गी-यही उनका वास्तविक परिचय है जो जनसाधारण से लेकर हमारी समाज के कर्णधारों तक अपनी अव्याहत गति से स्वतः ही पहुंच गया है।

सादड़ी सम्मेलन के अवसर पर और सोजत सम्मेलन के अवसर पर भी उन्होंने संघहित हेतु जो लम्बी-लम्बी यात्राएँ की हैं वे उनकी समाज-निष्ठा का खासा अच्छा प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। पण्डितप्रवर श्री सौभाग्यमलजी महाराज सफल

प्रवक्ता तो हैं ही पर साथ में वे हमारी समाज के सफल कार्यकर्ता और नेता भी हैं। जितना महत्त्वपूर्व भाग आपने समाज–सेवा में लिया है साहित्य–सेवा में आपने उससे भी अधिक कार्य किया है। हमें आशा रखनी चाहिए कि भविष्य में भी वे हमे जन-हितैषी साहित्य प्रदान करते रहेंगे।

अमर मुनि

અનુક્રમ





સ્વ૦ માતુશ્રી પુરીબાઇ નરભેરામ વેકરીવાળા.



જેમના સ્મરણાર્થે તેમના સુપુત્ર શ્રી ચુનિલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા તરફથી આ પુસ્તકના પ્રકાશનમા આર્થિક સહાય આપવામા આવેલ છે.

શ્રી મહોદય પ્રેસ-ભાવનગર

૧. માનવધર્મ

"વિશ્વના સમસ્ત જીવ સુખી રહે, આંતરબાહ્ય સ્વાસ્થ્યનો અનુભવ કરે, સર્વનું કલ્યાણ થાય અને કોઈપણ દુઃખ તેમને પ્રાપ્ત ન થાય." આ આદર્શને સન્મુખ રાખીને જે વ્યક્તિ એ દિશામાં પોતાની પ્રવૃત્તિઓ કર રહેતી છે, તે પોતાના માનવ-જીવનને સાર્થક કરે છે, તથા પરમ અને ચરમ કલ્યાણ-મોક્ષને વરે છે.

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुइ सद्धा, संजमम्मि य वीरियं ॥

પ્રિય આત્મબન્ધુઓ,

ચરમ તીર્થંકર શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પોતાના મુખારવિન્દમાથી અમોઘ ઉપદેશનો પ્રવાહ વહાવીને આધિ, વ્યાધિ તથા ઉપાધિ એ ત્રિતાપથી સંતપ્ત સંસારને તરબોળ કર્યો છે. પ્રભુ મહાવીરે પોતાની નિર્વાણપ્રાપ્તિ પહેલાં પોતાના અંતિમ સંદેશના રૂપમાં જે અણમોલ જ્ઞાનોપદેશનું દાન કર્યું છે, તે ગણધરદેવોના પ્રસાદ સાથે સંકલિત હોઈ, ઉત્તરાધ્યનસૂત્રના રૂપમાં આપણી સમક્ષ મોજુદ છે. ઉત્તરાધ્યયનસૂત્ર એટલે પ્રભુ મહાવીરની અંતિમ અમર વાણી–એમનો અમર સંદેશ, સંતપ્તો માટે શાન્તિનો દૂત અને સંસારરૂપી અઘોર વનમા ભટકતા માનવીઓના પંથને ઉજાળનાર આકાશદીપ. આ ઉત્તરાધ્યયનસૂત્રના ત્રીજા અધ્યયનમા ભગવાને અમૂલ્ય તત્ત્વનું નિરૂપણ કર્યું છે. પ્રારમ્ભમા કહેલી ગાથા આ અધ્યયનની પ્રથમ ગાથા છે.

માનવ–જીવનની દુર્લભતા

આ ગાથામાં કહ્યું છે કે જીવને ચાર અંગોની પ્રાપ્તિ થવી અતિ દુર્લભ છે· મનુષ્યત્વ, શાસ્ત્રશ્રવણ, શ્રદ્ધા તેમજ

સંયમમા પરાક્રમ—આ ચાર અંગોની પ્રાપ્તિ ત્યારે જ થાય છે જયારે કરોડો જન્મોનો પુણ્યપૂંજ એકત્રિત થયો હોય. કોઇ પ્રબળ પુણ્યશાળી આત્માનેજ આ સાધનસામગ્રી મળી શકે છે.

સંસારના પ્રત્યેક તત્ત્વજ્ઞાની મહાપુરુષે માનવજીવનની મહત્તાની પ્રશંસા કરી છે. તુલસીદાસજીએ રામાયણમાં કહ્યુ છે—

બડે ભાગ માનુષ તન પાવા, સુર દુર્લભ સદ્ગ્રંથન ગાવા.

અર્થાત્—મહાસૌભાગ્યથી જ માનવ-શરીરની પ્રાપ્તિ થાય છે. દેવતાઓને પણ આ સૌભાગ્ય દુર્લભ છે દેવગણો પણ માનવ શરીરની પ્રાપ્તિ માટે ઝંખના કરે છે તેઓ મનુષ્યના સદ્ભાગ્યની પ્રશંસા કરતા પોતાને પણ માનવદેહની પ્રાપ્તિ થાય એવી ઇચ્છા કરે છે. આ પરથી એ સ્પષ્ટ રીતે પ્રતીત થાય છે કે મનુષ્ય દેહ કેટલો મૂલ્યવાન છે. બૌદ્ધગ્રન્થ ધમ્મપદના બુદ્ધવર્ગમા કહ્યુ છે·

किच्छो मनुस्स परिलाभो, किच्छं मच्चाणं जीवितं ।
किच्छ सद्धम्मसवणं, किच्छो बुद्धाणं उप्पादो ॥

અર્થાત્—મનુષ્ય યોનિનો લાભ કઠિન છે, મનુષ્યોનું જીવન કઠિન છે, ધર્મશ્રવણ કરવું કઠિન છે અને બુદ્ધોનો જન્મ પણ કઠિન છે.

સંસારના પટ પર આપણે અગણિત જીવસમૂહો જોઇએ છીએ. આપણે પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ, હવા, અનન્ત પ્રકારની વનસ્પતિ, નાનાં નાના જીવ-જંતુ, કીડી, મંકોડી આદિ અસંખ્ય જીવોની જાતિઓ જોઇએ છીએ. આ સૂક્ષ્મ જંતુઓને જોઇને

આપણુને આશ્ચર્ય થાય છે, પરંતુ તત્ત્વદર્શી, સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શી મહાપુરુષોનો આદેશ છે કે—

न सा जाइ न सा जोणी, जत्थ जीवो न जायइ.

અર્થાત્ઃ–સંસારમા એક પણ જાતિ અને એક પણ યોનિ એવી નથી જ્યા આ જીવે જન્મ ન લીધો હોય. પ્રાણી આ સૂક્ષ્મ અને સૂક્ષ્મતમ જીવયોનિયોમાં જન્મ ધારણ કરી ચૂક્યો છે એ વિષે કંઇ આશ્ચર્ય રહેવું ન જોઈએ. મનુષ્યે વિચાર કરવો જોઈએ કે આ મનુષ્ય અવતાર કેટલીયે યોનિઓમાં અનન્તકાલ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા બાદ પ્રાપ્ત થયો છે. અમાપ સમય સુધી આ જીવને નિગોદ અવસ્થામાં ભટકવું પડ્યું છે. એક આગળીના ન કલ્પી શકાય એટલા ભાગ જેટલા શરીરમાં અનન્ત જીવોની સાથે એને રહેવું પડ્યું છે. અનન્ત જીવોની સાથે રહેવું, સાથે જ ખાવું, સાથે જ શ્વાસોચ્છ્વાસ લેવો, એવી દુઃખદ અવસ્થામાં આ જીવ રહી ચૂક્યો છે. કલ્પના કરો કે એક લાખ વ્યક્તિઓની એક કંપની છે. એમાં (૯૯૯૯૯) નવ્વાણું હજાર નવસો નવ્વાણું વ્યક્તિ દેવાળું કાઢે અને એક જ શાહુકાર રહે. આવું જેનું સદ્ભાગ્ય હોય એ જ નિગોદ અવસ્થામાથી છૂટીને આગળ વધી શકે છે.

જેવી રીતે નદીના પ્રવાહમા તણાતો પત્થર શિલાઓમાં પછડાટો ખાતો ખાતો ગોળમટોળ રૂપ ધારણ કરતો જાય છે, એવી જ રીતે આ આત્મા પણ સંસારની ચોરાસી લાખ જીવ-યોનિઓમા ભટકતો ભટકતો, સુખ દુઃખ સહન કરતો કરતો અકામ નિર્જરા દ્વારા અનેક ખીણોને પાર કરતો કરતો માનવ દેહ પ્રાપ્ત કરે છે. કહ્યું છે કેઃ

चतुरशीतिलक्षेषु, भ्रमता शुभकर्मणा।
प्राप्तं मनुष्यजन्मत्वं, रत्नं तन्मा वृथा कृथाः ॥

અર્થાત્-ચોર્યાસી લાખ જીવયોનિઓમાં ભ્રમણુ કરતા કરતા આ જીવે અગણિત શુભ કર્મોના ઉદયથી મનુષ્ય જન્મ-રૂપી રત્નને પ્રાપ્ત કર્યું છે. એ દુર્લભ રત્નને વ્યર્થ ખોઈ બેસવું ન જોઇએ.

ભવિતવ્યતા

સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિય નિગોદાદિ અવસ્થામા પ્રાણીને એ ભાન પણુ નથી હોતું કે ત્રસ બાદર અને મનુષ્યાદિ અવસ્થાઓ શું છે? તો પછી એનો વિચાર તો કેવી રીતે થઈ શકે? વિચારના અભાવમા ઇચ્છા પણુ થઈ શકતી નથી. જો કાર્યનું જ્ઞાન નથી હોતું તો એના કારણુનું જ્ઞાન નથી હોતું. અને કારણો વિના કાર્ય અમલમા આવી શકતું નથી. અનાદિ નિગોદમા અજ્ઞાન હતું, કાર્ય કારણોનું જ્ઞાન ન હતું, એની ઇચ્છા પણુ ન હતી, તો પછી મનુષ્યજન્મ કેવી રીતે પ્રાપ્ત થયો? શાસ્ત્રકારો કહે છે કે–એનું નામ ભવિતવ્યતા. ભવિતવ્યતાના બળથી નિગોદના અનન્ત જીવ-પિંડોમાથી એકનો છૂટકારો થયો અને બાકીના રહી ગયા. ભવિતવ્યતાના બળથી જ જીવ માનવ જીવનને પ્રાપ્ત કરે છે.

આથી પ્રશ્ન એ થાય છે કે ભવિતવ્યતા જ પ્રધાનરૂપ છે તો પુરુષાર્થની શી આવશ્યકતા છે? આનું સમાધાન એ રીતે થઈ શકે કે જેઓ સાધનસામગ્રીથી વંચિત છે, તેમને માટે ભવિતવ્યતાનો આશ્રય હાસ્યાસ્પદ છે.

લાકડીની સહાય વડે કોણુ ચાલે છે?

જે અંધ છે, અપંગ છે, જેની કમ્મર તૂટી ગઈ છે, એજ લાકડીને સહારે ચાલે છે. સશકત યુવાન જો લાકડીની સહાયથી ચાલે તો એ ઉપહાસજનક વાત જ કહી શકાય. જેની પાસે સાધનસામગ્રી નથી એવા નિગોદાવસ્થાના જીવો માટે ભવિતવ્યતાનો જ આધાર હોય છે. જેને મનુષ્યભવ, આર્યક્ષેત્ર, ઉત્તમ કુલ, પંચેન્દ્રિયની પૂર્ણતા અને સદ્ધર્મરૂપ વિકાસની સંપૂર્ણ સામગ્રી ઉપલબ્ધ હોય, એ પણ જો કદી ભવિતવ્યતાને પકડી રાખે તો તે ઉપહાસનો જ વિષય કહી શકાય.

અવસર ચૂકયા તો ફરીને ત્યાંના ત્યાં જ

ભવિતવ્યતાના નિયોગથી આ અણમોલ ચિન્તામણિ રત્ન આપણા હાથમા આવ્યું છે. આ ચિન્તામણિ રત્નની વિશેષતા સમજીને જો એનો સદુપયોગ કરી લેવામા આવે તો કદીપણ દરિદ્રતા નિકટ આવી શકતી નથી સર્વ મનોરથોને પૂર્ણ કરનાર ચિન્તામણિ જેના હાથમા હોય, એ વ્યક્તિ પણ કદી દરિદ્રી રહી શકે ? કોઈ દિવસ નહિ. પરંતુ એ પણ યાદ રાખવું જોઇએ કે ચિન્તામણિનો ઉપયોગ કરવાની યોગ્યતા પણ હોવી જોઇએ. ચિન્તામણિ સાથે હોવા છતાં એનો ઉપયોગ કરતાં ન આવડે તો એની કિમ્મત પત્થરના ટુકડાથી જરા પણ અધિક નથી.

એક શેઠ પાસે ચન્દ્રકાન્તમણિ હતો. શેઠને ત્રણ પુત્રો હતા. શેઠ એક વખત બિમાર પડ્યા અને એમનો અંત એમને નજદીક જણાવા લાગ્યો. એ વખતે એમણે પોતાના ત્રણે પુત્રોને પાસે બોલાવીને કહ્યુ. મારી પાસે એક મણિ છે. એના સંબંધમા તમે જ્ઞાન મેળવી લો. જ્યાં સુધી હું જીવું છું ત્યાસુધી

તો એ હું તમને નહિ આપું, પરન્તુ આખરે તો તમે જ એના માલિક થશો. માટે આજથી જ તમે એ મણિના વિષયમા જ્ઞાન મેળવવાનું શરૂ કરી દો. મોટા બે પુત્રોએ તો પિતાની આ વાત પર લક્ષ ન આપ્યું અને ત્રીજા પુત્રે એ મણિના સંબંધમાં પૂરું જ્ઞાન મેળવી લીધું. શેઠજી મૃત્યુ પામ્યા અને ત્રણે પુત્રો મણિને વારાફરતી એકેક મહિનો પોતાની સાથે રાખવા લાગ્યા. પહેલા બેને તો મણિના મહિમાની ખબર ન હતી. તેઓ એની વિશેષતા અને પ્રક્રિયા જાણતા ન હતા એથી તેઓ તો આ મણિના પ્રકાશમાં માંકડ જ વીણતા રહ્યા. ત્રીજા પુત્રને મણિની મહત્તા અને વિશેષતાનું જ્ઞાન હતું, એથી એણે પૂર્ણિમાને દિવસે ચન્દ્રમાના પ્રકાશમા ચન્દ્રકાન્ત મણિનો ઉપયોગ કરીને લાખો રૂપિયાની કિંમતનું સોનું બનાવ્યું. પેલા બન્ને પુત્રોની પાસે મણિ હોવા છતા તેનો મહિમા ન સમજવાને કારણે લાભ ઉઠાવી શકયા નહિ. જ્યારે ત્રીજા પુત્રે અપાર ધનસંચય કરી લીધો. જેવી રીતે પહેલા બે પુત્રો ચન્દ્રકાન્ત મણિથી કંઈ પણ લાભ ઉઠાવી ન શકયા, તેવી જ રીતે સંસારના માનવી મનુષ્ય અવતારરૂપી ચન્દ્રકાંત મણિને પ્રાપ્ત કરવા છતાં તદ્દન ખાલી હાથે જ રહે છે સમજદાર લોકો એના મહત્ત્વને સમજે છે અને એનો પૂરેપૂરો લાભ ઉઠાવે છે.

મિત્રો! ભવિતવ્યતાદ્વારા પ્રાપ્ત થયેલો આ શુભ અવસર વારંવાર હાથમા નથી આવતો. અકસ્માત્ પ્રાપ્ત થયેલા આ અમૂલ્ય સંયોગને તમારી ગફલતથી ખોઈ બેસશો તો સમજી લેજો કે તમે જયા હતા ત્યાના ત્યાં જ રહી જશો. તમને મળેલ નરભવરૂપી રત્નનું કોઈ મૂલ્ય નહિ રહે. આ અણમોલ અવ-

સર પ્રાપ્ત થયા પછી એક ક્ષણુ માત્રનો પણુ પ્રમાદ સેવવો ન જોઇએ શ્રી ગૌતમસ્વામી જેવા અંતેવાસીને પણુ સાવધાન કરતાં ભગવાન ફરમાવે છે કે "**સમયં ગોયમ ! મા પમાયએ**" હે ગૌતમ ! ક્ષણુમાત્રનો પણુ પ્રમાદ ન કર. પ્રમાદમાં પડીને જો આપણે નરભવરૂપી રત્નનો સદુપયોગ ન કર્યો તો આપણે પેલી દીનહીન દશાને ફરીથી પ્રાપ્ત કરીશું. એટલે કે જો નર-ભવનો યોગ્ય ઉપયોગ ન કર્યો તો આપણે ફરીને પેલી નિગોદ અવસ્થામા ફેંકાઈ જઈશું. એક વાર મનુષ્યભવ મેળવ્યા પછી પેલી નિગોદ અવસ્થાઓથી બચવાનો પરવાનો આપણુને નથી મળતો. આપણે એ યાદ રાખવું જોઇએ કે માનવજીવન પ્રાપ્ત કરીને જો માનવોચિત કર્મ નહિ કરવામાં આવે તો આપણે માટે પણુ, જેને આપણે દીન સમજીએ છીએ તે સ્થાન તથા યોનીઓ તૈયાર જ છે. મળેલા અવસરનો જેણે લાભ ઉઠાવ્યો એ ન્યાલ થઈ ગયો સમજો, પણુ જેણે પ્રમાદ અને ગફલતથી સુઅવસરને ખોઈ નાખ્યો તે હતો ત્યાં ને ત્યા જ દીનનો દીન બનીને રહી ગયો સમજવો.

એ તો નિશ્ચિત રીતે સમજવું જોઈએ કે પ્રત્યેક પ્રાણીના જીવનમા વિકાસ માટે એકાદો અવસર તો અવશ્ય આવે જ છે. જે પ્રાણી એ અવસરને ઓળખી લે છે, તે કૃતકૃત્ય બની જાય છે. સફળતા એની દાસી બની એના પગમા પડે છે. એની ગણુના દુનિયાની મહાન્ વ્યક્તિઓમાં થાય છે. એથી ઠું, આવેલા અવસર પર જે વ્યક્તિ લક્ષ નથી આપતી .ને એની ઉપેક્ષા જ કર્યા કરે છે, તે વ્યક્તિ પગલે પગલે નિષ્ફળતા પ્રાપ્ત કરતી અને ઠોકરો ખાતી જર્જરિત થઈ જાય

છે. દુનિયામાં કોઈ પણ કામ એ સફળતાપૂર્વક કરી શકતી નથી. એથી મળેલા અવસરનો યથોચિત લાભ ઉઠાવવામાં એક ક્ષણમાત્રનો પણ પ્રમાદ ન કરવો જોઇએ.

માનવીય જીવનનો સદુપયોગ

તત્ત્વજ્ઞાની મહાપુરુષોએ માનવજીવનનો આટલો બધો જે મહિમા ગાયો છે તેનો સાચો આધાર જીવનની સદુપયોગિતા પર જ રહે છે. આ જીવનનો જો યથોચિત ઉપયોગ કરવામાં આવે તો એ પરમ અને ચરમ કલ્યાણ–મોક્ષનું સાધન બની શકે છે. એ જ કારણસર માનવ જીવનને આટલું મહત્ત્વ આપવામા આવ્યું છે. દેવ શરીર અત્યન્ત રમણીય, રોગરહિત અને સદા યૌવનથી ભરપૂર હોય છે, તેમજ દેવભવમા મનુષ્ય-ભવ કરતાં અધિક ઇન્દ્રિયજન્ય સુખોપભોગનાં સાધન હોય છે; આમ છતા પણ માનવ દેહ અને માનવભવ જેટલો મહિમા દેવત્વ યાને દેવભવનો ગાયો નથી. આનું કારણ એ છે કે–માનવ દેહ એ જ એવી એક અવસ્થા છે, જેમા પરમ પુરુષાર્થ મોક્ષની સાધના થઈ શકે છે. આથી જ આ માનવજીવનને દેવ–દુર્લભ કહેવામાં આવ્યું છે આ જીવનનું મહત્ત્વ ત્યારે જ સાર્થક થાય, જ્યારે એનો યોગ્ય ઉપયોગ થાય. આ જીવનદ્વારા પ્રાણી જો ચરમ લક્ષ્ય તરફ પ્રગતિ કરે તો જ એની સાર્થકતા છે; નહિ તો આ જીવનનું કોઇ મહત્ત્વ નથી.

આ માનવ–જીવન અમૃતનો સાગર છે અને નરકનું દ્વાર પણ છે. કોઇ પણ વસ્તુ પોતાની મેળે જ સારી કે નરસી

નથી બનતી, પરંતુ એનો સદુપયોગ કે દુરુપયોગ જ એને સારી કે નરસી બનાવે છે. અરીસાનું ભવન ભરત ચક્રવર્ત્તી માટે કેવલજ્ઞાનનું કારણ બન્યું. એમાં કદાચ કૂતરું ગયું હોત તો તે ભસી ભસીને મરણને શરણ થયું હોત. તલવારને એની પૂઠથી પકડવામા આવે તો તે વૈરીનો સંહાર કરનારી બને છે. પણ જો એને ધાર વડે પકડવામાં આવે તો પકડનારનો હાથ કાપી નાખે છે. આ સર્વનું તાત્પર્ય એ છે કે-જો આ જીવનનો સદુપયોગ કરવામાં આવે તો એ અમૃત સમાન હિતકર છે પણ એનો દુરુપયોગ થયો તો એ નરકના કરતા પણ અધિક ભયંકર બની રહે છે. આમ મનુષ્યદેહને જે સમજી શક્યો છે, એવો મનુષ્ય દુનિયા માટે આશીર્વાદરૂપ છે. જ્યારે વિકૃતિને વરેલો માનવ દેહધારી જીવ સંસાર માટે ભયંકર શાપરૂપ બને છે.

સાપથી પાપ અધિક ભયંકર છે

પાપોથી ભરેલા મનુષ્યોએ જેટલું નુકસાન દુનિયાને કર્યું છે, એટલું નુકસાન સાપ, સિંહ, વાઘ વગેરે હિંસક પ્રાણીઓએ નથી કર્યું. સંસારનું વાતાવરણ હિંસક પશુઓએ નહિ પણ વિકૃત અને દુરાચારી મનુષ્યોએ જ કલુષિત બનાવ્યું છે. સર્પ, સિંહ અને વાઘ જેવા પ્રાણીઓદ્વારા જેટલી હત્યાઓ થાય છે, તેના કરતા હજારો નહિ પણ લાખોગણી હત્યાઓ મનુષ્યાદ્વાર થાય છે. આ પરથી પશુ વધુ હિંસક છે કે મનુષ્ય એની ખાત્રી થવી મુશ્કેલ નથી. આજના જગતની પ્રવૃત્તિઓ પરથી એ સિદ્ધ થઇ રહ્યું છે કે પશુઓના કરતા વિકારી મનુષ્ય નિઃસંદેહ વધારે હિંસક અને ભયંકર છે. સેંકડો નહિ, હજારો

નહિ, લાખો નહિ પરંતુ કરોડોનો સંહાર કરી નાખવાની શક્તિ ધરાવતા તથા ગામડાઓ અને નગરોને પલકમા ભસ્મીભૂત કરવાની તાકાતવાળા ઝેરી વાયુઓ અને અણુબોમ્બો ઉત્પન્ન કરનારો મનુષ્ય જ છે.

આથી એ જ સત્ય છે કે–જેટલું પાપ ભયંકર છે, એટલો સાપ નથી. પણ અજબ જેવી વાત છે કે દુનિયા સાપને દેખીને ભયભીત બને છે, એને જીવનાશક માને છે અને કોઈ લોકો તો એને નિર્દયતાપૂર્વક મારી નાખે છે, પણ એ જ દુનિયાના માનવી પાપ કરતા પાછું વાળી જોતા નથી. પાપનો એમને ભય લાગતો નથી, એમનામા પાપનો નાશ કરવાની તાકાત નથી હોતી દુનિયા જેટલી સાપથી ડરે છે, એટલી જ જો પાપથી ડરતી રહે તો શું દુનિયામા ખૂન, ચોરી, ધાડ, વ્યભિચાર અને વિશ્વાસઘાતના કાર્યો વધવાનો જરા પણ સંભવ છે ખરો ?

આજે તો મોટા ભાગનાં મનુષ્યોના જીવન એવાં તો પાપમય બની ગયા છે કે ડગલે ને પગલે અસત્ય બોલવામા, ચોરી કરવામા કે છળ–કપટ કરવામા એમને લેશ માત્ર પણ સંકોચ થતો નથી. એમના દોષ અને દુર્ગુણ એમના જીવન સાથે ઓતપ્રોત બની ગયા હોય છે.

મનુષ્ય કાંટાથી જેટલો ડરે છે એટલો પણ પાપથી ડરતો નથી. પગમા કાંટો વાગી જાય તો તે અસહ્ય બની જાય છે. એજ કાટાને તેના કરતા અધિક તીક્ષ્ણ સોયવડે કાઢવામાં આવે છે. અને કાંટાનો વિકાર જરાપણ અંદર ન રહી જાય એ હેતુથી જ્યાં કાટો વાગ્યો હોય છે એ જગાને દબાવીને

થોડું લોહી પણ કાઢવામાં આવે છે. કાંટો કાઢવામાં જેટલું ધ્યાન આપવામાં આવે છે, એટલું જ ધ્યાન જો પાપરૂપી કાંટાને કાઢવામાં આપવામાં આવે તો દુનિયામાંથી પાપ દૂર થઈ શકે તેમ છે. કાટો કાઢવામાં અને શરીરમાંથી રોગ દૂર કરવામાં જેટલી સાવધાની રાખવામાં આવે છે એટલી સાવધાની શું પાપને દૂર કરવામા રાખવામાં આવે છે ? ના, તો સાપ વધુ હેરાન કરે છે કે પાપ ? જવાબ સ્પષ્ટજ છે કે ' પાપ. '

તો યાદ રાખો બંધુઓ ! જયાંસુધી પાપથી તમે નહિ ડરો ત્યાં સુધી માનવજીવનનો કોઈ લાભ તમે નહિ ઉઠાવી શકો. પાપથી ડરીને તમારો વ્યવહાર આચરશો તો આ અમૂલ્ય જીવનનો થોડો ઘણો લાભ અવશ્ય પ્રાપ્ત કરી શકશો.

માનવ જીવનનો મુદ્રાલેખ

આપણી જ્યા જ્યા નજર પડે છે અથવા જ્યા જ્યાં સાભળી શકીએ છીએ ત્યા ત્યા માનવ–કર્તવ્યની જ ચર્ચા થાય છે. કયાય પણ પશુ–કર્તવ્ય અથવા દેવ–કર્તવ્યનો વિચાર થતો જાણવામા આવ્યો નથી. આનું કારણ શું છે ? આનું કારણ એ છે કે માનવજીવનનો ઉદ્દેશ પશુઓ અને દેવતાઓના ઉદ્દેશથી અધિક ઉન્નત, અધિક ઉદાર અને મહાન છે. પશુ–જીવનથી માનવજીવન એટલા માટે શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવ્યું છે કે માનવમા કર્તવ્ય, ધર્મ અને વિવેક હોય છે. પશુ પણ ખાય છે, પીએ છે, નિદ્રા કરે છે, વિષયોની પૂર્તિ કરે છે. શાસ્ત્રકારો અને નીતિકારોએ માનવજીવનની મહત્તાની જે ઉદ્-ઘોષણા કરી છે તે સ્પષ્ટ રીતે કહે છે કે માનવજીવનનો આશય પશુઓની પેઠે સ્વાર્થને સિદ્ધ કરી લેવાનો નથી, પરંતુ સ્વાર્થના

સંકુચિત ક્ષેત્રમાંથી બહાર આવીને પરમાર્થની સાધના કરી, એ સાધનાદ્વારા વિવેકમય અને કર્તવ્યપરાયણ જીવન વ્યતીત કરવાનો છે. કહ્યુ છે કે—

કેવલ સ્વાર્થ–સાધના કરના, જીવનકા ઉદ્દેશ્ય નહીં;
હિત કરના હૈ પ્રાણી માત્ર કા, રહે દ્વેષ કા લેશ નહીં.

પ્રાણીમાત્રનું હિત કરવું, પોતાના સ્વાર્થ માટે બીજાને હાનિ ન કરવી, તથા અન્યનાં દુઃખો દૂર કરવા માટે શક્ય પ્રયાસ કરવો એ જ માનવીય જીવનનો મુદ્રાલેખ હોવો જોઇએ. જે વ્યક્તિ મનુષ્ય અવતાર પ્રાપ્ત કરીને માત્ર ખાનપાન, મોજ-શોખ અને ધનોપાર્જન તથા બાલ–બચ્ચાના પાલન–પોષણમાં જ રત રહે છે, એ વ્યક્તિ પશુઓની શ્રેણીથી ઊંચે જઈ શકતી નથી. મનુષ્યની આકૃતિ મળવાથી કંઇ માનવતાનો દાવો થઇ શકે નહિ. ચોર, ખૂની, ડાકુ તથા વ્યભિચારી મનુષ્યને શુ મનુષ્ય કહી શકાય? વળી એમને માનવ દેહ પ્રાપ્ત થયેલ છે એથી કંઇ તેઓ પશુઓથી ઉચ્ચ છે એવું પણ કહી શકાય? કદાપિ નહિ.

જે વ્યક્તિ સ્વાર્થમાં અંધ ન હોય, જેને કર્તવ્યનું ભાન હોય, જેને ધર્મ, અધર્મ, નીતિ, અનીતિ તથા ભલાબૂરાનો વિવેક હોય, એને જ સાચો માનવ કહી શકાય. વિવેકશૂન્ય માનવી પશુઓ કરતાં પણ ઉતરતો છે. આવા મનુષ્યોને પશુ-ઓની ઉપમા આપવી એ પણ પશુઓને અન્યાય કરવા જેવું છે. વિવેકદીપ જલતો રહે તોજ માનવ, માનવ બની શકે છે. નહિ તો કવિઓની ભાષામા શીંગડા કે પૂંછડા વિનાનો પશુ

જ કહી શકાય. આજનો મનુષ્ય પોતાના જીવનના મુદ્રાલેખને વિસરી ગયો છે. એણે પોતાના ભૌતિક સ્વાર્થોની પૂર્તિને જ પોતાનુ ધ્યેય માની લીધું છે.

ભાન ભૂલેલો માનવ સમાજ

પરમ તેમજ ચરમ કલ્યાણની સાધનામા માનવ જીવન પ્રધાન સાધન હોવાથી જ તેની આટલી મહત્તા છે. પરંતુ આજના વિજ્ઞાન અને જડવાદના જમાનામા મનુષ્યનું માનસ પણ જડતુલ્ય બની ગયું છે. વર્તમાન યુગમા ચૈતન્યવાદ દૂર થતો જાય છે અને એને સ્થાને જડવાદના મૂળ દૃઢીભૂત બનતા જાય છે. આજના યુગમાં ધનની બોલબાલા છે. આ ધનના આકર્ષણથી માનવ પોતાનો ધર્મ ભૂલી જઈ અહીં તહીં ખોટી દોડધામ કરી રહ્યો છે. આજના આ માનવ માટે ધર્મ કે કર્તવ્યનું કોઈ મહત્ત્વ નથી રહ્યુ. ધન જ આ યુગનો ધર્મ બની રહ્યો છે. એક લેખકે કહ્યુ છે કે—

ધનના અભાવમાં જીવ એટલાં તો આસુ સારે છે કે એની સામે એક મહાસાગર પણ શરમાઈ જાય. આ અશ્રુપ્રવાહમા એ જીવ અનેકવાર તણાઈ ગયો, પરંતુ માનવજીવન માટે એની આંખોમાંથી આંસુનું એક બુંદ પણ પડયું નહિ. લાખ રૂપિયાની સંપત્તિનો માલિક, જો એના હિસાબમાં એક પાઈ પણ ઘટશે તો એને સહન નહિ કરી શકે. આ એક પાઈનો વિચાર કરવામાં ખૂબ સમય વ્યતીત કરશે, પણ પોતાના માનવજીવનના કર્તવ્ય પર વિચાર કરવામા એને ફુરસદ નહિ મળે. શું માનવજીવનનું મહત્ત્વ એક પાઈ સમાન પણ નથી?

ખરેખર આજની ધનલોલુપતાએ માનવજીવનના કર્તવ્યની કિંમત એક કોડી કરતાં પણ ઓછી કરી નાખી છે. કેવા અફસોસની વાત છે કે મનુષ્ય એક પાઈનો વિચાર કરે છે, પરંતુ વિશ્વના અપાર કોટિ ધનરાશી કરતા પણ અધિક મૂલ્યવાન પોતાના જીવનની એક ક્ષણનો પણ સદુપયોગ કરવાનો જરા સરખો પણ વિચાર કરવાની એની દાનત થતી નથી ! કામ અને અર્થના અર્થી આપણે ધર્મ અને મોક્ષને એક ખૂણામા બેસાડી દીધા છે. ધર્મ અને મોક્ષ એમને તુચ્છ જણાય છે. વિલાસ, ભોગ અને ઈન્દ્રિયજન્ય સુખોની આગળ એને અન્ય કોઇ વસ્તુ સારવાળી લાગતી નથી. દેવને દુર્લભ એવા પોતાના આ માનવદેહને માત્ર વિષયોની પૂર્તિમા જ એ વ્યતીત કરી દે છે. ધન કમાવું, એશઆરામ કરવો, સહેલ સપાટા કરવા તથા સંસારના આનંદોનો ઉપભોગ કરવો–બસ એ જ વર્તમાન માનવીનું ધ્યેય બની ગયું છે. બસ, આજ ધ્યેયની પૂર્તિ માટે એ અવિરામ તનતોડ મહેનત કરે છે કેવું શોક-જન્ય આ સત્ય ? કયા માનવ જીવનનો ઉચ્ચ આદર્શ અને ક્યાં આજના માનવીનો વિપરીત વ્યવહાર ? ચિન્તામણિરત્નનો શું આજ ઉપયોગ ? નીતિકારો કહે છે·—

स्वर्णस्थाल्यां क्षिपति स रजः पादशौचं विधत्ते,
पीयूषेण प्रवरकरिणं वाहयत्यन्धभारम्।
चिन्तारत्नं विकरति कराद्वायसोड्डायनार्थम्,
यो दुष्प्राप्यं गमयति मुधा मर्त्यजन्म प्रमत्तः. ॥

જે મનુષ્ય દુર્લભ માનવજન્મની પ્રાપ્તિ કરીને પ્રમાદના વિષયોમાજ લીન બનીને એને વ્યર્થ ખોઇ બેસે છે, તે સોનાની

થાળીમા ધૂળ ભરીને ઉડાડવાનું કામ કરે છે. અમૃત પ્રાપ્ત કરીને એનો ઉપભોગ પગ ધોવામા કરી એને ગુમાવે છે. એ મહાગજરાજ પર માત્ર ઈન્ધન લાદે છે, ચિન્તામણિરત્નનો ઉપયોગ માત્ર કાગડાઓને ઉડાડવામાં કરે છે.

જરા વિચાર તો કરો. સોનાનો થાળ શું ધૂળ કે કચરામા જ ફેંકી દેવા માટે છે ? શું અમૃતનો ઉપયોગ પગ ધોવામાં કરવો એમા બુદ્ધિની કોઇ મહત્તા છે ? શું હાથી પર લાકડાનો ભાર લાદવો એમા શોભા છે ? અને ચિન્તામણિરત્ન કાગડાને ઉડાડવામાં ફેંકી દેવો એ શું હિતકર છે ? આ બધા કાર્યો બુદ્ધિમાનનાં નહિ પણ નાદાનના જ છે.

આપણે સૌ સમજીએ છીએ કે ચિન્તામણિ રત્ન ફેંકી દેનારો નાદાન જ છે. આપ જરા આપનાં કતવ્યો પર દૃષ્ટિપાત કરો, તો એથી આપને પણ એમ નથી લાગતું કે આપ પોતે પણ એવી નાદાની કરી રહ્યા છો ? ચિન્તામણિ રત્ન સમાન આ માનવજીવનને પ્રાપ્ત કરી એને વિષયભોગોમા બરબાદ નથી કરી રહ્યા ? શું આપ ઇન્દ્રિયજન્ય સુખોમા લીન બનીને માનવજીવનનાં કર્તવ્યોથી ચ્યૂત નથી થઈ રહ્યા ? જો આપ એને ખરેખર ચિન્તામણિ જ સમજતા હોત તો એનો આવો ઉપયોગ કરવાની નાદાની કદાપિ ન કરત. એક કવિએ કહ્યું છે:–

ફરી ફરી ન મળે, મનુષ્ય ભવ ફરી ફરી ન મળે-ટેક.
ચિન્તામણિ રત્નને પામી ઘટીમાં કેમ દળે ?
કેસર અને કસ્તૂરીને તેલમાં કેમ તળે ? ફરી૦

એક રાજા વનવિહાર કરવા માટે વનમાં ગયો. ફરતો ફરતો

એ બહુ દૂર નીકળી ગયો. રસ્તાનું એને ભાન રહ્યું નહિ. અહીંતહીં ભટકવા લાગ્યો. તરસથી એનો કંઠ શોષાવા લાગ્યો. આખરે થાકીને એક વૃક્ષની નીચે એ બેસી ગયો.

દૈવયોગથી એક ભીલ ત્યાં આવી ચડ્યો. એણે રાજાને પાણી પાયું અને શહેરનો માર્ગ બતાવ્યો. ભીલના આ ઉપકારથી પ્રસન્ન થઈને રાજાએ એને એક ચંદનનો બગીચો ઇનામમાં આપ્યો. આ બગીચાથી ભીલને હજારો રૂપિયાની આવક મળી શકે તેમ હતું, પણ આ ભીલને ચંદનનું મહત્ત્વ સમજાયું ન હતું. આથી એ તો એને સામાન્ય વૃક્ષો સમજીને એના લાકડા કાપી એના કોલસા બનાવીને વેચવા લાગ્યો. આવી રીતે એણે આખું વર્ષ કોલસા જ વેચ્યા કર્યા.

એક વાર અચાનક રાજા એ તરફ નીકળી આવ્યો એણે જોયું કે ચંદનનો આખો બગીચો બાળી નાખવામા આવ્યો છે, માત્ર એક જ વૃક્ષ બાકી રહ્યું છે રાજાને ભીલની મૂર્ખતા સમજાઈ ગઈ એણે ભીલને પૂછ્યું "બગીચાના આવા હાલ શા માટે કરી નાખ્યા ?" ભીલે જવાબ આપ્યો 'મહારાજ, હવે તો બસ એક વૃક્ષ બાકી રહ્યુ છે. બીજો બગીચો આપો."

રાજાએ વિચાર કર્યો કે મૂર્ખ ભીલ ચંદનની કિંમત સમજતો નથી. એણે એક ડાળી કાપીને ભીલને આપી અને કહ્યું કે આ ડાળીને પંસારીની દુકાને વેચીને જલદી આવ. ભીલ તો પંસારીને ત્યા ગયો. પંસારી ખૂબ ઇમાનદાર માણસ હતો. એ કોઈના અજ્ઞાનનો લાભ ઉઠાવતો નહિ. એણે તો ભીલને બજાર ભાવે જે પૈસા થતા હતા તે ચૂકવી આપ્યા. ચન્દનની

આટલી નાની ડાળીની આટલી મોટી કિંમત મળતાં ભીલને ખૂબ આશ્ચર્ય થયું અને એ સાથે જ એને પસ્તાવો પણ થવા માંડ્યો કે 'હાય, આ ચીજની કિંમતને હું સમજી શક્યો નહિ, અને બાળી બાળીને કોલસા જ કરતો રહ્યો. મેં આવી બેવકૂફી ન કરી હોત આજ કેવો માલદાર બની ગયો હોત ?'

એ રાજા પાસે આવીને પશ્ચાત્તાપ કરવા લાગ્યો. રાજાએ એને સાન્ત્વન આપ્યું અને કહ્યું: હજી પણ તને અવસર છે. આ વૃક્ષની ડાળીઓ કાપીને એને વાવી દે અને ફરીથી આ બગીચો થોડા સમયમાં ચંદન વૃક્ષોથી સુશોભિત બની ઊઠશે.

ભીલે એમ કર્યું અને કૃતાર્થ થઇ ગયો.

આ ઉદાહરણને આપ આપની જાતને લાગુ પાડો. માનવ જન્મ ચંદનના બગીચા સમાન છે. આપ એ ચંદનનું મહત્ત્વ સમજો છો કે પેલા ભીલની પેઠે વિષયવાસનાઓમા લીન બની એના કોલસા બનાવી રહ્યા છો ? એ ભીલ પોતાની અજ્ઞાનતાથી ચંદનને બાળતો રહ્યો. પણ આપ તો ભીલની પેઠે મૂર્ખ નથી. આપ ચંદનની કિંમત સમજો છો, તો પણ જાણીબૂઝીને ચંદનના કોલસા શા માટે બનાવી રહ્યા છો ? અજ્ઞાની જો ચંદનનો કોલસો બનાવે તો તે ક્ષમ્ય ગણાય, પણ જાણીબૂઝીને જે એમ કરે છે, તે ભીલ કરતા પણ વધુ અજ્ઞાનતામા ઘેરાયેલો છે; પણ એ ક્ષમ્ય નથી.

સદ્‌ગુરુ અથવા સુશાસ્ત્રદ્વારા આપ માનવજન્મરૂપી ચંદનની કિંમત સમજીને જો એનો યોગ્ય ઉપયોગ કરશો તો કૃતાર્થ થઇ જશો અને આપની પાસે કદી પણ દીનતા કે

હીનતા આવી શકશે નહિ. ભવભ્રમણરૂપી દૈન્ય દૂર થઈ જશે અને આત્મામાં વસી રહેલી લક્ષ્મી પ્રગટ થશે.

દાસ ન બનો; સ્વામી બનો.

માનવ સમાજ પોતાના લક્ષ્યથી પતિત બનીને કોણ જાણે ક્યાં જઈ રહ્યો છે? ધનમાં સુખ માની એને પ્રાપ્ત કરીને એમાં જ મશગૂલ રહ્યો છે. અને જ્યારે ધન મળે છે ત્યારે ધન પર પોતાનો અધિકાર સ્થાપિત કરવાને બદલે એનો દાસ બની જાય છે, ધન એને આધીન રહેતું નથી, પણ એ પોતે ધનને આધીન બની જાય છે. એ સંસારનાં સુખો, વિલાસો અને આરામોનો ભોક્તા બનવા ચાહે છે, પણ ભોક્તા બનવાને બદલે એ ભોગ્ય જ બની રહે છે. ભોગો એને આધીન રહેતા નથી પણ એ ખુદ ભોગોને આધીન બની જાય છે. માનવીની આ કેવી પરાધીનતા! એ પરાધીનતામા પણ સુખનો આભાસ એ જોઇ રહ્યો છે એ કેટલું અધઃપતન!

પ્રિય સજ્જનો! જો દાસને બદલે તમે સ્વામી બનવા માગતા હો તો ધર્મનો આશ્રય લો. જો તમે ધર્મનું સ્વરૂપ સમજીને એનો આશ્રય લેશો તો તમે ધન અને વિલાસના દાસ નહિ બનો, પરંતુ એના સ્વામી બની શકશો. ધર્મને ન સમજનાર પોતાના ધનનો સદુપયોગ નથી કરી શકતો. એ પોતાની ઈચ્છાનુસાર શુભ કાર્યોમા એનો વ્યય નથી કરી શકતો. એ ધનનો દાસ છે એમ સમજવુ. એનાથી ઉલટું જે ધર્મને સમજી લે છે, તે પોતાના ધનને તુચ્છ સમજીને પોતાની ઈચ્છાનુસાર શુભ કાર્યોમા વાપરી શકે છે; એટલા માટે એ ધનનો સ્વામી છે.

સજ્જનો ! આપ આપની આંખોથી જડવાદનાં ચશ્મા દૂર કરો. આ જડવાદે જ આપને પરાશ્રયી અને ગુલામ બનાવ્યા છે. આ જડવાદને આપ દૂર કરશો તો આપને ચૈતન્યનાં દર્શન થશે. ચૈતન્યના પ્રાકટ્યથી આપ જડવાદનાં બંધનોથી મુક્ત થઈ જશો. જ્યારે આપને ચૈતન્યની શક્તિનુ ભાન થશે ત્યારે ધન, વૈભવ, વિલાસ વગેરે આપને પોતાના તરફ આકર્ષિત નહિ કરી શકે. આખરે તો આ ધન, વૈભવ અને વિલાસ આપને દગો દઈને અદૃશ્ય થઈ જવાના છે. આ પરપદાર્થોમા આટલો વિશ્વાસ ન રાખો. જેટલો વિશ્વાસ આપ આ બાહ્ય પદાર્થોમાં રાખો છો, એટલો વિશ્વાસ જો આપ આપના પોતાના પર રાખો તો આપની પોતાની જ ચીજ–આત્મા આપને દગો નહિ દે. પરપદાર્થ પર વિશ્વાસ કરવાની જો આપ ભૂલ કરશો તો અવશ્ય દગાના ભોગ બની જશો અને આખરે સ્વેચ્છાએ કે અનિચ્છાએ એમને છોડવા પણ પડશે. ભૂલ ખાઇને મનુષ્ય એમ સમજવા લાગે છે કે આ ધન, આ રાજ્ય, આ મહેલ, આ અપ્સરાઓ જેવી સુન્દરીઓ, આ હાથી–ઘોડા, આ માતા-પિતા, સ્ત્રી, પુત્રો વગેરે કુટુમ્બીજનો મારાં છે. એ સુંદર કંચન જેવી કાયાનું અભિમાન કરે છે. એ પોતાના વૈભવનો ગર્વ કરે છે અને પોતાની સત્તામા મોટાઈ દેખે છે તેમજ રાખે છે, પરંતુ એ બધાં અહીંના અહીં જ રહી જવાના છે. એક જ ક્ષણમાં એ બધું હુંપણું અને મારાપણું છૂટી જવાનું છે. સર્વ પ્રિય પદાર્થોને છોડીને આ જીવ એકલો જ ચાલ્યો જાય છે અને સાથ આપનારું કોઈ નથી. કહ્યું છે કે—

चेतोहरा युवतयो सहृदोऽनुकूलाः।
सद्बान्धवा प्रणयनम्रगिराश्च भृत्याः॥
वल्गन्ति दन्तिनिवहास्तरलास्तुरङ्गा।
सम्मीलने नयनयोर्नहि किञ्चिदस्ति॥

અર્થાત્–મનોહર સ્ત્રીઓ, અનુકૂલ મિત્ર, કુટુમ્બીઓ, નોકર–ચાકર, હાથી, ઘોડા, વગેરે બધું છે, પણ આંખો બંધ થયા પછી કંઈ પણ નથી.

એથી જ કહેવામા આવે છે કે ધનવૈભવ અને વિલાસના દાસ ન બનો જો દાસત્વથી મુક્ત બનવા ચાહતા હો તો ધર્મ–કર્તવ્ય અને વિવેકનુ શરણ સ્વીકારો. માનવ જન્મમા આ દાસત્વથી મુક્ત થવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો છે. આ સ્વતંત્રતાના અવસરને તમારી ગફલતને કારણે પરતંત્રતાના રૂપમાં ફેરવી ન નાખશો. થોડા જ સમય માટે આ સુઅવસર પ્રાપ્ત થયો છે એથી એની હરેક ક્ષણ મહામૂલ્યવાન છે. આ અણુમોલ જીવનનો ઘણોખરો ભાગ તો આપે ગફલતમા જ વ્યતીત કરી નાખ્યો છે, પરંતુ "ગઈ સો ગઈ, અબ રાખ રહી કો" એ સૂત્ર પ્રમાણે જે સમય બાકી રહ્યો છે એનો યથોચિત લાભ ઉઠાવવા માટે તત્પર થઈ જવું જોઈએ. આ અવસ્થાને પ્રમાદમાં જ વ્યતીત કરી જેવા આવ્યા હતા, એવી જ રીતે ખાલી હાથે જવું પડશે કવિએ કહ્યુ છે–

બાંધ કર મુઠ્ઠી તેરા દુનિયામાં જબ આના હુઆ,
આનકર ફિર મોહકે ફંદે મેં ફંસ જાના હુઆ.
ધર્મ સંચય નહીં કિયા, નહીં ઈશ ગુણ ગાના હુઆ,
નરજન્મ પૂંજી હાર ખાલી હાથ ફિર જાના હુઆ.

બાળપણુ ખેલકૂદમાં વ્યતીત થયું. યૌવન યુવતીઓ સાથેના રંગરાગમાં વ્યતીત થયું. પ્રૌઢ અવસ્થા ધન એકત્રિત કરવામાં ચાલી ગઇ. વૃદ્ધ અવસ્થામા શક્તિ ન રહી અને છેવટે યમરાજે આવીને ઘેરી લીધો, બસ જેવી રીતે એ ખાલી હાથે આવ્યો હતો, એવી જ રીતે નરજન્મરૂપી પૂંજીને ખોઇને માનવ ખાલી હાથે અહીંથી વિદાય થાય છે. આવી અવસ્થામા આ દેવને પણુ દુર્લભ એવો માનવજન્મ મળ્યો તોય શું અને ન મળ્યો તોય શું?

માનવ જીવનની સાર્થકતા

અજ્ઞાની મનુષ્ય આ માનવ જીવનને ભોગો ભોગવીને પૂરો કરે છે, જ્યારે જ્ઞાનીજન આ જીવનદ્વારા ચરમલક્ષ્ય–મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે મૂર્ખ જે રીતે સાગરને માત્ર નિમકની ખાણુ માને છે, અને જ્ઞાની તેને રત્નોની ખાણુ સમજે છે તેવું જ આ દેહના સંબંધમાં છે. અજ્ઞાની આ જીવનને ભોગો ભોગવવાનું સાધન માને છે; જ્ઞાની મોક્ષપ્રાપ્તિનું સાધન માને છે. મનુષ્ય પોતાની સ્વાર્થ સંકુચિત સ્થિતિમાથી ઉપર આવીને વિશ્વના કલ્યાણુમાટે પોતાની જાતને સમર્પી દે તેમાં જ આ દુર્લભ માનવજીવનની સાર્થકતા સમાયેલી છે. સમસ્ત વિશ્વને એક જ કુટુમ્બ સમજીને એનાં દુઃખો દૂર કરવાના પુરુષાર્થમાં જો આપણુા જીવનનો ઉપયોગ થઈ શકે તો સમજવું કે આ જીવન સાર્થક થયું છે. "વસુધૈવ કુટુમ્બકમ્" નો ઉદાર સિદ્ધાંત જેટલો આપણુા જીવનમાં ઉતર્યો હશે તેટલું આપણું જીવન સફળ થયું હશે આ સત્યને જીવનમા અધિકમા અધિક ઉતારવામા જ માનવધર્મ રહેલો છે. જે વ્યક્તિએ આ માનવધર્મને ઓળખી લીધો છે, તે વૈભવ, વિલાસ અને વિષયવાસનાઓને

અત્યન્ત તુચ્છ અને હલકાં ગણીને ઠોકરે મારે છે. જે વ્યક્તિને રત્નોની પ્રાપ્તિ થઇ ચૂકી છે, તે કાચના કકડાઓની ઇચ્છા તો કઇ રીતે કરી શકે ? જેણે માનવધર્મનો અર્થ સમજી લીધો છે, તે પોતાની ઇચ્છાઓ અને આવશ્યકતાઓને અત્યન્ત મર્યાદિત બનાવી દે છે. સંસારના કોઇપણ પ્રાણીને હાનિ પહોંચે એવી કોઇપણ પ્રવૃત્તિ એ નથી કરતો—

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तुः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥

અર્થાત્–વિશ્વનાં સમસ્ત પ્રાણીઓ સુખી થાઓ, અભ્યન્તર તેમજ બાહ્ય સ્વાસ્થ્યનો અનુભવ કરો, સર્વનું કલ્યાણ થાવ અને કોઇપણ દુઃખ પ્રાપ્ત ન કરો. આ આદર્શને સન્મુખ રાખીને જે વ્યક્તિ એ દિશામાં ગતિ કરે છે, એ જ પ્રમાણે પોતાની ક્રિયાઓ કરે છે તે વ્યક્તિ પોતાના માનવ–જીવનને સાર્થક કરે છે અને પરમ તેમજ ચરમ કલ્યાણ–મોક્ષને વરે છે.

સંસારનાં સર્વ માનવપ્રાણીઓ સાચા અર્થમાં માનવ બને એજ મંગલમય પ્રભુ પાસે પ્રાર્થના.



૯. રાષ્ટ્રધર્મ

જે પ્રદેશ એક જ કુદરતી સીમાવડે બંધાયેલો હોય અને જેમાં એકજ સંસ્કૃતિવાળા લોકો રહેતા હોય, તેનું નામ રાષ્ટ્ર. જે ધર્મવડે રાષ્ટ્ર ઉન્નત બને, સુવ્યવસ્થિત બને, દેશવાસીઓની સંપત્તિ સુરક્ષિત રહે, સુખ અને શાંતિ પ્રવર્તી રહે, અને કોઇ અન્ય અત્યાચારી રાષ્ટ્ર એના પર જુલમ ન કરી શકે, તે ધર્મનું નામ રાષ્ટ્રધર્મ.

: ૨ :

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमप्रभुः ।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या. जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

પ્રિય આત્મબન્ધુઓ !

મંગલમય પ્રભુની આ પ્રાર્થના કરવામા આવી છે. મંગલમય પ્રભુની પ્રાર્થનાથી આત્મા પણ મંગલમય બને છે. જે વ્યક્તિ પોતાના મનમંદિરમા મંગલમય આરાધ્ય દેવની આરાધના કરે છે, એ અવશ્ય મંગલમય બને છે, એમા કોઇ સંદેહ રહેતો નથી. કારણ કે "यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ।" જેવી જેની ભાવના એવી એની સિદ્ધિ–પ્રાપ્તિ. મંગલમય ભાવનાને હૃદયમા રાખનાર મંગલમય જ બને છે. સંસાર–વ્યવહારમા પણ એવું જ બને છે. શેઠની આરાધના કરતો મુનીમ ખુદ શેઠ બની જાય છે. અનેક મુનીમો આગળ વધતા વધતા આખરે લક્ષાધિપતિઓ બની ગયા હોય એવા અનેક ઉદાહરણો આપણી સન્મુખ મોજુદ છે. જો સામાન્ય શેઠની આરાધના કરનાર મુનીમ શેઠ બની શકે છે, તો મંગલમય પ્રભુની આરાધના કરનાર મંગલમય કેમ ન બની શકે ?

મંગલમય પ્રભુને હૃદય–મંદિરમાં બિરાજમાન કરવા માટે હૃદયને શુદ્ધ કરવું જ જોઈએ. કોઇ ઉચ્ચ રાજપુરુષ અથવા અધિકારીને તમે તમારે ત્યા આમંત્રણ આપો તો તમારે કેટકેટલી તૈયારીઓ કરવી પડે છે ? તમારા ભવનને

કેવી વિવિધ રીતે સજાવો છો ? સ્વચ્છતા અને સજાવટમાં કોઈ ખામી ન રહે એની પૂરી સાવચેતી તમે રાખો છો. એક સાંસારિક સામાન્ય મનુષ્યને માટે જો આટલી તૈયારીઓ કરવી પડે તો સર્વશક્તિમાન ત્રિલોકનાથને આપણે ત્યા આમંત્રણ આપવા માટે કેટલી તૈયારીઓ કરવી જોઈએ ? એક સામાન્ય અધિકારીને પ્રસન્ન કરવા માટે જેટલી ખટપટ કરો છો, એટલી ખટપટ શું સર્વોચ્ચ અધિકારી–પરમેશ્વરને પ્રસન્ન કરવા માટે કરો છો ?

બન્ધુઓ ! આપ બાહ્ય સ્વાર્થો માટે ગમે તેટલા અધિકારીઓને પ્રસન્ન કરી લો પણ જ્યાસુધી એ અધિકારીઓના પણ અધિકારી પરમાત્મા પ્રસન્ન ન થાય ત્યા સુધી સુખ, શાંતિ તથા કલ્યાણની આશા કરવી એ મૃગજળ સમાન છે, જો તમે એ પરમ પિતાને પ્રસન્ન કરવા માગતા હો તો એમને ગમે તેવાં કાર્યો તમારે કરવા જોઈએ.

રામાયણના અયોધ્યાકાણ્ડમાં તુલસીદાસજી કહે છે·—

ચોપાઈ

કામ ક્રોધ મદ માન ન મોહા, લોભ ન છોભ ન રાગ ન મોહા;
જિનકે કપટ દભ નહિ માયા, તિનકે હૃદય બસહુ રઘુરાયા.

જ્યાંસુધી તમે તમારાં હૃદયમંદિરોને સાફ કરી સુવ્યવસ્થિત નહિ બનાવો ત્યાસુધી એ પરમ પવિત્ર પરમેશ્વર કેવી રીતે આપના હૃદયમાં બિરાજમાન થશે ? શું તમે એ પવિત્ર પરમાત્માને તમારા મેલાં મનોમા બેસાડવા માગો છો ? શુ પરમાત્મા તમારા મેલી વાસનાઓ તથા દોષોથી ભરપૂર મનમાં

વાસ કરી શકશે ? કદાપિ નહિ. જો તમે પરમાત્માને તમારા હૃદયમાં બોલાવવા માગતા હો, તો સૌપ્રથમ હૃદયને સ્વચ્છ કરવુ જ જોઇએ. ધર્મરૂપી જલદ્વારા પાપરૂપી મેલનો નાશ કરો અને શુદ્ધ હૃદયમા મંગલમય પ્રભુનું આહ્વાહન કરો. તમે પોતે પણ મંગલમય બની જશો. મંગલમય બનવું હોય તો ધર્મની આરાધના કરો, ધર્મ એ જ મંગલ છે, ધર્મ એ જ આત્યન્તિક અને એકાન્તિક મંગલ છે. ધર્મની આરાધના સહુ કોઇને મંગલમય બનાવશે.

ઠાણુાગ સૂત્રના દશમા ઠાણામા શાસ્ત્રકારે દશ પ્રકારના ધર્મનો નિર્દેશ કર્યો છે. એ ધર્મો આ પ્રમાણે છે.

ગ્રામધર્મ, નગરધર્મ, રાષ્ટ્રધર્મ, વ્રતધર્મ, કુલધર્મ, ગણધર્મ, સંઘધર્મ, સૂત્રધર્મ, ચારિત્રધર્મ અને અસ્તિકાયધર્મ.

આ દશ પ્રકારના ધર્મો પર વિચાર કરતાં એવું પ્રતીત થાય છે કે આમાથી સૂત્ર અને ચારિત્રધર્મ મોક્ષપ્રાપ્તિના પ્રત્યક્ષ કારણ છે. અને બાકીના ધર્મો સૂત્ર અને ચારિત્રધર્મના આધારરૂપ છે, એથી પરોક્ષરૂપે આ બધા ધર્મો પણ મોક્ષના સહાયક છે. સૂત્ર અને ચારિત્રધર્મ આધેય છે. જ્યાંસુધી ગ્રામધર્મ, નગરધર્મ, રાષ્ટ્રધર્મ વગેરેનું યથોચિત પાલન ન થાય ત્યાંસુધી સૂત્ર અને ચારિત્ર ધર્મોનું યોગ્ય પાલન અસંભવિત છે. તેથી સૂત્ર અને ચારિત્ર ધર્મોની પહેલા આ વ્યાવહારિક ધર્મોનો નામનિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે.

જેમ વિશાળ મહેલ ઊભો કરવા માટે ઊંડા પાયાની આવશ્યકતા હોય છે તેમ સૂત્ર અને ચરિત્રધર્મોને માટે આ

વ્યાવહારિક ધર્મોનું પાલન પણ આવશ્યક બની રહે છે. જે વ્યક્તિ આ ધર્મોની ઉપેક્ષા કરીને સૂત્ર–ચારિત્રધર્મનું પાલન કરવાની ઇચ્છા રાખે છે તે પાયા વિનાનો મહેલ ઊભો કરી રહ્યો છે એમ સમજવું.

मूलं नास्ति कुतः शाखा ?

કેટલાએ લોકોને એવું કહેતા સાભળ્યા છે કે ગ્રામધર્મ અને રાષ્ટ્રધર્મની શી જરૂર છે? આપણે તો આત્મકલ્યાણ કરવું છે અને મોક્ષ મેળવવો છે. ધર્મ અને રાષ્ટ્રને શો સંબંધ? આવા લોકો મુનિઓને પણ કહે છે, "મહારાજ, આપ સાધુ છો તો અમને મોક્ષની વાત સંભળાવો. આ રાષ્ટ્ર-ધર્મ વગેરે તો સંસારની વાતો છે. અમારા આત્માનું કલ્યાણ એનાથી નહિ થઈ શકે." આવું કહેનારા લોકો મૂળને ઉખેડી વૃક્ષની શાખાઓ પર પાણી રેડી એમને લીલીછમ જોવા માગે છે. મૂળ ઉખેડીને ફેંકી દીધા પછી શું વૃક્ષ લીલુંછમ અને પત્રપુષ્પોથી સુશોભિત રહી શકે? આવી રીતે જે લોકો મૂળ ધર્મની ઉપેક્ષા કરીને સૂત્રચારિત્ર, ધર્મની આરાધના કરવાનો પ્રયાસ કરે છે તેઓ પોતાની જાતને છેતરી રહ્યા છે

એક ખેડૂત ખેતરમાંથી સારી પેદાશ લેવા માટે એમાં માટી અને ખાતર નાખે છે. હળ હાકે છે અને બી વાવવાને માટે ભૂમિ તૈયાર કરે છે. હવે કોઇ વ્યક્તિ એની પાસે જઇને એને એમ કહે કે "ભાઈ! તારે તો ઘઉં જોઈએ છે. બી વાવી દે. ભૂમિ તૈયાર કરવાની મહેનત શા માટે કરે છે? એનાથી લાભ શો?" શું કોઈ સમજુ ખેડૂત આ સલાહને

સ્વીકારશે ખરો ? આ ખેડૂત તરતજ ઉત્તર આપશે કે, " ભાઈ ભૂમિને તૈયાર કર્યા વિના સારા ઘઉં પેદા થઈ શકે નહિ, એટલે આ ભૂમિને તૈયાર કરવી પડે છે." આવી જ રીતે સૂત્ર–ચારિત્ર ધર્મના પાલનની યોગ્યતા પ્રાપ્ત કરવા માટે રાષ્ટ્ર ધર્મ વગેરે વ્યાવહારિક ધર્મોના પાલનની આવશ્યકતા અવશ્ય રહે છે. અને તેથી સૂત્ર અને ચારિત્રના ઉપદેશકોનું પણ એ કર્તવ્ય બની રહે છે કે તેઓ ભૂમિકાના રૂપમા વ્યાવહારિક ધર્મોના પાલન માટેનો ઉપદેશ આપે. જો વ્યાવહારિક ધર્મના પાલન પ્રત્યે ઉપેક્ષાભાવ રહેશે તો નિ:સંદેહ સમજવું કે સૂત્ર–ચારિત્ર ધર્મનો પણ કદાચ અભાવ થઇ જશે. પ્રથમ તીર્થંકર ઋષભદેવસ્વામીએ પણ સૂત્ર અને ચારિત્ર ધર્મનો ઉપદેશ આપતાં પહેલા સમાજને વ્યાવહારિક ધર્મોનો ઉપદેશ કર્યો હતો. જે લોકો ગ્રામધર્મ, નગરધર્મ, રાષ્ટ્રધર્મ વગેરેમા એકાન્ત પાપ બતાવી એમનો નિષેધ કરે છે, તેઓ સૂત્ર અને ચારિત્ર ધર્મોના મૂળમા ઘા કરે છે. મૂળ વગર વૃક્ષ ટકી શકતુ નથી. જે વ્યક્તિ પોતાના કર્તવ્યો પ્રત્યેની જવાબદારીને યોગ્ય રીતે નિભાવી શકતી નથી, એની પાસેથી એવી આશા તો કેમ જ રાખી શકાય કે તે ચારિત્ર ધર્મનું પણ યોગ્ય રીતે પાલન કરશે ! આ સર્વ પરથી એ ફલિત થાય છે કે સૂત્ર–ચારિત્ર ધર્મની આરાધના માટે પૂર્વોક્ત ગ્રામધર્મ વગેરેનું પાલન કરવું અનિવાર્ય છે.

'રાષ્ટ્ર' એટલે જે પ્રદેશ એક જ પ્રાકૃતિક સીમાથી બદ્ધ હોય અને જયા એક જ સંસ્કૃતિના લોકો રહેતા હોય. જે ધર્મદ્વારા રાષ્ટ્ર ઉન્નત બને, સુવ્યવસ્થિત બને, દેશવાસીઓની સંપત્તિ સુરક્ષિત રહે, એમાં સુખ અને શાન્તિ પ્રવર્તી રહે,

તથા અન્ય કોઈ અત્યાચારી રાષ્ટ્ર એ રાષ્ટ્રના અંગ પર અત્યાચાર ન કરી શકે, એનું નામ રાષ્ટ્રધર્મ.

જન્મભૂમિનું મહત્ત્વ

મનુષ્ય એક સામાજિક પ્રાણી છે. એથી સમાજ વ્યવસ્થા ખાતર એને કેટલાક નિયમોનાં બંધનોનો સ્વીકાર કરવો પડે છે. જે સામાજિક પ્રાણી છે, જે સમાજની વચ્ચે રહે છે, એ પશુઓની જેમ ન જ રહી શકે. મનુષ્યે પોતાની સુવ્યવસ્થા માટે જાતિ, વર્ગ, સમાજ અને રાષ્ટ્રની વ્યવસ્થા કરી છે, તો એ સૌના પ્રત્યે પણ એનું કંઈ ને કંઈ કર્તવ્ય બની રહે છે. આ કર્તવ્યોના પાલનદ્વારા જ સમાજવ્યવસ્થા બરાબર ટકી રહે છે. વ્યક્તિઓનો સમૂહ એ જ સમષ્ઠિ છે, એથી હરેક વ્યક્તિએ પોતપોતાના કર્તવ્યનું પાલન કરવું જ જોઇએ. આમ જો દરેક વ્યક્તિ પોતાના કર્તવ્યનું પાલન કરે તો તે જાતિ, વર્ગ, સમાજ અને રાષ્ટ્રને ઉન્નત કરવામા યશભાગી બને છે. જો કર્તવ્ય ચૂકે છે તો એ સૌને નુકશાન જ કરે છે, કારણ કે વ્યક્તિ પોતે સમાજ અને રાષ્ટ્રના એક અંશરૂપ છે. એટલા માટે જ રાષ્ટ્રની ઉન્નતિનો ભાર હરેક વ્યક્તિ પર નાખવામાં આવ્યો છે. રાષ્ટ્રની પ્રત્યેક વ્યક્તિનો એ ધર્મ બની રહે છે કે એણે જ્યાં જન્મ લીધો છે, જે ભૂમિનો ખોળો ખૂંદીને બાળપણ વ્યતીત કર્યું છે, જેનું અન્નજળ ગ્રહણ કરે છે, જેની હવાનો શ્વાસ લે છે, અને એવી રીતે જ્યાં એ પોતાનું સમગ્ર જીવન જીવી રહ્યો છે, એ માતૃભૂમિને માટે કંઈ ને કંઈ કરી છૂટે. કીધું છે કે—

यद्देशीयजलानिलैर्वपुरिदं सन्धारितं पोषितं ।
यच्छिक्षाव्यवहारतो निपुणता बुद्धेः समासादिता ॥
यस्माज्जीवनसाधनानि वसनाऽन्नादीनि लब्धानि वा ।
तषां प्रत्युपकारिणी सुमनजाः सेवा समाश्रीयताम् ॥

જે માતૃભૂમિ માતાની પેઠે લાલનપાલન કરે છે એના પ્રત્યે આપણું કંઈક કર્તવ્ય તો અવશ્ય બની રહે છે. જનની અને જન્મભૂમિ માટે પ્રત્યેક વ્યક્તિને ગૌરવ હોવું જોઈએ. પ્રત્યેક રાષ્ટ્રવાસીનો એ આદર્શ હોવો જોઈએ કે જનની જન્મભૂમિ એ સ્વર્ગાદપિ ગરીયસી, અર્થાત્–જન્મદાત્રી માતા અને જન્મભૂમિ સ્વર્ગના કરતા પણ વધુ મહાન્ છે. એથેન્સના એક વિદ્વાને એથેન્સવાસીઓને ઉપદેશ આપતા કહ્યું હતું, "હે એથેન્સ વાસીઓ ! એથેન્સનું ગૌરવ હરપળ તમારા દિલ અને દૃષ્ટિથી દૂર જવું ન જોઈએ. તમારા દિલમા જો દેશગૌરવનું અભિમાન હશે તો દુનિયાની મહાનમાં મહાન શક્તિ પણ તમારો વાળ વાંકો નહિ કરી શકે. તમારા પર દુનિયાની કોઈ શક્તિ હકૂમત ચલાવી નહિ શકે. તમે તમારા રાષ્ટ્રગૌરવને સમજતા રહેશો તો સદાય સ્વતંત્ર રહીને સુખ અને શાન્તિનો ઉપયોગ કરી શકશો." આ શબ્દોદ્વારા દેશનું મહત્ત્વ સ્પષ્ટ રીતે સમજાઈ આવે છે. આનો અર્થ એ છે કે જે દેશના લોકો સ્વદેશાભિમાની છે, તેઓ કદિ પણ પરતંત્ર રહી શકતા નથી. ગુલામીની બેડીઓ એમને જકડી શકતી નથી. ભારતવર્ષના પતનનું કારણ જો આપણે વિચારીશું તો જણાશે કે અનેક કલંક્તિ વ્યક્તિઓએ સ્વદેશાભિમાનને વિસરાવી દીધું અને દેશદ્રોહ કરી એને પરતંત્ર બનાવ્યો. આ કલંકિત વ્યક્તિઓમા જયચન્દ્ર, મીરજાફર, અમીચંદ વગેરે પોતાનાં કરતૂકો માટે મશહુર છે.

જયચન્દ્ર પોતાના વીર ભાઈ પૃથ્વીરાજનો અભ્યુદય સહન કરી શકયો નહિ. એથી ઇર્ષાથી પ્રેરાઇને મુસલમાનોને હિંદુસ્તાનમા બોલાવી દેશદ્રોહનું ભયંકર પાપ કર્યું. એવી જ રીતે મીરજાફર અને શેઠ અમીચંદે લોભમા ફસાઈ ઇસ્ટ ઇંડીઆ કંપનીને સાથ આપ્યો અને વિદેશી શાસનનો પાયો વધુ મજબુત બનાવ્યો. આ નરાધમો ચાંદીના ટૂકડા અને અધિકારના લોભમા દેશધર્મ ભૂલ્યા અને દેશને પરતંત્રતાની વેદનાઓ વચ્ચે મૂકી દીધો. આ દેશદ્રોહીઓ પર ભારતની જનતા હંમેશાં ફિટકાર વરસાવતી રહી છે, અને વરસાવ્યા કરશે. આ કલંકિત સ્વાર્થીઓના ભયંકર પાપોના પરિણામો આજ સુધી ભારતની પ્રજાએ ભોગવ્યાં અને ભારતની કરોડોની જનતા પર મુઠ્ઠીભર વિદેશીઓએ રાજ કર્યું.

સ્વાર્થ કરતા દેશ હમેશા મહાન છે એ સત્યને કદી પણ ભૂલવુ જોઇએ નહિ. દેશ સર્વોપરી છે, સર્વશ્રેષ્ઠ છે. ખરી રીતે તો જેમનુ રાષ્ટ્ર સ્વતંત્ર છે, તે લોકોજ ધર્મને જાળવી શકે છે, અને તેની ઉન્નતિ કરી શકે છે ભારતમા આજે જોતજોતામાં ખ્રિસ્તીઓની સંખ્યા કેટલી વધી ગઇ છે, એ તમે જોઇ શકો છો, એનું કારણ શું ? એનું એ જ કારણ હતું કે ખ્રિસ્તીધર્મને રાજસત્તાનો આશ્રય હતો. આપણા દેશમા વિદેશી ધર્મ વૃદ્ધિ પામે તે આપણા માટે શરમની વાત કહેવાય. આપણો ધર્મ જો અહીં ઉન્નતિ નહિ કરે તો શું વિદેશમા કરશે ? અફસોસની વાત છે કે આપણે દેશગૌરવને ભૂલી ગયા છીએ. દેશાભિમાન, સંસ્કૃતિગૌરવ, ભાષા અને રહેણીકરણી એ સૌ પ્રત્યેના આદરભાવ આપણે વિસરી ગયા છીએ. સદીઓની

ગુલામીએ સ્વતંત્રતાની ભાવના પણ ભુલાવી દીધી છે. આપણું જ્વલંત ગૌરવ આપણને ઉત્સાહિત કરતું નથી, આપણી નસોમા દોડતું ખૂન ઠંડું પડી ગયું છે. આ પરતંત્ર ભારભૂત જીવન કરતા તો સ્વતંત્ર વાતાવરણમાં જીવનનો ખેલ ખેલી લેવો એ અનેકગણું ઉત્તમ છે. કોઇ કવિએ કહ્યુ છે—

જિસકો ન અપને દેશકા ગૌરવ તથા અભિમાન હૈ,
વહ નર નહીં નર-પશુ નિરા હૈ ઔર મૃતક સમાન હૈ

જેને પોતાના દેશનું ગોરવ મથી, જેને સંસ્કૃતિ, ભાષા અને વેશભૂષા પર અભિમાન નથી, એ મનુષ્ય નથી, પણ કેવળ મનુષ્યના રૂપમા પશુ છે. એ જીવતો હોવા છતા મડદું જ છે.

પશુ અને મનુષ્યમાં શો ફેર ? પશુ ખાવાપીવામાં જ સર્વસ્વ માને છે. જ્યારે મનુષ્ય પોતાના સ્વાર્થો ઉપરાત ધર્મનું આચરણ પણ કરે છે. જે મનુષ્ય પોતાના સ્વાર્થોને સર્વ કંઈ માને છે, ખાવું, પીવું, એશઆરામ કરવો તથા ધન કમાવું એને જ જીવનનું ધ્યેય સમજે છે, તે મનુષ્ય પશુપ્રકૃતિવાળો છે. પોતાને મનુષ્ય કહેવડાવવાનો એને અધિકાર નથી. માનવ-દેહ મળ્યો એથી જ કોઈ પોતાને માનવ ન કહી શકે, ન કહેવ-રાવી શકે. સાચો માનવી પોતાના સ્વાર્થોને ગૌણ સમજે છે અને ધર્મ, કર્તવ્ય તથા દેશની પ્રતિષ્ઠાને પ્રધાન સ્થાન આપે છે. દેશને માટે એ પોતાના સ્વાર્થોનો ત્યાગ કરે છે. દેશની બલિ-વેદી પર એ પોતાનું સર્વસ્વ–પ્રાણ પણ–અર્પણ કરી દેવાને તત્પર રહે છે.

આદર્શ દેશપ્રેમ

મેવાડનો ઇતિહાસ દેશપ્રેમ અને સ્વાભિમાનનું જીવંત ચિત્ર છે. વીરશિરોમણિ હિન્દુકુલ–સૂર્ય મહારાણા પ્રતાપે દેશની સ્વાધીનતા તથા સ્વમાન માટે રાજસુખનો ત્યાગ કર્યો. તેઓ વનવનમાં ભટકતા રહ્યા, પરંતુ બાદશાહ અકબરનું શરણ એમણે સ્વીકાર્યું નહિ. વનમાં એમણે ઘાસના રોટલા ખાવાનું પસંદ કર્યું, પણ પરાધીન થઈ રાજસુખોનો ઉપભોગ કરવામાં પાપ માન્યું. પરાધીન થઈ વિશાળ રાજમહેલોમાં નિવાસ કરવાને બદલે આઝાદ બની ગાઢ જંગલોમાં ભટકવાનું એમણે ઉચિત માન્યું. પરાધીન મહારાણા કહેવડાવવાને બદલે અકિંચન પણ સ્વતંત્ર પ્રતાપ તરીકે ઓળખાવવામાં એમણે ગૌરવ માન્યું. એજ કારણે આજે મહારાણા પ્રતાપ માત્ર ભારતના જ નહિ, પરંતુ સમગ્ર સંસારના એક અભિમાનરૂપ છે. આવા નરરત્નો– વડે જગત ગૌરવાન્વિત છે. રાણા પ્રતાપે સમસ્ત સંસારમાં ભારતનું મસ્તક ગૌરવભર્યું ઉન્નત રાખ્યું છે. મેવાડની મહિલાઓએ પોતાના દેશને માટે અદ્ભુત આત્મબલિદાન આપ્યા. સ્વદેશ અને સ્વધર્મની રક્ષા ખાતર હસતે મુખે અગ્નિ જવાળાઓમાં સ્નાન કરવું એ તો એમને મન રમત વાત હતી. મહારાણી પદ્મિનીએ જૌહરની જવાળામાં પોતાના સુવર્ણ સમાન દેહને ભસ્મ કર્યો. પરંતુ એ કાર્યદ્વારા સ્વધર્મ અને સ્વદેશની ઈજ્જત સાચવી. આ પવિત્ર નારીઓએ પોતાના દેશની પ્રતિષ્ઠા માટે પોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી દીધું. અહા ત્યાગ ! અહા બલિદાન ! અહા સ્વદેશપ્રેમ !.

સ્વદેશપ્રેમનું અન્ય ઉદાહરણ એક બીજી ઐતિહાસિક વાતમાથી પણ મળે છે.

મહારાણા સંગ્રામસિંહજી પછી મહારાણા વિક્રમાદિત્ય ચિત્તોડની રાજગાદી પર બેઠા. એ સમયે ગુજરાતનો બાદશાહ બહાદુરશાહ હતો. બહાદુરશાહને ચાંદખા નામનો એક ભાઈ હતો. એ મેવાડના મહારાણાને શરણે આવ્યો હતો. બહાદુરશાહે મહારાણાને કહેવડાવ્યું "ચાંદખા વિદ્રોહી છે તમે એને મારે હવાલે કરી દો, નહિતર મારે મેવાડ પર ચઢાઇ કરવી પડશે." મહારાણાએ ઉત્તર મોકલ્યો, "જેણે મેવાડનું શરણ સ્વીકાર્યું છે, તેને હરેક પ્રકારે રક્ષણ આપવું એ મારું કર્તવ્ય છે જે મેવાડમા આવ્યો છે, તે મેવાડનો જ થઇ ચૂક્યો છે હવે તો એની ઇજ્જત એ જ મેવાડની પણ ઈજ્જત છે. શરણાગતની રક્ષા કરવી એનું નામ ક્ષાત્રધર્મ. આ કારણે ચાંદખાને આપને હવાલે નથી કરી શકતો." આખરે બહાદુરશાહ મેવાડ પર ચઢી આવ્યો. એ વખતે મેવાડના ધનકુબેર શ્રી ધનદાસ નામના એક શેઠ હતા. એમની પત્નીનું નામ માયા હતું. ધનદાસ તો શેઠ હોવા છતા ખરેખર જ ધનના દાસ હતા. એમનું એક માત્ર ધ્યેય કોઈ પણ રીતે ધન કમાવાનું જ હતું. તેઓ ધનને જ પોતાનો આરાધ્ય દેવ સમજતા હતા. આ રીતે તેઓ ધનની પ્રાર્થના કર્યા કરતા—

'પિતુ, માતુ, સહાયક, સ્વામી, સખા
તુમહી ધનદેવ હમારે હો'

જેને માટે ધન એ જ સર્વસ્વ છે, તે વ્યક્તિ ધર્મ, કર્તવ્ય દેશપ્રેમ વગેરેને કેવી રીતે સમજી શકે ? બહાદુરશાહે સોના-

મહોરોથી ભરપૂર એક મોટી થેલી ધનદાસને આપી. શેઠે ધનની આ લાલચમાં ફસાઇને બહાદુરશાહની સેનાને મદદ પહોંચાડવાનો ઇજારો લીધો. જે માણસ લોભી અને ધનનો ગુલામ છે એ એમ નથી જાણતો કે મારા થોડા સ્વાર્થને લીધે મારા દેશ અને દેશવાસીઓને કેટલું કષ્ટ સહન કરવું પડશે! એ તો ધર્મકર્મને અભરાઇએ ચડાવી ધનોપાર્જનમાં જ મશગુલ રહે છે. એને એ પણ પરવા નથી હોતી કે આ ધન નીતિપૂર્વક આવી રહ્યું છે કે અનીતિપૂર્વક. ધનદાસ સુવર્ણ-મહોરોની થેલી લઇને પોતાને ઘેર આવે છે અને ખૂબ પૈસો મળ્યો હોવાથી ખૂબ આનંદિત થાય છે. થેલીને તૃષ્ણાભરી નજરથી જોતા પોતાનું ગીત ગાય છે—

'પિતુ, માતુ, સહાયક, સ્વામી સખા તુમહી ધનદેવ હમારે હો'

ધનદાસ જ્યારે ધનદેવની સ્તુતિ કરી રહ્યા હતા, ત્યારે એમની પત્ની માયા ત્યા આવી પહોંચી, અને પતિદેવને આજે ખૂબ જ પ્રસન્ન જોઇને બોલી: "નાથ! આજ તો તમે કંઇ બહુ જ પ્રસન્ન થતા દેખાઓ છો? આનું કારણ શું? આ આનંદનું કારણ બતાવી મને પણ તમારા આનંદની ભાગીદાર બનાવો."

ધનદાસે કહ્યું: "પ્રિયે! આજે મોટા આનંદનો દિવસ છે. તુ જાણે છે કે ગુજરાતના બાદશાહ બહાદુરશાહે મેવાડ પર ચઢાઇ કરી છે?"

'દેશ પર સંકટ આવ્યું છે અને તમે આનંદ કરો છો? લાખો જીવોના સંહારથી તમને શું મળશે કે તમે આટલા

ખુશી થાઓ છો ? શું આ ભીષણ નર-સંહારમાથી તમને આનંદ મળશે ? " માયા બોલી.

" તને ખબર નથી પ્રિયે ! જ્યારે યુદ્ધ ફાટી નીકળે છે ત્યારે વેપારીઓને ઘેર ઘીના દીવાઓ બળે છે. હવે તું કંઈ ન પૂછ. મારી પાંચે આંગળિયો ઘીમા છે. આજે તો મારા પાસા પોબાર છે. મેં બહાદુરશાહને સામગ્રી પહોંચાડવાનો ઇજારો લીધો છે. કેવી મઝા ! એકના દસ દમ થશે. દેવી ! આજે તો મારા આનંદનો દિવસ છે. એની તું વાત પૂછ મા ! "

" છી· ધિક્કાર છે, તમને. દેશનો આવો દ્રોહ ? હું કહું છું કે સ્વામી આવું ભયંકર પાપ ન કરો. લાખો દેશવાસીઓની હાય ન લો. આ દેશદ્રોહ ન કરો, ભયંકર પાપથી દૂર રહો."

" પણ જો હું પાપ ન કરું તો તારી આ ચટકમટક કેવી રીતે ચાલુ રહી શકે ? ધનથી જ તું આ શણગાર સજી મોજ ઉડાવે છે."

ધનદાસના આ વચનો સાંભળીને માયા પોતાનાં આભૂષણો ઉતારીને ફેંકી દે છે અને કહે છે· " ખાડમા પડે આ ચટકમટક, સ્વામી ! મારે ભપકા નથી જોઇતા. હું બધું દુ:ખ સહન કરી લઈશ. હું ભૂખી પણ રહીશ. મારે બહુમૂલ્ય વસ્ત્રો અને આભૂષણોની જરૂર નથી. હું તો તમને કહું છું કે આવું ભીષણ પાપ ન કરો અને દેશ તરફ નજર નાખો."

ધનદાસે કહ્યું : " પાપ ! અરે પાપ તે કેવું ? અમને તો જે વધુ પૈસા આપે એને અમારી ચીજ વેચીએ. એમાં પાપ

કેવું ? અમને તો અમારા સ્વાર્થથી કામ છે. દેશની સાથે શું પ્રયોજન ? મારે તો મારા કામથી જ મતલબ."

માયા ઓજસભરી વાણીમાં બોલી : "ધિક્કાર છે તમને ! આવા વેપારમાં ભલે આગ લાગે. લાખો મેવાડવાસીઓના અભિશાપ ન લો. જરા વિચાર કરો. થોડા ચાંદીના ટૂકડાઓના લોભમાં પડી માતાની ઇજ્જતને ધૂળમાં ન મેળવો. મેવાડના લાખો માનવીઓને દુ:ખી કરી તમે દુ:ખી નહિ રહી શકો. જરા ગંભીર થઇને વિચાર કરો. જેનું તમે અન્ન ખાઓ છો, પાણી પીઓ છો, જેની હવામાં તમે શ્વાસ લો છો, જેણે માતા બની પુત્ર સમાન તમારું પોષણ કર્યું છે, એ મેવાડ-માતાને તમે ચાંદીના ટૂકડાઓ માટે વેચી નાખશો ? એ લોભમાં પડી તમે તમારી માતાને બીજાના હાથમાં સોપવાનું અક્ષમ્ય પાપ કરશો ? બોલો નાથ ! મને સદાને માટે કલંકિની બનાવવા ચાહો છો કે હું મારી શ્રદ્ધાના પુષ્પો તમારે ચરણે ધરું એ ચાહો છો ? નાથ ! આ દુષ્ટ પ્રયાસ છોડી દો. આ આસુરી કૃત્ય ન કરો, મારા દેવતા ! લાખો બાળકો, સ્ત્રીઓ અને પુરુષોના મોમાથી અન્નના કોળિયા ઝૂંટવીને ધનને માટે બીજાને ન સોપો. શું હું એવી આશા રાખી શકું કે તમે આ કાર્ય નહિ કરો અને મને તમારા જેવા સ્વામી મળ્યા એનું ગૌરવ લેવાનો મોકો આપશો ? બોલો બોલો, નાથ ! શુ ઇચ્છા છે ?"

માયાની આ ઓજસ્વિની વાણીએ ધનદાસની આંખો ખોલી દીધી. એણે કહ્યુ · "ધન્ય દેવી ! તું એક આદર્શ મહિલા છે. તેં મને આજે ભયંકર પાપના ખાડામા પડતો બચાવી લીધો. ખરેખર હું એક ભયંકર પાપકર્મ કરી રહ્યો હતો. હું આ

પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરું છું. માયા! લઈ આવ મારી બધી તિજોરીઓમાં ભરેલું ધન અને જે વીર યોદ્ધાઓ પોતાની માતૃભૂમિની રક્ષા ખાતર યુદ્ધના મેદાનમાં ખપ તેમના બાળ-બચ્ચાં, સ્ત્રીઓ તથા કુટુમ્બીજનોની સેવા અર્થે તેનો છૂટે હાથે ઉપયોગ કર."

"ધન્ય છે સ્વામી!" માયા બોલી. "તમારે માટે એ હવે અભિમાન અને ગૌરવ લઈ શકું છું. અમારા વણિકોનો ધર્મ ધન-સંગ્રહ કરવાનો નથી, પરંતુ દેશના હિતના ધનનો ત્યાગ કરવો એ સાચા વણિકનો ધર્મ છે. સ્વામી! આજે આનંદનો દિન છે. આનંદ ઉજવો."

બંધુઓ! આ કથામાં કેવો દેશપ્રેમ ભર્યો છે! એના પર જરા વિચાર કરો. એના તત્ત્વનું મનન કરો અને એના પાલન તથા અનુશીલન માટે તત્પર બનો. તમારામાં મોટે ભાગે વણિકનો સમુદાય છે. વણિકનો ધર્મ શું છે? આ કથામાં એ સારી રીતે બતાવવામાં આવ્યો છે. આ કથા સાંભળ્યા પછી તમે એની સાથે તમારી તુલના કરો. તમારા હૃદય અને આત્માને જરા ઢંઢોળો. શું એમાં એવી ભાવના તો નથી ને કે જે દેશના હિતમાં બાધક બને તેવી હોય? તમે તમારા દિલને જ એ પ્રશ્ન પૂછો કે તમે એવું કોઈ કામ તો નથી કરી રહ્યા જે દેશને માટે ખતરનાક હોય? તમે તમારા થોડા ધનને માટે દેશનું મોટું નુકસાન તો નથી કરી રહ્યા ને? શું તમારો વેપાર એવા પ્રકારનો તો નથી ને કે એ તમને તો આર્થિક લાભ આપી રહ્યો હોય, પણ દેશને હાનિ પહોંચાડી રહ્યો હોય? આ પ્રશ્નો પર તમે વિચાર કરો.

વિદેશી વસ્તુઓનો બહિષ્કાર.

વિદેશી વસ્તુઓનો વેપાર અને તેમનો ઉપયોગ ભારતની આર્થિક હાનિ માટે કારણભૂત છે. એક સમય જે ભારતવર્ષ સુવર્ણદેશ તરીકે મશહુર હતો, જેની સમૃદ્ધિ અને સંપત્તિ પર સંસારના અન્ય રાષ્ટ્રો લાલચભરી નજર નાખી રહ્યાં હતાં, એજ ભારતવર્ષ આજે ભયંકર દરિદ્રતાના સકંજામાં પડયો છે. એક સમયનો દુનિયાનો સૌથી સમૃદ્ધ દેશ આજ સૌથી વધુ કંગાળ બની રહ્યો છે, તેનું મુખ્ય કારણ એ છે કે આ દેશના ઉદ્યોગ–ધંધાઓને વિદેશી શાસકોએ પોતાની સત્તાદ્વારા ભારે નિર્દયતાથી નષ્ટભ્રષ્ટ કરી નાખ્યા છે. અહીંના પ્રસિદ્ધ કારીગરોના હાથના અંગૂઠા કાપી નાખવામા આવ્યા કારણ કે એથી તેઓ સુંદર વસ્ત્ર તૈયાર કરતા બંધ થાય અને વિદેશોમાંથી આયાત થયેલા કાપડનો ભારતવાસીઓ ઉપયોગ કરે. આમ જ્યારે ભારતના ઉદ્યોગધંધા બંધ પડયા ત્યારે પોતાના ઉપયોગની વસ્તુઓ માટે એને પરાશ્રયી બનવુ પડયું. જે રાષ્ટ્ર પોતાની જરૂરીઆતોને પોતે જ સંપૂર્ણ રીતે પૂર્ણ કરી ન શકે અને અન્ય રાષ્ટ્રો પર અવલંબિત રહેવું પડે તો તે રાષ્ટ્ર દિનપ્રતિદિન દરિદ્ર થતું જાય. ભારતની પણ એજ દશા છે. એક વખત એવો હતો કે જ્યારે ભારતમા બનેલી અનેક ચીજો પરદેશોમાં જતી અને અન્ય દેશોના સમ્રાટો તો ભારતમા બનેલા કપડા પહેરવામા ગૌરવ માનતા. એજ દેશ આજે વસ્ત્રો માટે તથા અન્ય વસ્તુઓ માટે વિદેશો પ્રતિ મીટ માંડી રહ્યો છે. એજ એની દીનતાનું મુખ્ય કારણ છે. વિદેશી ચીજોનો વેપાર કરવો એનો અર્થ એ કે ભારતની

સંપત્તિ વિદેશોમાં ધકેલવી. એવી જ રીતે વિદેશી વસ્તુઓનો ઉપયોગ કરવો એનો અર્થ ભારતની સંપત્તિને વિદેશમાં મોકલવા માટે પ્રોત્સાહન આપવું. આ બન્ને પ્રશ્નો રાષ્ટ્ર ધર્મની વિરુદ્ધ છે. આ હકીકત હોવા છતાં અનેક લોકો વિદેશી વસ્તુઓના એજન્ટ બને છે અને તેમનો વેપાર કરે છે તે લોકો એટલો પણ વિચાર નથી કરતા કે તેમના ફાયદા જ ખાતર દેશને કેટલી મોટી હાનિ થઇ રહી છે. પરદેશી વસ્તુઓની આયાત થતા ભારતનો ઉદ્યોગ નાશ પામ્યો અને તેને કારણે અહીંના લોકો બેકાર બન્યા. બેકારીની સમસ્યા દેશ માટે એક ગંભીર તબક્કે પહોંચી ગઈ છે. આ વધતી જતી બેકારીની સમસ્યા ઉકેલવા માટે મહાત્મા ગાંધીજીએ વિદેશી વસ્તુઓનો બહિષ્કાર અને ગૃહઉદ્યોગોનો વિકાસ એ બે ઉપાયો દેશ સમક્ષ રજૂ કર્યા છે. દેશની વર્તમાન પરિસ્થિતિમાં આ બે ઉપાયજ આ સમસ્યાનું નિવારણ કરી શકે તેમ છે. તેજ આશયથી દેશમા સ્વદેશનું આદોલન શરૂ કરવામાં આવ્યું હતું. આ આંદોલનથી વિદેશી વસ્તુઓનો વેપાર કરનારા કેટલાક વેપારીઓને નુકસાન થયું એટલે તેઓ કહેવા લાગ્યા કે "ગાધીજીએ દેશના વેપારને પાયમાલ કરી નાખ્યો." પરંતુ સ્વાર્થના ચશ્માને જરા દૂર કરી જો દેશના દૃષ્ટિકોણથી આ વાતનો તેઓ વિચાર કરશે તો તેમને ખાત્રી થશે કે આ આદોલનથી દેશને મોટો લાભ થયો છે. કોઇને પણ હાનિ ન પહોચે એવું બનવું તો રાષ્ટ્ર ધર્મમા અશક્ય છે. રાષ્ટ્રનાયકની એ ફરજ છે કે જેનાથી વધુમા વધુ દેશવાસીઓનું હિત થાય તે કામ તેણે કરવું જોઇએ. અને જે ધર્મદ્વારા અધિકમા

અધિક સંખ્યાના લોકોનું ભલું થાય તે જ રાષ્ટ્રધર્મ. તો પછી થોડાક વિદેશી માલના એજન્ટોની નુકસાનીનો ખ્યાલ રાખીને સમગ્ર રાષ્ટ્રનું કલ્યાણ તે કઇ રીતે જતું કરી શકે? સ્વદેશી આંદોલનથી દેશને જે લાભ થયો છે, તે સ્વાર્થના ચશ્મા દૂર કરવાથી સ્પષ્ટ રીતે જણાઈ આવે છે.

કોઇ બાગમાં હજાર વૃક્ષ આંબાનાં હોય, અને કદાચ દસ વીસ વૃક્ષ લીંબુ કે જાંબુનાં હોય તો પણ એ બાગ તો આંબાનો બાગ જ કહેવાશે. એવી જ રીતે આ દેશમાં ગરીબો ખૂબ વસે છે અને ધનિકો તો 'આટામા મીઠું' એ પ્રમાણમાં રહે છે, તો આ દેશ ગરીબોનો કે ધનિકોનો? આ દેશ ગરીબોનો દેશ છે એવી સ્પષ્ટતા કરવાની જરૂર રહેતી નથી. એથી ભારતનો રાષ્ટ્રધર્મ એ બની રહે છે, જેનાદ્વારા ગરીબોનું હિત થાય. જયા સુધી રાષ્ટ્ર સુખી નહિ કહેવાય, થોડા શ્રીમંતોનું વધતું જતું ધન જોઈને એમ ન જ કહી શકાય કે દેશ સુખી થઈ રહ્યો છે.

અત્યંત દુઃખની સાથે કહેવું પડે છે કે આ દેશમાં શ્રીમંત અધિક શ્રીમંત બનતો જાય છે, અને ગરીબ અધિક ગરીબ બનતો જાય છે. દેશરૂપી શરીરની આ મોટી વિષમતા છે. એ ખૂબ ખતરનાક છે. કલ્પના કરો કે એક શરીરનો પગ લોહીના ભરાવાને કારણ ખૂબ ભારી બની ગયો છે, અને બીજો પગ લોહીના ભ્રમણને અભાવે તદ્દન ક્ષીણ બની ગયો છે. આ શરીરની શી દશા થાય? કહેવાની જરૂર નથી કે એવું શરીર અધિક સમય સુધી ટકી ન શકે. આવી જ હાલત આજે આપણા દેશની છે. એક બાજુ કરોડો લોકો અનાજના એક એક કણ માટે તલપી રહ્યા છે, પેટની જવાળાને શાંત કરવા

માટે રોટીનો સૂકો ટૂકડો પણ મેળવી શકતા નથી, ત્યારે બીજી બાજુ એટલું ધન એકત્રિત થયું છે કે ભૂખ ન હોવા છતાં કેટલાક શ્રીમંતો તરેહતરેહના માલમલીદા ઉડાવી રહ્યા છે અને મોજશોખમાં મસ્યા રહે છે. આ બન્ને અવસ્થાઓ આપણા દેશ માટે વ્યાધિરૂપ છે. કવિએ કહ્યુ છે—

જગ પીડિત હે અતિ દુખસે, જગ પીડિત હે અતિ સુખસે

સમાજની આ વિષમતાની ખાઈ જો વધારે ને વધારે ઉંડી અને પહોળી થતી જશે તો સમજી લેજો કે વિનાશ કોઇથી રોકયો રોકી શકાશે નહિ. આ વિષમતા દૂર થાય એવો પ્રયત્ન થવો જોઇએ.

સ્વાર્થની ભાવનાને દૂર કરીને જો કોઈ વિચાર કરે તો ખબર પડે કે રાષ્ટ્ર કેવી રીતે સુખી બને.

એક સમયે એક દેવ કોઇ બુદ્ધિમાન મનુષ્ય પર પ્રસન્ન થયા. એમણે એને કહ્યુ કે તને બેમાથી એક ચીજ આપી શકું. તું ચાહે તો તને દાડમ, નારંગી, દ્રાક્ષ વગેરે ઉમદા ફળોનાં વૃક્ષો આપું. અને જો ચાહે તો ઘઉં, જવ, વગેરેના નાના નાના છોડ આપું. આ બેમાંથી તારી ઇચ્છા પ્રમાણે એક માગી લે, પેલા બુદ્ધિમાન મનુષ્યે કહ્યુ મારે દાડમ, નારંગી વગેરે વૃક્ષો નથી જોઈતા. મારે તો ઘઉં, જવ, વગેરે નાના નાના છોડ જોઇએ છે. દેવતાએ એને પૂછ્યું કે મોટા મોટા વૃક્ષોને છોડીને આ નાની નાની ચીજો તું કેમ માગે છે? પેલાએ જવાબ આપ્યો: દાડમ, નારંગી, વગેરે ફળોથી તો શ્રીમંતો અને ઉમરાવોના મોજશોખ પૂરા થાય છે. પરંતુ ઘઉં, જવ, વગેરેથી તો ગરીબ

અને ઉમરાવ એ બન્નેનું સમાનરૂપે સંરક્ષણ થાય છે. આથી થોડા શ્રીમંતોને માન ન આપતાં સમગ્ર દુનિયાને જેનાથી લાભ મળી શકે તેવી ચીજ માગી રહ્યો છું. હવે એની બુદ્ધિને ધન્યવાદ આપ્યો અને આશીર્વાદ પણ આપ્યા. આ રીતે મનુષ્ય જ્યા સુધી સ્વાર્થને છોડીને સર્વની સગવડનો વિચાર નહિ કરે ત્યાં સુધી રાષ્ટ્રના કલ્યાણની ભાવના એનામા પ્રગટી શકશે નહિ. જેમાં જનસાધારણનું કલ્યાણ છે, તેમાં જ રાષ્ટ્રનું પણ કલ્યાણ છે.

રોટીનો પ્રશ્ન

માત્ર નદી, પર્વતો કે નકશાઓની સીમા–સરહદોમા રાષ્ટ્રનો દેહ સમાવિષ્ટ થતો નથી. દેશમા વસતા માનવીઓ સાથે પણ એને સંબંધ છે. રાષ્ટ્રમાં વસતા લોકો અધિકમા અધિક સુખ પ્રાપ્ત કરે, રાષ્ટ્રની પ્રત્યેક વ્યક્તિને પૂરતા અન્નવસ્ત્ર તથા જીવનની અન્ય સર્વ સામગ્રી મળે એવી વ્યવસ્થા કરવી એનું નામ રાષ્ટ્રધર્મ. જ્યા સુધી જનતાની રોટીની સમસ્યા નહિ ઉકલે, ત્યાં સુધી ધર્મપાલનનો ઉપદેશ એને અસર નહિ કરે. ભૂખ્યો માનવી શું ધર્મ આચરશે? પરિશ્રમ કરવાથી પણ જો એને પેટ પૂરતું ખાવાનું નથી મળી શકતું તો એ વિદ્રોહી, હત્યારો અને ડાકુ બને છે. "ભૂખ્યો માનવી શું નથી કરી શકતો?" એ કહેવત મશહૂર છે. એથી સૌ પ્રથમ આપણી સામે જે પ્રશ્ન ઉભો થયો છે, તે રોટીની સમસ્યા ઉકેલવાનો છે. શ્રીમંતોએ ગરીબોની મહેનતવડે પોતાની તિજોરીઓ ભરી છે, તો તેમનું એ કર્તવ્ય છે કે ગરીબોની રોટીના પ્રશ્નનું નિરાકરણ થઈ જાય એવા પ્રયત્નો એમણે કરવા જોઈએ. ગરીબો

પાસેથી પૈસા એકઠા કરી તેમના હિત ખાતર જ જો એ ધનનો ઉપયોગ ન થાય તો તે અમાનુષિકતા કહેવાય. શ્રીમંતોનો એ ધર્મ બની રહે છે કે તેઓ દેશવાસીઓ પ્રત્યે ભાઇ જેવો વર્તાવ રાખે અને એવી પ્રતિજ્ઞા કરે કે 'જ્યા સુધી કોઇ ભાઇ ભૂખ્યો રહે ત્યા સુધી અમે મોજમજા નહિ ઉડાવીએ અને ગરીબ ભાઇઓના દુ:ખો દૂર કરીને જ અમે આરામ કરીશું.' જો શ્રીમતોમા ગરીબો પ્રત્યે પ્રેમ ઉદ્ભવે તો દેશમાથી ઘણીખરી ગરીબી શીઘ્ર દૂર થઈ શકે. શ્રીમંતો પોતાની લક્ષ્મીનો ઉપયોગ પોતાના દેશબંધુઓના કલ્યાણમા જ કરે એમા જ એમની શોભા છે, મહત્તા છે, પરંતુ આપણે જોઇએ છીએ કે ભારતવર્ષમાથી રાષ્ટ્રધર્મનો લોપ થઈ ગયો છે. ભારતીય કહેવાતા કેટલાયે લોકો વિદેશીઓના અનુકરણમા જ પોતાનું ગૌરવ સમજે છે. પોતાની રહેણીકરણી, વેશભૂષા તથા ભાષાને છોડી અંગ્રેજ બનવાની કોશીશ કરતા નજરે પડે છે, આપણા અન્ય દેશવાસીઓ પ્રત્યે ઘૃણાની નજરે જુએ છે, અને જો કોઇ અંગ્રેજ આવી ચડે તો તેને સલામ ભરે છે. આવા લોકો ભારતના હિતમા મોટા વિઘ્નરૂપે છે. અહીં ભારતવાસીઓમાંથી રાષ્ટ્રધર્મનો લોપ થઈ રહ્યો છે, તો ત્યાં–યુરોપનાં રાષ્ટ્રોમાં પોતાના દેશો પ્રત્યે કેવી સન્માનની ભાવના પ્રવર્તી રહી છે! ત્યાંના લોકો વિદેશમા રહેતા હોવા છતાં પોતાના જ દેશની વસ્તુઓ ઉપયોગમાં લે છે. એમનું મૂલ્ય કદાચ ભારે આપવું પડે તો તેની ચિંતા તેઓ કરતા નથી. તેમને અન્ય

દેશોની વસ્તુઓ સસ્તી અને સારી મળે તો પણ તેઓ પોતાના જ દેશની વસ્તુઓનો ઉપયોગ કરે છે. આનું એક ઉદાહરણ આપું.

મુંબઈમાં એક યુરોપીઅને પોતાના નોકરને બૂટની એક જોડી ખરીદી લાવવાનું કહ્યું. નોકર તો એક દેશી દુકાનેથી દસ રૂપિયાની કિંમતની એક સુંદર જોડી લઈ ગયો. સાહેબે જ્યારે જોયું કે નોકર તો દેશી જોડાની જોડી ખરીદી લાવ્યો છે, ત્યારે તેમણે કહ્યુ: 'મૂર્ખ! આ દેશી જોડી શા માટે લાવ્યો?' નોકરે જવાબ આપ્યો, 'સાહેબ આ ઘણી જ સરસ જોડી છે, પહેરી તો જુઓ.' આ સાભળીને તો સાહેબ બહુ જ ગુસ્સે થઇ ગયા અને કહ્યું· 'કા તો આ જોડી પાછી આપી આવ, અથવા એના પૈસા તું તારા ખિસ્સામાંથી આપી દે અને મારે માટે વિલાયતી જોડાની બીજી જોડી ખરીદી લાવ.' બિચારો નોકર દુકાનદારને ત્યા ગયો અને આખીયે વાત સંભળાવી. દુકાનદાર ભલો માણુસ હતો. એને આ ગરીબ નોકર પર દયા આવી. એણે કંઇ પણ વળતર કાપ્યા વિના બુટની જોડી પાછી લઇ લીધી. પછી નોકર એક યુરોપીઅનની દુકાને ગયો. ત્યાથી ચારગણી કિંમત આપીને એક વિલાયતી જોડી ખરીદી. આ જોડી સાહેબને ખૂબ ગમી. નોકરે એમને પૂછ્યું: 'સાહેબ! આ જોડાની ચારગણી કિંમત આપવા છતા પેલા જોડા જેવા સુદર તો નથી તો પણ તમને એ પસંદ કેમ આવ્યા?' સાહેબે ઉત્તર આપ્યો કે: 'આ માલ અમારા દેશની બનાવટનો હોવાથી એના બધા પૈસા અમારા દેશમાં જશે. અમે હંમેશાં

અમારા દેશનું ધ્યાન રાખીએ છીએ. અમે ભારતવાસીઓ જેવા થોડા છીએ ?'

આ ઉદાહરણથી સ્પષ્ટ રીતે જણાઈ આવે છે કે યુરોપના લોકો વિદેશમાં વસવા છતાં પોતાના જ દેશનું કેવું ધ્યાન રાખે છે ! જ્યારે ભારતીય લોકો પોતાના જ દેશમા રહેવા છતાં વિદેશી વસ્ત્રો અને વિદેશી વસ્તુઓનો ઉપયોગ કરવામા પોતાનુ ગૌરવ સમજે છે. એ જ કારણે ભારતનું પતન થઈ રહ્યું છે.

બન્ધુઓ ! આ ક્રાન્તિયુગ છે. સમગ્ર સંસારમા ક્રાન્તિનું મોજું ફેલાઈ રહ્યું છે. દુનિયાનાં સર્વ રાષ્ટ્રો ઉન્નતિ કરતા વેગથી દોડ્યા જાય છે. મહાત્મા ગાધીજીના પ્રતાપથી ભારતમા પણ રાષ્ટ્રિયતાનું મોજું દેશવ્યાપી બની ગયું છે. ભારતીઓમા પણ હવે પોતાના ભૂતકાળના ગૌરવનું અભિમાન જાગૃત થયું છે. તમે જાગૃત બનો. દેશના અભ્યુદય માટે સંગઠિત થવાનો હજી પણ સમય છે. દુનિયાનું વાતાવરણ તમને જગાડી રહ્યુ છે; તમારામા રાષ્ટ્રીયતાનું પ્રાણસિંચન કરી રહેલ છે. હવે જાગો, પરાધીનતાની જંજીરો હવે તોડીને ફેંકી દો, અને ભારતની આઝાદી માટે તન, મન, ધન અને જન એ સૌનું સમર્પણ કરવા માટે તૈયાર થાઓ. તમારા ભૂતકાળના સુવર્ણયુગ પર અભિમાન લો અને દેશની હાકલ પર મરી ખૂટો.

યાદ રાખો કે સ્વતંત્ર વાતાવરણમાં જ તમે સારી રીતે ધર્મનું આચરણ કરી શકો. પરાધીન રાષ્ટ્ર અને ગુલામ પ્રજાઓ ક્યારેય ધર્મનું યોગ્ય રીતે પાલન કરવાને અસમર્થ છે. 'પરાધીન સપને હુ સુખ નાહીં !' જો તમે સુખની પ્રાપ્તિ ઝંખતા હો

અને ધર્મનું આચરણ કરવા માગતા હો, તો રાષ્ટ્રધર્મનું પાલન કરતાં શીખો. જો તમે રાષ્ટ્રનું યોગ્ય રીતે પાલન કરી શકશો તો સૂત્ર-ચારિત્રધર્મનું પણ પાલન સરળતાથી કરી શકશો. અને એ રીતે તમારો આત્મા કર્મબન્ધનોથી મુક્ત થઇ સ્વતંત્ર બની શકશે. આ બાહ્ય અને અભ્યન્તર સ્વતંત્રતામા જ સુખ અને મંગળ સમાયેલું છે. તમે સૌ પોતપોતાના ધર્મનું પાલન કરીને મંગળમય બનો એ જ ભાવના.



૩. રાજધર્મ

રાજા પ્રજાનો માલિક નહિ પણ સંરક્ષક છે. રાજ્યનો ખજાનો રાજાની અંગત મિલ્કત નથી, પરંતુ પ્રજાની થાપણ છે, મનમાન્યા વટહુકમો બહાર પાડવાનું કર્તવ્ય રાજાનું નથી, રાજાનો ધર્મ અને એનું કર્મ એ છે કે એના રાજ્યમાં કોઈ દુખી ન રહે, કોઈ પણ ભૂખ્યો કે નાગો ન રહે; હરેકને એની યોગ્યતા પ્રમાણે કામ મળતું રહે; અને પ્રજાની શારીરિક, માનસિક, સામાજિક, આર્થિક તથા રાજનૈતિક ઉન્નતિ થતી રહે. જ્યાં સુધી આવી વ્યવસ્થાનો પ્રબંધ નથી થતો ત્યાં સુધી રાજા અને પ્રજા એમાંથી કોઇ પણ સુખ શાન્તિથી રહી શકતું નથી.

हे प्रभो ! आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र ही इस दुर्दशा से पार वेडा कीजिये ॥
ऐसा अनुग्रह और कृपा हम पै हो परमात्मा ।
हो सभासद् सब यहां के शीघ्र से धर्मात्मा ॥

પ્રિય આત્મબંધુઓ !

હમણાં પરમાત્માની પ્રાર્થના કરવામા આવી છે. પરમાત્માની પ્રાર્થના શા માટે કરવી જોઇએ ? એનાથી શો લાભ થાય ? વગેરે પ્રશ્નોને એક બાજુએ રાખીને જો માત્ર પ્રાર્થનાને માટે જ પ્રાર્થના કરવામાં આવે તો એનાથી અતિ અનુપમ આનંદનો અનુભવ થાય છે. પ્રાર્થના કરતાં જ્યારે તન્મયતા પ્રાપ્ત થાય છે અને વ્યક્તિ પોતાનું ભાન ભૂલી જાય છે, ત્યારે એને આનંદનો અક્ષય ખજાનો પ્રાપ્ત થાય છે. આ અલૌકિક આનંદનો અનુભવ તો જે પ્રાર્થનાનું રહસ્ય જાણે છે, તે જ કરી શકે છે. એનો આનંદ 'મૂંગાના ગોળ'ની પેઠે અનિર્વચનીય છે. મૂંગી વ્યક્તિ ગોળનો આનંદ લે છે, પરંતુ એ એને વાણીદ્વારા વ્યક્ત કરી શકતી નથી; એવી જ રીતે પ્રાર્થના કરવાથી કેવો આનંદ મળે છે એ તો જેણે પ્રાર્થનાનો રસાસ્વાદ લીધો હોય એજ કહી શકે. જે મનુષ્ય અતાગ સમુદ્રમાં ડુબકી મારી એને તળિયે પહોચી શકે છે, તેજ સમુદ્રના

અભ્યન્તર સૌંદર્યને જાણી શકે છે અને રત્નોને પામી શકે છે. જે મનુષ્ય ડૂબકી માર્યા વિના માત્ર કાંઠા પર જ ઊભો રહે છે એ સમુદ્રના આંતરિક સૌંદર્યનો આનંદ કેવી રીતે લૂંટી શકે? અને એને રત્નો પણ કેમ મળી શકે? એવી જ રીતે જે મનુષ્ય પ્રાર્થનાના ઊંડાણમાં નિમગ્ન બની રહે છે, એને પ્રાર્થનાના આનંદનો અનુભવ થાય છે. પણ જે મનુષ્ય માત્ર પ્રાર્થનાના શબ્દોના ઉચ્ચારણ માત્રથી આનંદનો અનુભવ કરવાની ઇચ્છા રાખે છે, તે સમુદ્રકાંઠે ઉભા રહીને રત્નોની ઇચ્છા કરનારા મનુષ્ય સમાન છે. એની ઇચ્છા કેવી રીતે સંતોષાઇ શકે? જેને પ્રાર્થનાનો આનંદ લેવો છે એણે તો તન્મયતા પ્રાપ્ત કરવી જોઇએ. તન્મયતા વિના સાચા આનંદનો અનુભવ થવો અસંભવિત છે.

આત્મામાંથી પરમાત્મા

તન્મયતા અને સમર્પણભાવથી કરવામા આવતી પ્રાર્થના આપણને પરમાત્માની નજીક પહોચાડે છે. આપણા આત્મામાં પરમાત્માનો પ્રકાશ પ્રાર્થના જ પહોચાડે છે. આત્મામાથી પરમાત્મા બનાવવાની શક્તિ પ્રાર્થનામા જ છે. પ્રાર્થના એ પ્રકાશનો પુંજ છે. ઘોર નિરાશાથી ભરેલા જીવનના પંથમાં એ પ્રકાશ કરતી જ રહે છે. એ જ કારણસર સંસારના સર્વ મહાપુરુષોએ પ્રાર્થનાનો આશ્રય લીધો છે અને એ જ પ્રાર્થનાના પ્રકાશથી એમણે અન્ધકારમય માર્ગને પાર કરી પોતાના લક્ષ્ય સુધી પહોંચવામા સફળતા પ્રાપ્ત કરી છે. અન્ધકારમાથી પ્રકાશમા લઇ જવાની, અસત્‌માથી સત્ પ્રતિ લઈ જવાની અને મૃત્યુમાંથી અમરતા પ્રત્યે જવાની શક્તિ પ્રાર્થનામાં જ ભરી છે.

આત્મા અને પરમાત્માનું મૂળસ્વરૂપ એક છે. જે પરમાત્મા છે તે જ આત્મા છે અને જે આત્મા છે, તે જ પરમાત્મા છે. એ બન્ને વચ્ચે અંતર માત્ર એટલું જ છે કે પરમાત્મા સમસ્ત ઉપાધિઓથી પર છે, અને જીવાત્મા ઉપાધિઓથી ઘેરાયેલો છે. કર્મની ઉપાધિને કારણે જ જીવાત્મા પરમાત્માથી ભિન્ન છે. જ્યારે આ ઉપાધિ દૂર થઈ જાય ત્યારે આત્મા પરમાત્મા બને. આ કર્મની ઉપાધિથી મુક્ત થવા માટે ઉપાધિ–કર્મ–કલંક રહિત પરમાત્માનું શરણુ લેવું જોઈએ. ભયમાંથી નિર્ભય બનવા માટે નિર્ભયનું શરણુ લેવું જોઈએ. જે પોતે જ ભયભીત છે, તે બીજાને નિર્ભય કેવી રીતે બનાવી શકશે ? એવી જ રીતે જે પોતે જ ઉપાધિઓથી ઘેરાયેલો છે, તે બીજાઓને ઉપાધિઓથી મુક્ત કેવી રીતે કરી શકશે ? એટલે જ ઉપાધિથી છૂટવા માટે આપણે નિરુપાધિક પરમાત્માનું ધ્યાન ધરવું જોઈએ. જે જેવી રીતે ધ્યાન ધરે છે, તે તેવો જ બની જાય છે. આ એક મનોવૈજ્ઞાનિક સિદ્ધાંત છે. એવી જ રીતે જે પરમાત્માનું ધ્યાન ધરે છે, એ પરમાત્મા જ બની જાય છે.

પ્રભુ આનંદદાતા છે ?

પ્રાર્થનામા કહેવામાં આવ્યું છે કે આનંદ આપનાર હે પ્રભો ! અમને જ્ઞાન આપો અને આ દુર્દશામાંથી મુકત કરો. શું પ્રભુ ખરેખર આનંદ આપનાર છે ? શું એ આપણને દુર્દશામાંથી પાર કરી શકે છે ? શું એ કર્તા છે ? જો તે કર્તા થી તો તે આનંદ આપનાર કેમ બની શકે ?

આ પ્રશ્નોનું સમાધાન એ છે કે ઈશ્વર કૃતકૃત્ય હોવા છતા આનંદ આપનાર છે. સાક્ષાત રૂપમા એ આનંદદાતા નથી, પરંતુ એનુ ધ્યાન ધરવાથી પ્રાણી પોતાની મેળે આનંદ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. આ આનંદની પ્રાપ્તિમા ઈશ્વરનું ધ્યાન મુખ્ય કારણરૂપ છે. એથી જ ઈશ્વરને આનંદદાતા કહેવામા આવેલ છે. આનંદમય પરમાત્માના ધ્યાનથી આત્મા આનંદમય બને છે. જેવી રીતે મશક પાણીમા પોતાની મેળે તરે છે, પણ એને તારનાર ખરી રીતે તો અંદરની હવા છે, એવી જ રીતે આત્મા પોતે જ આનંદ પ્રાપ્ત કરે છે, પણ એના આનંદનુ કારણ પ્રભુનું ધ્યાન અને ચિંતન છે પ્રભુ હૃદયના બિરાજ્યા પછી મોહનો અંધકાર એની મેળે જ દૂર થઈ જાય છે મોહને દૂર કરવા માટે આપણા હૃદયમા પ્રભુનું બિરાજવુ આવશ્યક છે. એથી જ પ્રાર્થનામા કહેવામા આવ્યું છે કે હે પ્રભો ! આપ અમારા હૃદયમંદિરમા બિરાજીને અમારા મોહરૂપી અંધકારને દૂર કરો અને અમને દુર્દશામાથી બચાવો.

ખરી રીતે તો આપણો આત્મા જ આનંદદાતા અને દુર્દશામાથી બચાવનાર છે, પણ પ્રભુ શરણ વિના એ બની શકતુ નથી. આ માટે જ પ્રભુ પાસે પ્રાર્થના કરવામા આવી છે. બીજી રીતે કહીએ તો આપણો આત્મા એ જ પરમાત્મા છે. એ આત્માને જ પરમાત્મા માનીને કહેવામા આવ્યુ છે કે 'હે આત્મન્! તુંજ આનંદનો આપનારો છે, તુંજ મંગલમય છે, તુંજ તારો ઉદ્ધારક છે, તુંજ પરમાત્મા છે.'

પરંતુ આત્મામાં આ પરમાત્મ ભાવ ત્યારે જ આવે, જ્યારે એમા કર્તવ્યની જ્યોત જ્વલંત હોય. આ આત્માને આનંદ-

મય અને મંગલમય બનાવવા માટે એ જરૂરી છે કે પ્રત્યેક વ્યક્તિને પોતાનાં કર્તવ્યોનું બરાબર ભાન હોય અને એ કર્તવ્યોનું એ બરાબર પાલન કરે.

કર્તવ્ય પાલન એટલે જ ધર્મ. નાનામાં નાની વ્યક્તિથી માંડીને મોટામાં મોટી વ્યક્તિને માટે કર્તવ્ય પાલન આવશ્યક છે. રાજાએ પોતાનાં કર્તવ્યોનું પાલન કરવું જોઇએ અને પ્રજાએ પોતાનાં કર્તવ્યોનું. સંસારનું કોઇ પણ પ્રાણી જ્યારે પોતાના કર્તવ્યોથી ચ્યુત થાય છે ત્યારે વાતાવરણ એકદમ કલુષિત થઈ જાય છે. સંસારમાં નાની કહેવાતી વ્યક્તિઓ પોતાનું કર્તવ્ય ચૂકે તો બહુ હાનિકારક નથી, પરંતુ મોટી કહેવાતી વ્યક્તિઓ જ્યારે પતિત બને છે, ત્યારે તો તે ખૂબ જ હાનિકર્તા બને છે. મોટા લોકો જ્યારે કર્તવ્યભ્રષ્ટ બને છે, ત્યારે સંસારને એનાં અનિષ્ટ પરિણામો ભોગવવા પડે છે. મોટાઓ પર મોટી જવાબદારી હોય છે. એથી એમના કર્તવ્યોની જરા સરખી પણ શિથિલતા સંસારના વાતાવરણને એકદમ વિકૃત કરી નાખે છે. રાજા જો પોતાનાં કર્તવ્યોનું બરાબર પાલન કરશે તો તેની પ્રજા પણ પોતાનાં કર્તવ્યો બરાબર બજાવશે. પરંતુ રાજા પોતે જ જો પતિત બને અને પોતાની જવાબદારીને ભૂલી જાય, તો રાજા અને પ્રજા વચ્ચે ક્રાન્તિ થવી અત્યંત આવશ્યક છે. વર્તમાનકાળમાં એક રાષ્ટ્રનો અન્ય રાષ્ટ્ર સાથે, એક રાજાનો અન્ય રાજા સાથે, રાજાનો પ્રજા સાથે અને પ્રજાનો રાજા સાથે એમ અનેક સંઘર્ષો ચાલી રહ્યા છે. આ બધાનું મૂળ બન્ને પક્ષની કર્તવ્ય–શિથિલતા જ છે.

રાજધર્મ

ભારતીય સંસ્કૃતિમા રાજા અને પ્રજાનો સંબંધ પિતા અને પુત્રના જેવો કહ્યો છે. કુટુમ્બમાં સુવ્યવસ્થા રાખવી, એનું ભરણપોષણ કરવું, કુટુમ્બીઓને સંસાર વ્યવહારને યોગ્ય બનાવવા માટે નીતિ–શિક્ષણની વ્યવસ્થા કરવી, વગેરે કાર્યો જેમ કુટુમ્બના વડીલનું કર્તવ્ય બની રહે છે, અને એ વડીલની આજ્ઞાનું પાલન કરવું, એના તરફ વિનય અને શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિથી જોવું વગેરે કાર્યો જેમ કુટુમ્બીઓનું કર્તવ્ય બની રહે છે, તેમ રાજા અને પ્રજાના પણ પરસ્પર કર્તવ્યો છે. રાજ્ય એક કુટુમ્બ છે. રાજા એનો નાયક છે અને પ્રજાજન કુટુમ્બી છે. રાજા જ્યારે પ્રજાને પોતાના સંતાન સમજીને એનુ પાલન કરે છે અને પ્રજા રાજાને પિતા સમાન ગણે છે, ત્યારે રાજ્યમા સુખશાંતિની સ્થાપના થાય છે, સમૃદ્ધિનો વિકાસ થાય છે, અને અમનચેનની બંસી વાગે છે. આવી રીતે સુવ્યવસ્થિત બનેલા રાજ્યને સ્વચક્ર કે પરચક્રનો ભય નથી રહેતો. જ્યાં કર્તવ્યનું પાલન દૃઢતાથી કરવામા આવે છે ત્યાં સુખનું સામ્રાજ્ય અવશ્ય સ્થપાય છે

મહાકવિ કાલીદાસે રઘુવંશી મહારાજ દિલીપનુ વર્ણન કરતાં કહ્યુ છે કે—

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि ।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ॥

અર્થાત્-પ્રજાને નીતિની શિક્ષા આપવાને કારણે, ભય સામે એમનું રક્ષણ કરવા માટે, અને એનું ભરણપોષણ કરવા

માટે રાજા દિલીપ પ્રજાના સાચા પિતા હતા. પ્રજાના પિતાઓ તો માત્ર તેમને જન્મ દેનારા જ હતા.

આ ઉક્તિવડે મહાકવિ કાલીદાસે રાજાનાં કર્તવ્યોનુ અતિ સૂક્ષ્મતાથી વિવેચન કરી નાખ્યું છે. પ્રજાને શિક્ષિત બનાવવી, સંકટો સામે તેનું રક્ષણ કરવું અને એના ભરણપોષણની વ્યવસ્થા કરવી, એ બધી જવાબદારી રાજાની હોય છે. યોગ્ય પિતાની પોતાના સંતાનો પ્રત્યેની જવાબદારી એવી જ હોય છે. આથી રાજાને પિતા માનવામાં આવેલ છે. જો સંતાન અશિક્ષિત હોય, અરક્ષિત હોય અને ભરણ–પોષણનાં સાધનોના અભાવને લીધે બેહાલ હોય, તો એનો દોષ એના પિતા પર છે. એવી જ રીતે કોઇ રાજાની પ્રજા અન્ન અને વસ્ત્ર વિના લાચાર હોય, ભૂખના ભયંકર ખપ્પરમા પડી તરફડતી હોય, શરીર ઢાકવા માટે કપડા ન હોય, એનામા અશિક્ષિતતાનો અંધકાર ફેલાયો હોય તો એ બધા માટે રાજાને જ જવાબદાર ગણવો જોઇએ. કુટુમ્બની એક પણ વ્યક્તિ જ્યાંસુધી દુ:ખી હોય ત્યા સુધી કુટુમ્બના સાચા નાયકને ક્યાય ચેન ન પડે. એવી જ રીતે જો રાજ્યમા પણ એકાદ વ્યક્તિ પણ દુ:ખી હોય તો રાજાને એનું દુ:ખ દૂર કર્યા વિના ચેન ન પડવું જોઇએ. ગોસ્વામી તુલસીદાસે કહ્યુ છે કે—

જાસુ રાજપ્રિય પ્રજા દુ:ખારી, સો નૃપ અવસ નરક અધિકારી.

જે રાજાના રાજ્યમાં પ્રજા દુ:ખનો અનુભવ કરે છે, એ રાજા નરકનો અધિકારી છે. તુલસીદાસજીની આ ચોપાઇમાં કેવું ઊંડું રહસ્ય છૂપાયેલું છે !

પ્રજાભક્તિનો અધિકારી

પ્રજાનાં દુઃખોને દૂર કરવામાં, એના સુખને માટે પ્રયત્ન કરવામાં, એની શારીરિક, માનસિક, બૌદ્ધિક અને આધ્યાત્મિક ઉન્નતિ કરવામાં તથા પ્રજાના આર્થિક અને સામાજિક સ્તરને ઊંચે લાવવામાં જે રાજા પુરુષાર્થ કરતો રહે છે તે જ સાચો રાજા છે. આવા જ કર્તવ્યશીલ રાજાને પ્રજાની ભક્તિ પામવાનો અધિકાર છે. આવા જ ધર્મપરાયણ રાજા સમક્ષ પ્રજા પોતાનું મસ્તક નમાવે છે, એને પોતાનો સ્વામી માને છે. આવો જ રાજા 'નરેશ' અને 'નરપતિ' શબ્દોથી સંબોધિત થાય છે.

આદર્શ નરપતિ મર્યાદાપુરુષોત્તમ રામચન્દ્રજીની પ્રજા-વત્સલતા કેવી અનુપમ છે! અષ્ટાવક્ર મુનિની સમક્ષ રામચન્દ્રજી પ્રતિજ્ઞા કરે છે—

स्नेहं दयाञ्च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा ।

રામ સ્પષ્ટ શબ્દોમાં કહે છે, "જો પ્રજાની આરાધનાને માટે, પ્રજાના કલ્યાણને માટે મારે સ્નેહ, દયા અને સમસ્ત સુખો સહિત સીતાનો પણ ત્યાગ કરવો પડે તો એમ કરતા મને લેશ માત્ર પણ દુઃખ નહિ થાય. પ્રજાના કલ્યાણને માટે હું મારું સર્વસ્વનો ત્યાગ કરવાને તત્પર છું."

કેવો છે રામનો પ્રજાપ્રેમ! કેવો છે એમનો દૃઢ સંકલ્પ! પ્રજાને માટે તેઓ ધન, વૈભવ, રાજ્ય, ધરાધામ, અને સમસ્ત સુખોને છોડી દેવા માટે તૈયાર થાય છે; એટલું જ નહિ, પ્રજાને માટે તેઓ પ્રાણપ્યારી, હૃદયવલ્લભા, પરમપુનિતા સીતાને છોડવા

માટે પણ તૈયાર થાય છે. અહા ! આદર્શ રાજા રામ ! ધન્ય છે તમારી પ્રજાપાલકતા ! રામે પ્રજાને માટે–એના કલ્યાણને માટે, પ્રજાની આરાધનાને માટે સર્વસ્વ અર્પણ કરવાની તત્પરતા બતાવી એટલે તો કરોડો પ્રજાજનોના એ આરાધ્ય દેવ બન્યા. કરોડો નરનારી એમને ભક્તિભાવથી પૂજે છે. કરોડો આત્મા 'રામ-રાજ્ય'ની ઝંખના કરે છે. આનું તાત્પર્ય એ છે કે જે રાજા પોતાની પ્રજાને આરાધ્ય દેવી માને છે, તેની પ્રજા પણ તેને આરાધ્ય દેવ સમજે છે. કોઇ પણ પ્રજાપરાયણ નરેશ રામની પેઠે પ્રજાભક્તિને અધિકારી છે.

વર્તમાન કાળમાં રાજધર્મનો લોપ

એક તરફ મહારાજ રામચન્દ્રજીનો આદર્શ અને બીજી તરફ વર્તમાનકાળના મહારાજા અને નરેશોનાં કાર્ય પણ આપણી સામે છે. બન્નેમાં કેટલું અંતર છે ? કયાં આકાશ અને કયાં પાતાળ ? જ્યાંના રાજા રાજ્યને પ્રજાની થાપણ સમજતા હતા અને પોતાને પ્રજાના સેવક માનતા હતા, ત્યાં જ આજકાલ કેટલાયે નરેશો પોતાને પ્રજાના શાસકો માની તેમના પર મન-માન્યા અત્યાચાર કરવાનો અધિકાર સમજે છે. તેઓ પોતાને ઇશ્વર સમાન માને છે. તેમના યોગ્ય અને અયોગ્ય હુકમો જાણે ઈશ્વરની આજ્ઞાઓ હોય તેમ તેમને તાબે થવા પ્રજા પર ફરજ પાડે છે. આજકાલના ઘણાખરા રાજાઓ પોતાનાં કર્તવ્યોને ભૂલીને ભોગવિલાસમાં ડૂબી ગયા છે. એમને પોતાના પ્રજા-જનોની જરા પણ પરવા નથી. પ્રજાની અવસ્થા પર તેઓ કયારેય વિચાર કરતા નથી. પ્રજા સુખી છે કે દુઃખી છે, એ વિચાર

એમના વિલાસી મસ્તકમાં આવતો જ નથી. એમના આગમનનું માત્ર એક જ ધ્યેય એ થાય છે કે પ્રજાનું શોષણ કરી એકઠી કરેલી સંપત્તિના બળ પર રંગરાગ ઉડાવવા, પ્રજાના પસીનાની કમાણીનો તેઓ મોજશોખનાં સાધનોમાં અને વિલાસોની પૂર્તિ કરવામાં વ્યય કરતા જરા પણ સંકોચાતા નથી. આ દ્રવ્ય-ભંડાર કેવી રીતે આવે છે, એની એમને ખબર છે? પરસેવાથી રેબઝેબ થઈ રહેલા ખેડૂતો અને ગરીબોના મોઢામાંથી કોળિયા ઝૂંટવી લઈને આ ધન એકઠું કરવામાં આવ્યું છે. ગરીબોનાં લોહી ચૂસીને ભોગવિલાસોમાં મસ્ત રહેનારાઓને શી ખબર કે ગરીબો પર શું વીતે છે? ચૈત્ર વૈશાખના ધીખતા તાપમાં હળ હાંકવાવાળા ખેડૂતોના શ્રમનો રાજમહેલોમાં વસનારાઓને શો અનુભવ થઈ શકે? અત્યંત ખેદની વાત છે મહારાજા સાહેબ! (મહેસુરનરેશને ઉદ્દેશીને આ કહેવામાં આવ્યું છે, તેઓ વ્યાખ્યાન સાંભળી રહ્યા હતા.) કે આ નગ્ન સત્ય કહેવું પડે છે. મારો આશય રાજાઓની નિંદા કરવાનો નથી, હું તો પવિત્ર આશય-થી જ કહી રહ્યો છું. જ્યાં સુધી ભૂતકાળ અને વર્તમાનની તુલના નથી થતી ત્યાં સુધી આપણને આપણી સ્થિતિનું ભાન પણ નથી થતું. આથી જ આ પ્રસંગે નગ્ન સત્ય કહેવું પડયું છે.

મારા કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—આપના પૂર્વજો રાજત્વ-ના જે આદર્શને સમજ્યા હતા, તે આજકાલ લુપ્ત થઈ ગયો છે. વર્તમાનના નરેશો પોતાના રાજધર્મને ભૂલી ગયા છે. એથી પ્રજાએ પણ પોતાની ભક્તિ ઓછી કરી નાખી છે. પહેલાના પ્રજાજનોને રાજાઓમાં વિશ્વાસ હતો. આજે એ વિશ્વાસ નથી રહ્યો. આજે તો નથી પ્રજાને રાજામાં વિશ્વાસ

કે રાજાને પ્રજામાં. રાજા અને પ્રજા વચ્ચેની ખાઇ વધુ ઊંડી થતી જાય છે. નથી રાજાને પ્રજાનો સહયોગ કે પ્રજાને રાજાનો. એથી જ આજે ભારત પર નથી રાજા રાજ્ય કરતો કે નથી પ્રજા. પરંતુ એક વિદેશી સત્તાએ અહીંના નરેશો અને પ્રજાને ગુલામીની જંજીરોમા જકડી રાખેલ છે. ભારતના કેટલાક રાજાઓ તો હવે માત્ર કહેવાના જ રાજા રહ્યા છે—તેઓ અંગ્રેજી સત્તાધીશોને આધીન રહ્યા છે. રાજાઓના પ્રત્યેક કામનું સંચાલન વિદેશી શાસકોના એજન્ટોદ્વારા થાય છે. રિયાસતના મુખ્ય મુખ્ય વિભાગોમાં એમનો હસ્તક્ષેપ થાય છે. બીજી રીતે કહીએ તો અંગ્રેજ અમલદારો જ રાજ્ય કરે છે, નરેશ તો શોભારૂપ જ છે.

મને આશ્ચર્ય થાય છે કે ક્ષત્રિય રાજાઓ પરાધીનતામા કેવો આનંદ માની રહ્યા છે? જ્યાં સુધી આપણે પરતંત્ર છીએ ત્યા સુધી આપણે કંઈ કરી શકવાના નથી. આઝાદી વગર ધર્મનું પાલન કેવી રીતે થઇ શકે? પરાધીન લોકોનો સૌથી મોટો ધર્મ સ્વતંત્રતા પ્રાપ્ત કરવાનો છે સ્વતંત્રતાની સ્વચ્છ હવામા જ ધર્મની આરાધના કરી શકાય. વિદેશી શાસકોની નાગચૂડમાં ફસાયેલો દેશ શું ધર્મનું પાલન કરી શકે? વિદેશી શાસકોએ પોતાના સ્વાર્થની સિદ્ધિને માટે ભારતીય સંસ્કૃતિને કચડી નાખવાની ભરપૂર કોશિષ કરી છે, અને અહીંની જનતાના મગજમા પરાધીનતાના સંસ્કાર ભરી દીધા છે. એથી આ જનતાને પોતાપણાનું ભાન રહ્યું નહીં, પોતાના ગૌરવનો ખ્યાલ રહ્યો નહીં અને સંપૂર્ણ રીતે વિદેશી રંગે રંગાઇ ગઇ. હજી પણ જાગૃતિને માટે અવકાશ છે. રાજા અને પ્રજા બન્નેએ પોતપોતાની જવાબદારી સમજીને કર્તવ્યનું પાલન કરવું

જોઇએ રાજા અને પ્રજામાં ફરીથી સહયોગની ભાવના ઉત્પન્ન થાય અને બન્ને પિતા પૂત્રને નાતે પરસ્પર વ્યવહાર કરવા માંડે એટલા માટે એ જરૂરી છે કે રાજા પોતાને પ્રજાનો શાસક નહીં પણ સંરક્ષક(ટ્રસ્ટી) સમજે.

પ્રજાની થાપણ

રાજા રાજ્યનો સ્વામી નથી, પરંતુ રાજવ્યવસ્થાનું સંચાલન કરનાર સંરક્ષક છે. જેમ બેંકમાં કામ કરતા નોકરો બેંકમાં પડેલા ધનના માલીક નથી પરંતુ તેઓ તો માત્ર એ ધનની વ્યવસ્થા કરનારા જ છે, તેમ રાજા પણ રાજ્યખજાનાનો માલીક નથી. રાજ્યખજાનો તો પ્રજાની સંપત્તિ છે, પ્રજાની થાપણ છે. રાજા તો માત્ર આ ધનભંડારમાંથી પ્રજાના હિતની વ્યવસ્થા કરવા માટે જ દ્રવ્યનો ઉપયોગ કરવાનો અધિકારી છે એશ-આરામને માટે એમાંથી એક પાઇ પણ લેવાનો એ હકદાર નથી. આ સંબંધમાં દિલ્હીના બાદશાહ નસીરૂદ્દીને રાજાઓની સન્મુખ એક આદર્શ રાખી દીધો છે.

નસીરૂદ્દીન દિલ્હીના સિંહાસન પર બેઠો. બાદશાહ હોવા છતા પણ તે પોતાના બધાં કામો પોતાને હાથે જ કરતો. પોતાની આજીવિકાને માટે તે પુસ્તકો લખવાનું કામ કરતો. આ લેખનદ્વારા એને જે કંઇ મળતું તેમાથી તે પોતાનો અને પોતાની બેગમ સલીમાનો નિર્વાહ કરતો. પોતાના અંગત ખર્ચ માટે ખજાનામાંથી એક પાઇ પણ લેતો નહીં. ખજાનો તો પ્રજાની થાપણ છે એમ તે સમજતો. એથી પ્રજાની થાપણમાંથી પોતાને માટે ખર્ચ કરવો હરામ બરાબર સમજતો.

પોતાના ધંધામાંથી મળતી આમદાની પર એને સંતોષ હતો. લેખનદ્વારા શું આવક હોઈ શકે ? તેથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે નસીરૂદ્દીનને પોતાનું જીવન અત્યંત સાદાઈમાં વ્યતીત કરવું પડતું. પરંતુ એથી એના દિલમાં અસંતોષ ન હતો. એ સાદાઈમાં જ સુખ સમજતો. જો આમ કરવામાં એ સુખ ન માનતો હોત તો આવું કષ્ટમય જીવન હાથે કરીને શા માટે જીવે ? સુખભોગનાં સર્વ સાધન એની પાસે હતા. એ બાદશાહ હતો, ભિખારી નહિ. એના કબજામાં કરોડોની સંપત્તિ હતી. શું એ મોજશોખ નહોતો કરી શકતો ? શું આજકાલના રાજાઓની પેઠે એ ગુલછડીઓ નહોતો ઉડાવી શકતો ? એને કોણ રોકનાર હતું ? તો પછી શું કારણ હતું કે એ બાદશાહ હોવા છતાં આવું સાદું જીવન જીવી રહ્યો હતો ? કારણ માત્ર એટલું જ કે ન્યાયપૂર્ણ અને સ્વાવલંબનદ્વારા સાદું જીવન જીવવામાં જ આનંદ છે એમ એણે સમજી લીધું હતું. એને સાદા જીવનમાં જ સુખનાં દર્શન થતાં હતા. અન્યાયથી બીજાના દ્રવ્યનું અપહરણ કરી, ગરીબોનું શોષણ કરી, ભૂખથી તડફડતાં બાળકોના મોંમાથી રોટી છીનવી લઇ એકઠા કરેલા ખજાનાવડે મોજશોખ ઉડાવવાની દુષ્ટ ભાવના એનામા ન હતી. અન્યાયવડે મેળવેલા દ્રવ્યથી સુખી જીવન વીતાવવા કરતા ન્યાયપૂર્ણ ગરીબીનું કષ્ટમય જીવન કેટલું યે વધારે શ્રેયસ્કર છે.

ભાઈઓ ! તમે અન્યાયપૂર્વક એકઠા કરેલા ધનવડે એશ આરામભર્યું જીવન જીવવા માગો છો કે ન્યાયપૂર્ણ ગરીબીનું કષ્ટમય જીવન ? આ બન્નેમાંથી તમે કયું જીવન પસંદ કરશો ? (આ પ્રશ્ન સાંભળતાં સૌ ચૂપ થઈ ગયા; કોઇએ જવાબ ન

આપ્યો) મને લાગે છે કે આરામ તરફ તમારાથી [illegible] નથી યાદ રાખો બાદશાહ ! આ કલ્પિત એશ-આરામ તમને શાન્તિ નહિ આપી શકે. જો તમારે સાચું સુખ જોઈતું હોય તો તે તમને સાદાઈના સંતોષમય જીવનમાંથી જ મળશે. નસીરૂદ્દીનને એશ-આરામમા સુખ ન લાગ્યું [illegible] સાદાઈભર્યું જીવન અપનાવ્યું.

નસીરૂદ્દીનની બેગમ સલીમાને ઘરના બધા કામ હાથે જ કરવા પડતા. એક દિવસ રસોઈ કરતા એનો હાથ દાઝી ગયો. એણે બાદશાહને એક દાસી રાખવાની વિનંતિ કરી. બાદશાહે પ્રેમપૂર્વક જવાબ આપ્યો " પ્રિયે, તને ખબર છે કે આપણો બન્નેનો જીવનનિર્વાહ થાય એટલી જ મારી આવક છે. એનાથી વધારે હુ કમાઈ શકતો નથી. આવી અવસ્થામા હું દાસીનો ખર્ચ ક્યાંથી લાવી શકું ? "

સલીમા પોતાના દુ:ખને રોકી શકી નહિ. એ બોલી ઉઠી, ' જહાંપનાહ, આપ દિલ્હીના બાદશાહ છો, અને હું આપની દાસી છુ. આખરે આ ખજાનાની સઘળી દોલત શા કામની ? હું દિલ્હીના બાદશાહની બેગમ હાથ દાઝી જતા એક દાસી રાખવાની પ્રાર્થના કરું છું તો પણ આપ એનો અસ્વીકાર કરો છો, તો આ બાદશાહત શા કામની ? ખજાનાની આ દોલત કયા કામમા આવશે ? '

બાદશાહે જવાબ આપ્યો. ' પ્રિયે જેને તું તારી દોલત માને છે, એ તારી નથી. એ તો પ્રજાની થાપણ છે. એમાથી એક પૈસો પણ ઉડાવવાનો તને કે મને જરા પણ અધિકાર

નથી. જો મારા હક વગરની વસ્તુ હું લઇ લઉં તો ખુદા એથી નારાજ થશે. તું કહે છે તેટલો ખર્ચ કરવાને મારી પાસે પૈસા નથી. હું માત્ર એટલું કરી શકું કે હંમેશા વધારે કામ કરી તારે માટે દાસીનો બંદોબસ્ત કરું. જો તું મારી પાસે વધારે મહેનત કરાવવા માગતી હો તો જ હું એક દાસીને રાખી શકું. પ્રજાના ખજાનામાંથી તો એક દમડી પણ હું લઈ શકતો નથી. એમ કરવાથી તો ખૂદા નારાજ થાય છે. હવે તું જ બતાવ કે ખુદાને ખુશ કરું કે તને ? સલીમા, આપણે ગરીબ છીએ. આપણી દોલત તો ઇમાન છે.'

બાદશાહનો આ પ્રત્યુત્તર સાંભળીને સલીમાની આંખમાંથી આસુ ટપકવા માંડ્યા. આંસુ લુછીને એ બોલી· ' જહાપનાહ, ક્ષમા કરો. મેં આપનો અપરાધ કર્યો છે. આજથી હવે મારી આંખો ખુલી ગઇ. હવેથી હું આપને જરાપણ તકલીફ નહિ દઉં અને આનંદથી બધું કામ હાથે જ કરી લઇશ.'

આ પ્રસંગ પછી પતિપત્ની બન્ને આનંદપૂર્વક જીવન વ્યતીત કરવા લાગ્યાં.

આ છે રાજાઓનો આદર્શ !

આ આદર્શ સન્મુખ રાખી રાજાઓ જો પ્રજાની સાથે વાત્સલ્યપૂર્ણ વ્યવહાર કરવા માટે તત્પર બને તો તેઓ જનતાના મુકુટમણી બની શકે છે. જે હૃદય પર શાસન કરે છે તેજ સાચો રાજા છે. નસીરૂદ્દીનનું દિલ્હીનું રાજ્ય તો કાયમ ન રહ્યું, પરંતુ પોતાનાં કર્તવ્યોદ્વારા એણે એવું રાજ્ય સ્થાપિત કર્યું છે, જેનો કદી પણ નાશ થઈ શકતો નથી. નસીરૂદ્દીન

મનુષ્યોના હૃદય પર આજે પણ [illegible] છે. અને ભવિષ્યમાં પણ કરતાં રહેશે

ભાઈઓ! ક્યાં [illegible] આપણા વર્તમાન રાજાઓ! [illegible] કરતો હતો અને આંગણ [illegible] ન હતો. રોજ [illegible] નાખવા પડતા નહિ. [illegible] ચાલી રહ્યું છે. આજે તો [illegible] એટલા તો વધી ગયા છે કે [illegible] પર રોજ નવા કરો નાખવા પડે [illegible] કાયદો જર્જરિત બની ગઈ છે, [illegible] ગયું છે, અને માત્ર [illegible] વધુ નિર્દયતાથી ચૂસવા માટે [illegible] રાજાઓ નાખી રહ્યા છે

કરનો હેતુ

રાજ્યની સુવ્યવસ્થા માટે રાજાને પ્રજા પાસેથી કર [illegible]રાવવો જોઈએ એવો નિયમ નીતિકારોએ બનાવ્યો છે અને તેઓએ રાજાને આ અધિકાર પણ આપ્યો છે. પ્રજાના હિતના કાર્યો માટે પ્રજા પાસેથી કરના રૂપમાં ધન લઈ એનો સદુપયોગ કરવાનો રાજાને અધિકાર છે. આ રીતે એકઠા થયેલા ધનદ્વારા એ પ્રજાની રક્ષા કરે; એને સંકટોમાંથી બચાવે, પ્રજાને શિક્ષિત બનાવવા માટે વિશ્વવિદ્યાલય, પુસ્તકાલય અને

પાઠશાળાઓ સ્થાપિત કરે, જનતાના આરોગ્યની વૃદ્ધિને માટે, આરોગ્ય મંદિરોની વ્યવસ્થા કરે; જનતાની સમૃદ્ધિ વધારવા માટે ઉદ્યોગ-ધંધાઓને પ્રોત્સાહન આપે. આવી રીતે જનતાની સગવડને માટેજ જનતા પાસેથી ધન લેવાનો રાજાને અધિકાર છે, પરંતુ હમેશાં નવા કરવેરા લઈ પ્રજાના ધનનું હરણ કરવાનો અને આમોદ-પ્રમોદમા એનો ઉપયોગ કરવાનો રાજાને કોઈ અધિકાર નથી. મહાકવિ કાલીદાસે કહ્યું છે કે—

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो वालमगृहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ॥

અર્થાત્—જે રીતે સૂર્ય પોતાનાં કિરણોદ્વારા પાણીને શોષી લઈ, જેટલું શોષે છે તેના કરતાં અનેકગણું પાછું વરસાવે છે, તેવીજ રીતે રાજા પ્રજાની પ્રજા પાસેથી ધન લે છે અને તેની ઉન્નતિનાં કાર્યોમાં ખર્ચે છે. આમ આ ધન અનેકગણું બનીને પ્રજાની પાસે પાછું પહોંચે છે.

જે રાજા પ્રજાના હિતને માટે પ્રજા પાસેથી કર ઉઘરાવે છે, તેજ રાજા ન્યાયપરાયણ કહેવાય છે. એવા રાજાનેજ પ્રજાનો હાર્દિક સહયોગ પ્રાપ્ત થાય છે. જે રાજ્યમા રાજા અને પ્રજાનો પારસ્પરિક સહયોગ થાય છે, એ રાજ્ય ઉન્નતિને શિખરે બિરાજમાન થાય છે.

ન્યાયપરાયણતા

જેવી રીતે આકાશની શોભા સૂર્ય અને ચન્દ્રમા વડે છે, કમળની શોભા સુગન્ધ વડે છે, અને સરોવરની શોભા પાણીવડે છે, એવી જ રીતે રાજાની શોભા એની ન્યાયપરાય-

ણુતા પડે કે [illegible]
સંસારમાં ન્યાયની [illegible]
આવશ્યકતા છે. જેમ કે [illegible]
પ્રતિજ્ઞા કરવો અને ન્યાયની [illegible]
લક્ષ્ય હોવું જોઈએ. [illegible]
છે જે રીતે ખેતરની [illegible]
કરવામાં આવે છે, તેવી જ રીતે ન્યાયની [illegible]
વાડ જરૂરી છે. પરંતુ [illegible]
નજરે પડે છે. પાણીની વચ્ચે [illegible] લાગી છે. [illegible]
પોતે જ ખેતરને નુકસાન પહોંચાડી રહી છે [illegible]
ભક્ષક બની રહી છે. ન્યાયની [illegible]
કરી રહેલ છે. જેના પર ન્યાયની જવાબદારી છે, તે જ
અનીતિમાં [illegible] રહ્યા છે, તો દુઃખ ક્યાં જઈને [illegible]
આજના ન્યાયાલયોના કામ પણ અજબ છે. [illegible]
ત્યાં બોલબાલા છે. ત્યાં ન્યાયના બદલે પાખંડ [illegible]
તાંડવ થઈ રહ્યું છે. ન્યાયાલયોના જ ન્યાયનું [illegible]
આવે છે. રોજ રોજ [illegible] તો [illegible]
વધી રહ્યો છે, એ મહાઅફસોસની વાત છે.

ઇતિહાસમાં ઈરાનના બાદશાહ નૌશેરવાંનું નામ તેની ન્યાયપરાયણતાને માટે સુવર્ણાક્ષરોથી અંકિત થયેલું છે. નૌશેરવાના અદલ ઇન્સાફે એને દુનિયામાં અમર કરી દીધા છે.

પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિથી પ્રભાવિત થયેલા નવી રોશનીવાળા કેટલાક લોકોનો એવો મત છે કે પહેલાંના રાજાઓ ખૂબ સ્વેચ્છાચારી અને નિરંકુશ હતા. એમની પોતાની ઇચ્છા એ જ

એમનું સર્વસ્વ હતું. તેઓ ન્યાય–અન્યાયનો વિચાર ન કરતાં પોતાનું મનફાવ્યું જ કરનારા શાસકો હતા. ભારતવાસીઓ પ્રજાતંત્ર પ્રણાલી ને શાસનવ્યવસ્થા યુરોપની પાસેથી જ શીખ્યા છે. આમ કહેનાર પોતાના અધૂરા જ્ઞાનનું અથવા એકપક્ષીયતાનું પ્રદર્શન કરે છે. ખરી હકીકત એ જાણતો નથી. નૌશેરવાની કહાની જ આ કથનને અપ્રમાણિત ઠરાવવાને માટે પૂરતા પ્રમાણરૂપ છે.

નૌશેરવાંનો શાહી મહેલ ચણાતો હતો. કારીગરોએ કહ્યું કે– જ્યાસુધી મહેલ પાસે આવેલી એક ડોસીની પર્ણકુટીવાળી જગ્યા મહેલની જગ્યામાં મેળવી દેવામાં ન આવે ત્યાંસુધી મહેલનું ચતણર બરાબર નહિ થઈ શકે. જો આ પ્રકારે નહિ થાય તો મહેલની રચનામાં એટલી ખામી રહી જશે. બાદશાહે ડોસીને બોલાવી અને એની પાસે ઝુંપડીની માગણી કરી. બાદશાહે કહ્યુ, તું તારી ઝુંપડીનું મોં માગ્યું મૂલ્ય લઈ લે અને આ ઝુંપડી મને આપી દે. ડોસીએ કહ્યું· સરકાર, મારે એનું મૂલ્ય નથી જોઈતું. હું મૂલ્ય લઇને શું કરું ? મારે ઝુંપડી વેચવી નથી.

બાદશાહે કહ્યું· ‘ તારે મૂલ્ય ન જોઇએ તો મેં અન્ય સ્થાન પર બનાવેલું કોઈ ભુવન તને આપું. આ ઝુંપડીના બદલામાં હું તારે જેવી જોઇએ તેવી જગ્યા દેવા માટે તૈયાર છું. પણ તારી આ ઝુંપડી તું મને આપી દે. એ વિના મારો મહેલ અપૂર્ણ રહેશે.

ડોસી વટવાળી હતી. એણે નીડરતાથી કહ્યું: ‘ જહાપનાહ ! હું બીજી જગ્યા શા માટે લઉં ? આ જગ્યાએ તો મારી કેટલીયે

પેઢીઓ વીતી ગઈ. મારી આ ઝૂંપડી [illegible] અન્યત્ર જઈ શકું તેમ નથી. જેમ આપને આપનો મહેલ વહાલો છે, તેમ મને મારી ઝૂંપડી [illegible] ઝૂંપડી છોડવાની મારી ઈચ્છા નથી.'

[illegible] ડોશીએ જ્યારે ઝૂંપડી આપવાનો ઇન્કાર કર્યો, ત્યારે બાદશાહે કારીગરોને કહ્યું, 'ઝૂંપડી પર [illegible] કાર છે. એ ઝૂંપડી આપવાની ના કહે [illegible] છું, મારાથી ડોશી પર બળજબરી થઈ શકે તેમ નથી. મહેલના ભલે વાંક રહી જાય [illegible]

આખરે મહેલ પણ ઊભો થઈ ગયો, પરંતુ બાદશાહે મહેલની ખૂબસૂરતી માટે ન્યાયની હત્યા ન કરી.

મહેલ તો તૈયાર પણ થઈ ગયો, પરંતુ ડોશીની ઝૂંપડીમાંથી નીકળતો ધૂમાડો મહેલની ભીંતને કાળી કરવા લાગ્યો. આથી બાદશાહે ડોસીને કહેવડાવ્યું, તું ચૂલો સળગાવવા બંધ કરી દે. તને મારા મહેલના ભોજનાલયમાંથી સુંદર ભોજન મળતું રહેશે. ડોસીએ જવાબ આપ્યો, 'શું હું અપંગ છું કે શાહી-મહેલની રોટીઓથી પેટ ભરું ? હું ચૂલો બંધ નહિ કરી શકું.' બાદશાહ નિરુત્તર બની ગયો.

ડોસીની ઝુંપડીનો કાળો ધુમાડો બાદશાહના સફેદ મહેલને કાળો કરતો રહ્યો, પરંતુ અદલ ઇન્સાફી નૌશેરવાંએ એને ક્યારેય બળજબરીથી રોકી નહિ. જો બાદશાહે ધાર્યું હોત તો ડોસી પાસેથી એ ઝુંપડી છીનવી લઈ ન શકત ? પોતાની

સત્તા વાપરીને એ ચૂલો બંધ ન કરાવી શકત ? પણ, ના. ન્યાયની રક્ષા ખાતર એણે એવું કંઇપણ કર્યું નહિ.

શું આ ઘટના એ વખતના રાજાઓની ન્યાયપરાયણતા બતાવવા માટે પૂરતી નથી ? દુનિયાના સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રજાસત્તાક કહેવાતા રાજ્યમાં પણ આવું ઉદાહરણ મળી શકે તેમ છે ?

કાળ તો પોતાનું કામ કરતો ગયો. નૌશરવાંનો મહેલ અને ડોસીની ઝુંપડી એ બન્ને નષ્ટ થઈ ગયા. આજ નથી નૌશરવાં કે નથી ડોસી; પણ એ ન્યાયકહાણી અમર થઇ ગઇ અને દુનિયાની સામે એક આદર્શ ધરી ગઇ. શરદના ચન્દ્રની પેઠે નૌશરવાંનો ધવલ યશ આજે પણ સંસારમાં એટલો જ ગવાઈ રહ્યો છે. આનું જ નામ ન્યાયપરાયણતા.

બાદશાહ જહાંગીરે ધોબણને આપેલો ન્યાય પણ એની કીર્તિને અમર કરતો ગયો છે. રાજાનું સાચું આભૂષણ ન્યાય જ છે, એ કહેવાની હવે વધુ જરૂર નથી. જે રાજ્યની નીતિ ન્યાયના પાયા પર ઊભી છે, એ રાજ્ય સમૃદ્ધિથી ભરપૂર બને છે; ત્યાં સુખનું રાજ્ય રહે છે.

(મ્હૈસુરનરેશને ઉદ્દેશીને) મહારાજા સાહેબ ! અત્રે મેં રાજધર્મનું વિવેચન કર્યું છે, તે સર્વ સામાન્યને લક્ષમાં રાખીને કર્યું છે. કોઇપણ વ્યકિતવિશેષ મારી નજર સામે નથી. પ્રસંગાનુસાર મેં જે આધુનિક સ્થિતિનું ચિત્ર રજૂ કર્યું છે, તે પણ કોઇ વ્યકિતવિશેષને લક્ષમાં રાખીને નહિં. આ પ્રકારની સ્થિતિનું ચિત્રણ કરવા પાછળ રાજાઓની નિંદા કે ટીકાઓ કરવાનો મારો આશય નથી. જૈનમુનિ કોઈપણ

રાજા અને પ્રજાના સહયોગથી આ ભારતભૂમિ ફરીથી પોતાનું પૂર્વ ગૌરવ પ્રાપ્ત કરે એવી મારી ભાવના છે.

પ્રિય બંધુઓ! તમારે પણ તમારા પ્રજાધર્મનું પાલન કરવું જોઇએ. પ્રજાધર્મ શું છે એ હું ફરીથી પણ કહીશ. આજે તો એટલું જ કહીને વ્યાખ્યાન સમાપ્ત કરીશ કે તમે તમારાં કર્તવ્યોનું પાલન કરશો તો તમારી ઉન્નતિ થશે અને તમે સુખી થશો. જેને પોતાનાં કર્તવ્યોનું ભાન છે તે જ ધર્મની આરાધના કરી મંગલમય બની શકે છે.



૪. ગૃહસ્થધર્મ

આજનું ગૃહસ્થજીવન છિન્ન, ભિન્ન થવા બેઠું [illegible] પડી ગયું છે. કોઈને પણ પોતાના ધર્મનું ભાન નથી. પોતાના કુટુંબના માણસો પ્રત્યે વફાદાર નથી. [illegible] ભાઈબહેન અને સ્વધર્મનું ભાન ભૂલી ગયું છે. સ્વચ્છંદ [illegible], અવિશ્વાસ, અને અસહિષ્ણુતાને સાથે આજનું ગૃહસ્થજીવન ભાર-રૂપ બની ગયું છે.

રાજા અને પ્રજાના સહયોગથી આ ભારતભૂમિ ફરીથી પોતાનું પૂર્વ ગૌરવ પ્રાપ્ત કરે એવી મારી ભાવના છે.

પ્રિય બંધુઓ ! તમારે પણ તમારા પ્રજાધર્મનું પાલન કરવું જોઇએ. પ્રજાધર્મ શું છે એ હું ફરીથી પણ કહીશ. આજે તો એટલું જ કહીને વ્યાખ્યાન સમાપ્ત કરીશ કે તમે તમારાં કર્તવ્યોનું પાલન કરશો તો તમારી ઉન્નતિ થશે અને તમે સુખી થશો. જેને પોતાનાં કર્તવ્યોનું ભાન છે તે જ ધર્મની આરાધના કરી મંગલમય બની શકે છે.



૪. ગૃહસ્થધર્મ

આજનું ગૃહસ્થજીવન દ્વેષ, કલહ જેવા દોષોથી ઘેરાયેલું છે. કોઈને પણ પોતાના કર્તવ્યનું ભાન નથી. પોતાના કુટુંબની માનમર્યાદાને કોઈ વફાદાર નથી. દરેકોઈ બેદરકાર બની જવાબદારીનું ભાન ભૂલી ગયું છે સંકુચિતતા, અવિશ્વાસ, અને અસહિષ્ણુતાને લીધે આજનું ગૃહસ્થજીવન ભારરૂપ બની ગયું છે.

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकः स्वार्थं परित्यज्य ये।
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृताः स्वार्थाविरोधेन ये॥
तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नान्ति ये।
ते निघ्नति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे॥

પ્રિય આત્મબંધુઓ !

આ વિશાળ વિશ્વનું હરેક પ્રાણી વિકાસની અભિલાષા કરે છે. નીચામા નીચા પગથિયા પર ઉભેલું પ્રાણી ઉપર ચડવાની કામના કરે છે. કોઇ પણ પ્રાણી પોતે સમજે છે ત્યાં સુધી જાણીબૂઝીને નીચે પડવાની કોશીશ નહિ કરે. પતન સૌ કોઇને ખરાબ લાગે છે અને વિકાસ સર્વને પ્રિય છે. પતનથી બચવાનુ અને વિકાસની શ્રેણીઓ પર ચઢવાનું મુખ્ય સાધન ધર્મ છે. ધર્મની વ્યુત્પત્તિ પણ એજ સિદ્ધ કરે છે. "दुर्गतिं प्रसृतान् जन्तून्धारयतीति धर्मः" દુર્ગતિ તરફ જતા પ્રાણીઓને રોકી રાખે તેનું નામ ધર્મ. દુર્ગતિ એટલે હલકી અવસ્થા અથવા પતન. જે કાર્ય પતનમાથી બચાવી વિકાસ તરફ લઇ જાય છે એનું નામ ધર્મ.

વિકાસની પરાકાષ્ઠા મોક્ષ છે. મોક્ષ થતાં વિકાસની પણ સંપૂર્ણતા થાય છે. આ ચરમ વિકાસને જ પ્રાપ્ત કરવાનું પ્રાણી માત્રનું ધ્યેય હોવું જોઇએ. આ ચરમ અને પરમ ધ્યેયની સિદ્ધિને માટે શાસ્ત્રકારોએ માર્ગ બતાવ્યો છે કે–

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः (तत्त्वार्थ सूत्र)

અર્થાત્ સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન અને સમ્યક્ચારિત્ર, મોક્ષના માર્ગ છે. અન્ય શબ્દોમા કહીએ તો સમ્યગ્જ્ઞાન અને સમ્યક્ ક્રિયા વિકાસના સાધનો છે. જે જ્ઞાન અને ક્રિયાઓ આપણા વિકાસમા કારણભુત છે તે બધી ક્રિયાઓ ધર્મરૂપ છે. આમ છતા પરમ વિકાસરૂપ મોક્ષને માટે તો આધ્યાત્મિક ધર્મજ વિશેષ આવશ્યક છે, તો પણ આધ્યાત્મિક ધર્મની આરાધનાની પૂર્વ ભૂમિકારૂપે તો ગૃહસ્થ ધર્મ, કુટુમ્બ ધર્મ, સમાજ ધર્મ, રાષ્ટ્ર ધર્મ વગેરેની સમ્યગ્ આરાધના કરવાનું આવશ્યક બની રહે છે. આધ્યાત્મિક ધર્મોની શ્રેણિ પર પહોચતા પહેલા નીતિ ધર્મ ગૃહસ્થ ધર્મ, સમાજ ધર્મ વગેરે શ્રેણીઓને પાર કરવાનું અનિવાર્ય બને છે. એમ. એ. સુધી પહોચતાં પહેલા પ્રારંભિક ધોરણોથી માડીને મેટ્રીક, બી. એ. વગેરે પરીક્ષાઓ પસાર કરવી પડે છે. અને ત્યારબાદ જ એમ. એ. નો અભ્યાસ કરવાની યોગ્યતા પ્રાપ્ત થાય છે. એવી જ રીતે જ્યા સુધી નીતિ ધર્મ, ગૃહસ્થ ધર્મ, કુટુમ્બ ધર્મ, સમાજ ધર્મ અને રાષ્ટ્ર ધર્મના પાલનની યોગ્યતા પ્રાપ્ત નથી થતી ત્યા સુધી આધ્યાત્મિક ધર્મના પાલનની યોગ્યતા પ્રાપ્ત થવી મુશ્કેલ છે. એ માટેજ આજના વ્યાખ્યાનમાં ગૃહસ્થ ધર્મનું વિવેચન કરવામા આવશે.

એક પ્રશ્ન—

કોઈ પણ માનવી એ પ્રશ્ન કરી શકે છે કે, જૈન મુનિ સંપૂર્ણ રીતે ત્યાગી હોય છે, તેઓ નિવૃત્તિ માર્ગ પર

છે, તો એમણે નિવૃત્તિ અને ત્યાગનોજ ઉપદેશ દેવો જોઇએ. ત્યાગી મુનિઓને ગૃહસ્થાશ્રમ સાથે શું પ્રયોજન ? ગૃહસ્થાશ્રમની ચર્ચા સાથે એમને શો સંબંધ ? એમણે તો એકાન્ત ત્યાગ અને મોક્ષની જ વાત કરવી જોઈએ.

આ પ્રશ્નનું સમાધાન એ છે કે મુનિનું લક્ષ્ય ત્યાગ પ્રત્યે હોય છે, અને તે પોતાની પ્રવૃત્તિ દ્વારા ત્યાગની જ પ્રેરણા કરે છે, એ નિર્વિવાદ વાત છે; પરંતુ એ ધ્યાનમાં રાખવું જોઇએ કે વ્યકિતની ભિન્ન ભિન્ન યોગ્યતા પ્રમાણે ત્યાગના પ્રમાણ અને પ્રકારમાં પણ ફેર હોય છે. હરેક વ્યકિત સામાન્ય રીતે ત્યાગ માર્ગ ગ્રહણ કરવાની યોગ્યતાવાળો હોવો જોઈએ એમ માની શકાય નહિ. દરેકની યોગ્યતા ભિન્ન ભિન્ન હોય છે; એથી પાત્રની યોગ્યતા અનુસાર જ એને ઉપદેશ કરવો હિતાવહ છે. ગૃહસ્થાશ્રમનો ત્યાગ એજ ત્યાગનો માર્ગ છે એવો કોઈ નિયમ નથી. શકિત પ્રમાણે ત્યાગ કરવો એજ પ્રણાલી હિતકારી છે.

મનુષ્યનો વિકાસ ધીરે ધીરે થાય છે. જે વ્યકિત ક્રમશઃ ચઢવાને બદલે એકદમ ઊંચે ચડવા માગે છે એ પતિત થાય છે. જે એક એક પગથિયું ચઢે છે, તે મહેલની અગાસી પર પહોંચે છે. જે પગથિયાને છોડીને એકદમ કૂદકો મારીને અગાસી પર પહોંચવાની કોશીશ કરે છે, તે ધર્મથી નીચે પડે છે. આજનો માનવ માનવતાને પણ ખોઇ બેઠો છે. એને આધ્યાત્મિક તત્ત્વોનો ઉપદેશ કેવી રીતે લાભકારક થાય ?

આધ્યાત્મિકતાનું અજીર્ણ

આજની જૈન અને જૈનેતર જનતાને આધ્યાત્મિક ધર્મનું અજીર્ણ થઈ ગયું છે. એમને આધ્યાત્મિક વાતો ગમે તો છે,

પણ એની પાચનશક્તિ જેટલી કમજોર થઈ ગઈ હોય છે કે એ તત્ત્વોના ઉપદેશને એ પચાવી શકતો નથી. બદામનો હલવો પુષ્ટિકારક તો બહુ હોય છે, પણ જો કોઈ રોગી ખાય તો એને માટે ઘાતક નીવડે છે. જેની પાચનશક્તિ મજબૂત હોય એને માટે જ બદામનો હલવો પુષ્ટિકારક છે, ... પણ જેનામાં એ હજમ કરવાની શક્તિ નથી હોતી એ જો એનું સેવન કરે તો એને અતિસાર થાય છે, ને ઘણાં અતિસાર થઈ જાય છે. પરિણામ એ આવે છે કે પહેલાંની શક્તિ પણ એ ગુમાવી બેસે છે. તાત્પર્ય કે, જો કોઈ ઊંચા તત્ત્વનું સેવન કરે તો એનું પોતાનું તો અહિત થાય છે, પણ સાથે તત્ત્વનો પણ નાશ થઈ જાય છે. આવું જ કંઈ આજે ધાર્મિક જનતાના પણ થઈ રહેલ છે. સામાન્ય ધર્મ ન પામતો માનવી પણ આધ્યાત્મિક ચર્ચાઓ અને ક્રિયાઓની ચર્ચા કરતો દેખાય છે. આનું પરિણામ એ આવે છે કે એ પોતાના સામાન્ય નૈતિક ધર્મની પણ ઉપેક્ષા કરતો દેખાય છે. આધ્યાત્મિક તત્ત્વ ખૂબ સુંદર અને પરમ ઉપકારી છે, પરંતુ એનું આચરણ કરવાની યોગ્યતા પહેલાં પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ. જ્યારે સામાન્ય નીતિ ધર્મ, ગૃહસ્થ ધર્મ વગેરેનું યોગ્ય રીતે પાલન કરવામાં આવે તો જ આ યોગ્યતા પ્રાપ્ત થઈ શકે. આધ્યાત્મિક તત્ત્વોને ન પચાવી શકવા છતાં પણ આજનો કહેવાતો ધાર્મિક સમાજ ક્રિયાકાંડોમાં મચેલો દેખાતો હોય છે. પરિણામે એના ધાર્મિક અને વ્યાવહારિક જીવનમાં આકાશ પાતાળ અથવા પૂર્વ પશ્ચિમ જેટલું અંતર જોવામાં આવે છે.

ધાર્મિક અને વ્યાવહારિક જીવન વચ્ચે અંતર.

વર્તમાન કાળમાં ધાર્મિક ગણાતા માનવીઓને જોઈએ તો તેઓ પ્રતિદિન મંદિર, સ્થાનક, દેવળ, મસ્જીદ વગેરે ધર્મ-સ્થાનોમાં જઈ પૂજા, પ્રાર્થના, નમાજ વગેરે કરે છે, ભજનો ગાય છે, માળાઓ ફરવે છે; આ ઉપરાંત અન્ય ધાર્મિક ક્રિયાઓ પણ કરે છે. પરંતુ જો એમનો જીવન વ્યવસાય જોવામાં આવે તો તે ધર્મમય નહિ, પરંતુ ખૂબ પતિત હોય છે. એક ધાર્મિક કહેવાતી વ્યકિત દુકાન પર બેસીને ગ્રાહકોનું ગળું કાપે છે. ખૂબ ખૂબ ચક્રવૃદ્ધિ વ્યાજ લઇને કરજદારનાં ઘરબારનું લીલામ કરાવી એના બાલબચ્ચાંઓને કણ કણ માટે લાચાર કરી મૂકે છે. પોતાના જરા જેટલા સ્વાર્થ માટે સેંકડો કુટુમ્બોની આજીવિકા છીનવી લે છે. અને પોતાના મુનીમો, ગુમાસ્તાઓ અને નોકરો પાસે અયોગ્ય ઢસરડા કરાવી હેરાન કરે છે. એમની પાસેથી વધુમાં વધુ કામ લઈ ઓછામાં ઓછો બદલો દેવાની ભાવના રાખે છે. વાસનાઓને તૃપ્ત કરવા માટે પૈસાનાં પ્રલોભનો આપી કેટલીયે યુવતીઓને પતિત કરે છે અને પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષ રૂપે નીતિ, સમાજ, રાષ્ટ્ર અને મનુષ્યતાથી વિપરીત હોય એવી અન્ય કેટલીયે પ્રવૃત્તિઓ કરે છે.

આવી પ્રવૃત્તિઓ કરવા છતા તેઓ બાહ્ય ક્રિયાકાંડોનું પાલન કરતા હોવાથી તેમની ગણતરી ધાર્મિકોમાં થાય છે. ધાર્મિક ક્રિયાઓ કરવા છતાં એમનામા લોભ, વાસના, વગેરે વિકારો એવા ને એવા જ ઘર કરી બેઠેલા હોય છે. આ દોષ કોનો? શું આને ધાર્મિક ક્રિયાઓનો દોષ કહીશું? ના. એ દોષ ધર્મ કે ધાર્મિક ક્રિયાઓનો નહિ, પણ ધામિકતાના

અજીર્ણનો છે. રોગીને પૌષ્ટિક પદાર્થ લાભદાયક ન થાય એમાં પૌષ્ટિક પદાર્થનો દોષ નહિ, પરંતુ રોગીનો રોગ જ એમાં કારણભૂત છે. ઘુવડ સૂર્યના પ્રકાશમાં દેખી ન શકે તેમાં સૂર્યનો દોષ નથી. આંધળો જોઈ ન શકે એમા દીવાનો શું દોષ? અંધકારમા દીવો વસ્તુઓને પ્રકાશિત કરે છે, પરંતુ આંધળો માણુસ દીવો હોવા છતા વસ્તુઓને જોઈ શકતો નથી આ દોષ દીવાનો નહિ પણ એની આંખોનો છે. આવી રીતે આધ્યાત્મિક ધર્મને સમજવાની કે તેનું પાલન કરવાની અયોગ્યતાવાળો મનુષ્ય જો આધ્યાત્મિક ક્રિયાઓ કરવા માડે છે અને તે ક્રિયાઓ જો ફળદાયી કે કલ્યાણકારી નથી નીવડતી તો તેમાં ધાર્મિક ક્રિયાઓનો દોષ નથી હોતો. એ દોષ છે, ક્રિયાઓનું આચરણ કરનારાઓની અયોગ્યતાનો.

કેટલાયે લોકોની એવી માન્યતા છે કે ધર્મ તો પરલોકને માટે છે. અમે અહીં જે કંઇ કરીએ છીએ, તેનું ફળ અહીં ન મળતા પરલોકમા મળશે. આવા લોકો ધર્મને પરલોકની ચીજ સમજતા હોવાથી તેમના જીવનમા ધર્મને કોઇ સ્થાન નથી હોતું. આ લોકના વ્યવહારો સાથે ધર્મને કોઇ પ્રકારનો સંબંધ નથી એવું તેઓ સમજે છે, અને તેથી જ વ્યાપાર અથવા અન્ય કાર્યોમાં ધર્મની ઉપયોગિતા તેમને જણાતી નથી, અને એવા વિષયોમાં ધર્મનો હસ્તક્ષેપ તેમનાથી સહન થતો નથી. તેમની એવી દલીલ હોય છે કે ધર્મ અને વ્યવહાર એ બન્ને અલગ અલગ ક્ષેત્રો હોય છે, એથી ધર્મના સ્થાન પર ધર્મનો વિચાર કરવો જોઇએ, અને સંસાર વ્યવહારમાં સંસારના

વ્યવહારોનો વિચાર કરવો જોઇએ. સંસારવ્યવહારમાં ધર્મને સ્થાન નથી.

આવી માન્યતાઓ ભ્રામક અને હાનિકર્તા છે. જે વ્યક્તિ ધર્મ અને વ્યવહારને અલગ અલગ અને નિરપેક્ષ સમજે છે, તેઓ પોતાના આત્માને છેતરે છે. તેઓ જાણીબુઝીને પોતાની જાતને દગો દે છે. ધર્મ જો માત્ર ધર્મસ્થાનોની જ ચીજ બની રહેતી હોય અને જો વ્યવહારમાં એનું કોઈ સ્થાન ન હોય તો એવા ધર્મવડે કોઇપણ હેતુ પાર પડશે નહિ. આવો ધર્મ આપણું કંઇપણ કલ્યાણ ન કરી શકે. જૈન શાસ્ત્રકારોએ સ્પષ્ટ કહ્યું છે કે જે વ્યવહારોમાં ધર્મ સંકલિત નથી એવા વ્યવહારોથી કદી પણ આપણો વિકાસ થઈ શકતો નથી. શાસ્ત્રકારોએ ધર્મની વ્યાખ્યા કરતાં કહ્યું છે કે "वत्थुसहावो धम्मो"–વસ્તુનો સ્વભાવ જ ધર્મ છે, કોઇપણ વસ્તુથી એનો સ્વભાવ દૂર થઈ શકતો નથી. અગ્નિનો સ્વભાવ બાળવાનો છે, અને પાણીનો સ્વભાવ શીતળતા આપવાનો છે. આ બન્ને સ્વભાવ અગ્નિ અને પાણીથી અલગ થઇ શકતા નથી. જેમાં બાળવાની શક્તિ છે, એને અગ્નિ કહીશું અને જેમાં શીતળતા આપવાની શકિત છે, તેને પાણી જ કહીશું. અગ્નિ ક્યારેક બાળે અને કયારેક ન બાળે કે પાણી કયારેક શીતળતા આપે અને કયારેક ન આપે એવું બનતું નથી. ગુણ અને ગુણીનો સંબંધ અલગ નથી પડી શકતો.

એવી જ રીતે ધર્મસ્થાનોમાં ધર્મિષ્ઠ અને વ્યાપારમાં પાપી એવા વિભાગો નથી પાડી શકતા. જે ધાર્મિક ક્રિયાની અસર વ્યવહારિક જીવન પર નથી થતી, તેને ધાર્મિક ક્રિયા ન

કહેતા રૂઢિધર્મ જ કહેવો જોઈએ ધર્મસ્થાનોમા લોકોને “मित्ति मे सव्वभूएसु” અથવા “सत्वेषु मैत्री” વગેરે, પરમાત્મા પાસે સંસારના નાના મોટા સર્વ પ્રાણીઓની સાથે મિત્રતા સેવવાનાં ધર્મસૂત્ર બોલનારા વ્યાપારનાં ગ્રાહકોના ગળા પર છરી ચલાવી શકે છે; જો બેફામ નફાખોરી અને કાળા બજાર કરી શકે છે. ધર્મસૂત્રો બોલનાર મનુષ્ય અન્યના હૃદય પર આઘાત કરે એવી મર્મભેદી વાણી બોલી શકે ખરો? શું એ બૂરી ભાવનાથી આંખો પર ક્રૂરતા લાવી શકે? કોઇ પણ પ્રાણીની હિંસા એનાથી થઈ શકે? અથવા હિંસક કાર્યોને એ ઉત્તેજન આપી શકે? આ બધા પ્રશ્નોનો ઉત્તર ‘ના’ મા જ હોઇ શકે.

બંધુઓ! નિશ્ચિત માનજો કે જે ધર્મ તમારા જીવનમા તાણાવાણાની પેઠે ગૂંથાઈ ગયો હોય એ જ ધર્મ કલ્યાણકારી છે.

ધર્મ તમારા જીવનમા જેટલે અંશે ઓતપ્રોત બન્યો હશે, એટલે અંશે તમારું એ કલ્યાણ કરશે. કલ્પના કરો કે રતલામનો માણસ મુંબઇ જઇને એક લાખ રૂપિયા કમાયો છે અને રતલામ પાછો આવી બે ત્રણ લાખ રૂપિયા ખોઈ નાખે છે. ફરીથી મુંબઈ જાય છે અને એક લાખ કમાય છે. પણ ફરીથી રતલામ આવીને તો બે ત્રણ લાખ ગુમાવે જ છે. તમે એને દેવાળિયો કહેશો કે શ્રીમંત?

એવી જ રીતે ધર્મસ્થાનમા આવીને જે માણસ ધર્મ કમાય છે અને દુકાન પર બેસીને અથવા જીવનના અન્ય

વ્યવહારોમાં એનાથી વધારે ખોઇ નાખે છે, એ મનુષ્ય ધર્મનો દેવાળિયો છે. તાત્પર્ય એ છે, કે ધર્મ અને વ્યવહાર સર્વથા ભિન્ન ન સમજવા જોઇએ. પણ વ્યવહારને ધર્મમય બનાવવો જોઇએ. આપણો કોઇ પણ વ્યવહાર ધર્મહીન ન બનવો જોઈએ. આપણા ધાર્મિક અને વ્યાવહારિક જીવનમાં આકાશ-પાતાળનું અંતર ન હોવું જોઇએ. જે વ્યકિત આવી રીતે સામાન્ય ધર્મોનું પાલન કરી શકે છે, એ જ આધ્યાત્મિક ધર્મોને પચાવી શકે છે. એથી જ વિકાસ માર્ગ પર ચઢવા માટે સૌથી પ્રથમ ગૃહસ્થ ધર્મની સમ્યગ્ આરાધનાક રવી જોઇએ.

ગૃહસ્થાશ્રમ જીવનવિકાસનો સાધક કે બાધક ?

કેટલાક લોકો સાચા ગૃહસ્થને આરંભ-સમારંભમા રત રહેનારો જાણી એની ઉપેક્ષા કરે છે; પણ એ એમની ભ્રમણા છે. જો કે એ તો સાચું જ છે કે આરંભ-સમારંભમાં યુકત રહેવાથી ત્યાગી કરતાં ગૃહસ્થ ઉતરતો છે. પરંતુ એથી ગૃહસ્થાશ્રમ મોક્ષપ્રાપ્તિમાં બાધક છે એમ કહેવું તે ભ્રમ છે. આરંભ-સમારંભમાં પણ પ્રકારોના ભેદ છે. ગૃહસ્થ અને ત્યાગીની ભૂમિકામા પણ ભેદ છે. ત્યાગીએ સર્વસ્વ છોડી દીધું હોય છે, જ્યારે ગૃહસ્થનો ઉદ્દેશ છોડી દેવાનો હોય છે. આ દૃષ્ટિએ ગૃહસ્થાશ્રમ ત્યાગનો બાધક નહિ, પરંતુ સાધક છે. જે વ્યક્તિએ ગૃહસ્થાશ્રમ સારી રીતે નિભાવ્યો હશે, એ વ્યકિત ત્યાગમાર્ગમા પણ અધિક સફળતા મેળવી શકશે. ગૃહસ્થાશ્રમ ત્યાગી જીવનના સ્તમ્ભ સમાન છે. જો ગૃહસ્થાશ્રમનો સ્તમ્ભ વધુ દૃઢ હશે તો એના પર ઊભી કરેલી ત્યાગી જીવનની ઇમારત પણ વધુ દૃઢ અને વ્યવસ્થિત થઇ શકશે. એ હમેશાં

યાદ રાખવું જોઇએ કે વિકાસ ધીમે ધીમે જ થાય છે. ભગવાન મહાવીરે પણ પ્રથમ ગૃહસ્થાશ્રમમાં દયા, દાન વગેરે ધર્મોનો વિકાસ કર્યો અને ગૃહસ્થાશ્રમને વિકસાવી એને આદર્શ બનાવ્યો. ત્યારબાદ જ એમણે સર્વથા ત્યાગનો માર્ગ અંગીકાર કર્યો. શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પોતાની શાસનવ્યવસ્થામા ગૃહસ્થ અને ત્યાગી એ બન્ને વર્ગોને સ્થાન આપ્યું છે. જો ગૃહસ્થ એકાન્ત પાપનું પિંડ હોય તો એને શાસન વ્યવસ્થામા સ્થાન કેવી રીતે મળે? ભગવાન મહાવીરે અગાર ધર્મ અને અણગાર ધર્મની પ્રરૂપણા કરીને એ બતાવ્યું છે કે ગૃહસ્થાશ્રમ પણ જીવનવિકાસનું એક અંગ છે.

ઠાણાંગ સૂત્રમા કહેવામા આવ્યું છે કે—

चरित्तधम्मे दुविहे पन्नते तंजहा-
अणगारचरित्तधम्मे आगारचरित्तधम्मे य ।

અર્થાત્—ચારિત્ર્યધર્મ બે પ્રકારના છે. તે અણગાર ચારિત્ર્યધર્મ અને (૨) આગાર ચારિત્ર્યધમ. આવી રીતે ગૃહસ્થધર્મને ચારિત્ર્યમા સ્થાન આપી એને વિકાસ માટે સહાયક માનવામા આવ્યો છે. શાસ્ત્રકારે એમ પણ કહ્યુ છે કે—

गिहिवासे वि सुव्वया ॥

અર્થાત્—ગૃહસ્થાશ્રમમા રહીને પણ સારી રીતે વ્રતોનું પાલન કરી શકાય છે. આ પરથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે ગૃહસ્થાશ્રમ વિકાસમા બાધક નહિ, પરંતુ સહાયક છે. જે પોતાને પાપમાં ફસાયેલા માનીને વધુ પાપ કરતા સંકોચાતા નથી, એમણે સમજી લેવું જોઇએ કે તેમની ધારણા ભ્રાન્ત છે. ૭

સ્થાશ્રમમાં રહીને પણ તેઓ પાપથી અલિપ્ત રહી શકે છે. માત્ર આવશ્યક એટલું જ છે કે તેમને પોતાના ધ્યેય અને કર્તવ્યોનું ભાન હોવું જોઈએ.

બંધુઓ! તમે પાપમાં જ બેઠા છો એવો ભ્રમ મનમાંથી કાઢી નાખો. કીચડથી જે ભરેલો છે તેને વધુ કીચડ લાગવાનો ભય શા માટે? એવું માનીને પાપકર્મોને વેગ ન આપો. સંસાર વ્યવહારને સમજપૂર્વક અને કર્તવ્યપરાયણતાથી આચરતાં તમે પાપ નહિ પણ ધર્મ તરફ જ આગળ વધી રહ્યા છો એ સ્પષ્ટ રીતે સમજી લો. જો તમે સાંસારિક વ્યવહારોને નીતિપૂર્વક, વિવેકસહિત અને નિર્લિપ્ત ભાવનાથી આચરશો તો એમાં એકાન્ત પાપ નથી થઈ શકતું.

તમે ગૃહસ્થાશ્રમના આદર્શોને ભૂલી રહ્યા છો એવું હું સ્પષ્ટ રીતે જોઇ રહ્યો છું; એથી જ તમારું જીવન ક્લેશ-કલહોમાં દબાઈ રહ્યું છે. તમારો ગૃહસ્થાશ્રમ અનેક દુર્ગુણો અને વિકારોના ભારથી દબાઈ રહ્યો છે. આવા વાતાવરણમા આધ્યાત્મિક ધર્મનું કેવી રીતે પાલન થઇ શકે? મિત્રો, પહેલાં મૂળને દૃઢ કરો. પછી જ શાખા, પત્ર, પુષ્પ, ફળ વગેરેની ચર્ચા કરવી યોગ્ય છે. પહેલાં તમારે તમારો ગૃહસ્થાશ્રમ સુધારવો જોઇએ અને ત્યારબાદ જ અન્ય વાતોનો વિચાર કરવો જોઈએ.

ગૃહસ્થ ધર્મનો સામાન્ય આચાર

માનવધર્મને બરાબર સમજી લઇ એને પોતાના જીવનમાં ઉતારી લે એ ગૃહસ્થનું સર્વ પ્રથમ કર્તવ્ય છે. સૌથી પ્રથમ ગૃહસ્થ માનવ છે, એથી માનવોચિત ગુણોનો વિકાસ એનામાં સર્વપ્રથમ થવો જોઈએ. ગૃહસ્થે એવું કોઈ કાર્ય કરવું ન

જોઇએ જેથી માનવજાતિને હાનિ પહોંચે. માનવ સમાજની પીડા જોઇ, એને દૂર કરવાના પ્રયત્ન કરવા લાગે તો તે પોતાના વ્યકિતગત સ્વાર્થોની સ્ફુરણાની મર્યાદા એ માનવધર્મ છે પશુઓમા પણ પોતાની જાતિ પ્રત્યે પ્રેમભાવ જોવામા આવે છે, તો માનવોમાં પણ અન્ય માનવો પ્રત્યે કેટલો અધિક પ્રેમ હોવો જોઇએ? પોતાનું કાર્ય કરતાં અન્યને નુકસાન તો નહિ પહોચે, એ બાબત ગૃહસ્થે પ્રથમ વિચારવી જોઈએ. આ વિચાર કર્યા વિના મનુષ્ય જો પોતાના સ્વાર્થોના જ પાલન કરે તો એ માનવધર્મની ઉપેક્ષા કરી ગણો છે એમ સમજવું. એક માનવ આવા વર્તનથી અન્યને નુકસાન કરે તો બીજો પણ એવું વર્તન કરીને એને હાનિ પહોચાડશે આમ કરવાથી સમાજવ્યવસ્થા બગડે છે. એથી પ્રત્યેક માનવનું સર્વપ્રથમ એ કર્તવ્ય બની રહે છે કે એના કાર્યથી એના કોઇ અન્ય ભાઈને, સમાજને અને દેશને હાનિ તો નથી પહોચતી? એવો વિચાર હરેક કાર્ય કરતા પહેલાં કરી લેવો જોઇએ. જે મનુષ્ય પોતાના નાના સ્વાર્થ ખાતર અન્ય મનુષ્ય, સમાજ અને દેશનાં હિતોને નુકસાન પહોચાડે તો એ આદર્શ ગૃહસ્થ બની નથી શકતો. માનવીય કર્તવ્યોનો વિચાર કરનારો ગૃહસ્થ જ આદર્શ ગૃહસ્થ છે.

અર્થોપાર્જન

ગૃહસ્થાશ્રમમા અર્થોપાર્જનનો પ્રશ્ન ખૂબ મહત્ત્વનો છે. ગૃહસ્થાશ્રમની નાવ કુશળતાપૂર્વક પાર ઉતારવી હોય તો ધન આવશ્યક બની રહે છે. ગૃહસ્થાશ્રમીઓને વ્યવહાર માટે દ્રવ્યની આવશ્યકતા રહેજ છે એ માનવું જ પડશે. જે ગૃહસ્થ અર્થોપાર્જનને યોગ્ય ગણતો નથી એ ગૃહસ્થાશ્રમને યોગ્ય નથી.

નીતિમય વ્યાપાર

આજકાલનો મનુષ્ય સમાજ ધનની પાછળ એટલો તો પાગલ બની ગયો છે કે ધન કમાતા તે ધ્યાનમાં લાવતો જ નથી કે પોતે શા માટે ધન કમાય છે. એ પોતાનો વ્યવસાય નીતિપૂર્વક કરે છે કે ધનલોભને કારણે નીતિનું ખૂન કરી રહ્યો છે એવો વિચાર એને આવતો જ નથી. આજ કાલના વેપારીઓની આબરૂ જ કયા રહી છે? કેટલાક વેપારીઓ તો એમ પણ કહી નાખે છે કે જેમ શાકભાજીમા મીઠા વગર ચાલતું નથી, તેમ વેપારમા ખોટું બોલ્યા વગર પણ કામ પાર પડતું નથી. આ કથન કેવા અધઃપાતનું સૂચન કરી રહ્યુ છે? વાતવાતમા ખોટું બોલવું, સારી વસ્તુ બતાવી ખરાબ આપવી, તોલમાં ઓછું આપવું, વસ્તુઓમા ભેળભેળ કરવી, ગ્રાહકના અજ્ઞાનનો લાભ લઈ બેથી ત્રણગણો ભાવ લેવો, કાળા બજાર કરવા, વગેરે વેપારના અંગો બની ગયા છે. જીવનના વ્યવહાર અને વ્યાપારમાથી નીતિને તો દેશવટો જ આપી દેવામા આવ્યો છે. સારા કહેવાય એવા વેપારીઓને મોઢેથી સાંભળવામાં આવે છે કે "વેપારમાં નીત કેવી? વેપાર તો વેપારજ છે. એમા જો નીતિ અનીતિનો વિચાર કરવામા આવે તો વેપાર ચાલે જ નહિ." આવું કહેવાવાળાઓએ જીવન અને ધર્મને ભિન્ન ભિન્ન વસ્તુઓ માની લીધી છે. તેમને ખબર નથી કે જીવન અને ધર્મમા ખરેખરો કોઈ ભેદ નથી; નીતિમય જીવન એ જ સાચું જીવન છે. ધર્મનું મૂળ નીતિ જ છે. વેપાર અને વ્યવહારમાં નીતિધર્મ કયારેય ન ભૂલાય એ જોવાનો હરેક સદ્‌ગૃહસ્થનો ધર્મ બની રહે છે. ન્યાયપૂર્વક

આજીવિકા મેળવવા માટે પ્રયત્ન કરવો એ ગૃહસ્થનું કર્તવ્ય છે. બીજી એ વાત પણ ધ્યાનમાં રાખવા જેવી છે કે દેશને હાનિ ન કરે એવો જ વેપાર ગૃહસ્થોએ કરવો જોઈએ આજકાલ કેટલાયે વેપારી લોકો એવો વેપાર (વિદેશી વસ્તુઓનો) પણ કરે છે, એથી દેશના મોટા ભાગના જનસમુદાયનુ અહિત થઈ રહ્યું છે. જૈન શાસ્ત્રકારોએ શ્રાવકને માટે યંત્ર વગેરે વસ્તુઓના વેપારનો નિષેધ કરેલો છે. એનું કારણ માત્ર એ જ છે કે યંત્રોને લીધે સમાજનો મોટો ભાગ બેકાર બની જાય છે, અને સમાજમાં ધનિક અને ગરીબ એ વચ્ચેનો ભેદ એટલો તો વિશાળ અને ઊંડો બનતો જાય છે કે એનું પરિણામ ભયંકર સામાજિક અવ્યવસ્થામાં જ આવે છે આથી ગૃહસ્થે એ લક્ષમા રાખવાનું છે કે એનો વેપાર સમાજ અને દેશને હાનિકર્તા ન હોય. આદર્શ ગૃહસ્થ પોતાના ક્ષુદ્ર સ્વાર્થ માટે સમાજ અને દેશનો દ્રોહ કરતો નથી. ન્યાયપૂર્ણ રીતિથી ઉત્પન્ન કરેલા દ્રવ્યની વ્યવસ્થામા પણ એ ધ્યાન રાખવુ અત્યંત આવશ્યક છે કે એનો સદુપયોગ માત્ર પોતાના વ્યક્તિગત કાર્યોમા જ નહિ, પરંતુ કૌટુમ્બિક, સામાજિક અને રાષ્ટ્રિય કાર્યોમા પણ થાય. જે લોકો પોતાની સંપત્તિનો ઉપયોગ માત્ર પોતાનો સ્વાર્થ સાધવામા જ કરે છે, તેઓ આદર્શ કહી શકાય જ નહિ. ભર્તૃહરિએ કહ્યુ છે કે—

> एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये ।
> सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ॥
> तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ।
> ते निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥

જે પોતાના સ્વાર્થને છોડીને અન્યનું ભલું કરે છે, તે સત્પુરુષ છે. પોતાને હાનિ ન પહોંચે ત્યાં સુધી પારકાનું હિત કરનારો સામાન્ય મનુષ્ય છે. પોતાના સ્વાર્થને માટે બીજાઓનું અહિત કરનારો મનુષ્યના રૂપમાં રાક્ષસ છે. અને જે પોતાના સ્વાર્થ વગર પણ અન્યનું અહિત કરે છે, તેને તો કોની ઉપમા આપવી એજ સમજાતું નથી.

આનું તાત્પર્ય એ છે કે આદર્શ ગૃહસ્થે માત્ર પોતાનું જ ધ્યાન ન રાખતા કૌટુમ્બિક, જાતીય, રાષ્ટ્રિય અને ધાર્મિક કર્તવ્યોનું ધ્યાન પણ અવશ્ય રાખવું જોઇએ. અર્થ સંબંધી વિચાર કર્યા પછી હવે કૌટુમ્બિક કર્તવ્ય તરફ પણ હું તમારું લક્ષ ખેંચું છું.

કૌટુમ્બિક કર્તવ્ય

ગૃહસ્થ જીવનનું સાચું સુખ કૌટુમ્બિક કર્તવ્યોના પાલનમા જ રહેલું છે. કૌટુમ્બિક કર્તવ્યોમા માતાપિતાનું સંતાનો પ્રત્યે, સંતાનોનું માતાપિતા પ્રત્યે, પતિનું પત્ની પ્રત્યે, પત્નીનું પતિ પ્રત્યે, ભાઈનું ભાઈ પ્રત્યે, સાસુનું વહુ પ્રત્યે, વહુનું સાસુ પ્રત્યે, દેરાણીનું જેઠાણી પ્રત્યે, જેઠાણીનું દેરાણી પ્રત્યે. વગેરે કર્તવ્યોનો સમાવેશ થાય છે. આજના ગૃહસ્થાશ્રમને સ્વગ સુખ સમાન ગણવામાં આવ્યું છે, પરંતુ વર્તમાન ગૃહસ્થોના કૌટુમ્બિક જીવનનું બહુધા કલેશમય વાતાવરણ જોતાં એમ લાગે કે તેઓએ પોતાનું જીવન નરક-તિર્યંચના જીવન જેવું બનાવી દીધું છે! ગૃહસ્થોના કૌટુમ્બિક ઝઘડાઓ સ્વર્ગસમાન ઘરને નરકમાં ફેરવી નાખે છે. આ ગૃહકલેશો તથા પરસ્પરનાં વેરઝેર

ગૃહસ્થ જીવનના નંદનવન માટે અગ્નિ સમાન બની રહે છે. જો આપણે ગૃહકલેશના મૂળમાં દૃષ્ટિપાત કરીશું તો જણાશે કે કુટુમ્બની વ્યક્તિઓ પોતપોતાનાં કર્તવ્યોને બરાબર સમજતી નથી, અથવા સમજે છે તો પાળતી નથી. આજે તો ગૃહસ્થોમા એટલું અજ્ઞાન ભરેલું છે કે એમનું કતવ્ય શું છે, તેની તેમને ખબર નથી. આ અજ્ઞાન તથા કર્તવ્યો પ્રત્યેની બેદરકારી એ જ ગૃહસ્થોના ઘરના ઝઘડાનું કારણ છે. એ કારણે જ ગૃહસ્થ જીવન ભારરૂપ બની ગયું છે. કુટુમ્બની હરેક વ્યક્તિ જો પોતાની જવાબદારી બરાબર સમજે તો ક્યારેય અશાતિનો પ્રસંગ ઉભો ન થાય.

માતા પિતા અને સંતાનો

સંતાનના જન્મથી જ તેનામાં સંસ્કારોનું સિંચન કરવું એ સંતાન પ્રત્યેનું માતાપિતાનું કર્તવ્ય છે. ગર્ભાવસ્થામાથી જ બાળક પર માતાપિતાની અસર પડવા લાગે છે. એથી ગર્ભાધાનના સમયથી જ માતાપિતાનું એ કર્તવ્ય બની રહે છે કે તેઓ પોતાનું જીવન પવિત્ર બનાવે અને પોતાના વિચારો અને વર્તન પર પૂરતું ધ્યાન આપે. જો તેઓ પવિત્ર જીવન વ્યતીત કરશે તો એમની પવિત્રતાની અસર બાળક પર અવશ્ય પડશે. આનું પ્રમાણ મહાભારતમા આપ્યું છે. અભિમન્યુએ માતાના ગર્ભમાં જ ચક્રવ્યૂહને ભેદવાની વિદ્યા શીખી લીધી હતી. આથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે ગર્ભમા રહેલા બાળક પર પણ માતાપિતાનો ખૂબ જ પ્રભાવ પડે છે. એથી ગર્ભકાળથી જ માતાપિતાએ સંયમિત જીવન ગાળવું જોઇએ. બાળકના જન્મ પછી પણ તેમાં સુસંસ્કારો રેડવાની ફરજ માતાપિતાની

જ છે. બાળકની પ્રથમ શિક્ષિકા માતા જ છે. સુસંસ્કારોમાં પોષાયેલું બાળક કુળના નામને ઉજ્જવળ બનાવે છે. બાળકના શિક્ષણ માટે પણ યોગ્ય પ્રબંધ કરવો એ પણ માતાપિતાનું મુખ્ય કર્તવ્ય બની રહે છે. જે માબાપ પોતાનાં બાળકોને સુશિક્ષિત નથી બનાવતાં તેઓ તેમના શત્રુ છે. નીતિકારે કહ્યું છે–

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा ॥

વર્તમાન કાળમા કેટલાક શ્રીમન્ત લોકો શિક્ષણ પ્રત્યે ઉદાસીનતા સેવતા હોય એવું દેખાય છે. તેઓ પોતાનાં સંતાનોને ઉચ્ચ શિક્ષણ ન આપતા મામૂલી અક્ષરજ્ઞાન આપીને તથા અંકગણિત શિખવીને વેપાર–ધંધે વળગાડી દે છે. જૈન સમાજમાં શિક્ષિતો, વિદ્વાનો અને પંડિતોની ખામીનું કારણ એ જ છે. શિક્ષણની દૃષ્ટિએ અન્ય સમાજો કરતા જૈનોનો સમાજ બહુ જ પછાત છે. શિક્ષણ પ્રત્યેની જૈન સમાજની ઉપેક્ષા બહુ જ ભયંકર છે. માતાપિતાનું એ કર્તવ્ય છે કે તેઓ પોતાનાં સંતાનોને સુશિક્ષિત બનાવે. શિક્ષણનો આશય સંતાનની શારીરિક, બૌદ્ધિક અને માનસિક ઉન્નતિ કરવાનો હોવો જોઇએ. નોકરી કરવી એ શિક્ષણનો આશય નથી. બાળકને હરેક પ્રકારે યોગ્ય બનાવી એને જીવનસંગ્રામમાં સાચો વીર બનાવવાની જવાબદારી માતાપિતાની છે. એથી જ સંતાનનું પણ એ કર્તવ્ય બની રહે છે કે તે પોતાનાં માતાપિતા પ્રત્યે ખૂબ આદરભાવ અને ભક્તિભર્યું વર્તન દાખવે. એમનો ઉપકાર ક્યારેય ભૂલે નહિ, એમની યોગ્ય આજ્ઞાઓનું પાલન કરે, એમની સેવાભકિત કરે, વૃદ્ધાવસ્થામાં ખૂબજ ભક્તિભાવથી

એમની સેવા કરે, જે માતાપિતાએ એને હરેક પ્રકારે યોગ્ય બનાવ્યો છે, એમના ઋણને ક્યારેય ન ભૂલે. આજકાલના અવિવેકી પુત્રો એમનાં માતાપિતાને ગાળો દે છે. વૃદ્ધાવસ્થામાં એમની સંભાળ રાખતા નથી. સ્ત્રીઓના અયોગ્ય દબાણ હેઠળ પોતાના જન્મદાતાઓની અવહેલના કરે છે. આમ કરવું એ મહાન પાપ છે. વિવેકી સંતાનો ક્યારેય પણ પોતાનાં માતા-પિતાની અવજ્ઞા કરી શકે નહિ.

વર્તમાન કુટુમ્બોમા કેટલાંક એવા ઉદાહરણો જોવા મળે છે કે જેમા પિતાપુત્ર વચ્ચે અથવા માતાપુત્ર વચ્ચે અણબનાવ જોવામાં આવે છે. આના બે કારણો છે. પહેલું કારણ એ છે કે પુત્ર પોતાની સ્ત્રીના અયોગ્ય પ્રેમમાં આધળો બની વૃદ્ધ માતા-પિતાને ભારરૂપ સમજવા લાગે છે બીજું કારણ છે વિચારોની અસમાનતા. પહેલા કારણથી જે પુત્ર પોતાના માતાપિતાનો તિરસ્કાર કરે છે તે માનવી નથી પણ પશુ છે. વિચારોની અસમાનતાને લીધે પણ અણબનાવ જોવામાં આવે છે. વર્તમાન યુગમાં નવીનતા અને પ્રાચીનતા વચ્ચેનો વિરોધ ઉગ્ર સ્વરૂપે જોવામાં આવે છે. પિતા પુરાણપંથી છે, એને જૂના વિચારો અને રૂઢિગત નિયમો ગમે છે. જ્યારે આધુનિક પુત્ર એનો વિરોધ કરે છે. આવી વિષમ પરિસ્થિતિમા શું કરવું જોઇએ એ એક વિચારણીય પ્રશ્ન છે. આવી વિરુદ્ધ પરિસ્થિતિમાંથી સમાધાન અને શાન્તિનો માર્ગ કાઢી શકાય છે. આવી પરિસ્થિતિમા માતા, પિતા અને સંતાન એ બન્નેએ વિવેકબુદ્ધિથી કામ લેવું જોઇએ. માતાપિતાએ સમજવું જોઈએ કે પુત્ર હવે સમજુ થયો છે, અને તેનામા સ્વતંત્ર વિચાર કરવાની શકિત પણ

આવી છે. અમારે હુવે એની સાથે મિત્ર જેવો સમાન વર્તાવ રાખવો જોઇએ. એ સ્થિતિમાં સંતાનનું કર્તવ્ય, ભક્તિ અને સહિષ્ણુતાદ્વારા માતાપિતાને સમજાવવાનું બની રહે છે. વિવેકી અને બુદ્ધિમાન પુત્ર ભક્તિ અને સહિષ્ણુતાથી પુરાણપંથી માતાપિતાને પણ સમજાવી શકે છે. આવી રીતે જો બન્ને પક્ષે સમાધાનકારક પદ્ધતિનો આશ્રય લેવામાં આવે તો મનદુઃખનું કોઇ કારણ રહે નહિ અને તેઓ સુખેથી પોતપોતાનાં કર્તવ્યોનું પાલન કરતાં આનંદી ગૃહસ્થજીવન વ્યતીત કરી શકે.

પતિ પત્ની

કુટુમ્બનું આભૂષણ દંપતી છે. પતિ પત્નીના સુખમય સંબંધની અસર સમાજ પર પણ પડે છે. જો પતિપત્ની પોતપોતાનાં કર્તવ્યોનું પાલન જવાબદારીથી કરતાં રહે તો એમના જીવનમાં નિરંતર સુખપ્રવાહ વહેતો જ રહે. સૌથી પહેલાં બન્નેએ એ સમજી લેવું જોઇએ કે તેમનો સંબંધ વિષયવાસનાઓ માટે નથી. વિકારોની તૃપ્તિ માટેજ આ વૈવાહિક સંબંધ નથી, પરંતુ જીવનસંગ્રામમા પરસ્પરનો સહકાર પ્રાપ્ત કરવો એજ વિવાહનો પ્રધાન હેતુ છે. આજે લોકો વિવાહના પવિત્ર ઉદ્દેશ્યને ભુલી ગયા છે. વિવાહ એટલે ભોગવિલાસ એવું જ તેઓ માની બેઠા છે. પતિપત્ની એટલે એક બીજાના વિકારોની તૃપ્તિનાં સાધન ! જ્યારથી વિવાહનો પવિત્ર આશય લુપ્ત થયો ત્યારથી વિષયવાસનાની વૃદ્ધિ થઇ છે અને એ કારણે કુટુમ્બ, સમાજ અને રાષ્ટ્રમાં ક્ષીણતા આવી ગઇ છે. આજનો યુવાનવર્ગ વિલાસિતામાં એટલો તો ડૂબેલો છે કે મોહાન્ધકારમા તેને કર્તવ્યનો માર્ગ પણ દેખાતો નથી;

યુવાવસ્થાનાં પ્રારંભિક વર્ષોમાં યુવક અને યુવતી એક બીજાના મોહમાં એટલાં તો અંધ બની જાય છે કે તેઓ માતા, પિતા અને વડીલોને પોતાના માર્ગમા કંટકરૂપ સમજવા માંડે છે. પત્ની આવતાંજ પુત્ર પોતાનાં માતા પિતાથી અલગ રહેવાનું પસંદ કરે છે. પત્ની હંમેશાં પતિને સાસુ, સસરા, નણંદ, દિયર, જેઠ, વગેરેના દોષો બતાવતી રહે છે, અને તેમનાથી જૂદા પડવાની પ્રેરણા કરતી રહે છે. મોહાંધ પુત્ર માતાપિતાના સ્નેહને ઠોકરે મારીને જલદી અલગ થઇ જાય છે. આવી રીતે પતિપત્નીની પરસ્પરની મોહાંધતાને કારણે કુટુમ્બમા કલેશનાં બીજ રોપાય છે. પરંતુ જો પતિ મોહાંધ ન હોય તો પોતાની પત્નીને યોગ્ય શિખામણ આપી ઠેકાણે લાવી શકે છે. એ પત્નીને સહનશીલ બનવાનું કહે છે અને એ રીતે ગૃહકલેશને દૂર કરે છે. જે મોહાંધ હોય છે તે પત્નીની અયોગ્ય વાતોને માની લઇ માતાપિતાના વાત્સલ્યને ઠોકરે મારે છે. આવી વ્યકિત-ઓનું ચોક્કસ પતનજ થાય છે.

પતિપત્નીએ હમેશાં લક્ષમાં રાખવું જોઇએ કે તેમના વિવાહિત જીવનનો ઉદ્દેશ ભોગવિલાસ નથી. લગભગ બધાજ સ્ત્રી પુરુષોનો એ ભ્રમ હોય છે કે તેઓ વિવાહિત છે માટે તેમણે વિષયોપભોગ કરવા જ જોઇએ. આવી ભાવના ગૃહસ્થાશ્રમ માટે ખરેખર કલંકરૂપ છે. વિવાહિત જીવનની યોજના વિલાસ માટે નહિ, પરંતુ સુદૃઢ અને સંસ્કારી પ્રજોત્પત્તિના આશયથી જ કરવામાં આવી છે. ગૃહસ્થાશ્રમમા પણ બ્રહ્મચર્યનું પ્રાધાન્ય હોવું જોઇએ. શુભસંસ્કારી પ્રજો-ત્પત્તિના હેતુથી જ થયેલું બ્રહ્મચર્યનું ખંડન ક્ષમ્ય ગણાય છે,

પરંતુ ભારે ખેદની વાત છે કે બ્રહ્મચર્યની મહત્તાને વર્તમાન ગૃહસ્થો સમજી શક્યા નથી. કામતૃપ્તિમાં જ તેઓ સુખ માની બેઠા છે. તેના અનિષ્ટ પરિણામો પ્રત્યે તેઓ જરાપણ ધ્યાન દેતા નથી. બ્રહ્મચર્યના અભાવથી અને વિષયવાસનાની વૃદ્ધિથી આજના યુવાનોના સ્વાસ્થ્ય, સ્ફુર્તિ, ઉત્સાહ અને ઓજસ નષ્ટ થઈ બેઠાં છે. આજનાં યુવકો અને યુવતીઓના ચહેરાઓ પર લાલિમા દેખાતી નથી, તેમના ગાલ પીળા અને ફિક્કા દેખાય છે. એમની આંખો ઊંડી ઉતરી ગયેલી હોય છે. યુવાનીમાં જ તેમના ચહેરા પર વૃદ્ધાવસ્થા દેખાઈ રહી હોય છે. આનું એક માત્ર કારણ બ્રહ્મચર્યનું ખંડન જ છે. વિષયવાસનામાં લીન બની તેઓ પોતાની અણમોલ શક્તિ–વીર્યનો નાશ કરી નાખે છે. શક્તિને ગુમાવી તેમનાં શરીર ખોખરાં બની ગયા છે. એથી એમના સંતાનો પણ નિર્બળ, કમજોર, રોગી અને અલ્પાયુ બને છે. આજકાલ ભારતમા એવા માયકાંગલાં બાળકો ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા છે, જે દેશને શાપરૂપ બની રહ્યા છે. જયા સુધી ગૃહસ્થ બ્રહ્મચર્યનું મહત્ત્વ ન સમજે ત્યાંસુધી સુયોગ્ય સંતાન ઉત્પન્ન ન થઈ શકે. જેટલે અંશે બ્રહ્મચર્યનું પાલન થશે તેટલે અંશે ગૃહસ્થાશ્રમ સુખી અને સફળ બનશે. આવા સંયમી ગૃહસ્થોનાં સંતાનો જ વીર્યવાન બની શકે છે. વીર્યવાન, તેજસ્વી અને સંયમી સંતાનો જ વર્તમાનની અધોગતિમાંથી ઉદ્ધાર કરવામાં શક્તિમાન થશે. એથી દંપતીએ બ્રહ્મચર્યને જ પોતાનું ધ્યેય સમજવું જોઇએ.

પતિનું પત્ની પ્રત્યે કર્તવ્ય

પતિનું સર્વપ્રથમ કર્તવ્ય પત્નીને પોતાની સહચરી સમ-

જવાનું છે. પત્ની પતિની અર્ધાંગના કહેવાય છે. પતિ અને પત્ની એકબીજાનાં પૂરક છે માટે તેમના અધિકારો સરખા છે. પતિનો અધિકાર પત્ની પર છે, અને પત્નીનો અધિકાર પતિ પર છે. સ્ત્રીને સહચરી કહીને પ્રાચીન પુરુષોએ નારીજાતિના મહત્ત્વને વધાર્યું. પ્રાચીનકાળમાં સ્ત્રીઓની પૂજા થતી, સમાજમાં એમનું ખૂબ માન હતું. પ્રાચીન ગ્રન્થકારોએ તો ત્યાં સુધી કહ્યું છે કે—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

અર્થાત્–જ્યાં સ્ત્રીઓનું સન્માન કરવામાં આવે છે ત્યાં દેવતાઓ નિવાસ કરે છે. આ ઉકિતમાં નારી જાતિનું કેટલું મહત્ત્વ ગાયું છે? પણ આજે આપણે જોઈએ છીએ કે વર્તમાનકાળમાં સ્ત્રીઓની દશા કેવી બૂરી છે! પતિની દૃષ્ટિમાં પત્ની સહચરી મટી ગઈ અને દાસી જ બની રહી. એ એને વાસનાપૂર્તિનું એક સાધન જ સમજવા લાગ્યો. એ જ કારણે લાંબા સમયથી સ્ત્રીઓ પ્રત્યે પુરુષોની ઉપેક્ષાવૃત્તિ જ રહી છે. આ ઉપેક્ષાભાવને કારણે ભારતની ભારે અવનતિ થઇ છે. જ્યારથી પુરુષોની દૃષ્ટિએ સ્ત્રીઓનું મહત્ત્વ ઘટી ગયું ત્યારથી ભારતની અવનતિનો પ્રારંભ થયો. 'જે હાથ ઝુલાવે પારણું, તે જગત પર શાસન કરે.' આ ઉકિતમાં ખૂબ જ ગૂઢ અર્થ રહેલો છે એ ન ભૂલવું જોઇએ. બાળક જ મોટો થઇને રાષ્ટ્રનિર્માતા બને છે, અને એ જ બાળકે માતા પાસેથી જ સંસ્કારોની પ્રાપ્તિ કરેલી હોય છે. એથી જ સર્વ પ્રકારનો વિકાસ સ્ત્રીઓના વિકાસ પર જ અવલંબે છે.

જ્યાંસુધી સ્ત્રી સમાજ અશિક્ષિત હશે, જ્યાંસુધી મહિલાઓમાં વિકાસ નહિ થાય, ત્યાંસુધી સુધારાની મોટીમોટી આશાઓ સેવવી વ્યર્થ છે. સ્ત્રી અને પુરુષ બન્ને પુરુષાર્થરૂપી રથનાં બે ચક્રો છે. બન્ને ચક્રો બરાબર હશે તોજ રથની ગતિ પણ બરાબર રહેશે. જો એક ચક્ર મજબૂત હશે અને બીજું નબળું હશે તો એ રથ ચાલી નહિ શકે. એથી જો ગૃહસ્થાશ્રમને વ્યવસ્થિત બનાવવો હોય તો સ્ત્રીઓનો વિકાસ સૌપ્રથમ આવશ્યક છે. સ્ત્રીઓ પ્રત્યે કરવામા આવેલી ઉપેક્ષા આપણે માટે ખૂબ ઘાતક સિદ્ધ થઈ છે. ઘણા મૂર્ખ લોકો સ્ત્રીને પગની મોજડી સમાન ગણવાની ધૃષ્ટતા કરે છે અને આ મૂઢતાને પરિણામે સમાજમાં સાઠ વર્ષના વૃદ્ધની સાથે ચૌદ વર્ષની કન્યાનું લગ્ન થાય છે. પુરુષોની આ ભયંકર સ્વાર્થલોલુપતા અને અનીતિ છે. વૃદ્ધવિવાહ, મેળ વિનાના લગ્ન, વગેરે ઘાતક પ્રથાઓએ સ્ત્રીસમાજની ખૂબ અવનતિ કરી છે. ધર્મ અને નીતિશાસ્ત્ર સ્ત્રીઓની યશગાથાઓ ગાઈ રહ્યાં છે, ત્યારે તમે સ્ત્રીઓને તમારી દાસી સમજવાની મૂર્ખતા કરી રહ્યા છો. જે પતિ સ્ત્રીને દાસી સમજે છે, તે સમસ્ત સ્ત્રી સમાજને અન્યાય કરી રહ્યા છે. આવો પુરુષ ગૃહસ્થધર્મનું પાલન નથી કરી રહ્યો. મિત્રો ! સ્ત્રીને સહચરી સમજીને એનું સન્માન કરતાં શીખશો તો તમારા ઘરમાં ખરેખર દેવતાઓ રમણ કરતા હશે. પત્નીની યોગ્ય જરૂરીઆતોને પૂરી કરવી એ પણ પતિનું કર્તવ્ય છે. સ્ત્રી ઘરની વ્યવસ્થા કરે છે અને એજ ઘરની રાણી છે. એથી એની યોગ્ય જરૂરીઆતો પૂરી કરવાની જવાબદારી પતિની છે. પત્નીને લીધે જ ગૃહસ્થાશ્રમ સુખપૂર્વક

ચાલી શકે છે. નીતિકારોએ પત્નીને જ ઘરની શોભા કહી છે અને જ્યા ગૃહિણી હોય એજ સ્થાનને એમણે ગૃહ માન્યું છે. "गृहिणी गृहमुच्यते" નીતિકારોએ ગૃહિણીને જ ઘર કહ્યું છે. ગૃહસ્થાશ્રમમા સ્ત્રીનું કેટલું ઊંચું સ્થાન છે, તે આ પરથી સમજી શકાય છે. તાત્પર્ય એ છે કે પત્નીને પોતાની સહધર્મિણી અને સહચરી સમજવી એ યોગ્ય પતિનું કર્તવ્ય છે.

પત્નીનું કર્તવ્ય

બીજી તરફ પત્નીનું પણ એ કર્તવ્ય છે કે તે પોતાને પતિની અર્ધાંગના સમજે અને પતિના સુખદુઃખમાં એને સાથ આપે. સીતાને આદર્શ પત્ની એટલા માટે જ કહેવામા આવે છે કે દુઃખના સમયમા પણ એણે રામચંદ્રજીનો સાથ છોડ્યો નહિ. તેમની સાથે વનમા ગયા અને પ્રસન્નતાપૂર્વક સુખદુઃખનો સામનો કર્યો. સ્ત્રીનો દેવ એનો પતિ જ છે. પતિની પવિત્ર આરાધનામા સ્ત્રીઓનું ગૌરવ છે. પતિના સુખમાં સુખી અને પતિના દુઃખમા દુઃખી એ પતિવ્રતા સ્ત્રીઓનો આચાર હોય છે. જે સ્ત્રી સુખના સમયમાં પતિની સાથે રહે છે, અને દુઃખમાં વ્યવહાર બદલી નાખે છે, તેને અર્ધાંગના કહી શકાય નહિ. સ્ત્રીઓના પતિવ્રતની સાચી કસોટી તો દુઃખના સમયમાં જ થાય છે. પત્નીનું અન્ય આવશ્યક કર્તવ્ય એ પણ છે કે પતિનાં આવક અને ખર્ચ એ બન્નેને જોઈને પોતાની રહેણીકરણી કેળવે. પણ લગભગ તો એવું જ જોવામાં આવે છે કે સ્ત્રીઓ પતિની આવક તરફ જોયા વિના પોતાના ઘરેણાં અને કિંમતી વસ્ત્રો માટે આગ્રહ રાખતી જોવામા આવે છે. સ્ત્રીઓએ આભૂષણો અને સારાં વસ્ત્રોમાં જ સુખ માની લીધું છે. આમાં એને એ

ધ્યાન નથી રહેતું કે આવી માગણીઓ કરી તે પોતાના પતિને અધર્મદ્વારા દ્રવ્યોપાર્જન કરવાનું આડકતરું દબાણ કરી રહી છે. પતિ ગમે તેમ કરે, પરંતુ ઘરેણાં, કિંમતી વસ્ત્રો તથા ફેશનના સાધનો માટેની સ્ત્રીની માગણી તો પૂરી થવી જ જોઇએ ! જે સ્ત્રી પતિને આવાં રોજનાં નવાં નવાં ફરમાનોથી ચિંતામાં નાખે છે, તે ધર્મ ચૂકે છે. પતિનું સુખ એજ સ્ત્રીઓનું સાચું આભૂષણ છે. પતિવ્રત એજ એની શોભા છે, ઘરેણા નહિ. બહેનોએ આ બાબત પ્રત્યે ખાસ લક્ષ આપવાની જરૂર છે. ઘણુભાગે એવું જોવામાં આવે છે કે પતિ જ્યારે જમવા બેસે ત્યારે પત્ની એની સમક્ષ પોતાની માગણીઓની રજૂઆત કરતી હોય છે અને જો એની માગેલી વસ્તુઓ પૂરી પાડવામાં થોડું મોડું થઇ જાય તો પત્નીનું કઠોર ભાષણ શરૂ થાય છે, અને ઘરમાં કંકાસ પેસી જાય છે. પરિણામે ગૃહસ્થાશ્રમ દુઃખમય બની રહે છે. સાચી પતિવ્રતા સ્ત્રીનું એ કર્તવ્ય છે કે એણે પોતાની જરૂરીઆતો એટલી બધી તો ન વધારવી જોઇએ કે પતિ એ પૂરી ન કરી શકે. સ્ત્રીએ મૃદુ-ભાષિણી થવું જોઇએ. જે સ્ત્રીમાં મૃદુભાષણનો ગુણ હોય છે, તે સદાયે સુખી રહે છે. વાણીની મીઠાશ જીવનમાં પણ ખરે-ખર મીઠાશ લાવે છે. વાણીની મીઠાશને કારણે જ નાનાં બાળકો મીઠાઇ ન ખરીદતાં એક પૈસાની વાંસળી જ ખરીદે છે. ઘંટીના મીઠા રવમાં જ નાનાં બાળકો રોતાં બંધ થઇ જતાં હોય છે. દુનિયા વશીકરણ મંત્રને શોધી રહી છે, પરંતુ સાચો વશીકરણ મંત્ર તો મૃદુભાષણમાં જ રહેલો છે. દલપતરામ કવિએ કહ્યું છેઃ

મારણમંત્ર અચિન ક્ષમા મનમોહન મંત્ર રુડી ચતુરાઈ,
સ્તંભનમંત્ર સદા સન્માન આકર્ષણ મંત્ર સનેહ સચાઈ;
એમ ઉદ્યોગીપણુ જ ઉચાટન વાણી ભલી વશ કારણ ભાઈ,
અન્ન સંજીવન ઓષધિ છે દલપત વાણીમાં રહી અમૃતાઈ.

કઠોર ભાષણ કરવું એ પ્રકૃતિની પણ વિરુદ્ધ છે. એક ઉર્દુ શાયરે કહ્યુ છે.

फिश्तर को नापसंद है सख्ती जबान में,
पैदा हुइ न इसलिये हड्डी जबान मैं

જીભમા હાડકું નથી એ હકીકત સિદ્ધ કરે છે કે કઠોર ભાષણ પ્રકૃતિને પસંદ નથી. મૃદુ ભાષણદ્વારા સ્ત્રી પોતાનાં કાર્યો અને મનોરથોને સિદ્ધ કરી શકે છે. કઠોર ભાષણ કરનારી કર્કશા સ્ત્રીઓ જીવનભર દુંખી અને કલેશ કરનારી જ હોય છે. ગૃહસ્થાશ્રમના નંદનવનમાં તેઓ દાવાનળ સમાન બની રહે છે. મૃદુભાષિણી સ્ત્રી પોતાના પતિ, સાસુ, સસરા તથા અન્ય કુટુમ્બીઓનો પ્રેમ સંપાદન કરી શકે છે. સ્ત્રી સ્વભાવેજ કોમળ છે, એથી વાણીદ્વારા પણ એણે વધુ કોમળ બનવું જોઈએ.

સ્ત્રીનું એ કર્તવ્ય છે કે યોગ્ય કાર્યોમાં પતિને સલાહ આપે. કુશળ પત્ની પતિના મંત્રીનું કામ કરે છે. પતિઓને ન્યાય માર્ગે જ દોરવાનું કાર્ય પણ સ્ત્રીઓનું છે. જો સ્ત્રીને એમ ખબર પડે કે પતિ અન્ય માર્ગે જઈ રહ્યો છે, તો ત્યાગ અને બલિદાનનો આશ્રય લઈને તેને સન્માર્ગ પર લાવવાનો પ્રયાસ કરવો જોઈએ. પ્રાચીન કાળના ઈતિહાસમાં એવા અનેક ઉદાહરણો છે, જેમાં સ્ત્રીઓએ પોતાના ત્યાગ અને બલિદાનોદ્વારા કુમાર્ગે જતા પતિઓને સન્માર્ગે લાવવાનાં કાર્ય કર્યાં

છે. સ્રીધર્મની વ્યાખ્યા બહુ જ વિસ્તૃત છે. સંક્ષિપ્તમા કહીએ તો પતિવ્રતા ધર્મનું પાલન કરવું એ જ પત્નીનું કર્તવ્ય છે.

સાસુ અને વહુ

સાસુ અને વહુ વચ્ચેનો અણબનાવ એ કૌટુમ્બિક જીવનમાં સામાન્ય ઘટના બની ગઈ છે. એથી ગૃહસ્થાશ્રમમાં આ પ્રશ્ન ઘણો ગંભીર બની ગયો છે. સાસુઓમાં મોટે ભાગે એવી ટેવ પડેલી જોવામા આવે છે કે વહુઓને તેઓ દાસો ગણે છે, અને વાતવાતમા ટોંકયા કરતી હોય છે. આ ટેવ જ સાસુ અને વહુ વચ્ચેના ઝઘડાનું મૂળ કારણ છે. સાસુઓનું એ કર્તવ્ય છે કે તેઓ વહુઓને પોતાની પુત્રીઓની બરાબર સમજે, અને વહુઓનું એ કર્તવ્ય બની રહે છે કે સાસુઓને તેઓ માતા સમાન સમજે, સાસુઓએ પોતાના મનમા સમજવું જોઇએ કે વહુ તો હમણાજ એની માતાની ગોદ તજીને આવી છે, તો એની સાથે માતા કરતા પણ વધારે પ્રેમ–વર્તાવ કરું જેથી એ તેની માતાને ભૂલી જાય. પ્રેમનો આવો આવિર્ભાવ બહુ જ થોડી સાસુઓમા જોવામા આવે છે. અને વહુએ પણ સમજવું જોઇએ કે જ્યારથી તે પતિના ઘરમા આવી છે, ત્યારથી એણે નવું જ કુટુમ્બ વસાવ્યું છે. સસરા એ પિતા છે, સાસુ એ માતા છે, દિયર અને જેઠ ભાઇઓ છે, નણંદ એ બહેન છે, દેરાણી–જેઠાણી સ્નેહભરી સખીઓ છે, અને પતિ એ બધાના સ્નેહનું કેન્દ્ર છે એમ તેણે સમજી લેવું જોઇએ. આ રીતે જ તે ગૃહસ્થાશ્રમનો લાભ ઉઠાવી શકે છે. સાસુ અને વહુ પરસ્પર માતાપુત્રી જેવો વર્તાવ કરે તો આ સમસ્યાનો ઉકેલ અત્યન્ત સહેલાઈથી થઈ શકે તેમ છે. સાસુ અને વહુ વચ્ચેના ઝઘડા-

ઓએ આજના ગૃહસ્થ જીવનને વિષમય બનાવી દીધું છે. આ વિષને દૂર કરવા માટે સાસુઓએ કૌશલ્યા અને વહુઓએ સીતા બનવાની આવશ્યકતા છે.

એવી જ રીતે ભાઇઓએ રામ ભરત સમાન બનવું જોઇએ. જે ભાઇઓ એકબીજા સામે કોર્ટે ચડે છે, જમીન મિલકત માટે લડે છે, એક બીજા પ્રત્યે મેલો ભાવ રાખે છે તેઓ ભ્રાતૃભાવને કલંકિત કરે છે. ભાઇઓએ રામ અને ભરતનાં એ સ્વરૂપો નજર સામે રાખવાં જોઇએ કે જેમાં એ બન્ને ભાઈઓ રાજ્યલક્ષ્મીને એક બીજાના ઉપર દડાની માફક ઉછાળી રહ્યા હોય. કેવો આદર્શ ભ્રાતૃભાવ ! આનું નામ ગૃહસ્થાશ્રમની દિવ્યતા !

આવી રીતે કુટુમ્બનો હરેક સભ્ય જો પોતપોતાના ધર્મનું પાલન કરે તો ગૃહસ્થાશ્રમ સ્વર્ગ સમાન સુખરૂપ બને. કૌટુમ્બિક જીવનની સુવ્યવસ્થા પર ગૃહસ્થાશ્રમનો આનંદ નિર્ભર છે.

સદાચાર

ગૃહસ્થ જીવનની સફળતાનો આધાર સદાચાર પર છે. સદાચારી ગૃહસ્થ જ પોતાનાં કર્તવ્યોનું પાલન કરતો કરતો આગળ વધી શકે છે. પુરુષોએ પોતાની પરિણીતા સ્ત્રી સિવાય અન્ય સ્ત્રીઓને માતા, બહેન અને પુત્રી સમાન માનવી જોઇએ. અને સ્ત્રીઓએ પોતાના પતિ સિવાય અન્ય પુરુષોને પિતા, ભાઈ અથવા પુત્ર માનવા જોઇએ. સદાચારની મર્યાદાનો ભંગ કરવો એ સુખી જીવનમા આગ લગાડવા બરાબર છે. રાવણનું ઉદાહરણ આપણી સામે જ છે. એણે પરનારીની ઇચ્છા કરી તો

સોનાની લંકા ખાક થઇ ગઇ. એથી ઉલટું, સુદર્શન શ્રાવકે પ્રસન્નતાપૂર્વક શૂળીએ ચઢી જવાનું સ્વીકાર્યું, પરંતુ અભયા-રાણીની અયોગ્ય માગણીનો સ્વીકાર કર્યો નહિ. એવી જ રીતે જોધપુરના રાઠોડ દુર્ગાદાસે ઔરંગઝેબની બેગમ ગુલેનારની વિનંતી માની નહિ. ગુલેનાર દુર્ગાદાસ પર મુગ્ધ હતી. એણે દુર્ગાદાસને કહ્યું કે જો તું મારો સ્વીકાર કરે તો આજે જ હું બાદશાહને મારીને તને દિલ્હીનો સમ્રાટ બનાવી દઉં, પણ દુર્ગાદાસે કહ્યુ' તું મારી માતા છે. જ્યારે ગુલેનારને પોતે આપેલું પ્રલોભન નિષ્ફળ જતું દેખાયું ત્યારે તેણે દુર્ગાદાસને ધમકી આપી કે જો તું મારી પ્રાર્થનાનો અસ્વીકાર કરીશ તો તારું માથું ધડથી જૂદું કરાવી નાખીશ. દુર્ગાદાસે કહ્યું, હું એની પરવા કરતો નથી. સદાચાર મને પ્રાણ કરતાં પણ વધારે છે. સદાચારી વ્યક્તિઓ પ્રાણનું બલિદાન આપીને પણ પોતાનો ધર્મ નિભાવે છે. પ્રાણ જતા પણ તેઓ મલિન આચરણનો વિચાર સુદ્ધા કરતા નથી. એથી તો કહેવામાં આવ્યું છે કે—

प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्य सुकरम् ।

અર્થાત્—સજ્જન પુરુષ ન્યાયથી કામ લે છે. તેઓ પ્રાણ ગુમાવવાનું પસંદ કરે છે, પણ મલિન વિચાર સુદ્ધાં કરવો તેમને ગમતો નથી.

આવી રીતે ગૃહસ્થના સામાન્ય વિચારોનું વિવેચન કરવામાં આવ્યું છે. આ સામાન્ય ધર્મોનું પાલન કરનાર ગૃહસ્થ જ શ્રાવકધર્મનું પાલન કરી શકે છે. ભગવાન મહાવીરે શ્રાવકનાં ૧૨ વ્રતો બતાવ્યા છે. અહિંસા, સત્ય, અચૌર્ય, બ્રહ્મચર્ય,

અપરિગ્રહ, દાન, સેવા, અતિથિસત્કાર વગેરે ગૃહસ્થના ધર્મો છે. અને એમનું પાલન કરવું એ સાચા ગૃહસ્થનું કર્તવ્ય છે. કૌટુમ્બિક કર્તવ્યો ઉપરાંત સામાજિક અને રાષ્ટ્રિય કાર્યોમાં ભાગ લેવો એ પણ ગૃહસ્થનું કર્તવ્ય છે. આ કર્તવ્યોનું યોગ્ય પાલન કર્યા પછી જ આધ્યાત્મિક ધર્મની આરાધના થઈ શકે છે વિકાસનું પરમ સાધન તો આધ્યાત્મિક ધર્મ જ છે. આધ્યાત્મિક ધર્મ એ જ મોક્ષનું સાધન છે. પરંતુ અધ્યાત્મધર્મના પાલનની યોગ્યતા પ્રાપ્ત કરવા માટે ગૃહસ્થધર્મનું સારી રીતે પાલન કરવું આવશ્યક બની રહે છે.

આશા છે કે આપ ગૃહસ્થધર્મનું યોગ્ય રીતે પાલન કરશો અને એ રીતે ધીરે ધીરે આગળ વધીને આધ્યાત્મિકધર્મના પાલનદ્વારા તમારું પરમ અને ચરમ સાધ્ય-મોક્ષને પ્રાપ્ત કરવાની કોશીશ કરશો.



: ૫ :

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

(ભગવદ્‌ગીતા)

પ્રિય આત્મબંધુઓ !

હમણા જ તમે શાસ્ત્રરૂપમાં સંગ્રહિત પ્રભુ મહાવીરની અમર વાણીનું શ્રવણ કર્યું છે. આપણું કેવું પરમ સૌભાગ્ય છે કે સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી મહાપુરુષોના અનુભવો દ્વારા લખાયેલાં શાસ્ત્રોને શ્રવણ કરવાનો આપણને સુવર્ણ અવસર પ્રાપ્ત થયો છે. દીર્ઘ તપશ્ચર્યા અને કઠિન સાધનાના ફળસ્વરૂપ એ મહાત્માઓએ જે પરમ તત્ત્વનો સાક્ષાત્કાર કર્યો એને વિશ્વ-કલ્યાણની ઉદાર ભાવનાથી પ્રેરાઇને એમણે સંસારની સમક્ષ પ્રવચનરૂપે ઉપસ્થિત કરી દીધા. મહાપુરુષોના અનુભવોના સાર-રૂપ શાસ્ત્રો આપણાં માર્ગદર્શક બન્યાં છે. એ શાસ્ત્ર આપણને કલ્યાણનો માર્ગ બતાવી રહ્યાં છે. આ શાસ્ત્રો આપણને ચેત-વણી આપી રહ્યાં છે કે હે કલ્યાણ પંથના પથિકો ! તમારે સાવધાની પૂર્વક આ માર્ગે જવું જોઇએ. જો નહિ જાઓ તો તમારું કલ્યાણ થવું અસંભવિત છે. આ શાસ્ત્રો આપણને કલ્યાણના માર્ગમા સાવધાન રહેવાની ચેતવણી આપી રહ્યાં

: ૫ :

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥
(ભગવદ્‌ગીતા)

પ્રિય આત્મબંધુઓ !

હમણાં જ તમે શાસ્ત્રરૂપમાં સંગ્રહિત પ્રભુ મહાવીરની અમર વાણીનું શ્રવણ કર્યું છે. આપણું કેવું પરમ સૌભાગ્ય છે કે સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી મહાપુરુષોના અનુભવો દ્વારા લખાયેલાં શાસ્ત્રોને શ્રવણ કરવાનો આપણને સુવર્ણ અવસર પ્રાપ્ત થયો છે. દીર્ઘ તપશ્ચર્યા અને કઠિન સાધનાના ફળસ્વરૂપ એ મહાત્માઓએ જે પરમ તત્ત્વનો સાક્ષાત્કાર કર્યો એને વિશ્વ-કલ્યાણની ઉદાર ભાવનાથી પ્રેરાઈને એમણે સંસારની સમક્ષ પ્રવચનરૂપે ઉપસ્થિત કરી દીધા. મહાપુરુષોના અનુભવોના સાર-રૂપ શાસ્ત્રો આપણા માર્ગદર્શક બન્યા છે. એ શાસ્ત્ર આપણને કલ્યાણનો માર્ગ બતાવી રહ્યાં છે. આ શાસ્ત્રો આપણને ચેત-વણી આપી રહ્યાં છે કે હે કલ્યાણ પથના પથિકો ! તમારે સાવધાની પૂર્વક આ માર્ગે જવું જોઇએ. જો નહિ જાઓ તો તમારું કલ્યાણ થવું અસંભવિત છે. આ શાસ્ત્રો આપણને કલ્યાણના માર્ગમાં સાવધાન રહેવાની ચેતવણી આપી રહ્યાં છે.

જેમને કાન હોય, તે આ જ્ઞાનીઓની ચેતવણી સાંભળે. જો નહિ સાંભળે તો પ્રશ્ચાત્તાપ સિવાય એમના ભાગ્યમાં અન્ય કંઇ છે જ નહિ. શાસ્ત્રકારોએ આપણા પર કેવો ભારે ઉપકાર કર્યો છે! આપણે જીવનનો અંધાકારભર્યો માર્ગ સરળતાથી પસાર કરી શકીએ તે માટે તેમણે શાસ્ત્રરૂપી દીપક એ રસ્તા પર ધર્યો છે. આ પ્રકાશને સહારે આપણા લક્ષ્ય પર પહોચવામાં આપણને કોઇ મુસીબત રોકી શકતી નથી.

શાસ્ત્રકારોએ જીવનના કલ્યાણને માટે જે જે ઉપાયો બતાવ્યા છે, તેમાં બ્રહ્મચર્ય મુખ્ય છે. જીવનવિકાસ માટે બ્રહ્મચર્યની આવશ્યકતાનો સ્વીકાર સંસારના સર્વ ધર્માચાર્યો, મહર્ષિઓ અને મહાપુરુષોએ કર્યો છે.

બ્રહ્મચર્યનો મહિમા

બ્રહ્મચર્યનો મહિમા અપાર છે. સર્વ ધર્મોમાં બ્રહ્મચર્યને અગ્રસ્થાન આપવામા આવ્યું છે. જૈન શાસ્ત્રકારોએ અતિ મુક્ત-કંઠે બ્રહ્મચર્યના યશોગાન ગાયાં છે. બ્રહ્મચારીમાં એવી દિવ્ય-શક્તિ પ્રગટ થાય છે કે દેવતાઓ પણ એને નમસ્કાર કરે છે.

देवदाणवगन्धवा जक्खरक्खस्सकिन्नरा ।
बंभचारिं नमंसंति दुक्करं जे करेंति ते ॥

અર્થાત્–દેવ, દાનવ, ગંધર્વ, યક્ષ, રાક્ષસ અને કિન્નર વગેરે દેવતાઓ પણ કઠિન બ્રહ્મચર્યની આરાધના કરનારા બ્રહ્મચારીઓને નમસ્કાર કરે છે.

અખંડ બ્રહ્મચારીમાં બ્રહ્માંડમાં હચમચાવી મૂકવાની તાકાત હોય છે. એ આકાશ અને પાતાળને એક કરી શકે છે.

દુનિયામાં એવું કોઈ કાર્ય નથી કે બ્રહ્મચારી એને સાધ્ય ન કરી શકે. બ્રહ્મચારીમાં એવી અદ્‌ભુત તાકાત હોય છે કે દુનિયાની સર્વ શક્તિઓ એની આગળ પાણી ભરતી હોય છે. બ્રહ્મચર્ય સ્વયં બ્રહ્મ છે—શક્તિનું પિંડ છે.

પ્રશ્નવ્યાકરણસૂત્રના ચતુર્થ સંવરદ્વારમાં બ્રહ્મચર્યના મહિમાનું વર્ણન કરતાં ભગવાન સુધર્માસ્વામી શ્રી જંબૂસ્વામીને કહે છે—

जम्बू ! एत्तो य बंभचेरं तवनियमनाणदंसणचरित्तसम्मत्तविणयमूलं, यमनियमगुणप्पहाणजुत्तं हिमवंतं महंततेयमंतं पसत्थं गंभीरं थिमिय मज्झे........ ।

जम्मिय आराहियम्मि आराहियं वयमिणं सव्वं सीलं तवो य विणओ संजमो य खंति मुत्ति गुत्ति, तहेव य इहलोए य परलोए य जसे य कित्ती-य पच्चओय........ ।

અર્થાત્—હે જમ્બૂ ! આ બ્રહ્મચર્ય એ તપ, નિયમ, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર્ય, સમ્યક્ત્વ અને વિનયનું મૂળ છે. યમ, નિયમ આદિ ગુણોનો એ આધાર છે. જેવી રીતે પર્વતોમાં હિમાલય પ્રધાન છે, તેવી જ રીતે સર્વ યમ નિયમોમાં બ્રહ્મચર્ય પ્રધાન છે, તેજોમય છે, પ્રશસ્ત છે, ગંભીર છે....બ્રહ્મચર્યવ્રતની આરાધના કરવાથી તપ, વિનય, ક્ષમા, મુક્તિ, ગુપ્તિ, વગેરેની આરાધના થઈ શકે છે. બ્રહ્મચર્ય આ લોક અને પરલોકમાં યશ, કીર્તિ અને વિશ્વાસના કારણરૂપ છે. બ્રહ્મચર્ય પણ સર્વ સદ્‌ગુણોનું મૂળ છે. જેવીરીતે પર્વતોમાં મેરુ, હાથીઓમાં ઐરાવત, પશુઓમાં સિંહ પ્રધાનપદ ભોગવે છે, એવી જ રીતે વ્રતોમાં બ્રહ્મચર્ય પ્રધાન છે.

तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं

હરેક પ્રકારનાં તપમાં બ્રહ્મચર્ય જ સર્વોત્કૃષ્ટ છે. ઉપનિષદમાં પણ કહ્યું છે કે "तपो वै ब्रह्मचर्यम्" અર્થાત્ બ્રહ્મચર્ય એ જ તપ છે. જેવી રીતે વૃક્ષનો આધાર મૂળ છે, મૂળને લીધે જ શાખા પ્રશાખા, પત્ર, પુષ્પ, ફળ વગેરે થાય છે, અને મૂળ ન હોય તો આમાથી કશું જ સંભવી શકતું નથી, એવી જ રીતે બ્રહ્મચર્ય ધર્મરૂપી વૃક્ષનું મૂળ છે. એને લીધેજ અન્ય યમ નિયમોની આરાધના કરી શકાય છે. એના વિના ધર્મની આરાધના નથી થઇ શકતી— मूलं नास्ति कुतः शाखा ? મૂળ વિના શાખા કઇ રીતે સંભવે ?

તાત્પર્ય એ છે કે બ્રહ્મચર્ય પર જ ધર્મનો આધાર છે. ધર્મની આરાધના માટે બ્રહ્મચર્યનું પાલન આવશ્યક છે.

બ્રહ્મચર્ય શક્તિનો પુંજ છે. કોઇ પણ પુરુષાર્થ શક્તિ વિના સાધ્ય નથી થઇ શકતો. શક્તિનો બધો જ આધાર બ્રહ્મચર્ય પરજ રહેલો છે. શારીરિક, માનસિક, આધ્યાત્મિક, ધાર્મિક, વગેરે સર્વ પ્રકારની શક્તિઓનો સ્રોત બ્રહ્મચર્ય જ છે. બ્રહ્મચર્યના પાલનથી શરીર, મન અને આત્મા બળવાન બને છે. અને બ્રહ્મચર્યના અભાવથી એ સર્વનું પતન થાય છે. અખંડ બ્રહ્મચર્યને કારણે તો ભીષ્મ વિશ્વના પિતામહ કહેવાયા. બ્રહ્મચર્યના પ્રતાપથી સુદર્શન શેઠને માટે શૂળીનું સિંહાસન બની ગયું. યોગસૂત્રમાં કહ્યું છે કે—

। ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ।

અર્થાત્—બ્રહ્મચર્યના પાલનથી વીર્યનો લાભ થાય છે. વીર્ય એજ શક્તિ છે. એજ જીવન છે.

બ્રહ્મચર્યનો અર્થ

બ્રહ્મચર્યનો વાસ્તવિક અર્થ ખૂબ જ વિસ્તૃત અને ઉદાર છે. બ્રહ્મચર્યનો વ્યુત્પત્તિ-નિષ્પન્ન અર્થ છે "ब्रह्मणि चर्यते अनेनेति ब्रह्मचर्यम्" અર્થાત્ જેનાદ્વારા બ્રહ્મમાં વિચરણ થઈ શકે તે બ્રહ્મચર્ય છે. બ્રહ્મ શબ્દનો અર્થ પરમાત્મા, આત્મા અને પ્રત્યેક શુભ કામ એવો થાય છે. તાત્પર્ય એ છે કે જેના દ્વારા બ્રહ્મ અથવા આત્માનો સાક્ષાત્કાર થઈ શકે એ બ્રહ્મચર્ય છે. પરમાત્માનો સાક્ષાત્કાર કરવા માટે અને આત્મદર્શનને માટે ઇન્દ્રિયોનો નિગ્રહ કરવાની ખાસ જરૂર રહે છે. ઇન્દ્રિયનિગ્રહ અને ખાસ સંયમ વિના આવો સાક્ષાત્કાર થઈ શકતો નથી, માટે જ ઇન્દ્રિયનિગ્રહને બ્રહ્મચર્ય કહે છે. ઇન્દ્રિયો પર સંપૂર્ણ વિજય પ્રાપ્ત કરવો એ ખરેખર જ બ્રહ્મચર્ય છે. બ્રહ્મચર્યનો આટલો વ્યાપક અર્થ હોવા છતાં આજકાલ વીર્યરક્ષા એટલે બ્રહ્મચર્ય એવો અર્થ વધુ પ્રચલિત છે.

વીર્ય એજ શરીરનો રાજા છે. વીર્ય એજ જીવન છે, એજ શક્તિ છે. વીર્યની પર જ જીવનનો આધાર છે. કહ્યું છે કે—

। मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात् ।

અર્થાત્—વીર્યનો નાશ કરવો એ મૃત્યુ છે, અને વીર્યની રક્ષા કરવી એજ જીવન છે. આ કથનથી વીર્યરક્ષાનું મહત્ત્વ સારી રીતે સમજી શકાય છે.

પ્રાચીન આર્ય તેમજ જૈન સંસ્કૃતિમાં બ્રહ્મચર્યનું સ્થાન અતિ મહત્ત્વપૂર્ણ છે. આર્ય સંસ્કૃતિ અનુસાર માનવજીવન ચાર વિભાગોમાં વહેંચાયેલું હતું. પહેલો બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, બીજો

ગૃહસ્થાશ્રમ, ત્રીજો વાનપ્રસ્થાશ્રમ અને ચોથો સન્યસ્તાશ્રમ. આ આશ્રમ પ્રણાલી અનુસાર જીવનનાં પ્રારંભિક પચ્ચીસ વર્ષ સુધી પ્રત્યેક વ્યક્તિ બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરે છે. અને આ વર્ષોમાં શારીરિક, માનસિક અને આધ્યાત્મિક, વગેરે શક્તિઓનું સંપાદન કરી પોતાને ભવિષ્યના સુખમય જીવનને માટે તૈયાર કરે છે. પ્રાચીનકાળમાં ઉચ્ચ કોટિના વિદ્વાનો, તત્ત્વવેત્તાઓ, દાર્શનિકો તથા મોટા મોટા શૂરવીર તેજસ્વી પુરુષો થઈ ગયા છે. એનું કારણ આ આશ્રમ પ્રણાલી અને વિશેષતઃ બ્રહ્મચર્ય જ છે. આ આદર્શ આશ્રમ પ્રણાલીના નિર્માતાઓએ બ્રહ્મચર્યમાં જ સર્વતોમુખી ઉન્નતિનાં દર્શન કર્યાં; એથી એમણે સર્વ પ્રથમ બ્રહ્મચર્યને જ પ્રધાન સ્થાન આપ્યું.

આજે આ દેશમાં આ પ્રણાલિકા રહી નથી, એ દુર્ભાગ્યની વાત છે. બ્રહ્મચર્યાશ્રમ નષ્ટ થયો અને પરિણામ એ આવ્યું કે આપણી હરેક રીતે પડતી થઇ. આપણે રાજનૈતિક વર્ચસ્વ ખોયું, આર્થિક દૃષ્ટિએ ધનમાલ વિદેશોમા વહાવીને કંગાળ બન્યા, ધાર્મિક તેમજ સામાજિક દૃષ્ટિથી પાંગળા બન્યા, આ તો બધું બન્યું. પણ આપણે આપણો શારીરિક હ્રાસ પણ કરી નાખ્યો અને સ્વાસ્થ્ય પણ ખોયું. જે દેશમાં ભીમ, અર્જુન, રાણા પ્રતાપ અને શિવાજી જેવા વીર થયા એ દેશમાં આજે પીળા અને ફીક્કા ગાલવાળા, ઊંડી નિસ્તેજ આંખોવાળા, કમજોર, માયકાંગલા અને નિષ્ક્રિય યુવાનો જ્યાં ત્યાં ભટકતા જોવામાં આવે છે. આપણા દેશમાં બાળ મૃત્યુનું પ્રમાણ વધારે છે. આપણે ત્યાંનું સરેરાશ આયુષ્ય પણ ૨૩ વર્ષનું છે. તાત્પર્ય એ છે કે આપણે શારીરિક, આર્થિક, ધાર્મિક, રાજનૈતિક,

વગેરે સર્વ પ્રકારે પતિત થયા છીએ. કવિવર મૈથિલીશરણ-ગુપ્તના શબ્દોમાં કહી શકીએ કે—

यदि ब्रह्मचर्याश्रम मिटाकर शक्तिको खोते नहीं !
तो आज हम मृत जातियों में यों गिने जाते कहीं ?

આથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે આપણી પ્રજાએ કરેલી બ્રહ્મચર્યની ઉપેક્ષા એ જ આજના ભયંકર પતનનું કારણ છે. બ્રહ્મચર્ય વિના આજે ભારતનાં સંતાનો દયામણાં અને નિસ્સહાય બની રહ્યાં છે. આ ધર્મપરાયણ ભારત દેશમાં વિલાસિતા અને. નીતિભ્રષ્ટતાની બોલબાલા જોઈને ખૂબ અફસોસ થાય છે. આજે ગુલામ ભારતના વાતાવરણમાં ઝેરી હવા ફેલાઇ રહી છે. કુશિક્ષણ અને ફેશને આજના યુવાનો અને યુવતીઓને પથભ્રષ્ટ કરી નાખ્યાં છે.

ફેશન

આજ કાલની શિક્ષણ પ્રણાલીમાં ચારિત્ર્યનું નામનિશાન પણ નથી હોતું. શાળા કોલેજોમા અભ્યાસ કરનારાંઓમાં મોટે ભાગે ચારિત્ર્યહીન અને ફેશનપરસ્ત યુવાનો અને યુવતીઓ જોવામાં આવે છે. એનું કારણ એ છે કે શિક્ષણ સંસ્થાઓના અધ્યાપકો ચારિત્ર્યના શિક્ષણ તરફ લક્ષ આપતા નથી. સાથોસાથ વધતી જતી ફેશને સદાચારના ઉપવનમા આગ મૂકી છે. આજનો યુવાનવર્ગ ફેશનમાં આંધળો બની ગયો છે. જે દેશનાં યુવક યુવતીઓ પોતાના નૈસર્ગિક તેજથી, સહજ સૌંદર્યથી, અને મુખમંડળની કાન્તિથી શોભી ઉઠતા હતા, એ જ દેશનાં યુવક અને યુવતીઓ આજે એ સ્વાભાવિક તેજથી વિહીન

બની જઇ બનાવટી સ્નો, ક્રીમ અને પાવડરથી ચહેરાઓને ચમકાવવાની વ્યર્થ કોશીશ કરતાં જોવામાં આવે છે. આજની યુવતીઓનો અધિકાંશ સમય શૃંગાર–સજાવટમાં પૂરો થતો હોય છે. એક ગુજરાતી કવિએ કહ્યું છે—

અલબેલી ફેશનો દુનિયામાં આવી, નારીએ વર્તાવ્યો કેર રે,
જોઇલોને આજની નારીઓ.
મસ્તકે પીનો રાખે, કાને એરીંગડાં
ગળે રંગુન કેરી ચેન રે. જોઇલો.
હાથે રૂમાલ રાખે, પગમાં ચપલિયાં,
આંખે ચશ્માના શણગાર રે,

આ પ્રસંગે એ કહી દેવું પણ આવશ્યક લાગે છે કે આજ કાલની કેટલીક બહેનો બારીક વસ્ત્રો પહેરવામાં પોતાની શોભા અને ઇજ્જત સમજે છે. ઘણી બહેનો ચમકદાર સૂક્ષ્મ વસ્ત્રો પહેરીને ધર્મનાં તેમજ અન્ય સ્થાનો પર જતી હોય છે, એ ખૂબ દુઃખની વાત છે. વસ્ત્રો પહેરવાનો ઉદ્દેશ લાજ ઢાંકવાનો છે. આવાં બારીક વસ્ત્રોથી આ ઉદ્દેશ સફળ થતો નથી. બહેનો! આવાં વસ્ત્રો તમારી લાજને ઢાંકતાં નથી. બારીક વસ્ત્રો પહેરવાં એ પોતાની નિર્લજ્જતાનું પ્રદર્શન કરવા બરાબર છે. એથી જો તમે તમારાં શીલ અને લજ્જાની રક્ષા કરવા માગતા હો તો બારીક વસ્ત્રોને છોડીને સાદાઇભર્યું પવિત્ર જીવન ગાળો. સાદા પવિત્ર જીવનમાં જ સ્ત્રીની સાચી મહત્તા છે. સાદાઈ એ જ સાચી સુંદરતા છે. ભાઇઓ! તમને પણ એ કહેવાનું છે કે તમે પણ બારીક વસ્ત્રો છોડી દો અને તમારું જીવન પણ એટલું જ સાદું બનાવો. જે યુવકો પોતાની સજાવટમાં પોતાનો સમય બરબાદ કરે છે, તેમને તો ખાસ કહું છું કે

આ નિરર્થક ફેશનનો મોહ તેઓ છોડી દે. આ ફેશન એમનો સર્વનાશ કરશે. તેઓ પતંગીઆની પેઠે ફેશનના દીપક પર મોહિત થઇ બળી મળશે. ભાઇઓ અને બહેનો ! આ ફેશન તમારા બ્રહ્મચર્યનો નાશ કરી રહી છે. એ તમારા શરીરના સ્વાસ્થ્ય અને સૌંદર્યને બરબાદ કરી રહી છે અને તમારું ધન લૂંટી રહી છે. આ તન, મન અને ધનને ચૂસનારી ડાકણુ ફેશનના ચક્રાવામાથી છૂટો અને સાદું પવિત્ર જીવન વ્યતીત કરો. એમાંજ તમારા શીલની, ધર્મની અને દેશની ઉન્નતિ છે.

સદાચારી સુદર્શન

બંધુઓ ! તમારી સમક્ષ અખંડ બ્રહ્મચર્યના આદર્શરૂપ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ તથા ગાંગેય કુમાર(ભીષ્મ પિતામહ) ના ઉજ્જવળ જીવન પડ્યા છે. આદર્શ શ્રાવક સુદર્શનનો આદર્શ પણુ તમારી સામે છે. અભયા રાણી સુદર્શન પર મુગ્ધ થઈ ગઈ હતી. તે સુદર્શનને પોતાની વિષયવાસનાનું સાધન બનાવવા માગતી હતી. અનેક ઉપાયોદ્વારા એણે પોતાનો મનોરથ સિદ્ધ કરવાનો મનસૂબો કર્યો. એ પ્રમાણે એણે પ્રયત્નો પણ કર્યાં, પરંતુ એ ફાવી નહિં. એક દિવસ વસંતોત્સવ નિમિત્તે નગરનાં નરનારીઓ નગરની બહાર ગયાં હતા ત્યારે પૌષધશાળામાં પૌષધ કરીને બેઠેલા સુદર્શનને રાણીએ સૈનિકોદ્વારા બળજબરીથી મહેલમાં પકડી મંગાવ્યો. સોળે શણુગારોથી સજ્જ થઇ રાણી સુદર્શનની પાસે આવી અને વિવિધ હાવભાવોનું પ્રદર્શન કરતી કહેવા લાગી કે ખૂબ લાંબા સમયથી હું તમારે માટે ટળવળું છું. આજે આ સુઅવસર મને પ્રાપ્ત થયો છે. મારી તરસ તમે છીપાવો. તમારા રૂપે જ મને આવો વર્તાવ

કરવાને પ્રેરિત કરી છે. મને ક્ષમા કરો અને આ લાંબા સમયની તૃષાને તૃપ્ત કરો.

સુદર્શન–માતા ! તમે આ શું કહી રહ્યા છો ?

સુદર્શનના મુખમાંથી "માતા" શબ્દવડે થયેલું સંબોધન સાંભળીને રાણી તો ચોંકી ઉઠી. એ કહેવા લાગી· "જુઓ સુદર્શન ! વધુ મને ટળવળાવો નહિ. તમારે માટે હું સમસ્ત રાજ્ય સમર્પિત કરવાને તૈયાર છું. મહારાજા તો મારા ઈશારા પર નાચે છે. જો તમે મારી સાથે પ્રેમ કરશો તો સમજી લો કે સમસ્ત રાજ્ય તમારા હાથમાં જ છે.

સુદર્શને કહ્યું· 'માતા ! રાજ્ય અને વૈભવ સાથે મારે કંઈ મતલબ નથી. મારો ધર્મ રાજ્ય કરતા પણ અધિક છે.'

'સુદર્શન ! માની જાઓ !' રાણીએ કહ્યું. 'હું તમને ખૂબ કાલાવાલા કરીને કહું છું કે માની જાઓ અને મારી અભિ-લાષાઓને પૂર્ણ કરો. નહિ તો એ પણ સાથે સાથે સમજી લો કે તમે હવે ફસાઇ ચૂકયા છો. તમારું માથું મારા હાથમાં છે. જો જીવન વહાલું હોય તો મારી પ્રાર્થના માની લો.'

રાણીની આ ધમકીની સુદર્શન પર જરા પણ અસર પડી નહિ, તે પોતાના ધર્મપર દૃઢ રહ્યા. એમનું એકેય રુંવાડું પણ ફરકયું નહિ. રાણીએ બધા જ ઉપાયો અજમાવી લીધા. એ હારી ગઇ, આખરે એણે રૂપને વિરૂપ કરી મૂકયું અને કોલાહલ મચાવી મૂકયો. સૈનિકોદ્વારા સુદર્શનને પકડવામાં આવ્યા અને અંતઃપુરમાં ઘુસી જઈ બળાત્કાર કરવાનો એના

પર આરોપ મૂકવામાં આવ્યો. રાજાએ એને શૂળીએ ચઢાવવાનો હુકમ કર્યો.

શૂળી તૈયાર થઇ, સમય નજીક આવ્યો, પરંતુ સુદર્શને રાણીની વિરુદ્ધમાં એક શબ્દ પણ ઉચ્ચાર્યો નહિ. એમના દિલમા લેશમાત્ર દુઃખ પણ નથી. પોતાનો ધર્મ સુરક્ષિત રહ્યો એ બાબતનો એને હર્ષ છે. એક તીવ્ર કસોટીમાથી અણીશુદ્ધ રીતે પસાર થવાનો અદ્દભુત આનંદ માણી રહ્યા હતા. એમને શૂળી પર ચઢાવવામાં આવ્યા, પરંતુ અહાહા! આશ્ચર્ય! મહાઆશ્ચર્ય! શૂળી સિંહાસનરૂપ બની ગઇ! આ હતો બ્રહ્મચર્યનો પ્રતાપ.

બંધુઓ! સુદર્શન શ્રાવકની દૃઢતા કેટલી? રાણી પોતે એની પાસે કાલાવાલા કરતી ટળવળે છે, છતાં એ ચલિત ન થયા. તમારામાં એટલી દૃઢતા છે? અફસોસ! શ્રાવક કહેવાતા કેટલાયે લોકો પરસ્ત્રીઓમા મન ફેરવ્યા કરે છે. સુદર્શન પણ શ્રાવક હતા. તમે પણ શ્રાવક છો. બન્નેની તુલના કરીને વિચારો કે તમે કયાં છો? બંધુઓ! શ્રાવકનો એ ધર્મ છે કે તેઓ પરસ્ત્રીને પોતાની માતા અને બહેન સમજે અને પોતાની સ્ત્રી પ્રત્યે પણ ખૂબ જ મર્યાદિત રહે. લગ્નનો આદર્શ પણ ઉચ્ચ છે. એ ઉચ્ચ આદર્શને સમજીને જ તમારી પોતાની સ્ત્રી પ્રત્યે મર્યાદિત બનો. શ્રાવકને માટે પત્ની સાથે પણ નિરંકુશ જીવન વ્યતીત કરવું એ એક ભયંકર પાપ છે. શ્રાવક શ્રાવિકાઓએ એ સમજવું જોઇએ કે વિલાસ માટે લગ્ન નથી. સુદર્શન શ્રાવકનો આદર્શ આમે રાખીને અનથી, વાદીથી

કર્મથી પરસ્ત્રીસેવનથી દૂર રહો અને નીતિમય જીવન વ્યતીત કરો. લક્ષ્મણજીનું ચરિત્ર બ્રહ્મચર્યને માટે આદર્શ પ્રેરણારૂપ છે.

બ્રહ્મચર્યની કસોટી

રામના વનવાસકાળની વાત છે. રામ, લક્ષ્મણ અને સીતા પંથ કાપ્યે જાય છે. સમય બહુ થઇ ચૂકયો છે. રસ્તાના પરિશ્રમને કારણે સીતાનું મુખમંડળ લાલચોળ થઇ ગયું છે, અને થાકનાં સ્પષ્ટ ચિહ્ન દેખાઇ રહ્યાં છે. પાણી, ભોજન અને આરામ કરવાની આ વનવાસીઓને જરૂર લાગી. એક વૃક્ષ હેઠળ સૌ આરામ કરવા બેઠાં. લક્ષ્મણે વનમાંથી પાણી અને ફળફૂલ લઇ આવવાની આજ્ઞા માગી. પરંતુ રામચંદ્રજીએ પોતે જ જવાની ઇચ્છા વ્યક્ત કરી અને લક્ષ્મણને કહ્યું, ‘ હું પાણી અને ભોજનની શોધમા જાઉં છું, તું અહીં ધ્યાન રાખ.’ આમ કહી રામ પાણી અને ભોજનની શોધમાં નીકળી પડ્યા. માર્ગના પરિશ્રમથી થાકેલાં સીતાને ઠંડી છાયા અને હવાની લહરીઓમાં નિદ્રા આવવા લાગી અને પત્થરનો તકિયો બનાવી તે તો ઉંઘી ગયા. આ દૃશ્ય જોઈ લક્ષ્મણને વિચાર આવ્યો કે ઉચ્ચ રાજમહેલોમાં સુંદર પલંગ પર સખમલની શય્યા પર ફૂલોની સેજમાં આરામ કરનારા કોમલાંગી સીતા આજ વનમા આવી રીતે કઠોર ભૂમિ પર અને પત્થરનું ઓશિકું બનાવીને નિદ્રા લઇ રહ્યાં છે! માતા સીતાને આ કઠોર પત્થરના તકિયા પર કેવી રીતે નિદ્રા આવી શકે છે? હું એમની સેવા માટે તો એમની સાથે વનમા આવ્યો છું. મારે એમની તકલીફ દૂર કરવી જોઇએ. વનમા અન્ય કોઇ સાધન તો છે નહિ. આ પત્થર કરતાં મારો સાથળ વધુ કોમળ

છે. એનો તકિયો બનાવી શકાય તેમ છે. એવો વિચાર કરીને અત્યન્ત પવિત્ર આશયથી પ્રેરાઈને એમણે સીતા માતાનું મસ્તક પોતાની સાથળ પર મૂકી દીધું.

આવી રીતે સીતા લક્ષ્મણની જાંઘ પર સૂઈ રહ્યા છે. અને બીજી તરફ રામચંદ્રજી પાણી અને વનફળ લઈને આવે છે. દૂરથી એમણે જોયું કે એક સ્ત્રી એક પુરુષની જાંઘ પર સૂતી છે. એમને વિચાર આવ્યો કે હું કોઈ અન્ય જગા પર તો નથી આવ્યો ને! ચિહ્નો તો બધાં અમે જ્યા વિશ્રામને માટે રોકાયાં હતાં તે જ સ્થળનાં છે. શું સીતા લક્ષ્મણની જાંઘ પર સૂઇ રહેલાં છે? આ શું? રામ વધારે નજીક આવ્યા. અને એમણે જાણી લીધું કે એ સ્ત્રી અને પુરુષ સીતા અને લક્ષ્મણ જ છે. રામે લક્ષ્મણની પરીક્ષા લેવાનો વિચાર કર્યો. એમણે એક પોપટનું રૂપ લીધું અને એ જ વૃક્ષ પર બેસીને લક્ષ્મણને સંબોધીને કહેવા લાગ્યા·—

पुष्प दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा योषित-यौवनम् ।
त्रीणि .रत्नानि दृष्ट्वैव कस्य नो चलते मनः ॥

અર્થાત્—ફૂલ, ફળ અને સ્ત્રીનું યૌવન એ ત્રણે રત્નોને જોઇને કોનું મન વિચલિત થતું નથી? પોતાના આ પ્રશ્નાત્મક કથનના ઉત્તરમાં લક્ષ્મણ બોલ્યા·

पिता यस्य शुचिर्भूत माता यस्य पतिव्रता ।
उभाभ्यां य· समुत्पन्नस्तस्य नो चलते मनः ॥

અર્થાત્-જેના પિતા મનસા, વાચા અને કર્મણા પવિત્ર અને સદાચારી હોય, જેની માતા સાચી પતિવ્રતા હોય,

સુયોગ્ય માતા-પિતાથી ઉત્પન્ન થયેલો મનુષ્ય ફૂલ, ફળ અને સ્રીના યૌવનને જોઇને પણ વિચલિત થતો નથી.

ભાઇઓ ! લક્ષ્મણના આ ઉત્તરમાં ખૂબ મહત્ત્વની બાબત રહેલી છે. જેનાં માતા-પિતા સદાચારી હોય એ સંતાન લગભગ સદાચારી જ હોય છે. એનાથી વિરુદ્ધમાં બીજો વિચાર થઈ શકે કે જો માતા-પિતા વિષયી, લંપટી કે દુરાચારી હોય, તો એમનાં સંતાન પણ સદાચારી કેવી રીતે હોઈ શકે ? સંતાનને સદાચારી બનાવવાની જવાબદારી માતાપિતા પર જ છે. માતાપિતાના સંસ્કાર જ બાળકના જીવનનું નિર્માણ કરે છે, એથી માતાપિતાની જવાબદારી વધી જાય છે. માતાપિતાનાં દુરાચાર વંશવારસોમાં ઉતરતા રહે છે, એટલે એમણે પોતાના સદાચાર વિષે પૂરતું લક્ષ આપવું જોઇએ. યોગ્ય માતાપિતાનાં સંતાન પણ યોગ્ય જ હોય. લક્ષ્મણ દશરથ મહારાજ તથા માતા સુમિત્રાના પુત્ર હતા. બન્ને સદાચારી હતાં એટલે લક્ષ્મણ પણ એવા જ સદાચારી હોવા જોઇએ કે પરસ્રી એની જાંઘ પર સૂતેલી હોવા છતાં એમના મનમા વિકાર ઉત્પન્ન થયો નહિ. પોપટે ફરીથી પ્રશ્ન પૂછયો:—

घृतकुम्भसमा नारी, तप्ताङ्गारसमः पूमान् ।
जानुस्थिता परस्त्री चेत् कस्य नो चलते मनः ? ॥

અર્થાત્-નારી ઘીના ઘડા સમાન છે અને પુરુષ બળળતા અંગારા સમાન છે; જાંઘ પર પરસ્રી સૂતી હોય તો કોનું મન વિચલિત ન થાય ?

સદાચારી લક્ષ્મણ પ્રત્યુત્તર આપે છે:—

मनो धावति सर्वत्र मदोन्मत्तगजेन्द्रवत् ।
ज्ञानांकुशे समुत्पन्ने तस्य नो चलते मनः ॥

અર્થાત્—મદોન્મત્ત હાથીની પેઠે મન અહીંતહીં ભ્રમણ કર્યા કરે છે, પરંતુ જ્ઞાનરૂપી અંકુશદ્વારા એ મનરૂપી મદોન્મત્ત હાથી વશ થાય છે. જ્ઞાનરૂપી અંકુશવાળી વ્યક્તિનું મન કદાપિ ચલિત થતું નથી.

લક્ષ્મણના સદાચારની કસોટી થઈ. શુદ્ધ સુવર્ણની જેમ અગ્નિ પરીક્ષામાંથી પસાર થયા. મર્યાદાપુરુષોત્તમ રામ ગદ્‌ગદિત થઈ ગયા અને "ધન્ય સુમિત્રાનંદન ધન્ય" કહીને અસલરૂપે પ્રગટ થયા.

દૃષ્ટિસંયમ

લક્ષ્મણના સદાચારને પ્રગટ કરનારી એક વધુ ઘટના લઈએ. સીતાનું હરણ કરીને રાવણ આકાશમાર્ગે જઈ રહ્યો છે. એ વખતે દુઃખી સીતાને થયું કે હું મારા ઘરેણાં નીચે ફેંકી દઉં. જો રામચંદ્રજીને એ મળશે તો હું કઈ દિશામાં ગઇ છું એની એમને ખબર પડશે. આ વિચારની સાથે એમણે પોતાનાં ઘરેણા નીચે પૃથ્વી પર ફેંકી દીધાં અને ખરેખર સીતાજીની શોધમાં ભટકતા રામને એ મળી આવ્યાં. ખૂબ શોકાતુર હોવાથી એ આભૂષણોને તેઓ ઓળખી શક્યા નહિ. એટલે લક્ષ્મણને પૂછ્યું 'ભાઈ, જોને, આ આભૂષણો તારી ભાભીનાં જ છે ને?' લક્ષ્મણે જવાબ આપ્યો.

कंकणं नैव जानामि नाभिजानामि कुण्डले ।
नूपुरं त्वभिजानामि नित्यं चरणवंदनात् ॥

હે આર્ય ! હું આ કંકણુ વગેરેને તો ઓળખી શકતો નથી. હું ભાભીનાં ચરણોમાં હમેશાં નમસ્કાર કરતો એટલે મારી દૃષ્ટિ હમેશાં ઝાંઝર પર પડતી. એથી આ ઝાંઝર સિવાય અન્ય કોઇ આભૂષણુને હું નથી ઓળખતો. સીતાના ચરણુ સિવાય મેં એમના અન્ય કોઈ અંગ પર ધ્યાનપૂર્વક ક્યારેય જોયું નથી એથી બીજાં આભૂષણો કેવી રીતે ઓળખી શકું ?

ભાઇઓ ! લક્ષ્મણુ વનવાસ દરમિયાન રામ અને સીતાની નિરંતર સેવા કરતા સાથેજ રહ્યા હતા. આટલા લાંબા સમય સુધી સાથે રહેવા છતાં સીતાજી પ્રત્યે ધ્યાનપૂર્વક જોયું પણુ નહિ. કેવો અદ્ભુત સંયમ અને સદાચાર ! તમારે સૌએ આ અદ્ભુત સદાચારીના ચરિત્રમાંથી બોધ લેવો જોઈએ. જો તમે તમારી દૃષ્ટિ પર સંયમ ન રાખો તો તમે પોતાને શ્રાવક કહેવડાવી શકો નહિ. શ્રાવકત્વ તો દૂર રહ્યું, સામાન્ય મનુષ્ય કહેવડાવવાને માટે પણુ અધિકારી ન બની શકો.

ચાર્લ્સ ડાર્વિન વર્તમાન યુગના પ્રસિદ્ધ તત્ત્વવેત્તા ગણાય છે તેઓ કહે છે કે દરેક પ્રાણીને પોતાના અસ્તિત્વને માટે પ્રયત્ન કરવો પડે છે. આને જીવનસંગ્રામ (Struggle for existance) કહે છે. જે સદાચારી હોય એને જ પ્રકૃતિ જીવનમાં સહાયતા કરે છે. જે દેશ સદાચારના નિયમોનું જેટલું વધુ પાલન કરે છે, તેટલી જ વધુ પ્રગતિ એ સાધે છે, એ વાતની સાક્ષી દુનિયાનો ઇતિહાસ પૂરે છે. જે પ્રજા કે દેશ સદાચારના નિયમોની ઉપેક્ષા કરે છે, એ પતનની ખાઈમાં પટકાઈ પડે છે. રોમન સામ્રાજ્ય અને છેલ્લા હિંદુ સમ્રાટ પૃથ્વીરાજના પતનનું કારણુ વિલાસ જ છે. પૃથ્વીરાજ ચૌહાણુ

સંયુક્તાના પ્રેમપાશમાં બંધાઈને અંધ બન્યો હતો. મહમુદ ઘોરીએ આક્રમણ કર્યું અને સમ્રાટ્ તથા સમસ્ત ભારતને કેદ કરી લીધાં. કહેવાની મતલબ એ છે કે પ્રકૃતિ સદાચારીનેજ જીવનસંગ્રામમાં સહાયતા કરે છે.

બ્રહ્મચર્યનો ચમત્કાર

સદાચારીના સદાચારમાં કેવી ગજબની શક્તિ હોય છે, એ વાત તો લક્ષ્મણના ઉદાહરણથી સ્પષ્ટ બની જાય છે. સીતાના આગ્રહથી રામચંદ્રજી સુવર્ણ મૃગને પકડવા માટે જાય છે. એ સુવર્ણ મૃગ માયાવી રાક્ષસ મારિચની માયામાત્ર હતો. મૃગ ખૂબ દૂર નીકળી ગયો, અને રામચંદ્રજી પણ એની પાછળ ખૂબ દૂર સુધી ચાલ્યા ગયા. રામને બહુ મોડું થઈ ગયું હતું. હજી સુધી એ પાછા ન આવ્યા એથી સીતા ખૂબ વ્યાકૂળ થવા લાગ્યાં. એટલે લક્ષ્મણને કહ્યું, ખૂબ મોડું થયું છે, હજી સુધી તેઓ આવ્યા નથી એટલે અવશ્ય એમના પર કોઈ વિપત્તિ આવી હોય એમ લાગે છે. એથી એમની સહાયતા માટે તમે જાઓ. આ સાંભળીને લક્ષ્મણે કહ્યુંઃ " ભાભી, ચિંતાનું કોઇ કારણ નથી. આર્ય રામચંદ્રજી હરેક રીતે અજેય છે. દેવ, દાનવ કે ગંધર્વ પણ એમને કોઈ પ્રકારની હાનિ પહોંચાડી શકે તેમ નથી. તેઓ સર્વ રીતે સમર્થ છે. તમે ચિંતા ન કરો. મારા ભાઇ થોડી જ વારમા પાછા આવશે. તમને અહીં એકલાં છોડીને હું જવા માગતો નથી, પરંતુ લક્ષ્મણનાં વચનો સાભળીને સીતાની વ્યાકૂળતા દૂર ન :થઈ. તેઓ વધુ વ્યગ્ર થઇ ગયાં અને એ વ્યગ્રતાને કારણે ભાન ભૂલીને અતિકઠોર શબ્દોમાં લક્ષ્મણને કહેવા લાગ્યાં—

बोली अब मैंने जान लिया, स्वारथ का भाइचारा है।
तुम बनमें साथ जो आये हो, कुछ मतलब ओर तुम्हारा है॥

આવા માયાવી જંગલમાં સીતાજીને એકલાં મૂકીને જવાનું લક્ષ્મણને યોગ્ય લાગ્યું નહિ, એટલે એમણે રામની મદદ માટે જવાનો ઈન્કાર કર્યો હતો. લક્ષ્મણનું હૃદય સંપૂર્ણ રીતે પવિત્ર હતું, પરંતુ વ્યગ્રતાની અધિકતાને કારણે સીતા એમને કપટી સમજે છે. અને કહે છે કે હવે તો મેં તમને ઓળખી લીધા છે. સ્વાર્થની જ દુનિયા છે. તમે કંઇ અન્ય હેતુસર અમારી સાથે વનમાં આવ્યા છો. તમને ધિક્કાર છે કે તમારા ભાઇ પર વિપત્તિ આવી હોવા છતાં એમની મદદ માટે જવાને તમે ઈન્કાર કરો છો. આ વચન લક્ષ્મણને મર્મવેધી લાગ્યા.

વચન ઉસ શુદ્ધ હૃદયમેં જાતે હી, દો ટૂકડે હો હો કે નિકલે;
જબ જગહ ઠહરનેકો ન મિલી, તો આંસુ હો હો કે નિકલે.
યહ રેખા ઉલ્લંઘન કરકે, જો કુટિયા કે અન્દર આવેગા;
હે ઉસે આણ યહ લક્ષ્મણકી, વહ વહીં ભસ્મ હો જાવેગા.

સીતાનાં આવા મર્મભેદી વચનો સાભળીને લક્ષ્મણના હૃદયના ટૂકડે ટૂકડા થઈ ગયા, એમની આંખોમાંથી આસુ ટપકવા લાગ્યાં. એમણે વિચાર કર્યો કે જો હું હવે નહિ જાઉં તો ભાભીના મનમાં ભારે વહેમ રહી જશે, અને જો ચાલ્યો જાઉં તો ભાભી એકલાં જ રહી જાય છે. રાક્ષસી માયાવાળા આ જંગલમાં હું એમને કેવી રીતે એકલા છોડી શકું ? લક્ષ્મણની સામે ધર્મસંકટ ઊભું થયું, આખરે એમણે સીતાની રક્ષાનો ઉપાય શોધી કાઢી, રામની પાસે જવામાં જ શ્રેય માન્યું. એમણે કુટીરની આસપાસ એક રેખા દોરી અને કહ્યું કે જે

કોઇ આ રેખાનું ઉલ્લંઘન કરીને એની અંદરના ભાગમાં પ્રવેશ કરશે તો તે બળીને ભસ્મ થઇ જશે. સીતાજીને ઝુંપડીમાં જ રહેવાનું કહીને લક્ષ્મણ રામની પાસે જવા નીકળ્યા. થોડે દૂર ગયા પછી પાછળ જુએ છેઃ

ઇતનેમેં હી માલૂમ હુઆ, વહ રેખા રંગ બદલતી હૈ;
જબ આગે પાંવ બઢાયા તો દેખા, એક ઉજજ્વલ જ્વાલા જલતી હૈ.

બ્રહ્મચારીનાં વચનોમાં સિદ્ધિ હોય છે. એમાં અલૌકિક શક્તિ હોય છે. જેવા લક્ષ્મણ રેખા દોરીને આગળ વધે છે, ત્યા તો એ જગા પર અગ્નિની એક જ્વાળા પ્રગટ થાય છે, એ જ્વાળા સીતાનું રક્ષણ કરે છે. દુનિયામા કોઇ દેવ અથવા દાનવની તાકાત નથી કે લક્ષ્મણની દોરેલી એ રેખામાં પ્રવેશ કરી શકે. જ્યારે સીતાનું હરણ કરવા માટે રાવણ આવે છે, ત્યારે એ આ જ્વાળાને જુએ છે અને વિચારમાં પડે છેઃ

ઔર રેખ ઉલ્લંઘન યદિ કરેગા તૂ, તો હોગા અભી મરણ તેરા;
સીતાહરણ નહીં હોગા, હો જાવેગા પ્રાણહરણ તેરા.

લંકાધિપતિ રાવણ રેખાનું ઉલ્લંઘન કરીને સીતાનું હરણ કરવાની હિમ્મત કરી ન શક્યો. આ પ્રતાપ લક્ષ્મણના આદર્શ શીલનો છે. એ બ્રહ્મચર્યનો ચમત્કાર છે !

બંધુઓ ! તમને લક્ષ્મણના ચરિત્રમાં શીલ અને સદાચારનું કેવું અદ્‌ભુત દર્શન થયું ? શું તમે લક્ષ્મણના આદર્શ ચરિત્રને સાંભળીને તમારા જીવનમાં બ્રહ્મચર્યનો આદર્શ ગ્રહણ કરશો ? યાદ રાખો, પ્રલોભનમા નાખનારું આ વિષયી જીવ સમાન ભયંકર સિદ્ધ થશે. જો તમે જીવનથી વાસ્તવિક ચાહતા હો, તમારા જીવનનો ઉત્કર્ષ ચાહતા હો,

તથા દેશવાસીઓનો અભ્યુદય ચાહતા હો તો તમારે બ્રહ્મચર્યના આદેશને અપનાવવો પડશે.

તમે કહેશો કે અમે તો ગૃહસ્થ છીએ; અમે બ્રહ્મચર્યનું પાલન કેવી રીતે કરી શકીએ ? હું તમને એ કહેવા માગું છું કે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહીને પણ બ્રહ્મચર્યનું પાલન થઈ શકે છે. જો તમારો ગૃહસ્થાશ્રમ વાસ્તવિક ગૃહસ્થાશ્રમ હોય તો બ્રહ્મચર્યના પાલનમાં કોઈ પ્રકારની બાધા આવી શકતી જ નથી. પરંતુ, મિત્રો ! હું જોઇ રહ્યો છું કે તમારા ગૃહસ્થધર્મનું પણ ઠેકાણું કયાં છે ? તમારા ગૃહસ્થાશ્રમનો પવિત્ર ઉદ્દેશ નષ્ટ થયો છે. ધનોપાર્જન કરવું અને વિલાસી જીવન વ્યતીત કરવું એ શું ગૃહસ્થાશ્રમ છે ? જો ગૃહસ્થાશ્રમ ખરેખર જ ગૃહસ્થાશ્રમ હોય તો એમાં સદાચાર અને શીલનું સ્થાન સર્વોપરી હોવું જોઇએ. આજના યુગમાં તમારે માટે મહાત્મા ગાંધીનું જીવન માર્ગદર્શક બની શકે તેમ છે. તેઓ લગભગ ૪૫ વર્ષથી બ્રહ્મચર્યમય જીવન વ્યતીત કરી રહ્યા છે. ગાંધીજીએ પોતાના અનુભવનું વર્ણન કરતાં કહ્યું છે કે–બ્રહ્મચર્યની શક્તિથી જ હું આટલું કામ કરવાને શક્તિમાન થયો છું. ગાંધીજીની આત્મકથા વાંચવાથી તમને જણાશે કે બ્રહ્મચર્યવ્રતનું પાલન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધા પછી ગાંધીજીનું જીવન કેટલું ઉચ્ચ અને ઉચ્ચતર જ થતું ગયું છે. તમે પણ જો તમારા જીવનમાં સાર્થકતા લાવવા માગતા હો, તો બ્રહ્મચર્ય તરફ લક્ષ આપો. સંયમ તરફ ધીરે ધીરે આગળ વધતા રહો.

વિચારોનો પ્રભાવ

બ્રહ્મચર્યની સાધના માટે એ આવશ્યક છે કે એના સાધક

નિયમોનું યથોચિત પાલન કરવામાં આવે. બ્રહ્મચર્ય પાલનની ઇચ્છા રાખનારને માટે સર્વ પ્રથમ એ આવશ્યક છે કે તે પોતાની ભાવનાઓને વિશુદ્ધ કરે. સદા પવિત્ર વિચારોને જ પોતાના મગજમાં સ્થાન આપે. કલુષિત વિચારોને પાસે ફરકવા પણ ન દે. ચારિત્ર્ય પર ભાવનાની ખૂબ ઊંડી અસર થાય છે. ભાવનાની વિશુદ્ધિ વિના વીર્યરક્ષા સંભવિત ન બને. જો મન મલિન હોય, મનમાં ખરાબ વિચારોને સ્થાન હોય, તો બ્રહ્મચર્યનું પાલન ન થઈ શકે. ગીતામાં કહ્યું છે કે—

ध्यायतो विषयान्पुंसः सगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कायात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रम ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

અર્થાત્–વિષયોનો વિચાર કરવાથી એમાં સંગ (આસક્તિ) ઉત્પન્ન થાય છે, સંગથી કામ (સ્ત્રીપ્રસંગની ઇચ્છા) ઉત્પન્ન થાય છે, કામથી ક્રોધ, ક્રોધથી મોહ, મોહથી સ્મૃતિ–ભંગ, સ્મૃતિભંગથી બુદ્ધિનો નાશ અને બુદ્ધિના નાશથી સર્વનાશ થઈ જાય છે.

વિષય સંબંધી વિચારોને મગજમા સ્થાન આપવાથી વીર્ય સ્થિર રહી શકતું નથી. એથી વીર્યને ચંચલ કરનારા કુત્સિત વિચારોથી હંમેશાં દૂર રહેવું જોઇએ. બ્રહ્મચારીમાં સદૈવ એ જ ભાવના રહેવી જોઇએ કે, “ હું બ્રહ્મચારી છું, મારે ઉર્ધ્વરેતા બનવું છે, એ મારો સંકલ્પ છે. ” આ ભાવના બ્રહ્મચર્ય-પાલનમાં ખૂબ સહાયક બને છે. જે વ્યકિતનું ભાવના બળ–સંકલ્પબળ જેટલું અધિક હોય છે, એટલા પ્રમાણમા એને સફળતા મળે છે.

તાત્પર્ય એ છે કે બ્રહ્મચારીએ પોતાની ભાવના હંમેશાં પવિત્ર રાખવી જોઇએ. પવિત્ર ભાવનાવાળાને વિચાર સતાવી શકતો નથી. ભાવનાની શુદ્ધિ માટે એ આવશ્યક છે કે-વ્યક્તિએ કોઇને કોઈ કાર્યમાં પરોવાઈ રહેવું જોઇએ. નિષ્ક્રિય અને નકામા બેસી રહેવાથી મગજમાં કુવિચારો પ્રવેશ કરી જાય છે. કહેવત છે કે-ખાલી મગજ ભૂતોનું ઘર છે. જે ખેતરમાં કોઈ બીજનું વાવેતર ન થાય ત્યાં નકામું ઘાસ ઉગી નીકળે છે. એવીજ રીતે જે દિમાગમાં સાત્ત્વિક વિચારોને સ્થાન નથી, એ દિમાગ ખાલી રહે છે અને એમાં કુવિચારો ઘર કરવા માંડે છે. એથી સદૈવ કોઇ ને કોઈ પુરુષાર્થમાં લાગી રહેવું જોઈએ. આળસ બ્રહ્મચર્ય માટે વિનાશક છે. વિચારોની સાત્ત્વિકતા માટે સારા સારા ગ્રન્થોનું વાંચન કરવું જોઇએ. જે પુસ્તકો વાંચવાથી મગજમાં કુવિચારો ઉત્પન્ન થાય, એમનો તો સ્પર્શ સુદ્ધાં કરવો જોઇએ નહિ. પણ ખેદની વાત છે કે આજે તો પથભ્રષ્ટ કરનારા, વિકારવર્ધક નાટક તથા નવલકથાઓના રૂપમાં હલકા સાહિત્યનો પ્રચાર વધી રહ્યો છે. ઊગતા નવયુવકો પોતાના મનોવિનોદ માટે આવા પુસ્તકો વાચીને પથભ્રષ્ટ થાય છે અને પોતાનો સર્વનાશ કરી નાંખે છે. આથી વિકારી સાહિત્યથી દૂર રહીને ચારિત્રને દૃઢ કરનારા સદ્ગ્રન્થોનું વાંચન કરવું જોઇએ આ કરવાથી મગજમાં સાત્ત્વિકતા વાસ કરી રહે છે અને એથી બ્રહ્મચર્યની સફળ આરાધના થઇ શકે છે.

આહાર અને બ્રહ્મચર્ય

બ્રહ્મચર્યની સુરક્ષા માટે આહારની સાત્ત્વિકતાની ખાસ આવશ્યકતા રહે છે. બ્રહ્મચર્ય અને આહારનો ઘનિષ્ટ સંબંધ છે.

બ્રહ્મચારીએ સાત્ત્વિક આહાર જ કરવો જોઈએ, વધુ મીઠું, ખાટું કે તીખા તમતમતા મસાલાવાળું ભોજન બ્રહ્મચારીએ ન કરવું જોઇએ. ગળ્યું અને તીખાતમતા તેજ મસાલાવાળું ભોજન વિકારોને ઉત્તેજે છે. એથી એ ભોજન બ્રહ્મચારીને માટે વર્જ્ય છે. તમારા ખાનપાન ખૂબ બગડી ગયા છે. એ ખાનપાનને જોતાં જ એમ લાગે છે કે તમે જીવનને માટે ખાતા નથી, પરંતુ ખાવાને માટે જીવો છો. તમે સ્વાદને વશ રહો છો. સ્વાદિષ્ટ વસ્તુઓ ખાવાના જ શોખીન તમે બની ગયા છો. એ સ્વાદને વશ થઇને આપ એ વિચાર કરતા નથી કે આવી રીતે તામસી ભોજનની અસર કેટલી ખરાબ થાય છે! આ તીખા તમતમતાં મસાલેદાર શાક અને ચટણીઓ બ્રહ્મચર્યરૂપી ઉપવન માટે આગ સમાન છે. આવા ભોજનો ખાઇને બ્રહ્મચર્યની આશા કરવી નકામી છે. બ્રહ્મચર્યની રક્ષા માટે સ્વાદનિગ્રહ અને સ્વાદ-જય અત્યન્ત આવશ્યક છે. એટલે મહાત્મા ગાંધીએ અસ્વાદને પણ વ્રતોમાં સ્થાન આપ્યું છે અને કહ્યું છે કે અસ્વાદ-વ્રતના પાલન વિના બ્રહ્મચર્યનું પાલન અસંભવિત છે.

બંધુઓ! હંમેશાં એ યાદ રાખો કે જીવનને માટે ખાવાનું છે, ખાવાને માટે જીવવાનું નથી. સાત્ત્વિક ભોજન તમારી જીવનશક્તિને વધારે છે, સ્વાસ્થ્ય અને બળની વૃદ્ધિ કરે છે અને શરીર તેમજ મનની પવિત્રતામાં વૃદ્ધિ કરવામાં સહાયક બને છે. એથી ઉલટું, આ સ્વાદિષ્ટ ભોજન તમારા સ્વાસ્થ્ય, આયુષ્ય અને ધર્મનો નાશ કરનારું છે.

આયુર્વેદવિશારદોએ સાત્ત્વિક ભોજનને જ મનુષ્યને માટે

પથ્ય અને લાભકારી માન્યું છે. એથી તમે સ્વાદને વશ ન બનતાં સાત્વિક ભોજનદ્વારા તન, મન અને જીવનની રક્ષા કરો. બ્રહ્મચારીને માટે સાત્વિક ભોજન જ અનુકૂળ છે.

બ્રહ્મચર્યની સાધના કરનારે માસ, મદિરા, ગાંજો, ભાંગ, અફીણ, બીડી, સીગારેટ, તમાકુ વગેરે માદક વસ્તુઓથી સદા દૂર રહેવું જોઈએ. એ માદક વસ્તુઓ શરીરમા નિરર્થક ઉત્તેજના પેદા કરે છે. તેઓ શરીરની વાસ્તવિક શક્તિ અને તંદુરસ્તીને હાનિ પહોચાડે છે અને હૃદયને કમજોર બનાવે છે એટલું જ નહિ, માનસિક શક્તિને પણ ક્ષીણ કરે છે. આ વિકારી વસ્તુઓ વીર્યને ચંચળ કરી મૂકે છે. ઇન્દ્રિયોના વિષયોને એ જગાડે છે એથી પ્રત્યેક જન–સાધારણને માટે આવી વસ્તુઓ ત્યાગ કરવાને જ લાયક છે. આમાં પ્રાચીન વૈદ્યો અને અર્વાચીન ડૉકટરોની પણ સંમતિ છે. એટલે બ્રહ્મચારીએ તો માદક વસ્તુઓથી હંમેશા બચવું જ જોઇએ.

. આ ઉપરાત વિલાસવર્ધક ફેશનવાળા ભપકાદાર વસ્ત્રો અને આભૂષણો પહેરવાં, નાટક સિનેમા જોવાં, એક જ ઓરડામાં એક જ પથારી પર સ્ત્રીપુરુષે સાથે સૂવું, વગેરે કાર્યો બ્રહ્મચારીને માટે સંપૂર્ણ ત્યાજ્ય છે. વીર્યનાશનાં કારણોથી બચી જઈ વીર્ય–રક્ષાને માટે કટિબદ્ધ બનો. બંધુઓ જો તમે વીર્યરક્ષા ઉપર પૂરતું લક્ષ આપશો તો તમે ઉર્ધ્વરેતા, તેજસ્વી અને શકિતશાળી છો એવું તમને જણાશે. છત્રપતિ શિવાજીને બાલ્યકાળના પ્રારંભથીજ સદાચારની શિક્ષા મળી હતી. એના પ્રતાપથી એ શકિતશાળી મોગલ સામ્રાજ્યને મુકાબલો કરી

હિંદુ સંસ્કૃતિની રક્ષા કરી શકયા. શિવાજી કેવા સદાચારી હતા એ આ ઉદાહરણથી ખાત્રી થશે.

સદાચારી શિવાજી

એક વાર શિવાજીનો કોઈ સૈનિક પરમ સુંદર નવયુવતીને બળજબરીથી ઉઠાવી લાવ્યો. એણે વિચાર કર્યો કે આ અત્યંત લાવણ્યવતી સુંદરીને હું મારા મહારાજા સમક્ષ ભેટ તરીકે ધરીશ તો તેઓ મારા પર ખૂબ પ્રસન્ન થશે અને મને પારિતોષિક આપશે. આ વિચારથી એ સૈનિક આ યુવતીને શિવાજી પાસે લાવ્યો, રમણી તો રોઇ રહી હતી. એના રુદનનો અવાજ સાભળીને શિવાજી બહાર આવ્યા અને યુવતીના રુદનનું કારણ સૈનિકને પૂછયું. સૈનિકે કહ્યું, “ મહારાજ, હું આ પરમ સુંદરીને આપની સેવામાં ભેટ તરીકે ધરવા માટે લાવ્યો છું. ” આ સાંભળતા જ શિવાજી આ સૈનિક પર ખૂબ ચીડાયા અને ક્રોધભર્યા સ્વરે ત્રાડ નાખી કહ્યું· ‘ અરે દુષ્ટ ! આ બહેનને કયાથી ઉઠાવી લાવ્યો ? ’ શિવાજીના આ શબ્દો સાભળીને સૈનિક ચોંકી ઉઠયો અને ભયનો માર્યો થરથર કંપવા લાગ્યો. શિવાજીએ આજ્ઞા કરી : ‘ જાઓ, આ રમણીને પાલખીમા બેસાડી આદરપૂર્વક એના સ્થાન પર પહોંચાડી દો. ’ શિવાજીએ એ રમણીના સૌંદર્યને જોઇને એ વિચાર કર્યો· “ મેં આ રમણીને પેટ અવતાર લીધો હોત તો ! ”

બંધુઓ ! શિવાજીએ એ યુવતીમા માતૃત્વ અને ભગિની-ભાવ જોયો. કેવું અદ્‌ભુત એ વીર્યશાળીનું ચારિત્ર્ય !

નવયુવકો ! તમારા પર જ સારા દેશની આશા નિર્ભર

છે. હું તમને કહું છું કે તમારામાં યૌવન-સુલભ ઉત્સાહ અને શક્તિ છે. એ શક્તિનો વધુને વધુ સંચય તમે કરો. તમારા શૌર્યને વીર્યનાશદ્વારા નષ્ટ ન કરો. બ્રહ્મચર્યના મહત્ત્વને સમજીને તમે એનું પાલન કરો. બ્રહ્મચર્યદ્વારા પ્રાપ્ત થયેલી શક્તિમાં જ તમારું અને દેશનું કલ્યાણ છે. તમે સૌ બ્રહ્મચર્યના આદર્શનું પાલન કરી મંગલમય બનો.

॥ ॐ शान्ति ॥



૬. સેવાધર્મ

દીન દુઃખીઓનાં દુઃખોથી જેનું હૃદય હચમચી ઊઠે છે, જેના રોમેરોમમાંથી કરુણા અને વાત્સલ્યની ધારાઓ વહેવા માડે છે, ગરીબ અનાથો પ્રત્યે જેને અંતઃકરણ પૂર્વક સહાનુભૂતિ છે, અને તેમને આશ્વાસન આપતો રહે છે, તેજ મનુષ્ય સાચો સેવક છે.

: ૬ :

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

ધર્મનિષ્ઠ સજ્જનો,

પ્રાણીમાત્ર વિકાસની ઇચ્છા કરે છે. ઉત્તરોત્તર વિકાસની સાધના કરવી એ એનું લક્ષ્ય છે. પરંતુ કર્તવ્યના પાલન વિના ક્યારેય વિકાસ થઈ શકતો નથી. જે મનુષ્ય પોતાનાં કર્તવ્યોને સારી રીતે સમજી શકે છે, અને સમજીને યથાવિધિ એનું પાલન કરે છે એજ વ્યક્તિ પોતાનો વિકાસ સિદ્ધ કરી શકે છે. કર્તવ્યોનું જો યથાર્થ પાલન કરવામાં આવે તો જીવન સુખમય, શાંતિમય, અને વિશુદ્ધ બને છે. એથી ઉલટું, કર્તવ્યચ્યુત માનવી હંમેશાં વિક્ષુબ્ધ, અશાંત અને ચિંતાગ્રસ્ત રહે છે. કર્તવ્ય–પથથી ચ્યુત થયેલો માનવી જીવનમાં કયાંય અને કયારેય શાંતિનો અનુભવ કરી શકતો નથી. આત્મોન્નતિ માટે માનવીય કર્તવ્યોનું યથાર્થ જ્ઞાન અને એ કર્તવ્યોનું પાલન અત્યન્ત આવશ્યક બને છે.

આત્મદર્શનના અભિલાષી સાધકનું કર્તવ્ય શું છે? કયા ઉપાયોદ્વારા એ પોતાનું ધ્યેય સિદ્ધ કરી શકે છે? આ પ્રશ્નો પર અનેક મહાત્માઓએ પોતાનાં મંતવ્યો જનસમાજના હિતને માટે વ્યક્ત કર્યાં છે. એ મંતવ્યો દ્વારા બતાવવામાં આવેલા

માર્ગ પર ગતિ કરીને સાધકવર્ગ પોતાનું ઈષ્ટ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. ઉચ્ચ કક્ષાએ પહોંચેલા એક મહાત્માએ આ પ્રશ્નોના ઉત્તરમાં કહ્યું છે કે—

" જેટલા આ જગતમાં પરમાણુઓ છે, એટલા માર્ગ ઈશ્વરપ્રાપ્તિ માટેના પણ છે; પરંતુ એ સૌમાં સૌથી નાનો અને સરળ માર્ગ છે સેવા."

આ કથનદ્વારા સેવાધર્મની મહત્તા સ્પષ્ટ બને છે. સેવા–નિઃસ્વાર્થ સેવા–મનુષ્યને એ સ્થાન પર પહોંચાડે છે જે અનન્ત છે, સૌનું લક્ષ્યબિંદુ છે. સેવાધર્મ એટલો વ્યાપક અને વિશાળ છે કે એ સેવકને પ્રભુમય બનાવી દે છે સાચી સેવાની તમન્ના માનવીને ઇશ્વરીય સિદ્ધિ અર્પે છે. સેવા હૃદયને પવિત્ર અને નિર્મળ બનાવે છે, દિલને દરિયાવ બનાવે છે. જે ઇશ્વરનો સાક્ષાત્કાર કરવા માટે યોગીઓ તડફડાટ કરે છે એજ ઈશ્વરનો સાક્ષાત્કાર નિઃસ્વાર્થ સેવક સર્વત્ર કરે છે. સેવાનો મહિમા અપાર છે. કહ્યુ છે કે—

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ।

સેવા ધર્મ અતિ ગહન છે. યોગીઓને માટે પણ અગમ્ય છે.

જીવન—સફળતાની કસોટી

જ્યારે મનુષ્ય પોતાના સ્વાર્થના સંકુચિત ક્ષેત્રને છોડીને ઊંચે ચડે છે, ત્યારે એ કૂપમંડૂક વૃત્તિનો ત્યાગ કરી વિશાળતાનો અનુભવ કરે છે. એને માટે ધન, ધાન્ય, કુટુમ્બ, સ્વજનો, વગેરેમા જ સર્વ કંઇનો સમાવેશ થઈ જતો નથી, એ સૌમાં જ એ જીવનની ઈતિશ્રી સમજતો નથી, પરંતુ સંસારના પ્રત્યેક જીવને એ પોતાના સમાન ગણે છે. સમસ્ત સંસાર એને

પોતાના કુટુમ્બ સમાન લાગે છે. "वसुधैव कुटुम्बकम्" ના વિચારોમાં એ મગ્ન રહે છે. આ કુટુમ્બનું એક પણ પ્રાણી જ્યાંસુધી દુઃખી હોય ત્યાં સુધી એ સુખેથી નિદ્રા નથી કરી શકતો. આ નિ:સ્વાર્થ સેવકની વૃત્તિ એટલી તો ઉદાર હોય છે કે બીજાનાં સુખોને એ પોતાનું સુખ ગણે છે અને બીજાનાં દુ:ખોને એ પોતાનું દુ:ખ ગણે છે. એ પ્રભુને પ્રાર્થના કરે છે કે—

દયામય ઐસી મતિ હો જાય—
ઓરોંકે સુખકો સુખ સમઝૂં સુખકાં કરું ઉપાય!
અપને સબ દુ:ખો કો સહ લૂં પર દુ:ખ સહા ન જાય!!
—દયામય.

સેવક પોતાનાં સુખ દુ:ખોની પરવા કરતો નથી. એ અન્યનાં સુખોને પોતાનું સુખ માને છે અને અન્યનાં દુઃખોને પોતાનું દુઃખ માને છે. એ પોતાનાં દુઃખોને સહન કરી શકે છે, પરંતુ અન્યનાં દુ:ખ જોઇ અધીર બની ઉઠે છે અને પોતાના સર્વસ્વનો ત્યાગ કરીને અન્યનાં દુઃખોને દૂર કરવા માટે તત્પર બની જાય છે. એના જીવનનું લક્ષ્યજ એ હોય છે કે "ગમે તેટલો આત્મ-ભોગ આપીને, મારું સર્વસ્વ અર્પણ કરીને અન્યનો દુઃખભાર હલકો કરું એ જ મારા જીવનની સફળતા છે."

કેવલ સ્વાર્થ-સાધના કરના જીવનકા ઉદ્દેશ્ય નહી ।
હિત કરના હૈ પ્રાણી માત્રકા રહે દ્વેષકા લેશ નહીં ॥

ખાવું, પીવું, એશઆરામ કરવો અને પોતાનો સ્વાર્થ સાધી લેવો એ માનવ જીવનનો ઉદ્દેશ કદાપિ હોઇ શકે નહિ. આ દેવદુર્લભ માનવ શરીર કેવળ સ્વાર્થ સાધનાથી સફળ નથી બની શકતું. માનવતા આ સ્વાર્થવૃત્તિથી પર એવી એક

ચીજ છે, જેને પાશવિક વૃત્તિવાળો મનુષ્ય સમજી શકતો નથી. જેમાં માનવતા પોતાના વાસ્તવિક સ્વરૂપમા પ્રગટ થઈ છે, માનવીય વૃત્તિ દાનવીય અને પાશવિક વૃત્તિઓદ્વારા કુંઠિત થઈ નથી એજ સાચો મનુષ્ય છે. એજ નિઃસ્વાર્થ સેવાનું મૂલ્યાકન કરી શકે છે. સેવા ધર્મની ઉચ્ચતાને એ જ સમજી શકે છે અને એ જ પોતાનું જીવન સફળ કરી શકે છે. પશુના જેવાં જ કાર્યોમાં બંધાઈ ન રહેતા એ વિશાળ ક્ષેત્રમાં પ્રવેશ કરે છે અને સફળતાપૂર્વક કર્તવ્યક્ષેત્રમાં વિજયી બનીને શાન્તિને વરે છે.

મહાપુરુષ બનવાની ચાવી

સંસારના મહાપુરુષો પોતાના રાજસી સુખવૈભવને ઠોકરે મારી, સેવાની ભાવનામાં ઓતપ્રોત બની, તપોમય જીવન વ્યતીત કરે છે. અન્યને સુખી બનાવવા માટે હસતે મુખે પોતાના સર્વસ્વનું બલિદાન કરે છે. એમનાં અંતઃકરણ એટલાં તો કોમળ હોય છે કે દુઃખીઓના કરુણાભર્યાં રુદન તેઓ સાંભળી શકતા નથી. આવાં રુદન સાભળીને તેએ દયાર્દ્ર બની જાય છે, અને તેથી રાજસી સુખવૈભવ તેમને માટે કંટક સમાન બની રહે છે. આ સુખોને તૃણવત્ ગણી, એમને ઠોકરે મારી સેવામય માર્ગને તેઓ અંગીકાર કરે છે, અને એની સરળતામાજ જીવનની સફળતા સમજે છે. મહાપુરુષ એટલા માટે મહાપુરુષ છે કે તે દુનિયાને દુઃખમાંથી બચાવે છે, આત્મભોગ આપીને પણ એનો દુઃખભાર હળવો કરે છે અને એને સુખશાતિનો રાહ બતાવે છે.

આવી જ કલ્યાણકારી ભાવનાથી પ્રેરાઇને ચરમ તીર્થ

પ્રભુ મહાવીરે રાજ્ય, સુખસંપત્તિ, અને પરિવારનો ત્યાગ કરી તપોમય જીવન અંગીકાર કર્યું અને પીડિત, પતિત તથા માર્ગચ્યુત સંસારને સુખશાન્તિના માર્ગનું દર્શન કરાવ્યું. જનકલ્યાણની સાધના માટે પ્રભુ મહાવીરે સાધુ-સાધ્વીરૂપ શ્રમણસંઘને એક જ સ્થળે રહેવાની આજ્ઞા ન આપતાં ગામે-ગામ વિહાર કરી ધર્મભાવના જાગૃત કરવાની આજ્ઞા કરી છે. પ્રભુ મહાવીરની શ્રમણસંઘની રચના આત્મહિતની સાથે જન-કલ્યાણની ભાવનાની દ્યોતક છે. આ વર્ગ પોતાના સ્વાર્થનો ત્યાગ કરીને પોતાના અને પારકાના વાસ્તવિક હિતની સાધના કરનારો વર્ગ છે. સાંસારિક આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિથી મુક્ત રહીને સંસારને સુખમય માર્ગનું દર્શન કરાવવા માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહેવું એ આ વર્ગનું પ્રધાન લક્ષ્ય છે. કહ્યું છે કે—

સ્વાર્થ ત્યાગકી કઠિન તપસ્યા બિના ખેદ જો કરતે હૈ,
ઐસે જ્ઞાની સાધુ જગતકે દુઃખ સમૂહ કો હરતે હૈ.

સ્વકલ્યાણને ખાતર પરકલ્યાણની સાધના કરનારો આ શ્રમણવર્ગ શારીરિક કષ્ટો તેમ જ સંતાપોને શાંતિપૂર્વક સહન કરે છે, અને કઠોર સેવામય જીવન વ્યતીત કરે છે.

સાચો સેવક કોણ ?

સાચો સેવક ઓછામાં ઓછું લઈને વધુમાં વધુ આપે છે. એજ સાચો યોગી છે. જેને કોઈ પ્રકારની સાંસારિક આકાંક્ષાઓ નથી, જે મોહમયી આશાઓના પાશમાંથી મુક્ત છે, અને જે સ્વાર્થને હોમી ચૂકયો છે, એ જ સાચો સેવક છે. દીન દુ:ખી-ઓનાં દુ:ખોથી જેનું હૃદય ભરાઈ આવે છે, જેના રોમરોમમાં

કરુણા અને વાત્સલ્યની ધારાઓ વહે છે, જે ગરીબ–અનાથ પ્રત્યે અંતઃકરણપૂર્વકની સહાનુભૂતિથી જુએ છે અને એમને આશ્વાસન આપે છે, એજ મનુષ્ય સાચો સેવક છે, દુનિયાને માટે એ આશીર્વાદરૂપ છે.

નિઃસ્પૃહ બનીને હરેક પ્રકારે સેવા આપવા માટે એ તત્પર રહે છે. એને માનાપમાનનું ભૂત ડરાવી શકતું નથી. એની સેવાઓ માટે કદાચ અન્ય કોઇ એનું સન્માન કરે તો નથી એ ફુલાઈ જતો કે અપમાનથી ડરીને નથી પોતાનું કર્તવ્ય છોડતો. એ તો નિઃસ્પૃહભાવથી પોતાનું અને પારકાનું કલ્યાણ કરવા માટે મરીફીટે છે. એ પોતાના પ્રાણને હોડમાં મૂકી દે છે. સાચી સેવાની તમન્ના સેવનારને મૃત્યુ ડરાવી શકતું નથી. એના અંતઃકરણમા એવી પવિત્ર શક્તિ સ્ફૂટ થાય છે કે સંસારની કોઈ તાકાત એને ડરાવી શકતી નથી. સંસારની ગમે તેવી રાક્ષસી તાકાત એને કર્તવ્ય માર્ગથી ભ્રષ્ટ કરી શકતી નથી. જીવનને હથેલીમા રાખીને અન્યના કલ્યાણ માટે એ ઘૂમતો રહે છે. એને તો એ પ્રતીતિ થઇ ગઇ હોય છે કે—

"અબ હમ અમર ભયે, ન મરેગે!"

એ પોતાના વાસ્તવિક સ્વરૂપને અજર, અમર અને શાશ્વત સમજે છે. આત્મા અને શરીરનો ભેદ એ સમજે છે. શરીર પ્રત્યે એને આસકિત રહેતી નથી. આત્માના સૌંદર્યની સામે શારીરિક મોહ નષ્ટ થાય છે. એથી એ પ્રાણાર્પણ કરીને પણ પોતાનો સેવાધર્મ બરાબર નિભાવે છે.

ભારતવર્ષ તો ધર્મપરાયણતા અને પારમાર્થિકતાને

[illegible]

[illegible] તો આવી [illegible] વર્ણવેલા [illegible]

[illegible]

[illegible]

અને દુઃખીજનોને જોઈને તમારા હૃદય દ્રવે છે ખરાં ? જો તમે ખરેખરા અહિંસાના સિદ્ધાંતને સમજ્યા હો, જો તમે ખરેખર દયા દેવીના ઉપાસક હો, જો તમે ખરેખર વીરના અનુયાયી હો, અને જો તમે ખરેખર સમ્યક્ત્વી અને શ્રાવક હો, તો તમારા હૃદયમાં દીન દુ:ખીઓની સેવા કરવાની ભાવના અવશ્ય ઉદ્‌ભવવી જોઈએ જ. ભાવનાજ નહિ, પરંતુ સેવાના આવા અવસર પર સર્વ કંઈ છોડીને સેવામાં જ રત રહેવું જોઈએ. પ્રભુ મહાવીરની જય બોલવાથી અથવા કેવળ મોઢેથી એમની સ્તુતિ ગાવાથી કંઇ વળે નહિ. જો એમના સાચા અનુયાયી હોવાનો અધિકાર માનતા હો, તો એમના ઉપદેશોના પાલનનો અમલ કરવાનો અવસર ઉપસ્થિત થતાં જ સર્વ કંઈ છોડીને ઉપદેશમાં કરેલ નિર્દેશ અનુસાર વર્તન કરવાને તમારે જાતેજ તૈયાર થઈ જવું જોઇએ. એમાંજ ભગવાન મહાવીરની સાચી ભક્તિ અને પૂજા છે. માનવીય દયા અને માનવ સેવા સૌથી પ્રથમ ધર્મ છે. માનવ સેવાનો અવસર પ્રાપ્ત થતાં જ એને વધાવી લેવાની તમારી તૈયારી હોવી જોઈએ. એજ તમારું પ્રથમ કર્તવ્ય છે. એમાં જ સમ્યક્ત્વ અને શ્રાવકત્વનું પાલન છે. સમ્યક્ત્વનાં પાંચ બાહ્ય લક્ષણ છે. શમ, સંવેગ, નિર્વેદ, અનુકમ્પા અને આસ્થા. આ બાહ્ય ચિહ્નો વડે જ તમે પરીક્ષા કરી શકો કે તમારામાં સમ્યક્ત્વ અને શ્રાવકત્વ કેટલું છે. જેટલી વધુ અનુકમ્પા તમારામા હશે, એટલું દૃઢ તમારું સમ્યક્ત્વ હશે. જો મનુષ્ય અનુકમ્પાનો પ્રસંગ આવવા છતાં ચૂપચાપ બેસી રહે છે, તો સમજી લેવું કે એ મનુષ્ય સમ્યક્ત્વથી હજી ખૂબ દૂર છે. સાચા સમ્યક્ત્વીનું હૃદય તો અન્યનું

દુઃખ જોતાં દ્રવીત થયા વિના રહેતું જ નથી. અન્યના દુઃખ સામે જે લોકો આંખો મીંચી જાય છે, તે સમ્યક્ત્વના દ્વાર સુધી પહોંચ્યા નથી. માટે મિત્રો ! દુઃખીઓનાં દુઃખો દૂર કરવા માટે તત્પર બનો, એ જ સાચી આરાધના છે.

પાદરી ડેમિયન સાહેબ પેલા પીડિતોના દુર્ગંધ મારતાં ઝૂંપડાંઓ તરફ ચાલી નીકળ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ જુએ છે તો એ રોગીઓ દુર્ગંધ, ભૂખ અને રોગની વેદનામાં તડફડતા પોતાનું અણમોલ માનવ–જીવન કરુણાજનક દશામા વ્યતીત કરે છે. એમને આવી દુઃખી દશામાં જોઈને પાદરી સાહેબની આંખો આંસુઓથી છલકાઇ ગઈ. ખૂબ પ્રેમપૂર્વક સાન્ત્વના આપતાં એમણે આ દુઃખીઓને કહ્યું, " મારા વહાલા ભાઈઓ, ગભરાશો નહિ. આ દુઃખ તમારા પોતાના જ દોષોથી ઉત્પન્ન થાય છે. દુઃખ જીવનની કસોટી છે. પ્રત્યેક દુઃખનો ઉપાય પણ હોઈ શકે છે. પુરુષાર્થથી દુઃખ દૂર થઈ શકે છે, માટે તમે ધૈર્ય રાખો. હું તમારી સેવા માટે આવ્યો છું. તમે તમારાં દુઃખ અને આવશ્યકતાઓ નિઃસંકોચ કહો."

આવા પ્રેમ અને સહાનુભૂતિના શબ્દો સાભળીને રોગીઓનું અર્ધું દુઃખ જાણે દૂર થઈ ગયું. પાદરી સાહેબના આશ્વાસનથી એમનામા ધીરજ આવી. સૌ અલગ અલગ પોતપોતાનાં દુઃખો સંભળાવવા મંડી પડયા.

સૌ રોગીઓને મીઠાં વચનોદ્વારા શાંતિ પહોચાડયા બાદ ડેમિયન સાહેબ જાતે જ એમની સેવામાં લાગી ગયા. એ બધાનાં લોહી અને પરૂથી ભરેલા વસ્ત્રો ઉતરાવી દૂર જંગલમા દટાવી

દીધાં અને એમણે પોતાને હાથે બધા રોગીઓના ઘા હળવેથી શાંતિપૂર્વક ધોઈ, એમના પર પાટા લગાવી, સૌને વસ્ત્રો પહેરાવ્યાં અને એમને માટે સારા સાત્વિક ખોરાકની વ્યવસ્થા કરી. હંમેશાં એ રોગીઓની પાસે જ રહીને તેમની સેવા ચાકરી કરવા લાગ્યા. આ અવિશ્રાન્ત સેવાના ફળસ્વરૂપ કેટલાયે રોગીઓના રોગ મટી ગયા અને ગભરાટ તો સૌનો ચાલ્યો ગયો. સૌ રોગીઓ હવે ડેમિયન સાહેબને ફાધર (પિતા) ડેમિયન કહેવા લાગ્યા.

પાદરી ડેમિયન સેવક બનીને ગયા હતા. પરંતુ ત્યાં જઈને તો એમના પિતા બની ગયા. સેવાની આ અમૂલી ભેટ છે.

કુદરતે ફાધર ડેમિયનની પરીક્ષા કરવાનું ધાર્યું. કુદરત સેવકની હંમેશા કડક પરીક્ષા લે છે. જે સેવક આ કઠિન પરીક્ષામા સફળ થાય છે, તે જ સાચો સેવક છે. કસોટીમા જે ખરો ઉતરે એજ સાચું સોનું છે. ફાધર ડેમિયનને પણ રક્તપિત્તનો રોગ લાગુ પડ્યો. આ જોઈને બધા રોગીઓ ગભરાયા અને ફાધરનો રોગ મટે તે માટે ઈશ્વરની પ્રાર્થના કરવા લાગ્યા. પરંતુ ફાધર પોતે તો ગભરાયા નહિ. ખૂબ ધૈર્યપૂર્વક તેઓ કહેવા લાગ્યા:

“બંધુઓ! આજસુધી મેં તમારી સેવા કરી, પરંતુ તમને કેવું દર્દ થતું હતું તેની મને ખબર ન હતી. હવે મને પોતાને દર્દ લાગુ પડેલું હોવાથી એ દુઃખનો હું અનુભવ કરી રહ્યો છું. આથી એ અનુભવને આધારે તમારી વધુ સારી વ્યવસ્થા કરવા માટે સમર્થ બનીશ. તમે જરા પણ ચિંતા ન કરો.” ફાધર ડેમિયને આ દર્દના જૂદા જૂદા ઈલાજોના પ્રયોગ પોતાના પર કર્યા અને એ પ્રયોગદ્વારા દર્દીઓને લાભ આપ્યો.

ફાધર ડેમિયનને રોગ લાગુ પડ્યો છે એવા સમાચાર મળતાં તેમનાં સ્વજનો તથા અન્ય પાદરીઓ પણ ત્યાં આવવા લાગ્યા. તેઓ બધાં ફાધરને અન્ય સ્થળે લઈ જવાની અને ત્યાં તેમનો ઇલાજ કરવાની તેમને વિનંતી કરવા લાગ્યાં. પરંતુ ફાધરે તો પોતાનાં દુઃખી માનવબંધુઓનો સાથ છોડીને અન્ય કોઈ સ્થળે જવાનું કબૂલ કર્યું જ નહિ.

ફાધર ડેમિયન જેવા મહાત્માનું શરીર રકતપિત્ત જેવા રોગથી બગાડી નાખવાના પ્રાયશ્ચિત્તના રૂપમાં કુદરતે તેમને દિવ્ય નૂતન શરીર આપવાનો નિશ્ચય કર્યો. ફાધરનું શરીર એક બિછાના પર પડ્યું છે. એમનો આત્મા આ નશ્વર દેહને છોડીને જવાની તૈયારી કરી રહ્યો છે, એટલામા એક પાદરીએ આવીને એમને કહ્યુ· "ફાધર ! આપનો કોટ હું લઇ લઉ ?"

ફાધરે જવાબ આપ્યો, "ભાઈ દુર્ગંધમય લોહીપરૂથી ખરડાયેલા આ કોટને લઇ તમે શું કરશો ? આ કોટના સ્પર્શથી કદાચ તમને રોગ લાગુ પડશે."

પાદરીએ કહ્યુ, "ફાધર ! તમે કહ્યું એ તો ઠીક છે; પરંતુ આ કોટ તો સમ્રાટના આભૂષણો કરતાં પણ વધુ કિંમતી છે. અને આમા જે ધાબા છે, તે દુર્ગંધમય લોહીપરૂના નથી, પરંતુ જીવનપર્યન્ત સતત સેવા કરવાના સ્વર્ગીય સ્વર્ણચિહ્નો છે. એનુ મૂલ્ય બહુમૂલ્ય રત્નો કરતા પણ અધિકતર મૂલ્યવાન છે."

બંધુઓ ! ફાધર ડેમિયને પ્રાણની પરવા ન કરતા રોગીઓની સેવા કરી. રોગી અને પીડિતની સેવા એજ સાચી પ્રભુસેવા છે.

ભગવાન દીનબંધુ છે

ભગવાનનું એક નામ દીનબંધુ છે. દીનબંધુ કહીને આપણે એ પરમાત્માનું નામ સ્મરણ કરીએ છીએ. શું ભગવાન ખરેખર દીનબંધુ છે? શું તમને અંતઃકરણથી વિશ્વાસ છે કે ભગવાન દીનબંધુ છે? જો હોય તો દીન બંધુની ઉપાસના દીનોની સેવાથીજ થઈ શકે. એ દીનબંધુ કૃપાસિંધુનું નિવાસસ્થાન ઈંટ અને ચૂનાના બનેલાં મંદિરો, મસ્જીદો, સ્થાનકો કે દેવળોમાં ન હોઇ શકે. એ પરમાત્મા ઈંટ ચૂનાના વિશાળ ભવનોમા કેદ નથી બની શકતો. એ તો એ દીનોમાં નિવાસ કરે છે, જેમને પીડિત, દર્દી અને પતિત કહેવામા આવે છે.

કહ્યુ છે કે—

મૈં ઢૂઢતા તુઝે થા જબ કુંજ ઔર વન મેં ।
તૂ ઢૂઢતા મુઝે થા તબ દીન કે વતન મેં ॥

ખરેખર દીનોનું હૃદય એજ મંદિર છે, એજ મસ્જીદ છે, એજ સ્થાનક છે, અને એજ દેવળ છે. પરમાત્માને શોધવા માટે અહીં તહીં વનો, પહાડોની કંદરાઓ કે અન્ય કયાય ભટકવાની આવશ્યકતા નથી. દીનોનું હૃદય એજ પરમાત્માની સેવા છે. નરની સેવા એ નારાયણની સેવા છે. જનતાની સેવા એ જિનેન્દ્ર દેવની સેવા છે. એથી જનતાજનાર્દનની સેવામાં તન, મન અને ધન વડે રકત બની જવું જોઇએ.

ભાઇઓ! યાદ રાખો કે દીનોને સંતાપ આપવો કે એમનું અપમાન કરવું એ મંદિર કે મસ્જીદને તોડી પાડવા સમાન છે. દીનોને સતાવીને દીનબંધુ ભગવાનના સેવક કેવી

રીતે બની શકાય ? જો તમે દીનબંધુની ઉપાસના કરવા ચાહતા હો તો દીનોની ઉપાસના કરો. દીન દુઃખીઓનાં દુ.ખો દૂર કરવા માટે કટિબદ્ધ બની જાઓ. એમને શાંતિ આપો. જો એકજ દુંખી આત્માની અંતઃકરણપૂર્વક સેવા કરીને એને શાંતિ આપવામાં આવશે તો તમને એવી શાંતિનો અનુભવ થશે કે એનો ક્યારેય નાશ નહિ થઇ શકે. અન્યને શાંતિ આપવી એ પોતાને માટેજ અક્ષય શાંતિનું ઝરણુ વહાવવા બરાબર છે. એકાદ સંત આત્માને પણ જો તમે શાંતિ આપી શકશો તો સમજજો કે તમારું કલ્યાણ થઈ ચૂકયું છે અને જો તમારાથી કોઈ દુઃખીનું હૃદય દુભાશે તો એનું પરિણામ પણ અતિ ભયંકર થશે. કહ્યુ છે કે

તુલસી આહ ગરીબ કી કબહુ ન નિષ્ફલ જાય ।
મુએ બૈલ કે ચામસે લોહા ભસ્મ હો જાય ॥

દુંખીઓના હૃદયમાથી નીકળેલો ચિત્કાર કયારેય નિષ્ફળ જતો નથી. એવી જ રીતે એમના અંત.કરણમાંથી નીકળેલો આશીર્વાદ પણ નિષ્ફળ જતો નથી. આ જાણીને દીનબંધુ ભગવાનની ભાવના માટે દીનોની સેવામા આપણે આપણું સર્વસ્વ સમર્પણ કરી દેવું જોઈએ.

ગાંધીજીનું સેવામય જીવન

વર્તમાન યુગમાં મહાત્મા ગાધીને અદ્વિતીય મહાપુરુષ કહેવામા આવે છે. આખી દુનિયા એમને પૂજનીય માને છે. આ સ્થિતિ એમણે કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરી એ તમે સૌ જાણો છો. જો મહાત્મા ગાધીજીની આત્મકથા તમે વાચશો તો તમને

ખબર પડશે કે સેવાની અદમ્ય ભાવનાવડે જ તેઓ આ ઉચ્ચ સ્થાન પર પહોંચ્યા છે.

ગાધીજી દક્ષિણ આફ્રિકામા વકીલાત કરતા હતા, ત્યારથી જ સેવાભાવ પ્રત્યે એમનું સવિશેષ લક્ષ હતું. એક દિવસ એમના નિવાસસ્થાન પર કોઇ રક્તપિત્તનો રોગી કંઇક માગવા આવ્યો. એને જોઇને ગાંધીજીના મનમા પહેલો વિચાર તો એ આવ્યો કે આને કંઈક આપીને વિદાય કરી દેવો જોઇએ, પરંતુ આ વિચારથી એમના આત્માને સંતોષ થયો નહિ. એમણે એના ઘાવ ધોયા અને પોતાને ત્યા એને રાખવાની વ્યવસ્થા કરી. પરતુ ઘરમા તો વધારે દિવસો સુધી રાખવાનું અશકય હતું; એથી એને ઇસ્પીતાલમા દાખલ કરાવ્યો. આ ઘટના પછી ગાધીજીની સેવાની તમન્ના વધતી ગઈ અને પોતાના સ્વભાવને સેવાપ્રત્યે વાળવાની ભાવના એમના દિલમા ઉદ્ભવી. શેઠ રૂસ્તમજીના ધર્માદાફંડમાથી ત્યા એક ઇસ્પીતાલ ચાલતી હતી. ત્યા જઇને તેમણે હંમેશા રોગીઓની સેવા કરવાનું તથા તેમને દવા આપવાનુ કામ શરૂ કર્યું. વકીલાતના ધંધા-માથી પણ બે કલાક ફાજલ પાડી આ કામમા તેઓ લાગી રહેતા. આ સેવાને કારણે તેઓ દક્ષિણ આફ્રિકાના અનેક ભારત-વાસીઓના ગાઢ સંપર્કમા આવ્યા. આગળ જતા આ કાર્ય એમના જીવનમા ખૂબ ઉપયોગી નીવડ્યું.

જ્યારે દક્ષિણ આફ્રિકાસાં સત્યાગ્રહ શરૂ થયો ત્યારે ત્યાની સરકારે ભારતવાસીઓને જહાજોમા ભરીને હિંદુસ્તાન મોકલવા માડ્યા. અને ત્રણ સમૂહ મદ્રાસ વગેરે સ્થળે ઉતારવામા આવ્યા. જે લોકોને હિંદુસ્તાન મોકલવાસા આવ્યા તેમના કુટુમ્બીઓ–

સ્ત્રી, બાળકો વગેરે–આફ્રિકામાં જ હતાં. એ વખતે ગાંધીજીએ આ સ્ત્રી બાળકોની ખૂબ સેવા બજાવી. તેઓ મળસ્કે ઊઠતા, છોકરાને ભણાવતા, જાજરૂ પોતાને હાથે જ સાફ કરતા; ત્યારબાદ બધી સ્ત્રીઓને પૂછતા, "તમારી પાસે મેલાં કપડા હોય તો મને આપો. હું બાજુના નાળામાં ધોઈ આવું.' તેઓ કપડાં ધોતા અને સુકાઈ ગયા પછી પાછાં તેમને સોંપી દેતા. એ વખતે ગાંધીજીએ એમની એવી સેવા બજાવી કે એ બધાને પોતાનાં દેશનિકાલ કુટુમ્બીઓની યાદ સરખી પણ આવવા દીધી નહિ.

ગાધીજીનું પ્રારંભિક જીવન આમ સેવામય હતું અને એ જ કારણે આજે યુગપ્રવર્તક મહાપુરુષની શ્રેણીમા એમની ગણતરી થાય છે; સેવા એ મહાપુરુષ બનવાની ચાવી છે.

ભાઈઓ ! જરા વિચાર કરો, ગાંધીજીએ સેવામય જીવન શા માટે પસંદ કર્યું ? શું એમને કોઈ વાતની કમી હતી ? તેમણે ધાર્યું હોત તો તમારા કરતાં પણ વધારે મોજશોખભર્યું જીવન ન જીવી શકત ? તેઓ બેરીસ્ટર હતા. બેરીસ્ટર હોવા છતાં તેઓ ઈસ્પીતાલમા બે કલાક સુધી નર્સનુ કામ કરતા હતા. તમને ઓછામા ઓછો અર્ધો કલાક પણ સેવા માટે કાઢવાનું કહેવામાં આવે તો તમે કહેશો કે 'મહાશય ! સમય નથી. ધંધામાંથી ફુરસદ નથી મળતી.' આનું કારણ એ છે કે તમે ખાવું, પીવું અને ધન કમાવું એને જ તમારું જીવનધ્યેય માની લીધું છે. આ ત્રણ સિવાય અન્ય કોઇ કામને માટે તમને સમય મળતો નથી. ધનની કેવી ગુલામી છે ! ગાધીજીએ તો એમ માન્યું છે કે ખાન, પાન અને ધનો-

પાર્જનને માટે જ જીવન નથી; તેઓ જીવનના ઉચ્ચ આદર્શને સમજ્યા છે, એ આદર્શને અપનાવ્યો છે, અને ત્યાં સુધી પહોચવા માટે જીવનની સર્વ ક્રિયાઓને એ તરફ વાળી છે. દક્ષિણ આફ્રિકામાં એમણે પોતાના દેશવાસીઓની દુર્દશા જોઈ અને એકદમ એમનું હૃદય કંપવા લાગ્યું. એ દશામાથી એમને મુક્ત કરવાનો એમણે સંકલ્પ કર્યો અને પ્રાણાન્તે પણ એ સંકલ્પને સિદ્ધ કરવા માટે કાર્યરત બની ગયા, અન્યના સુખ-શાતિમા જ એમણે પોતાના સુખના દર્શન કર્યાં. પોતાનો ઉદ્દેશ પાર પાડવા માટે એમણે લાઠીઓ સહન કરી, કારાવાસ વેઠ્યા, કઠોર મારપીટ પણ સહન કરી, બે દાંત તૂટી ગયા, વગેરે તરેહ તરેહના દુ:ખ એમણે સહન કર્યાં, પરંતુ આ દુ:ખોને સહન કરવા છતાં પોતાના દેશવાસીઓની સેવા કરવાનો માર્ગ એમણે છોડ્યો નહિ. આખરે એમનો હેતુ પાર પડ્યો અને દક્ષિણ આફ્રિકાના સત્યાગ્રહમા તેઓ વિજયી નીવડ્યા. આજે પણ ભારતની જનતાને ગુલામીની જંજીરોમા ઝકડાયેલી જોઇને તેમનો આત્મા કપી રહ્યો છે. અને તેથી જ ભારતને ગુલામીમાથી છોડાવવા માટે અવિરત પરિશ્રમ તેઓ ઉઠાવી રહ્યા છે એક ગરીબમા ગરીબ ભારતવાસી જેવું જીવન તેઓ જીવી રહ્યા છે. શરીર પર પૂરતા વસ્ત્ર નથી. ભારતની નગ્નતાને દૂર કરવા માટે જ તેઓ અર્ધનગ્ન રહે છે. ધન્ય છે ગાંધીજીનો આદર્શ સેવાધર્મ. તમે પણ સેવાધર્મને અપનાવો.

અહંકાર પર વિજય

સેવાધર્મ અંગીકાર કરતા પહેલા અહંકાર પર વિજય મેળવવો આવશ્યક છે. સેવા અને અહંકાર સાથે સાથે નભી

શકે નહિ. જેમ શિલા પર કમલ ઊગી શકતું નથી, તેમ જ્યાં અહંકારનું અસ્તિત્વ છે, ત્યાં સેવાભાવના પ્રગટ થઈ શકતી નથી. જેઓ સેવાની અભિલાષા સેવી રહ્યા છે, તેમણે અહંકારને સર્વપ્રથમ હોમી દેવો પડશે. જેણે અહંકારનો ત્યાગ કર્યો છે, એજ સેવાનો અધિકારી બની શકે છે. નમ્રતા વિના સેવા કદીપણ સંભવી શકે નહિ. જે વ્યક્તિ પોતાને મહાન માને છે, જેને માનની ભૂખ છે, જે વાહવાહની આશા રાખે છે, તે સેવાને માટે અપાત્ર છે.

ભાઇઓ! અહંકાર આત્માની ઉન્નતિને રોકનાર અને પતન તરફ લઇ જનાર એક ભયંકર દુર્ગુણ છે. તમે જરા વિચાર તો કરો કે તમે અભિમાન શાના પર કરો છો? તમને કદાચ તમારા ધનનું અભિમાન હોય તો યાદ રાખો કે એ ધન અને અભિમાન બન્ને જુઠાં છે. આ ધન તો આખરે તમને દગો દઇને ચાલ્યું જવાનું છે. સિકંદર બાદશાહ પણ જ્યારે દુનિયામાથી વિદાય થયો ત્યારે એના બન્ને હાથ ખાલી હતા. રાવણ પણ સર્વ સિદ્ધિઓને વર્યો હતો. કોઇ વાતની ખામી એને ન હતી. ધન, વૈભવ, બળ, પરિવાર, વિદ્યા, વગેરે સર્વ સાધનોથી સંપન્ન રાવણનું અભિમાન પણ વ્યર્થ નીવડયું તો તમે શા હિસાબમાં? માટે અભિમાનના ભૂતનો ત્યાગ કરી સેવા કરવાની પાત્રતા પ્રાપ્ત કરો.

ત્રણ ખંડના અધિપતિ શ્રી કૃષ્ણમહારાજ પાસેથી સેવાનો પાઠ શીખો. શ્રી કૃષ્ણમહારાજ પોતાની ચતુરંગિણી સેના સજાવીને ભગવાન નેમિનાથના દર્શન માટે જઈ રહ્યા હતા. રસ્તામાં એમણે ઇંટોનો એક મોટો ઢગલો જોયો. અને એક અત્યંત

જર્જરિત શરીરવાળો વૃદ્ધ માણુસ જોયો. આ વૃદ્ધ એક એક ઈંટ ઉપાડીને એક બાજુએ રાખી રહ્યો હતો. આ દૃશ્ય જોઇને કૃષ્ણુમહારાજના મનમા વિચાર આવ્યો કે આ બિચારો બુઢ્ઢો માણુસ એક એક ઇંટ કરીને ક્યારે આ મોટો ઢગલો અહીંથી હઠાવી શકશે ? એમને દયા આવી, પોતાનો હાથી ઊભો રખાવ્યો અને પોતે નીચે ઉતર્યા અને પછી એમણે પોતે જ એક ઈંટ ઉઠાવીને પેલા બુઢ્ઢાના મકાનમા રાખી દીધી. શ્રી કૃષ્ણુને ઈંટ ઉઠાવતા જોઇને આખી સેનાએ પણુ ઈંટો ઉઠાવી અને જ્યાં મૂકવાની હતી ત્યા મૂકી દીધી. આમ વાતની વાતમા આખોયે ઢગલો ઉપડી ગયો

વિચાર કરો શ્રી કૃષ્ણુમહારાજ ત્રણુ ખંડના અધિપતિ હોવા છતા ઈંટ ઉઠાવીને એક બાજુએ રાખતા ન શરમાયા. એમને એ મિથ્યાભિમાન ન આવ્યું કે હું ત્રણુ ખંડનો સ્વામી દ્વારિકાધીશ મારે હાથે ઇંટ કંઈ રીતે ઉઠાવું ? શું તમારી ઋદ્ધિ કૃષ્ણુમહારાજના કરતા વધારે છે, જેથી તમને અભિમાન છોડતું નથી ? મહાપુરુષોની મહત્તા એટલા માટે છે કે તેઓ નિરભિમાની રહીને નાનામા નાનું કામ કરવા માટે તૈયાર રહે છે. કૃષ્ણુમહારાજે ઈંટ ઉઠાવી એ દૃષ્ટાંત પરથી તમે એવી શિખામણુ લો કે સેવાનું કોઈ પણુ કામ તુચ્છ નથી. કૃષ્ણુમહારાજ પણુ જો સેવા માટે તત્પર રહે તો તમારે પણુ સેવા માટે સદાયે ધ્યાન રાખવુ જોઇએ.

ભાઇઓ ! હું તમને પૂછું છું કે પેલા બુઢ્ઢાની ઈંટો ઉઠાવવાની કૃષ્ણુમહારાજને શી પડી હતી ! કૃષ્ણુમહારાજની જગાએ તમે હોત તો તમારું ધ્યાન એ બુઢ્ઢા તરફ જાત ખરું ?

"ના."

મહાપુરુષો અને સાધારણ પુરુષોમાં એજ અંતર છે. મહાપુરુષો હંમેશાં એ વાતનું ધ્યાન રાખતા જ હોય છે કે તેઓ અન્યનાં દુઃખો દૂર કરવામા સહાયક બને, બીજાની વ્યથા મટાડવાને માટે તેઓ હંમેશા ઉદ્યત રહે છે. મહાપુરુષ બીજાનાં હિતનો વિચાર કરે છે, જ્યારે સાધારણ મનુષ્ય પોતાના સિવાય અન્ય કોઈની તરફ ધ્યાન આપતો નથી. સજ્જનો! મહાપુરુષોની વાતોને સાભળીને એમના જેવા થવાની કોશીશ કરવામાં આવે તો જ સાંભળ્યું સાર્થક કહેવાય. કૃષ્ણ મહારાજ પાસેથી નિરભિમાનતાનો પાઠ શીખો અને સેવાધર્મનો સ્વીકાર કરવાને પાત્ર બનો.

સહિષ્ણુતા

આદર્શ સેવકમા સહિષ્ણુતાના ગુણની પ્રથમ આવશ્યકતા છે. સેવાનો માર્ગ ફૂલોની શય્યા નથી, પરંતુ કંટકાકીર્ણ છે. એ માર્ગ પર ચાલવું એટલે તલવારની ધાર પર ચાલવું. એના પર ચાલનારા પથિકને અનેક પ્રકારનાં કષ્ટોનો સામનો કરવો પડે છે. જે સેવક કષ્ટોથી હારી જાય છે, તે કદાપિ સેવાના ઉદ્દેશ્યમાં સફળ નથી થઈ શકતો. એનાથી ઉલટું જે વ્યકિત કષ્ટો અને વિઘ્નોને પોતાની યોગ્યતાની કસોટી સમજીને એમનાથી વિચલિત નથી થતી, તે શુદ્ધ સુવર્ણ સમાન બહાર આવી અધિક દેદીપ્યમાન થાય છે અને પોતાના ઉદ્દેશ્યમા પૂરી સફળતા પ્રાપ્ત કરે છે. સેવકનું જીવનફૂલ કષ્ટરૂપી કાંટાઓની વચ્ચે જ ખીલે છે. એથી એણે કષ્ટસહિષ્ણુ બનવું જોઇએ. સેવક જેટલો કષ્ટસહિષ્ણુ એટલો જ એ વધુ ગૌરવશાળી બને છે.

જિતને કષ્ટ કંટકો હી જિસકા જીવન કુસુમ ખિલા ।
ગૌરવ ગન્ધ ઉસે ઉતનાહી અત્ર તત્ર સર્વત્ર મિલા ॥

નિ:સ્વાર્થ સેવકને સેવાની એવી તમન્ના હોય છે કે એ સેવામાર્ગમાં આવનારા સર્વ કષ્ટોને ખૂબ પ્રસન્નતાથી સહન કરી લે છે. એ આ કષ્ટોનું સ્વાગત કરે છે, અને સમજે છે કે આ યાતનાઓ મને વધુ સાવધાન કરવા માટે ઉપસ્થિત થયેલી છે. આ દુ:ખો મને સહનશીલતાના પાઠ શિખવવા માટે આવ્યા છે; તેઓ મને અધિક શકિત આપવા માટે આવ્યા છે; એવું સમજીને એ આ યાતનાઓનું હસતે મુખે સ્વાગત કરે છે. દેશસેવકોને કેટલા કષ્ટો સહન કરવાં પડે છે એ તો તમે આ રાષ્ટ્રિય આન્દોલન ઉપરથી જ ખ્યાલ કરી શકશો. દેશના હજારો લાડીલાં બાળકો પોતાની જન્મભૂમિની આઝાદીની વેદી પર બલિ થયાં. હજારો યુવકોએ હસતે મુખે ફાંસીના માચડાઓ અપનાવ્યા. હજારોએ છાતીઓ પર ગોળીઓ ઝીલી. હજારો લાઠીઓ અને ઘોડેસ્વારોદ્વારા ઘાયલ થયા અને લાખો જેલના સળિયાઓ પાછળ ધકેલાયા. ભલે તોપો ગર્જના કરતી હોય, ભલે લાઠીઓની ઝડી વરસતી હોય, અને ભલે ગમે તેવું દમન ચક્ર ચાલતું હોય, તો પણ સાચો સેવક એની પરવા ન જ કરે. એ અહીંતહીં ન ભટકતા સીધો પોતાના લક્ષ્ય તરફ જ આગળ વધે છે. લક્ષ્યની તરફ આગળ ધસવામા જે સંકટો આવે છે તેને એ દૃઢતાથી સહી લે છે. તાત્પર્ય એ છે કે સેવકમા સહિષ્ણુતાની અત્યંત આવશ્યકતા છે. કષ્ટ પડયે જે વ્યકિત ક્રોધ કરે છે, અથવા કાયરતા વ્યકત કરે છે એ વ્યકિત સેવાની સાચી પૂજા નહિ કરી શકે. માટે ભાઇઓ !

તમે પણ સેવાને યોગ્ય બનવા માટે હૃદયમા સહિષ્ણુતાનો વિકાસ કરો.

લોકૈષણાનો ત્યાગ

સાચો સેવક સંસારની નિંદા કે પ્રશંસાની પરવા કરતો નથી. એ સમજે છે કે નિંદાસ્તુતિ કરવી એ તો જગતનો સ્વભાવ છે. દુનિયાની નિંદા-સ્તુતિથી એ પોતાના માર્ગ પરથી વિચલિત થતો નથી. લગભગ દરેક મહાપુરુષનું જીવનચરિત્ર જોતા જણાશે કે એમના પ્રારંભિક કાર્યકાળમા દુનિયા તરફથી એમને ગાળો અને નિંદાનીજ ભેટ મળી હશે. ભગવાન મહાવીરને પણ ઇન્દ્રજાળિયો કહેનારા લોકો હતા. તાત્પર્ય એ છે કે સેવકને દુનિયાની ગાળો સાભળવી પડે છે. સાચો સેવક ગાળોને સાભળીને પોતાના મનમાં કોઈ પ્રકારનો ક્રોધ કે દ્વેષ રાખતો નથી. દુનિયાની ગાળો કે નિંદાનો કોઈ પ્રભાવ એના પર પડતો નથી.

કોઇ માણુસ પોતાના હાથમાં ટોપલી અને કોદાળી લઇને કહે કે હું તમામ પૃથ્વીને ખોદીને ફેંકી દઉં; બીજો કોઈ કહે કે લાખનો રંગ, હળદરનો રંગ અને મજીઠનો રંગ લઇને હું આકાશને રંગી નાખું; વળી ત્રીજો કોઈ કહે કે ઘાસનો પૂળો સળગાવીને હું ગંગાનદીને ભસ્મ કરી દઉં. પણ જેમ આ ત્રણુમાંથી કોઇની જરાસરખી પણ અસર પૃથ્વી, આકાશ કે ગંગાનદી પર નથી થતી, એવી જ રીતે ગાળો અને નિંદાની કોઈ પ્રકારની માઠી અસર સાચા સેવક પર નથી થતી.

સાચો સેવક જેવી રીતે દુનિયાની નિંદાથી નથી ડરતો,

એવી રીતે દુનિયાની પ્રશંસાથી ફૂલાઈ પણ જતો નથી. દુનિયા જો એની પ્રશંસાના મેરુ ઉભા કરે તો એ પોતે હર્ષથી પાગલ નથી બની જતો. જગતમાં થતી એની તારીફથી એ પોતાને કૃતકૃત્ય નથી માનતો કારણ કે જગતની તારીફ કે નિંદા કોઇ કાર્યના સારા નરસાની કસોટી નથી. અનેક વાર એવું જોવામાં આવે છે કે દુનિયા મહાપુરુષોની નિંદા કરતી હોય છે, અને પાખંડીઓની પૂજા કરતી હોય છે, માટે સાચો સેવક દુનિયાની નિંદા–સ્તુતિ પ્રત્યે નિરપેક્ષ રહીને એકાંત કર્તવ્ય ભાવનાથી જ સેવા બજાવતો રહે છે.

જેવી રીતે નિંદાસ્તુતિની પરવા કર્યા વિના હવા નિરંતર વહતી જ રહે છે, સૂર્ય દિવસ દરમિયાન બરાબર તપતો રહે છે, ચન્દ્રમા પોતાના કિરણોનું દાન કરતો રહે છે, એવી જ રીતે સાચો સેવક પણ નિષ્કામ ભાવથી પોતાનો ધર્મ અને કર્તવ્ય કરતો રહે છે પ્રકૃતિ પોતાનું કામ કરે છે. એ બદલામા પ્રત્યુપકારની આશા રાખતી નથી. એવી જ રીતે સેવક કોઇ પ્રકારની આશાની ઈચ્છા વિના કર્તવ્ય કરતો રહેશે. એનું તો એ જ ધ્યેય છે કે—

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ।

અર્થાત્–દુઃખથી પીડાતાં પ્રાણીઓની પીડા દૂર કરવી એ જ એકમાત્ર અભિલાષા છે.

ધન, દોલત, રાજ્ય, પ્રશંસા, પ્રસિદ્ધિ, કીર્તિ અને સ્વર્ગની ઈચ્છા પણ સેવક કરતો નથી. એ તો માત્ર પીડિતોનું દુઃખ જ દૂર કરવા માગતો હોય છે. એ કાર્યમાં એ એવો

તલ્લીન થઇ જાય છે કે એને એ સિવાય બીજું કશું દેખાતું નથી. આખી દુનિયાનો સાર એને એમાં જ દેખાય છે. એ આવા કાર્યમાં જ પરમાત્માનું દર્શન કરે છે, અને અંતે સ્વયં પરમાત્મરૂપ બની જાય છે.

ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં સેવાનું મહત્ત્વ બતાવતાં કહેવામા આવ્યું છે કે

વેયાવચ્ચેણ ભંત્તે ! કિં જણયઇ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયર-નામં બન્ધઇ !

પ્રશ્ન–હે હે ભગવન્ ! વૈયાવૃત્ય(સેવા)થી જીવને શો લાભ થાય છે ?

ઉત્તર–હે ગોતમ ! વૈયાવૃત્યથી જીવ તીર્થંકરનામકર્મનુ બંધન કરે છે.

નિષ્કામ કર્મ કરનાર તીર્થંકર બની જાય છે. અહાહા ! સેત્રા ધર્મનો કેટલો અગાધ મહિમા છે ! સેવક ખરેખર જ દેવાધિદેવ બની જાય છે.

બંધુઓ ! તીર્થંકર દેવે સેવાનું કેટલું ભારે મહત્ત્વ બતાવ્યું છે ? સેવાના મહત્ત્વને સમજીને તમે એ માર્ગના પથિક બનો. તમે જ્ઞાતિની, સમાજની, ધર્મની અને દેશની સેવા કરવાનું શીખો. આ સેવા જ તમારું કલ્યાણ કરશે. તમે સૌ સેવામય, જીવન જીવતા કૃતકૃત્ય બનો એવી જ ભાવના !

૭. સ્યાદ્વાદ

જૈન ધર્મનો સ્યાદ્વાદ વિશ્વના સમસ્ત ધર્મો, સંપ્રદાયો, મતો અને દર્શનોનો સમન્વય કરી દે છે. એ વિશ્વને એવો ઉપદેશ આપે છે કે જગતના સર્વ ધર્મો અને દર્શનો કોઇ ને કોઇ રીતે સત્યના જ અંશ છે, પરંતુ જ્યારે એક અંશ બીજા અંશ સાથે ન મળતાં એનો તિરસ્કાર કરે છે, ત્યારે એ વિકૃત બને છે અને સત્ય મટી જઈ સત્યાભાસ બની રહે છે.

: ૭ :

પ્રિય આત્મબંધુઓ,

જૈન ધર્મે વિશ્વને સ્યાદ્વાદની અણમોલ ભેટ અર્પણ કરી છે. સ્યાદ્વાદના સુસંગત સિદ્ધાંતદ્વારા વિવિધતામા એકતા અને એકતામાં વિવિધતાનું દર્શન કરાવી જૈન ધર્મે વિશ્વની મહાન સેવા કરી છે. સ્યાદ્વાદ જૈન ધર્મનો મૌલિક સિદ્ધાત છે અને પોતાના આ વૈજ્ઞાનિક સત્ય સિદ્ધાતને કારણે જૈન ધર્મ વિશ્વ-ધર્મ હોવાની સાથે વૈજ્ઞાનિક ધર્મ પણ છે.

આધુનિક વિજ્ઞાને એ સિદ્ધ કરી આપ્યું છે કે પદાર્થમા એવા ગુણો રહેલા છે કે માનવ જગતને એનું પૂરું જ્ઞાન નથી. જે રૂપમા પદાર્થને આપણે જોઇએ છીએ એ એનું પૂરું સ્વરૂપ નથી હોતું, પરંતુ એનામા અનેક ગુણ અને શક્તિઓ વિદ્યમાન હોય છે. વિજ્ઞાનનું કાર્યક્ષેત્ર એ ગુણશક્તિઓનું સંશોધન કરવાનું છે. વર્તમાન મહાયુદ્ધમા ભયંકર ક્રાન્તિ કરનાર અણુબોમ્બ એનું ઉદાહરણ છે. દુનિયામાં પદાર્થ તો એટલા ને એટલા જ છે, પરંતુ વિજ્ઞાનના અન્વેષણ કે આવિ-ષ્કારને કારણે એ પદાર્થોની અંદર રહેલા અનેક ગુણોનું જ્ઞાન વિશ્વને થાય છે. મહાયુદ્ધની પૂર્ણાહૂતિ પહેલા અણુબોમ્બ એક અજ્ઞાત વસ્તુ હતી. આજે એ પ્રગટ થયેલ છે. એનાથી એ સિદ્ધ થાય છે કે વસ્તુ માત્રમાં અનેક ધર્મ રહેલા છે. આપણી સામે

વસ્તુનું જે સ્વરૂપ દેખાય છે તે એનું પૂર્ણ સ્વરૂપ નથી; એ દેખાતા સ્વરૂપ સિવાય પણ એમાં ઘણા ધર્મ જોવા મળે છે. વિજ્ઞાનનો આ સિદ્ધાંત અને જૈનદર્શનનો સ્યાદ્વાદ સિદ્ધાત એક જ વૈજ્ઞાનિક સિદ્ધાત છે.

સ્યાદ્વાદનું સ્વરૂપ

સ્યાદ્વાદની આધારશિલા પર ઊભો રહીને જૈન ધર્મ કહે છે કે વિશ્વની પ્રત્યેક વસ્તુ અનન્ત ધર્માત્મક છે. નાનામાં નાની અને મોટામા મોટી વસ્તુ–નાના દીવાથી માડીને આકાશ સુધીની પ્રત્યેક વસ્તુમા અનન્ત ધર્મો રહેલા છે. વસ્તુના ધર્મોનું વિભિન્ન દૃષ્ટિકોણથી જ્યા સુધી અવલોકન ન કરવામા આવે ત્યાં સુધી વસ્તુનું સત્ય સ્વરૂપ નથી સમજી શકાતું. વિભિન્ન દૃષ્ટિકોણથી વસ્તુનુ અવલોકન કરવું એનું જ નામ સ્યાદ્વાદ. તાત્પર્ય એ છે કે એક જ પદાર્થમા ભિન્ન ભિન્ન વાસ્તવિક ધર્મોનો સાપેક્ષ સ્વીકાર કરવો એ સ્યાદ્વાદ અથવા અનેકાન્તવાદ કહેવાય છે. જેવી રીતે એક જ પુરુષને ભિન્ન ભિન્ન સંબંધી જનોની અપેક્ષાથી પિતા, પુત્ર, ભાઈ, વગેરે સજ્ઞાઓથી સંબોધન કરવામા આવે છે, એવી જ રીતે અપેક્ષાભેદથી એક જ વસ્તુમાં અનેક ધર્મોની સત્તા પ્રમાણિત થાય છે. આ અપેક્ષા ભેદની ઉપેક્ષા અથવા અવહેલના કરવાથી વસ્તુનું સંપૂર્ણ સ્વરૂપ અપૂર્ણ જ રહી જાય છે.

વસ્તુના કોઇ એક ધર્મને લઇને એનું નિરૂપણ કરવામા આવે અને એને સર્વાંશે સત્ય સમજવામા આવે તો એ વિચાર ભ્રાન્ત જ ઠરવાનો. દાખલા તરીકે કોઈ એક પુરુષ–વ્યક્તિને લો. એને કોઈ પિતા, કોઈ પુત્ર, કોઈ કાકા, કોઇ મામા,

અને કોઇ ભાઇ કહીને બોલાવે છે. એક જ પુરુષની આટલી ભિન્ન ભિન્ન સંજ્ઞાઓથી એ પ્રતીત થાય છે કે એમા પિતૃત્વ, પુત્રત્વ, પિતૃવ્યત્વ, માતુલત્વ અને ભ્રાતૃત્વ, વગેરે અનેક ધર્મોની સત્તા મોજૂદ છે. હવે જો એમા રહેલ પિતૃધર્મ પ્રત્યે જ દૃષ્ટિ કરવામા આવે અને એને સર્વથા પિતા જ માની લેવામાં આવે તો બહુ મોટો અનર્થ થઈ જાય. એમ તો તે કોઈનો પિતા સિદ્ધ થશે, પરંતુ વાસ્તવમા એવું નથી. એ તો પિતા પણ છે અને પુત્ર પણ છે. પોતાના પુત્રની અપેક્ષાથી એ પિતા છે, અને પોતાના પિતાની અપેક્ષાથી એ પુત્ર છે. આવી રીતે ભિન્ન ભિન્ન અપેક્ષાઓથી આ બધી સંજ્ઞાઓનો એમા નિર્દેશ કરી શકાય છે. જેવી રીતે એક જ વ્યકિતમા પિતૃત્વ, પુત્રત્વ, વગેરે વિરોધી ધર્મોની પ્રાપ્તિ થાય છે એ અનુભવસિદ્ધ વાત છે, એવી જ રીતે હરેક પદાર્થમા અપેક્ષાભેદથી અનેક વિરોધી ધર્મોની સત્તા પ્રમાણુસિદ્ધ છે

અનન્ત આત્મિક વસ્તુનું સ્વરૂપ એક વખતે એક જ શબ્દદ્વારા સંપૂર્ણ રીતે નથી કહી શકાતું. એવી જ રીતે વસ્તુમાં રહેલા અનન્ત ધર્મોમાથી કોઇ પણ ધર્મની ઉપેક્ષા પણ નથી કરી શકાતી; એથી માત્ર એક જ દૃષ્ટિબિંદુથી પદાર્થનું અવલોકન ન કરતા ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિ વડે જ એનું પર્યાલોચન કરવું એજ ન્યાયસંગત અને વસ્તુસ્વરૂપને અનુરૂપ છે. સ્યાદ્વાદનું એજ તાત્પર્ય છે.

એકાન્તવાદ વિવાદોનું કારણ છે

સ્યાદ્વાદના આ અનુપમ તત્ત્વની સમજને અભાવે જ વિશ્વમા વિવિધ ધર્મો, દર્શનો, મતો, પંથો અને સમ્પ્રદાયોમાં

વિવાદ ઊભા થાય છે. એક ધર્મનો અનુયાયી અન્ય ધર્મને અસત્ય–મિથ્યા બતાવે છે. એ પોતાના માનેલા ધર્મ કે મતને જ સંપૂર્ણ સત્ય માનીને અન્ય ધર્મોનો નિષેધ કરે છે. સંસારમા ધર્મના નામ પર આવી રીતે જ વિવાદો ઉપસ્થિત થાય છે. અને એનું કારણ માત્ર એકાન્તવાદજ છે. એકાન્તવાદ વાસ્તવિકતાથી ખૂબ દૂર છે વળી અપૂર્ણ પણ છે. એટલું જ નહિ, એ અપૂર્ણતામા પૂર્ણતાનું મિથ્યા આરોપણ કરે છે. આ વાતને સરળતાથી હૃદયંગમ કરાવવા માટે એક દૃષ્ટાંત ઉપયોગી થઈ પડશે.

કેટલાક જન્માધોએ હાથીનું નામ સાભળ્યું. આ હાથી કેવો હોય એ વાતનું એમને જ્ઞાન ન હતું. કોઇએ એમની સામે એક હાથીને ઊભો કરી દીધો. આ આધળાઓ હાથીના અલગ અલગ અવયવોને સ્પર્શવા લાગ્યા કોઇ હાથીના પગને હાથ લગાડે છે, તો કોઇ સૂંઢ પકડે છે. કોઇ કાન પકડે છે તો કોઇ પેટ પંપાળે છે, અથવા તો પૂંછડું પકડે છે આમ પોતપોતાના હાથમા આવેલ હાથીના અવયવોને જ તેઓ હાથી સમજવા લાગ્યા. જેણે હાથીના પગ પકડયા એ કહેવા લાગ્યો કે હાથી થાભલા જેવો હોય છે. જેણે સૂંઢ પકડી હતી, તે કહેવા લાગ્યો કે હાથી સાબેલા જેવો છે. જેણે કાનને સ્પર્શ કર્યો હતો તે કહેવા લાગ્યો કે હાથી સુપડા જેવો હોય છે. પેટ પર જેણે હાથ ફેરવ્યો હતો તે બોલી ઊઠયો કે હાથી તો કોઠી જેવો હોય છે. એવી જ રીતે જેણે પૂંછડું પકડયું હતું તેણે કહ્યું કે હાથી દોરડા જેવો હોય છે

આમ એ સૌ આંધળા પોતપોતાની વાતને સંપૂર્ણ સત્ય માની અંદર અંદર વિવાદ કરવા માંડયા. આવી સ્થિતિ એકાન્તવાદી દર્શનો, ધર્મો અને મતોની છે.

આ જન્માધોનું કથન એક એક અંશમાં સત્ય અવશ્ય છે, પરંતુ જ્યારે તેઓ પોતાની જ ધૂનમા એક બીજાની વાતને પાછી પાડવાનો પ્રયાસ કરે છે, ત્યારે એ સૌનું કથન અસત્ય બની જાય છે. હાથીને સારી રીતે જાણુનાર દેખતો માનવી જાણે છે કે આ અંધોએ એક એક અંશને જ ગ્રહણ કર્યો છે, અને શેષ અંશની ઉપેક્ષા કરી છે. પણ જો આ લોકો પોતાની વાતને બરાબર માનીને અન્યની વાતને પણ સાચી સમજે તો એમને હાથીની સર્વાંગસંપૂર્ણ આકૃતિનું જ્ઞાન થઈ શકે છે, પરંતુ અજ્ઞાન અને હઠાગ્રહને કારણે તેઓ એક બીજાને મિથ્યા કહી સ્વયં અસત્યના ભાજન બની રહેલ છે. બસ, આવું જ વિશ્વના પ્રચલિત ધર્મોના વિષયમાં પણ સમજવું. સત્ય સર્વત્ર એક છે, અખંડ છે અને વ્યાપક છે. એના સંબંધમા કોઈ પ્રકારના વિવાદને અવકાશ નથી, તો પણ ધર્મને નામે વિવિધ માન્યતાઓ પ્રચલિત બની છે અને વિશ્વમા ધાર્મિક વિવાદોનો એક ખૂબ મોટો પ્રશ્ન ઉપસ્થિત થયો છે. આ ધાર્મિક વિવાદનું કારણ કેવળ અજ્ઞાન અને હઠાગ્રહ જ છે.

સંસારના ભિન્ન ભિન્ન સંપ્રદાયો સંપૂર્ણ સત્યની પ્રાપ્તિ માટે પ્રયાસ કરે છે, પરંતુ જ્ઞાનની અપૂર્ણતાને લીધે તેઓ વસ્તુના એક અંશને જ મેળવી શકે છે. સત્યના એક જ અંશને સંપૂર્ણ સત્ય માની લેવાથી ઝઘડાઓ થાય છે. જૂદા જૂદા ધર્મના અનુયાયીઓ પોતપોતાની ધૂનમા મસ્ત બની

અન્યને જૂઠ્ઠા ગણાવે છે, અને તેથી તેઓ પોતે જ જૂઠ્ઠા ઠરે છે. સર્વ એકત્રિત થઈ પક્ષપાત છોડી દઇ ન્યાયબુદ્ધિથી ધર્મનો નિર્ણય કરે તો ધર્મનું સત્ય સ્વરૂપ પ્રાપ્ત કરી શકાય.

જૈન દર્શનનો સ્યાદ્વાદ વિશ્વના સર્વ ધર્મો, સંપ્રદાયો, મતો અને દર્શનોનો સમન્વય કરી દે છે. વિશ્વને એ શિખવે છે કે જગતના સર્વ ધર્મો અને દર્શનો કોઇ ને કોઈ અપેક્ષાથી સત્યના જ અંશ છે. પણ જ્યારે એક અંશ અન્ય સાથે ન મળતા એનો તિરસ્કાર કરે છે ત્યારે એ વિકૃત બને છે, અને સત્ય મટી જઇ સત્યાભાસ બની રહે છે. આવી સ્થિતિ ઉપસ્થિત થતા, જે ધર્મની માન્યતા એને માટે અત્યાર સુધી એક નાવરૂપ હતી, તે હવે પત્થરરૂપ બની જાય છે. આ એકાન્તવાદની સ્થિતિ સંસારના મહાસાગરમા ડૂબાડનારી થઈ રહે છે, પરંતુ જે મત, પંથ કે દર્શન અન્ય સત્યાશોને પચાવવાની ક્ષમતા રાખે છે, એ ઉદાર અને સગઠિત બની પૂર્ણ સત્યના માર્ગ પર પ્રગતિ કરે છે

સ્યાદ્વાદ શિખવે છે કે તમે ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિકોણથી વસ્તુને જુઓ. તમે તમારા પોતાના દૃષ્ટિકોણને સત્ય સમજો, અને જે દૃષ્ટિકોણ તમારું વિરોધી જણાય એની સત્યતાને પણ સમજવાની કોશીશ કરો. એને મિથ્યા કહી એનો અસ્વીકાર કરશો તો તમે પોતે જ મિથ્યાવાદી બની જશો. સંપૂર્ણ વસ્તુ તત્ત્વનુ અવલોકન કરવા માટે સાપેક્ષ દૃષ્ટિ હોવી જોઇએ. સાપેક્ષ દૃષ્ટિનું તાત્પર્ય એ છે કે જે વસ્તુ એક દૃષ્ટિકોણથી અમુક સ્વરૂપમા પ્રતીત થઈ હોય એને પૂર્ણ ન માનતા બીજા

દૃષ્ટિકોણુથી પણુ એને જોવા માટે અવકાશ રહેવો જોઇએ. આ સાપેક્ષવાદને પારિભાષિક શબ્દોમાં 'નયવાદ' કહે છે.

નયવિચાર

અનંતધર્માત્મક વસ્તુના કોઈ એક ધર્મને લઈ જે યથાર્થ અભિપ્રાય ધરાય છે એને નય કહે છે. એક વસ્તુ માટે ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિબિંદુઓ વડે ઉદ્ભવતા ભિન્ન ભિન્ન અભિપ્રાયોને નય કહેવામાં આવે છે. અનંતધર્માત્મક વસ્તુના સંબંધમાં અનંત પ્રકારના અભિપ્રાય અને વિચાર હોઈ શકે છે, એથી નય પણુ અનંત છે. સન્મતિ સૂત્રમાં સુપ્રસિદ્ધ તાર્કિક આચાર્યવર સિદ્ધસેન દિવાકરે કહ્યું છે કે—

જાવઇયા વયણપહા તાવઇયા ચેવ હુંતિ નયવાયા।

અર્થાત્-જેટલા વચન પ્રકાર છે, એટલા જ નયવાદ છે.

નયના સંબંધમા હંમેશાં એ યાદ રાખવાનું છે કે બધા નય પોતપોતાની મર્યાદામા જ સત્ય છે, જયારે તેઓ પોતાની મર્યાદાની બહાર જઇ એક બીજાના વિરોધી બની જાય છે, ત્યારે તેઓ અસત્ય અને અમાન્ય ઠરે છે. જે નય પોતાના વિષય પરત્વે ચૂસ્ત રહીને પણુ અન્યનો નિષેધ નથી કરતો એ સાચા અર્થમાં નય કહેવાય છે, પરંતુ જે નય અન્ય નયનો નિષેધક બની પ્રવૃત્તિ કરે છે, એને દુર્નય અથવા નયાભાસ કહે છે. કહ્યુ છે કે—

અર્થસ્યાનેકરૂપસ્ય, ધીઃ પ્રમાણં તદંશધી.।
નયો ધર્માન્તરાપેક્ષી, દુર્નયસ્તન્નિરાકૃતિઃ॥

અર્થાત્-આ પ્રમાણુ વસ્તુના અનેક રૂપોને ગ્રહણુ કરે છે.

નય વસ્તુના એક અંશને વિષય બનાવે છે, અન્ય ધર્મોની એ અપેક્ષા રાખે છે. જે અન્ય ધર્મોની ગણના કરતો નથી તે દુર્નય છે. નયવાદ સાપેક્ષ [આંશિક] સત્ય છે આ વસ્તુને સારી રીતે સમજવા માટે આ દૃષ્ટાંત ઉપયોગી બનશે. વિશાળ સમુદ્રના જળરાશિમાથી એક ઘડો ભરીને પાણી લો. આ ઘડાના પાણીને ન તો સમુદ્ર કહી શકાય કે ન તો અસમુદ્ર કહેવાય. જો આ ઘડાના પાણીને જ સમુદ્ર કહી દેવામા આવે તો સમુદ્રનું બાકીનું પાણી અસમુદ્ર બની જાય અથવા અનેક સમુદ્ર છે એમ માનવું પડે. આ બન્ને વસ્તુ પ્રત્યક્ષ બાધિત છે એથી સમુદ્રના ઘડાભર પાણીને આપણે સમુદ્ર નહિ કહી શકીએ. એવી જ રીતે એને અસમુદ્ર પણ નહિ કહી શકાય, કારણ કે એ પાણી સમુદ્રનું જ છે જો સમુદ્રના એક ઘડા પાણીમા સમુદ્રતા અલ્પાશે પણ નથી હોતી, તો બધા જ પાણીમા એ ન હોઇ શકે કારણ કે જે ધર્મ અંશમાં નથી, એ સમુદાયમા પણ ન હોઇ શકે સમુદ્રના એક ઘડાભર પાણીમા સમુદ્રતા છે જ. જો એમ ન હોય તો એને સમુદ્રનું પાણી ન કહી શકાય, એટલે આમાથી તાત્પર્ય એ નીકળે છે કે સમુદ્રનું એક ઘડાભર પાણી ન તો સમુદ્ર છે, ન તો અસમુદ્ર છે પરંતુ સમુદ્રનો અંશ છે. આવી જ રીતે જે વસ્તુને નયદ્વારા ગ્રહણ કરેલી છે, એ ન તો પૂર્ણ વસ્તુ છે, ન તો અવસ્તુ છે, પરંતુ વસ્તુનો અંશ છે. કહ્યુ છે કે —

नासमुद्रः समुद्रो वा समुद्रांशो यथैव हि ।
नायं वस्तु न चावस्तु वस्त्वंशो कथ्यते बुधैः ॥

અર્થાત્–સમુદ્રના ઘડાભર પાણીને જેમ સમુદ્ર કે અસમુદ્ર-

એ બેમાંથી કંઈ પણ કહી શકાતું નથી, પરંતુ સમુદ્રનો અંશ કહેવાય છે, તેમ નયદ્વારા ગૃહિત વસ્તુ પૂર્ણ વસ્તુ કે અવસ્તુ એ બેમાંથી કંઇ નથી, પરંતુ એ વસ્તુનો અંશમાત્ર છે.

નય વસ્તુના એક જ અંશને ગ્રહણ કરે છે એથી એ આંશિક કે આપેક્ષિક સત્ય છે એ સારી રીતે સિદ્ધ થઈ ચૂકયું છે. આપેક્ષિક સત્યને જ પૂર્ણ સત્ય માની જે વસ્તુના અન્ય અંશોનો અપલાપ કરે છે તે નયાભાસ બની જાય છે. વાદિદેવ-સૂરિએ કહ્યું છે કે·—

स्वाभिप्रेतादंशादितरांशापलापी नयाभासः ॥

અર્થાત્–જે નય પોતાની ગૃહિત વસ્તુના અંશને જ સત્ય માની બાકીના અંશનો નિષેધ કરે છે એ નયાભાસ છે.

વિશ્વમા જેટલા એકાન્તવાદી મતો અથવા પંથો છે તે સહુ પોતે માનેલા તત્ત્વનેજ પૂર્ણ સત્ય માની શેષ મતોનો તિરસ્કાર કરે છે. એથી તેઓ નયાભાસનાં ઉદાહરણો બની અમાન્ય ઠરે છે. વિશ્વનાં સર્વ પ્રચલિત ધર્મો, દર્શનો કે પંથો સત્યના અંશ છે, પરંતુ એમના અનુયાયીઓ એ અંશને જ સંપૂર્ણ માની લે છે એટલે એ સત્યાશ પણ અસત્ય બની જાય છે. દાખલા તરીકે બૌદ્ધ દર્શન વસ્તુના અનિત્ય ધર્મને જ માન આપી નિત્ય ધર્મનો તિરસ્કાર કરે છે. અને કપિલ દર્શન (સાખ્ય) વસ્તુના નિત્ય ધર્મનો જ સ્વીકાર કરી અનિત્યતાનો અપલાપ કરે છે. બન્ને દર્શનો પોતપોતાના પક્ષના આગ્રહી છે, અને એક બીજાને મિથ્યા કહે છે પરંતુ વાસ્તવિક દૃષ્ટિથી તો એ બન્ને જ અપૂર્ણ છે. વસ્તુમા નિત્ય અને અનિત્ય બન્ને ધર્મો

જોવામાં આવે છે માટે વસ્તુ નિત્યાનિત્ય છે. આમ કહીને જૈન દર્શનનો નયવાદ ઉપરનો બન્ને વિરોધી દૃષ્ટિકોણોનો સમન્વય કરે છે.

જૈન દર્શનનો નયવાદ દ્વૈત, અદ્વૈત, નિશ્ચય, વ્યવહાર, જ્ઞાનક્રિયા, કાળ, સ્વભાવ, નિયતિ, યદૃચ્છા, પુરુષાર્થ, વગેરે વાદોનો ખૂબ કુશળતાપૂર્વક સમન્વય કરે છે. જૈન ધર્મ ભિન્ન ભિન્ન વિચારો પાછળના ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિકોણોનું અવલોકન કરી સમન્વયના સિદ્ધાતદ્વારા પરસ્પરના મનોમાલિન્યને દૂર કરી સર્વમા એકતા સ્થાપિત કરે છે. નયવાદ વિચારદૃષ્ટિને માટે અંજનનું કાર્ય કરે છે. એથી દૃષ્ટિનું વૈષમ્ય દૂર થાય છે. નયવાદ પ્રજાની દૃષ્ટિને વિશાળ અને હૃદયને ઉદાર બનાવી મૈત્રી ભાવનો માર્ગ સરળ કરે છે. સર્વ કલહોનું શમન કરીને જીવન-વિકાસનો માર્ગ સરળ બનાવવામા નયવાદ એક પ્રધાન અને સમર્થ સાધન છે. નયવાદના નિર્મળ જળના પ્રક્ષાલનથી દૃષ્ટિ નિર્મળ બને છે. અને તેથી રાગ દ્વેષનો પ્રચાર બંધ થઇ જાય છે. આમ વ્યવહારિક તેમજ આધ્યાત્મિક એ બન્ને દૃષ્ટિથી નયવાદ એકવિધ હિતકારી સિદ્ધાંત છે. શ્રી સમન્તભદ્રાચાર્યે કહ્યું છે·

नयास्तव स्यातपदलाञ्छनाः स्युः
रसोपविद्धा इव लोहधातवः ।
भवन्तभिप्रेतफला यतस्तते
भवन्तमार्याः प्रणता हितैषिणः ॥

અર્થાત્-હે જિનેન્દ્ર ! વિવિધ રસોદ્વારા લોહ, સુવર્ણ, વગેરે ધાતુઓ જેવી રીતે યોગ્ય પૌષ્ટિકતા અને સ્વાસ્થ્યપ્રદાન

કરે છે, એવી જ રીતે "स्यात्" પદથી અંકિત આપનો નય પણ અભીષ્ટ ફળનો આપનાર છે; માટે જ હિતૈષી આર્યપુરુષ આપને નમસ્કાર કરે છે.

પ્રખર તાર્કિક શ્રી સિદ્ધસેન દિવાકરે દ્વાત્રિંશદ્દ્વાત્રિંશિકા-સ્તોત્રમા ચતુર્થ દ્વાત્રિંશિકાના પંદરમા શ્લોકમાં આવી જ રીતે સ્યાદ્વાદની સમન્વય શક્તિને પ્રદર્શિત કરતા કહ્યુ છે કે—

उदधाविव सर्वसिन्धवः समुदीर्णास्त्वयि नाथ ! दृष्टयः ।
न च तासु भवान् प्रदृश्यते प्रविभक्तासु सरित्स्विवोदधि ॥

હે નાથ ! જેમ સર્વ નદીઓ સમુદ્રમાં આવીને મળે છે, એમ વિશ્વના સમસ્ત દર્શનો આપના શાસનમા આવીને મળે છે. જેવી રીતે ભિન્ન ભિન્ન નદીઓના સ્વરૂપમાં સમુદ્ર નથી દેખાતા, એવી રીતે ભિન્ન ભિન્ન દર્શનોમા આપ દેખાતા નથી, તો પણ બધાં દર્શનો આપના શાસનમાં ઉપસ્થિત થઇ રહે છે.

સ્યાદ્વાદના સમન્વય તત્ત્વની મીમાંસા કરી લીધા પછી હવે પદાર્થ અનન્ત ધર્માત્મક કેવી રીતે છે, એ બતાવવાની આવશ્યકતા છે. એમા નિત્ય અને અનિત્ય, સત્–અસત્, સામાન્ય–વિશેષ, વાચ્ય–અવાચ્ય, વગેરે વિરુદ્ધ ધર્મો કઈ રીતે જોવામા આવે છે ?

પદાર્થોનું વ્યાપક સ્વરૂપ

વિશ્વના પદાર્થોનું સુંદર રીતે અવલોકન કરતા એ જ્ઞાન થાય છે કે પદાર્થ માત્ર ઉત્પત્તિ, વિનાશ અને સ્થિતિથી યુક્ત છે. તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્રમાં પણ ઉમાસ્વાતિએ કહ્યું છે કે—

"उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्"

અર્થાત્–પદાર્થ ઉત્પત્તિ, વિનાશ અને સ્થિતિથી યુક્ત છે; જેની ઉત્પત્તિ થાય છે, જેનો નાશ થાય છે અને જે ધ્રુવ રહે છે એ પદાર્થ છે. જે ઉત્પન્ન નથી થતો, જે નષ્ટ નથી થતો અને જે ધ્રુવ નથી રહી શકતો એ આકાશના કમલની જેમ પદાર્થ નથી. પ્રત્યેક પદાર્થમાં ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ થાય છે. આ વિષે એવી શંકા કરવામા આવે છે કે જે ઉત્પન્ન થાય છે અને વળી નષ્ટ થાય છે, એ ધ્રુવ કઇ રીતે રહી શકે ? આ શંકાનું સમાધાન એ રીતે થઈ શકે છે કે ધ્રુવતા વિના ઉત્પત્તિ અને વિનાશ હોઈ શકે નહિ અને ઉત્પત્તિ તથા વિનાશ વિના ધ્રુવતા હોઈ શકે નહિ. જ્યા આપણે ઉત્પત્તિ અને વિનાશનો અનુભવ કરીએ છીએ ત્યા એની સ્થિરતાનું અવિકલરૂપે ભાન થાય છે. એવી જ રીતે જ્યાં ધ્રુવતાનું ભાન થાય છે, ત્યા કોઈ ને કોઈ રીતે ઉત્પત્તિ અને વિનાશ પણ અવશ્ય પ્રતીત થાય છે. ઉત્પત્તિ, વિનાશ અને ધ્રૌવ્યની ત્રિપુટી એક બીજાના અભાવે રહી શકતી નથી. આ ત્રિપુટીમાથી કોઈ પણ એક સ્વતંત્રરૂપે મળી આવતું નથી. એ ત્રણે પરસ્પર સાપેક્ષ છે. આની સ્પષ્ટતા માટે એક ઉદાહરણ આપું.

એક સુવર્ણપિંડ લો. ધારો કે પ્રથમ એને ગાળીને એક કડું બનાવવામાં આવ્યુ. કડામાંથી મુગટ બનાવવામાં આવ્યો. અહીં આપણે જોઇ શકીએ છીએ કે સુવર્ણપિંડના વિનાશથી કડાની ઉત્પત્તિ થઇ, અને કડાના વિનાશમાંથી મુગટ બન્યો. પરંતુ આ ઉત્પત્તિ અને વિનાશની ઘટમાળમા મૂળ સોનાની વસ્તુની સત્તા તો એવી ને એવી જ રહી. પિંડદશાના નાશ અને કડાની ઉત્પત્તિ દશામા સુવર્ણ તો એનું એ જ રહ્યું, અને

કડાના વિનાશ અને મુગટના ઉત્પાદ કાળમાં પણ મૂળ ધાતુમાં ફેરફાર ન થયો. આથી એ સિદ્ધ થાય છે કે-વસ્તુનો જે આકાર આપણને દેખાય છે, એ એની ઉત્પત્તિ કે વિનાશની સ્થિતિનો છે. એ આકાર એક વિશેષસ્વરૂપ છે. એ મૂળ વસ્તુ નથી. લાખો પરિવર્તનો થાય તો પણ મૂળ વસ્તુ પોતાની સ્વરૂપ-સ્થિરતાથી અલગ નથી બનતી. કડું, કુંડલ, વગેરે સુવર્ણના આકારવિશેષ છે. આ આકારવિશેષોની જ ઉત્પત્તિ થાય છે, અને એમનો જ વિનાશ થતો દેખાય છે. એમનું મૂળ તત્ત્વ સુવર્ણ ઉત્પત્તિ અને વિનાશ એ બન્નેથી પર છે. આ ઉદાહરણથી એ પ્રતીત થાય છે કે ઉત્પત્તિ, વિનાશ અને સ્થિતિ એ ત્રણે ધર્મો પદાર્થમાં સ્વભાવસિદ્ધ છે. કોઇ પણ વસ્તુનો આત્યન્તિક-આખરી વિનાશ થતો નથી વસ્તુના કોઇ પણ આકૃતિવિશેષના વિનાશથી એમ ન સમજવું જોઈએ કે વસ્તુ પોતે જ સદંતર નષ્ટ થઈ ગઇ. માત્ર આકૃતિ બદલવાથી જ કોઈ વસ્તુનો સર્વથા નાશ નથી થઇ શકતો. જેવી રીતે બાળક જિનદત્ત બાલ્યાવસ્થામાથી યુવાન બને છે અને યુવાવસ્થામાંથી વૃદ્ધ બને છે એથી જિનદત્તનો નાશ થયો કહેવાય નહિ; સર્પ ફણાવસ્થાને છોડીને સરળ બની જાય છે ત્યારે એના એ આકૃતિ-પરિવર્તનથી એમ ન જ માની શકાય કે સર્પનો નાશ થયો છે. આમ આકૃતિ બદલાવવાથી કોઇ અન્ય વસ્તુને પણ નષ્ટ થયેલી કહી શકાય નહિ. અને આવી જ રીતે કોઈ પણ વસ્તુ સર્વથા નવીન જ ઉત્પન્ન નથી થતી, આથી એ સુંદર રીતે સિદ્ધ થાય છે કે જગતના સર્વ પદાર્થો ઉત્પત્તિ, વિનાશ અને સ્થિતિથી યુક્ત છે.

ઉત્પાદ અને વ્યયને "પર્યાય" અને ધ્રૌવ્યને "દ્રવ્ય" એ નામોથી ઓળખવામાં આવે છે. આ રીતે જોઇએ તો વસ્તુનું સ્વરૂપ દ્રવ્યપર્યાયાત્મક છે. દ્રવ્યસ્વરૂપ નિત્ય અને પર્યાય સ્વરૂપઅનિત્ય છે કહ્યું છે કે—

द्रव्यात्मना स्थितिरेव सर्वस्य वस्तुनः पर्यायात्मना सर्वं वस्तूत्पद्यते विपद्यते वा ॥

અર્થાત્-દ્રવ્યરૂપે સર્વ પદાર્થો નિત્ય છે અને પર્યાયની અપેક્ષાએ સર્વ પદાર્થો ઉત્પન્ન થાય છે અને નષ્ટ થાય છે, માટે તેઓ અનિત્ય છે. આમ સાપેક્ષ દૃષ્ટિથી એક જ વસ્તુમાં નિત્યાનિત્યત્વ વગેરે વિરુદ્ધ ધર્મોનો અવિરોધ સ્થાપન કરનાર સિદ્ધાંત સ્યાદ્વાદ છે.

સમર્થ વિદ્વાન્ હરિભદ્રસૂરિએ પદાર્થના ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યને જૂદી જ રીતે સિદ્ધ કર્યાં છે. એમણે લખ્યું છે કે–

घटमौलि सुवर्णार्थी, नाशोत्पाद स्थितिष्वयम् ।
शोकप्रमोदमाध्यस्थं, जनो याति सहेतुकम् ॥

કલ્પના કરો કે ત્રણ માણસો એકસાથે કોઈ સોનીની દુકાને ગયા. એમાંથી એકને સોનાનો ઘડો, બીજાને સોનાનો મુગટ અને ત્રીજાને માત્ર સોનું જોઈએ છે. ત્યાં જઈને એમણે જોયું તો સોની સોનાના ઘડાને તોડીને એનો મુગટ બનાવી રહ્યો છે. સોનીનું આ કાર્ય જોઈને ત્રણે જણાના મનમાં ભિન્ન ભિન્ન પ્રકારના ભાવ ઉત્પન્ન થયા· જેને સોનાનો ઘડો જોઈતો હતો, એને દુઃખ થયું. જેને મુગટ જોઈતો હતો એને આનંદ થયો અને જેને માત્ર સોનું જ જોઈતું હતું એને ન તો શોક થયો કે ન

તો હર્ષ—એ પોતાના સ્થિરભાવમાં જ રહ્યો. અહીં પ્રશ્ન થાય છે કે આવો ભાવ—ભેદ શા માટે? જો વસ્તુ ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યાત્મક ન હોય તો આવી ભેદભાવની સ્થિતિ ક્યારેય ઉત્પન્ન ન થઈ શકે. ઘડો લેવાની ઇચ્છાથી આવેલા મનુષ્યને ઘડાના વિનાશથી શોક થયો; મુગટ લેવાની ઇચ્છા કરીને આવેલાને મુગટની ઉત્પત્તિથી હર્ષ થયો અને માત્ર સોનું લેવાની ઈચ્છાવાળાને એમાથી કંઇ થયું નહિં. આથી એ સિદ્ધ થાય છે કે ઘડાના વિનાશકાળમા મુગટ ઉત્પન્ન થઈ રહ્યો છે અને બન્ને અવસ્થામા સુવર્ણ દ્રવ્યસ્થિત છે. એથી જ એ ત્રણેને અનુક્રમે શોક, હર્ષ અને મધ્યસ્થ ભાવ ઉત્પન્ન થયા. જો ઘડાના વિનાશકાળમા મુગટની ઉત્પત્તિ માનવામા ન આવે તો ઘડાની આવશ્યકતાવાળા મનુષ્યને શોક અને મુકુટની આવશ્યકતાવાળાને હર્ષ થવો અસભવિત છે. એવીજ રીતે ઘડો, મુગટ વગેરે સુવર્ણ પર્યાયોમા સુવર્ણરૂપને કોઇ દ્રવ્ય ન માનવામા આવે તો સુવર્ણની આવશ્યકતાવાળા મનુષ્યમા મધ્યસ્થ ભાવની ઉત્પત્તિ ન થઈ શકે, પરંતુ અહીં તો સોનીના એક જ વ્યાપારમા શોક, પ્રમોદ અને મધ્યસ્થ એ ત્રણે પ્રકારના ભાવ જોવામા આવે છે. તેઓ નિર્નિમિત્તક નથી બની શકતા; માટે વસ્તુના સ્વરૂપને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યથી યુકત માનવું જોઇએ.

પદાર્થ ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યથી યુક્ત છે એ એક વધુ લૌકિક ઉદાહરણથી સિદ્ધ થઇ શકે તેમ છે. એ આ પ્રમાણે છે·—

पयोव्रतो न दध्यत्ति न पयोऽत्ति दधिव्रतः ।
अगोरसव्रतो नोभे तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम् ॥

જેને માત્ર દૂધ ગ્રહણ કરવાનો નિયમ છે એ દહીં નથી

ખાતો, જેને માત્ર દહીં લેવાનો નિયમ છે એ દૂધ નથી પીતો પરંતુ જેણે ગો-રસનો ત્યાગ જ કર્યો છે એ નથી દૂધ પીતો, નથી દહીં લેતો. આ વ્યવહારિક નિયમથી દૂધનો વિનાશ, દહીંની ઉત્પત્તિ અને ગોરસની સ્થિરતા એ ત્રણે તત્ત્વો પ્રમાણિત થાય છે. ઉપાધ્યાય યશોવિજયજીએ લખ્યું છે કે—

उत्पन्नं दधिभावेन नष्टं दुग्धतया पय ।
गोरसत्वात् स्थिरं जानन् स्याद्वाददिड्जनोऽपि कः ॥

અર્થાત્—જ્યારે દૂધ દહીંના રૂપમાં પરિણમે છે ત્યારે દૂધનો વિનાશ અને દહીંનો ઉત્પાદ થાય છે, પરંતુ ગોરસ દ્રવ્ય સ્થિર રહે છે. આવી અવસ્થામાં કોણ સ્યાદ્વાદનો નિષેધ કરી શકે છે ?

નિત્યાનિત્ય વિચારણા

પદાર્થોના વ્યાપક સ્વરૂપમાં એ સારી રીતે પ્રમાણિત કરવામાં આવ્યુ છે કે હરેક પદાર્થ ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યાત્મક છે. આ કથનથી વસ્તુના બે સ્વરૂપ સિદ્ધ થાય છે. એક વિનાશી અને બીજું અવિનાશી. ઉત્પાદ અને વ્યય વિનાશી સ્વરૂપ છે અને ધ્રૌવ્ય અવિનાશી છે. પારિભાષિક શબ્દોમા એમને " પર્યાય " અને " દ્રવ્ય " કહ્યાં છે. પદાર્થના વિનાશી સ્વરૂપને " પર્યાય " અને અવિનાશી સ્વરૂપને " દ્રવ્ય " કહેવામાં આવે છે. જૈનદર્શન કોઇ પણ પદાર્થને એકાન્તપણે નિત્ય અને અનિત્ય નથી માનતું, પરંતુ એ સાપેક્ષ રૂપે વસ્તુના નિત્યાનિત્ય ઉભય ધર્મોનો સ્વીકાર કરે છે. વસ્તુના અવિનાશી સ્વરૂપ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ વસ્તુ નિત્ય છે અને વિનાશી સ્વરૂપ પર્યાયની અપેક્ષાએ વસ્તુ અનિત્ય છે, માટે વસ્તુ નિત્ય અને અનિત્ય એ બન્ને રૂપે છે. વસ્તુના આ અનેકાન્ત

સ્વરૂપને ન માનતાં માત્ર એકાન્ત નિત્યવાદ કે અનિત્યવાદનો જ સ્વીકાર કરવામાં આવે તો વસ્તુનું સ્વરૂપ જ બને નહિ. પદાર્થનુ લક્ષણુ અર્થક્રિયાકારિત્વ છે. વસ્તુ અનેકાન્તાત્મક છે. એવીજ રીતે આ લક્ષણુને ઘટાવી શકાય. એકાન્ત નિત્ય પદાર્થ અને એકાન્ત અનિત્ય પદાર્થમાં અર્થ ક્રિયા નથી બની શકતી, કારણુ કે ક્રિયા થવાથી પરિણુતિ થાય છે. જ્યાં પરિણુતિ છે ત્યાં ફૂટસ્થ નિત્યતા નથી રહેતી. એકાન્ત અનિત્ય પક્ષમા પણુ અર્થ ક્રિયા ઘટાવી શકાય નહિ. કારણુ કે પદાર્થ એક ક્ષણે પોતાની ઉત્પત્તિમા મગ્ન રહે છે અને બીજી ક્ષણુમા નિરન્વય નષ્ટ થઇ જાય છે, તો એમાં અર્થક્રિયા કેવી રીતે સંભવી શકે ? આથી અનેકાન્ત પક્ષમાં જ અર્થક્રિયાનું આરોપણુ કરી શકાય.

આપણો પ્રત્યક્ષ અનુભવ પણુ પદાર્થની નિત્યાનિત્યતાને બતાવી રહ્યો છે. સુવર્ણ દ્રવ્યના કડું, કુંડલ, વગેરે અને માટી દ્રવ્યના ઘડો, કુંડી વગેરે રૂપાન્તરિત પર્યાયો દૃષ્ટિગોચર થાય છે. આપણે જોઇએ છીએ કે સોનાનું કડું કાળાન્તરે મુગટ બની જાય છે અને મુગટ તૂટીને હાર પણુ બની શકે છે. આમ સુવર્ણ દ્રવ્યના આકાર પર્યાયમા ઉત્પાદ અને વિનાશ થતા રહે છે. એના પર્યાય બદલતા રહે છે. પરંતુ સુવર્ણ દ્રવ્યનો ધ્વંસ કદાપિ થતો નથી. એવી જ રીતે માટીનો ઘડો બને છે. ઘડો ફૂટીને ઠીકરી બને છે. પરંતુ માટી તો કાયમજ રહે છે. એના મૂળ રૂપનો વિધ્વંસ ક્યારેય થતો નથી. પર્યાયોની પરિણુતિ થાય છે એ સ્પષ્ટ પ્રતીત થાય છે, માટે પદાર્થને પર્યાયની અપેક્ષાથી અનિત્ય માનવો જોઇએ. દ્રવ્યની અપેક્ષાથી પદાર્થ નિત્ય છે કારણુ કે વિભિન્ન પર્યાયોમા (કડું, કુંડળ વગેરેમાં

સુવર્ણ અને ઘડા, વગેરેમાં માટી) દ્રવ્યનું અનુગત રૂપથી પ્રત્યક્ષ ભાન થતું રહે છે. વસ્તુનું આ નિત્યાનિત્ય રૂપજ વાસ્તવિક છે.

ઉપર બતાવ્યું એ રીતે જ સામાન્ય–વિશેષ, સત્–અસત, વાચ્ય–અવાચ્ય, અને ભેદ–અભેદની વિચારણામા પણ પદાર્થ બન્ને રૂપમા જ છે. કલિકાલસર્વજ્ઞ શ્રી હેમચન્દ્રાચાર્યે અન્ય-યોગ વ્યવચ્છેદકદ્વાત્રિંશિકામા કહ્યુ છે કે—

स्यान्नाशि नित्यं सदृशं विरूप,
वाच्यं न वाच्यं सद सत्तैदव ।
विपश्चितां नाथ! निर्पीततत्त्व-
सुघोद्गतोद्गारपरम्परेयम् ॥

અર્થાત્–પદાર્થ કોઇ રીતે અનિત્ય અને કોઈ રીતે નિત્ય છે, કોઈ રીતે સામાન્ય રૂપે છે અને કોઈ રીતે વિશેષ રૂપે છે. કોઈક રીતે વાચ્ય છે અને કોઇક રીતે અવક્તવ્ય છે. કોઈક રીતે સત્ છે અને કોઈક રીતે અસત્ છે, હે વિદ્વાનોના નાથ! આ સર્વ આપના તત્ત્વામૃતના પાનમાથી નિકળેલા ઉદ્ગાર છે.

આ વિવેચનનો સારાશ એ છે કે જૈન દર્શનને વસ્તુનું એકાન્ત સ્વરૂપ માન્ય નથી. પરંતુ એની દૃષ્ટિમા વસ્તુનુ સ્વરૂપ અનેકાન્ત છે. टनेकान्तात्मकं वस्तु गोचरः सर्वं संविदाम् ।

આક્ષેપ–પરિહાર

અનેકાન્તવાદના સુસંગત સિદ્ધાતના રહસ્યને સારી રીતે ન સમજી શકવાથી જૈનદર્શનના પ્રતિદ્વન્દ્વી વેદાન્તના આચાર્ય શંકરાચાર્યે તથા અન્ય વિદ્વાનોએ સ્યાદ્વાદ સિદ્ધાત પર અનુ-

ચિત આક્ષેપો કર્યાં છે અને એને અનિશ્ચિતવાદ, સંશયવાદ, અને ઉન્મત્ત પ્રલાપ સુધી કહી દીધો છે; શંકરાચાર્ય વગેરેએ એના ખંડન માટે લેખિની ઉઠાવીને જૈનદર્શનને ખરેખર અન્યાય કર્યો છે. જૈનદર્શનને સ્યાદ્વાદનું જે સ્વરૂપ માન્ય છે, એને સમજ્યા પછી જ ખંડન કર્યું હોત તો બરાબર હતું. પરંતુ એમણે જે સ્યાદ્વાદનું ખડન કર્યું છે, એ સ્યાદ્વાદના સ્વરૂપને જૈનદર્શન નથી માનતું. શંકરાચાર્યે શાકરભાષ્યમાં સ્યાદ્વાદની વિરુદ્ધમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે.

नह्येकस्मिन्धर्मिणि युगपत् सद्सत्वादि विरूद्ध धर्मसमांवशः सम्भवति शीतोष्णवत् ।

અર્થાત્—શીત અને ઉષ્ણની જેમ એક ધર્મીમાં પરસ્પર વિરોધી સત્ત્વ અને અસત્ત્વ, વગેરે ધર્મોનો એકજ સમયે સમાવેશ નથી થઈ શકતો. તાત્પર્ય એ છે કે જેવી રીતે શીત અને ઉષ્ણુતા એ બન્ને વિરુદ્ધ ધર્મો એકજ સમયે એકજ સ્થળે નથી રહી શકતા, તેવીજ રીતે સત્ત્વ અને અસત્ત્વનું એકજ સમયે એકજ સ્થાને રહેવું અસંભવિત છે, માટે જૈનોનો સિદ્ધાત બરાબર નથી.

ઉક્ત ભાષામાં શંકરાચાર્યે જે શંકા વ્યક્ત કરી છે એજ લગભગ સ્યાદ્વાદના સર્વ વિરોધીઓની મુખ્ય શંકા અને આક્ષેપ છે. એમનું કહેવું છે કે જે નિત્ય છે, એ અનિત્ય કેવી રીતે? જે અનિત્ય છે એ નિત્ય કેવી રીતે? જે સત્ છે એ અસત્ ન બની શકે. જે એક છે, તે અનેક ન બની શકે. જે સામાન્યરૂપ છે, તે વિશેષરૂપ ન બની શકે. અને જે ભિન્ન છે એને

અભિન્ન કેમ કહી શકાય ? આ વિરોધી ધર્મ એક જ સ્થળોએ કેવી રીતે રહી શકે ? સ્યાદ્વાદ પર મુખ્ય આક્ષેપ આ જ છે.

આવો આક્ષેપ કરનારાઓએ જૈનધર્મના સ્યાદ્વાદને એના વાસ્તવિક સ્વરૂપમા ઓળખ્યો નથી. તેઓ સ્યાદ્વાદનું એવું સ્વરૂપ સમજે છે કે પરસ્પર વિરોધી ધર્મોનો એક જ સ્થાન પર સ્વીકાર કરવો એનું નામ સ્યાદ્વાદ, પરંતુ આવો સ્વીકાર કેવી રીતે અને શા માટે કરવો એ વાત પર એમણે લક્ષ આપ્યું નથી; એનું કારણ એ છે કે સ્યાદ્વાદના ગૂઢ તત્ત્વોને તેઓ સમજી શક્યા નથી. સ્યાદ્વાદનો અર્થ "પરસ્પર વિરુદ્ધ ધર્મોનું એક જ સ્થાનમા વિધાન કરવું" એવો નથી, પરંતુ અનંત ધર્માત્મક વસ્તુમા અપેક્ષાકૃત ભેદથી જે જે ધર્મો રહેલા છે, એમનો એ જ અપેક્ષાથી વસ્તુમા સ્વીકાર કરવાની પદ્ધતિને જૈન દર્શન અનેકાન્તવાદ અથવા સ્યાદ્વાદના નામથી ઓળખે છે. જૈન દર્શનનો સ્યાદ્વાદ એમ નથી કહેતો કે પદાર્થ જે અપેક્ષાથી નિત્ય છે, સત્ છે, ભિન્ન છે, એ જ અપેક્ષાથી એ અનિત્ય છે, અસાર છે અને અભિન્ન છે. જૈન વિદ્વાનોએ આ ભ્રમને ખૂબ સ્પષ્ટ શબ્દો વડે દૂર કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. જૈન દર્શન જો એક જ અપેક્ષાથી નિત્ય, અનિત્ય, સત્, અસત્, ભિન્ન, વગેરે કહેતો હોત તો વિરોધી દોષ આવત, પરંતુ જૈન દર્શન ભિન્ન ભિન્ન અપેક્ષાથી ભિન્ન ભિન્ન ધર્મોની સત્તાનો સ્વીકાર કરે છે; એમા વિરોધની ગંધ પણ આવી શકતી નથી.

એક જ વ્યક્તિમાં ભિન્ન ભિન્ન અપેક્ષાથી નહિં, પરંતુ એક જ અપેક્ષાથી પુત્રત્વ અને પિતૃત્વ એ બન્ને ધર્મોનો જૈન ધર્મ

સ્વીકાર કરે છે. વ્યકિત પોતાના પિતાની અપેક્ષાએ પુત્ર અને પોતાના પુત્રની અપેક્ષાએ પિતા છે; એનામાં પિતૃત્વ અને પુત્રત્વ એ બન્ને ધર્મો અવિરોધરૂપે જોવામાં આવે છે. વિરોધ માટે ત્યા અવકાશ જ નથી. વિરોધ તો ત્યારે જ શકય બને, જ્યારે એને પિતાની અપેક્ષાથી પણ પિતા અને પુત્રની અપેક્ષાથી પણ પિતા કહેવામાં આવે. અથવા પોતાના પુત્રની અપેક્ષાથી પણ પુત્ર કહેવામા આવે. એક જ અપેક્ષાથી પિતા-પુત્ર કહેવામા આવે તો એને અવશ્ય વિરોધી કથન કહેવાય, પરંતુ વિભિન્ન અપેક્ષાથી જ્યારે વિભિન્ન ધર્મોનો નિર્દેશ કરવામા આવે છે, ત્યારે ત્યાં વિરોધ નથી હોતો. અપેક્ષાભેદથી વિરોધી ધર્મોનો સ્વીકાર કરવામા વિરોધ નથી હોતો જેમકે, " યજ્ઞદત્ત નાનો પણ છે અને મોટો પણ છે." અહીં દેવદત્તની અપેક્ષાએ યજ્ઞદત્તમાં નાનાપણું અને વિષ્ણુદત્તની અપેક્ષા મોટાપણું જોવામા આવે છે. જેવી રીતે એક જ વ્યક્તિ યજ્ઞદત્તમાં મોટાપણું અને નાનાપણું એ બન્ને વિરોધી ધર્મો અપેક્ષાભેદથી વિદ્યમાન છે, એવી જ રીતે અપેક્ષાભેદથી નિત્યાનિત્યત્વ, સત્ત્વ-અસત્ત્વ, એકત્વ-અનેકત્ત્વ, સામાન્ય-વિશેષ, વગેરે વિરોધી ધર્મો પણ અવિરોધરૂપ એકત્ર રહી શકે છે. એમા વિરોધને માટે કોઇ શંકા રહેતી નથી.

જૈનનદર્શન જે રૂપે વસ્તુમા સત્ત્વ માને છે, એ જ રૂપમા એમાં અસત્ત્વ નથી માનતું. એથી વિરોધની શંકા કરી શકાય નહિ. એ સ્વદ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવની અપેક્ષાથી વસ્તુમાં સત્વ અને પરદ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવની અપેક્ષાથી અસત્વ માને છે, માટે અપેક્ષા ભેદથી સત્વ અને અસત્વ એ બન્ને

એક વસ્તુમા અવિરોધભાવે રહી શકે છે. એવી જ રીતે દ્રવ્યાપેક્ષાથી વસ્તુમાં નિત્યત્વ અને પર્યાયાપેક્ષાથી અનિત્યત્વ પણ અવિરોધભાવે રહી શકે છે. આ અપેક્ષાભેદથી એકત્વ, અનેકત્વ, વગેરે સમસ્ત વિરોધી ધર્મની સત્તા પદાર્થમાં અવિરોધરૂપે પ્રમાણિત થાય છે.

આધુનિક વિજ્ઞાનના આચાર્યો અને પ્રાધ્યાપકોએ એ સિદ્ધ કરી આપ્યું છે કે અપેક્ષાવાદ (The doctrine of Relativity)-થીજ વસ્તુનું સ્વરૂપ યથાર્થરીતે જાણી શકાય છે. એથી એ સિદ્ધ થાય છે કે સ્યાદ્વાદનો સિદ્ધાત એક વૈજ્ઞાનિક સત્ય છે, અને આ સિદ્ધાતનો ઉપદેષ્ટા જૈનધર્મ એ વિશ્વધર્મ અને વૈજ્ઞાનિક ધર્મ છે.

સ્યાદ્વાદનો વિષય અતિ ગહન છે. આવા ગહન વિષયનું સંક્ષેપમા પૂરું નિરૂપણ નથી થઇ શકતું, તો પણ જૈનધર્મના આ સિદ્ધાંતના વ્યાવહારિક રૂપદ્વારા સંસાર પ્રગતિના પંથ પર પ્રયાણ કરી શકે છે. આ સિદ્ધાત જગત્–વ્યવહારની દૃષ્ટિથી પણ ખૂબ મહત્વપૂર્ણ છે. એની સમન્વયશકિત અનુપમ છે. જેમ મહાસાગરમા મળી જઇ સર્વ સરિતાઓ એકરૂપ બની જાય છે તેમ આ સિદ્ધાત વિશ્વનાં સમસ્ત દર્શનો, ધર્મો અને વિવાદોનો ખૂબ કુશળતાપૂર્વક સમન્વય કરીને શાતિનું બીજારોપણ કરી શકે છે. આ સિદ્ધાત પરમ ઉદાર અને વ્યાપક છે. સાચોસાચ ખેદ થાય એવી પણ એક હકીકત છે કે સ્યાદ્વાદ તત્ત્વના અનુયાયી જૈનો પોતે જ સ્યાદ્વાદને ઉદાર સ્વરૂપમાં ભૂલી જઈ સંકીર્ણતાના ચક્રમા ફસાઈ ગયા છે. સ્યાદ્વાદ જેવા હિતકારી

તત્ત્વને માત્ર સૈદ્ધાન્તિક જ ન માનતાં જો એને વ્યાવહારિક રૂપ આપવામાં આવે તો જૈન સંઘનું જ નહિ, પરંતુ સમસ્ત દુનિયાનું સંગઠન થઈ શકે તેમ છે અને સમસ્ત વિશ્વ જૈન-ધર્મના પવિત્ર ઝંડા નીચે એકત્રિત થઈ શકે તેમ છે.

સર્વ પ્રાણી-વર્ગ આ ઉદાર તત્ત્વનું અનુશીલન કરીને કલ્યાણમાર્ગનો પથિક બને.

इति शम् । शिवमस्तु सर्वजगत ।ः



૮. એકતા

એકતા દ્વારા જ સર્વ કાર્યો સફળતાપૂર્વક પાર પડી શકે છે. જ્યાં એકતા છે, ત્યાં સિદ્ધિ છે. કુટુમ્બ, જાતિ, સમાજ, ધર્મ અને દેશમાં એકતા હોય તો સુખસંપન્નતા સર્વત્ર વ્યાપક બની રહે છે. જે કુટુમ્બમાં, જાતિમાં કે ધર્મમાં એકતા નથી, ત્યાં ક્યારેય સુખનો અનુભવ થઈ શકતો નથી.

હે પ્રભો આનન્દદાતા જ્ઞાન હમકો દીજિયે,
શીઘ્ર હી ઇશ દુર્દશા સે પાર બેડા કીજિયે,
ઐસી અનુગ્રહ ઔર કિરપા હમપૈ હો પરમાતમા,
હો સભાસદ્ સબ યહાંકે શીઘ્રસે ધરમાતમા ॥

પ્રિય આત્મબંધુઓ !

અહીં મંગળાચરણ કરવામાં આવ્યું છે. મંગળાચરણ કરવું એ શિષ્ટજનોનો આચાર છે. તમે પણ વિવાહ, વગેરે કાર્યોમાં કુંકુમ, અક્ષત વગેરે દ્વારા મંગળ કરો છો. તમારું આવું મંગળ એક પ્રકારનું છે, અને મેં જે મંગળાચરણ ગાયું એ જુદા પ્રકારનું છે. કુંકુમ, અક્ષત, વગેરે દ્રવ્યો વડે કરવામા આવનારું મંગળ આત્યન્તિક–સર્વકાલિક મંગળ નથી, કારણ કે આ પ્રકારનું મંગળ કરવાથી પણ અનિષ્ટ વિઘ્નોદ્વારા કાર્યમાં ખલેલ પહોંચતી હોય છે. પણ પ્રભુપ્રાર્થનાના રૂપમાં મેં જે મંગળાચરણ ગાયું, એ મંગળ આત્યન્તિક મંગળ છે. એ સર્વકાલિક અને સાર્વત્રિક મંગળ છે. એનું પરિણામ અનિષ્ટ ક્યારેય પણ હોઇ શકે નહિ. એથી આ મંગળ સર્વ મંગલોમાં પ્રધાનરૂપ છે.

मंगलाणं य सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम् ॥

અર્થાત્ સર્વ પ્રકારનાં મંગલોમાં પ્રભુપ્રાર્થના, પ્રભુ નમસ્કાર સર્વપ્રથમ મંગળ છે. મંગળની વ્યુત્પત્તિ આ પ્રમાણે કર-

વામાં આવી છે–"માં પાપં ગાલયતીતિ મંગલમ્" અર્થાત્ જે પાપનો વિનાશ કરે તે મંગળ છે. પ્રભુનું સ્મરણ, પ્રભુની પ્રાર્થના અને પ્રભુના ગુણોનું કીર્તન મોટાં મોટાં પાપપૂંજોને નષ્ટ કરનારું છે અને તેથી જ તે પ્રધાન મંગળ છે.

કુંકુમાદિદ્વારા કરવામાં આવતું લૌકિક મંગળ ઔપચારિક મંગળ છે એ પોતે મગળરૂપ નથી, પરંતુ એમા બનાવટી રૂપથી મંગળની કલ્પના કરવામા આવી છે. એથી એ ઔપચારિક મંગળ છે, પરંતુ પ્રભુ પ્રાર્થના–પ્રભુને કરેલા નમસ્કાર–સ્વરૂપે મંગળ છે. એથી જ પ્રારંભમા મેં પ્રાર્થનારૂપે મંગળાચરણ ગાયું છે.

પ્રાર્થના કરવાથી પાપપુંજોનો ક્ષય થાય છે અને પાપો નષ્ટ થવાથી આત્માને અલૌકિક શાતિનો અનુભવ થાય છે. જે વ્યક્તિ શાતિનો આસ્વાદ અને અનુભવ કરવાની ઇચ્છા કરે છે, એણે પ્રાર્થના કરવી જોઈએ. પ્રાર્થના એ શાતિનું અખંડ ઝરણું છે. જેવી રીતે તૃષાથી વ્યાકુલ પ્રાણી સ્વચ્છ, શીતલ, પાણીનું ઝરણુ જોઈ જેમ શાતિનો અનુભવ કરે છે, તેમ સંસારની આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિથી ઘેરાયેલા માનવી પ્રભુ–પ્રાર્થનાદ્વારા શાંતિનો અનુભવ કરે છે. ખરેખર જ પ્રાર્થના સુખ અને શાંતિનો અખંડ સ્રોત છે. શુદ્ધ હૃદયથી કરવામા આવેલો એક નમસ્કાર પણ સંસારરૂપી સાગરને પાર કરાવી શકે છે. કહ્યુ છે કે—

एगो वि णमुक्कारो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसारसागराउ तारेइ नरं वा नारिं वा ॥

અર્થાત્—જિનેશ્વર વર્દ્ધમાનસ્વામીને કરવામાં આવેલો એક નમસ્કાર પણ નર અથવા નારીને સંસારરૂપી સમુદ્ર પાર કરી-કરાવી દે છે.

મિત્રો ! આ કથન અસત્ય નથી. જો તમે ખરેખર જ શાતિના અભિલાષી હો, તો તમે પ્રાર્થનામા લીન બનો. જ્યારે પ્રાર્થનામાં તલ્લીનતા આવે છે ત્યારે એમા માત્ર આનંદનો આનંદનો અનુભવ થાય છે. તમે રોજ નવકાર મંત્ર ગણો છો અને અન્ય સ્તુતિઓનો પાઠ પણ કરો છો, પરંતુ તમને શાતિનો અનુભવ થયો છે ? તમે મોઢથી તો પ્રાર્થનાના શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરો છો, પરંતુ તમારું મન અન્ય કોઈ સ્થળે હવા ખાતું રહે છે, એથી તમને પ્રાર્થનાનો આનંદ નથી મળી શકતો. જયારથી પ્રાર્થનાસમયે મન, વચન અને કર્મની એકતા સિદ્ધ થશે ત્યારે તમને આનંદનો અનુભવ થવા માડશે.

વીણાના ત્રણ તાર હોય છે એ તાર જયારે એકતાથી બરાબર મેળમાં લીધેલા હોય છે, ત્યારે એમાથી એવો મધુર સ્વર નીકળે છે કે બજવૈયો અને શ્રોતા એ બન્ને તન્મય બની જાય છે. જો ત્રણે તારોમા વિષમતા હોય તો એમાથી એવો કઢંગો સ્વર નીકળશે કે એથી વગાડવાવાળો કે સાંભળવાવાળો એ બેમાથી કોઈ આનંદ લઈ શકશે નહિ. તાત્પય એ છે કે વીણાના તારોમાથી મધુર સૂર પ્રગટાવવા માટે એ તારોમા એકતા હોવી જોઈએ. બરાબર આવી જ રીતે પ્રાર્થનાના આનંદનો અનુભવ કરવા માટે મન, વચન અને કર્મની એક્તા હોવી જોઈએ તમારામાં આ એકતાનો અભાવ ે એથી તમે આનંદનો અનુભવ નથી કરી શકતા.

એકતાની આવશ્યકતા

પ્રાર્થનામા જ એકતાની આવશ્યકતા છે, એવું નથી. લૌકિક અને લોકોત્તર એવાં સર્વ કાર્યોમા એકતા આવશ્યક છે. એકતાથી જ બધા કાર્યો સુંદર રીતે પાર પડી શકે છે. જ્યાં એકતા છે ત્યા સિદ્ધિ છે. કુટુમ્બ, જાતિ, સમાજ, ધર્મ અને દેશમા એકતા હોય તો એ સર્વે સર્વ પ્રકારે સુખી બની શકે છે. જે કુટુમ્બમા, જાતિમા અને ધર્મમાં એકતા નથી, તે ક્યારેય સુખનો અનુભવ કરી શકતા નથી. જ્યા એકતા છે, પ્રેમ છે, ત્યા સર્વ પ્રકારની રિદ્ધિ અને સિદ્ધિ રહેલી છે. તુલસીદાસજીએ રામાયણમા કહ્યુ છે—

જહાં સંપ વહાં સમ્પતિ નાના, જહાં કુસુમ્પ તહ વિપ્ર નિદાના

જ્યા સંપ છે, ત્યા સપત્તિ છે, જ્યા કુસંપ છે, ત્યા વિપત્તિઓનો નિવાસ છે.

જે કુટુમ્બમા પરસ્પર પ્રેમ હોય છે, એ કુટુમ્બ સર્વ વાતે સુખી હોય છે; એની હરેક વ્યક્તિ સુખશાતિપૂર્વક જીવન વ્યતીત કરે છે, એવો આપણો સામાન્ય અનુભવ છે. એથી ઉલટું, જે કુટુમ્બમાં પરસ્પર ઈર્ષા સેવાતી હોય, ઘૃણા વ્યક્ત થતી હોય, કે હંમેશા કજીઆકંકાસ ચાલ્યા કરતા હોય, એ કુટુમ્બનું હરેક રીતે પતન થાય છે. લક્ષ્મી નાશ પામે છે, પારિવારિક જીવન ક્ષીણ થઇ જાય છે, અને રાતદિવસ ત્યા અશાંતિ જ રહ્યા કરે છે. જ્યાં ફાટફૂટ હોય છે એવું કુટુમ્બ પોતાના ઘરમા નરકનાં દુઃખોનો અનુભવ કરે છે. આવા અનુભવો પરથી એ સમજવું જરાપણ મુશ્કેલ નથી કે એકતા

અથવા પ્રેમ એજ ઉન્નતિ અને શાંતિને પ્રાપ્ત કરવાનું સાધન છે. વાસ્તવમાં જે વ્યક્તિએ 'પ્રેમ એ જ પરમેશ્વર' એ સૂત્ર આપ્યું છે, તે ખૂબ જ અનુભવી હશે.

જેવી રીતે પ્રેમ વિના કૌટુમ્બિક જીવનનો હ્રાસ થાય છે, તેવીજ રીતે પ્રેમ અને એકતા વિના સમાજ, પ્રજા અને દેશ પણ બેહાલ બની જાય છે; એ સમાજ કદાપિ વિકાસ પામી શકતો નથી. એ પ્રજા કદી પણ જીવંત રહી શકતી નથી, એ દેશ પણ આઝાદીના સુખનો ક્યારેય અનુભવ કરી શકતો નથી. કુટુમ્બ, જાતિ, દેશ અને ધર્મની ઉન્નતિનું સાધન એકતા છે.

મહાત્મા બુદ્ધે પોતાના ભિક્ષુઓને અંતિમ ઉપદેશ આપતાં કહ્યું હતું, "હે ભિક્ષુઓ! જ્યાસુધી તમારામા ઐક્ય, સંગઠન અને પ્રેમ રહેશે ત્યાસુધી તમારો સંઘ ઉત્તરોત્તર આગળ વધતો રહેશે કોઈપણ શકિત તમારું કંઈપણ બૂરું નહિ કરી શકે. અને થયું પણ એમજ. જ્યાસુધી બૌદ્ધ સંઘમા એકતા રહી ત્યાંસુધી બૌદ્ધધર્મ ખૂબ પ્રસર્યો અને વિકાસ પામ્યો. જ્યારથી બૌદ્ધાચાર્યોમા વિવાદ થયો, જ્યારથી સંઘમા ફાટફુટ પડી, ત્યારથી બૌદ્ધધર્મની પડતી દશાનો પ્રારંભ થયો. એ અવનતિ ત્યાસુધી આગળ વધી કે ભારતવર્ષમાથી તો એ ધર્મનો લગભગ લોપ થઈ ગયો. ખરેખર સંગઠન જ ઉન્નતિનું મૂળ છે, અને ફાટફૂટ પતનનું ઉદ્ભવસ્થાન છે.

સંગઠનનું મહત્ત્વ બતાવતાં એક લેખકે લખ્યું છે—

"સઘ: શક્તિઃ કલૌ યુગે"

અર્થાત્—કલિયુગમાં સંઘ અથવા એકતા એજ શક્તિ છે.

ભગવાન્ સંઘ

શાસ્ત્રકારોએ સાધુ, સધ્વી, શ્રાવક, શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સંઘને "ભગવાન્ સંઘ" કહી એની સ્તુતિ કરી છે. સંઘને ભગવાન કહેવા પાછળનો ઉદ્દેશ એ છે કે સમ્મિલિત–એક સૂત્રમા ગૂથાયેલા સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓમા અદ્ભુત શકિત રહેલી છે. સમ્મિલિત શકિત શું ન કરી શકે? એ સર્વ કંઇ કરી શકે છે, એથી સંઘને ભગવાન્ કહેવામા આવ્યા છે અને નન્દીસૂત્રના પ્રારંભમા સંઘ ભગવાન્નાં વિવિધ ઉપમાઓદ્વારા ગુણાગાન કરવામા આવ્યા છે. યાદ રાખો, એક સૂત્રમા ગૂંથાયેલા સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક, શ્રાવિકારૂપ સંઘને જ ભગવાન કહેવામા આવેલ છે, વેરવિખેર થયેલા અનેક સંપ્રદાયોમા છિન્નભિન્ન થયેલ સંઘને નહિ. જ્યાં અખંડિત એકતા છે ત્યા ઈશ્વરતા છે અને જ્યાં છિન્નભિન્નતા છે ત્યા પરાધીનતા છે.

એકતામા કેવી અમોઘ શકિત છે? છૂટાં છવાયા તણુખલામા શકિત નથી, તણુખલું તોડી નાખવું એ હરકોઇને માટે કેટલી સરળ બાબત છે? પરંતુ એ જ તણુખલા સંગઠિત થઇને જ્યારે દોરડામા રૂપાતર પામે છે, ત્યારે મોટા મોટા મદોન્મત્ત હાથીઓને પણ એ બાધી શકે છે. કીડીઓ જ્યારે સંગઠિત રૂપમા સાપ પર આક્રમણ કરે છે, ત્યારે એનું મોત લાવે છે. એક એક કીડી છૂટી છૂટી સાપ પર હુમલો કરે તો એ છુટીછવાઈ તાકાતની કંઈ અસર જ થતી નથી પણ જો તેઓ સંગઠિત હોય તો? મોટા વિષધર સાપને પણ તેઓ

પરેશાન બનાવી શકે છે. આ બધાનું તાત્પર્ય એ છે કે નાની નાની વસ્તુઓ પણ જ્યારે એક જ સમુદાયમાં એકત્ર કરવામાં આવે છે, ત્યારે એમનાથી બહુ મોટું કાર્ય પાર પડી શકે છે. આ સંબંધમાં હિતોપદેશની નીચેની કથા ખૂબ મહત્વની બની રહેશે.

કોઇ એક વન હતું. એમાં કબૂતરોનું એક ટોળું રહેતું હતું. સંપૂર્ણ સ્વતંત્રતાથી એ આકાશમાં અને મન ફાવે ત્યાં ઉડ્ડયન કરતું હતું. એ કબૂતરોનો એક વૃદ્ધ નાયક હતો. એનુ નામ ચિત્રગ્રીવ હતું. એક વખત કબૂતરોનું આ ટોળું નિર્જન વનમાં ઊડતું ઊડતું જઇ રહ્યુ હતું, ત્યારે એણે નીચે જમીન પર વેરાયેલા ચોખાના કણ જોયા. એક પારધીએ જમીન પર ચોખાના દાણા વેરી એના પર એક જાળ બિછાવી રાખી હતી. ચોખાના દાણા જોઇ કબૂતરોનું મન લલચાયું અને એ દાણા ચણવાની ઇચ્છા વ્યકત કરી, પરંતુ વૃદ્ધ કપોતરાજ ચિત્ર-ગ્રીવે વિચાર કરી કહ્યું કે “ આ નિર્જન વનમા ચોખા કયાથી આવ્યા ? આ ચોખાના દાણા ખાવામા મને તો કલ્યાણ નથી દેખાતું. તમે થોડી વાર થોભી જાઓ. હું એની તપાસ કરું છુ ”

કપોતરાજ ચિત્રગ્રીવના આ વચનો એક ઉદ્ધત યુવાન કપોતને ગમ્યા નહિ. આજ કાલના યુવાનોને વૃદ્ધ અનુભવી પુરુષોના વચનો ઘણું કરીને ગમતાં નથી. એ ઉદ્ધત કબૂતર કહેવા લાગ્યું, “વૃદ્ધોનાં વચન આપત્તિકાળમા માનવા જોઇએ. વાતવાતમાં જ જો એમનું માન્યા કરીશું તો વધુ મુસીબતો વેઠવી પડશે. નજર સામે જ ચોખા પડ્યા છે, એમાં પણ જો કાર્યકારણનો વિચાર કરતા રહેશું તો ભૂખે મરી જઇશું; માટે

મને રાજાની વાત પસંદ આવતી નથી.” બીજાં કબૂતરોએ પણ એને ટેકો આપ્યો.

આ સ્થિતિ જોઇ ત્યારે ચિત્રગ્રીવે વિચાર કર્યો કે ‘ બધાં જ કબૂતર એકમત થઈ ગયા છે. હું જો એમનાથી વિરુદ્ધ જઇશ તો કુસંપ પેદા થશે. ’ એથી એણે કહ્યુ કે ‘ જો તમારી બધાની ઇચ્છા હોય તો ચાલો ચોખા ચણીએ. ’ ચિત્રગ્રીવ સહિત બધા કબૂતર ચોખા ચણવા માટે ત્યાં ગયા. ચિત્રગ્રીવ જાણતો જ હતો કે સંકટનો પૂરો ભય છે, તો પણ એણે સાથે જ રહેવાનું પસંદ કર્યું.

જેવા કબૂતર જમીન પર બેઠા કે તરતજ તેમના પગ જાળમા ફસાઇ ગયા. તેઓ ઊડી શકયાં નહિ. આ હાલત થઈ ત્યારે સૌ પેલા જુવાન કબૂતરને દોષ દેવા લાગ્યા કે તેં નાયકનું કહ્યુ માન્યું નહિ તેથી આ જાળમાં ફસાયા.

કપોતરાજે સૌને આશ્વાસન આપતા કહ્યુ, “ જે થવાનું હતું તે થઈ ગયું હવે કોઇને દોષ ન દેતાં આ જાળમાંથી મુક્ત થવાના ઉપાય વિચારો, કોઇને ઠપકો દેવાથી લાભ થશે નહિ. ”

આ સાંભળીને બધાં કબૂતરોએ કહ્યું કે હવે તો આપજ આ સંકટમાંથી બચાવો.

ચિત્રગ્રીવે કહ્યુ, “હું જે કહીશ તે તમે સહુ માનશોને?”

બધાએ જવાબ આપ્યો. “ જરૂર માનીશું. પહેલાં આપનું કહ્યુ માન્યું નહિ એમાં તો આ સંકટ આવી પડયું. હવે તો આપ કહેશો એમ જરૂર કરીશું. ”

ચિત્રગ્રીવે કહ્યું, "જો તમે એકમત થઈ જાઓ તો આ બંધનમાંથી છૂટકારો થઈ શકે તેમ છે. જો એક પણ કબૂતર અલગ રહેશે તો સંકટમાંથી મુક્ત નહિ થવાય. સહુ એક સાથ ઊડો અને જાળને પણ સાથે ઉઠાવી લો તો છૂટકારો થઇ શકે."

સંકટ પણ ઉપદેશક બની જાય છે. આ સંકટ સમયમાં સહુ કબૂતર એક થઇ ગયા, અને સહુ એક સાથ શક્તિની અજમાયશ કરી જાળને ઊઠાવી ઉડ્યાં. કબૂતરોને ઊડતા જોઇને પારધી વિચાર કરવા લાગ્યો કે આ કબૂતરોને હું જાળમા ફસાવવા માગતો હતો અને આ તો મારી જાળને પણ ઉઠાવીને ઉડયે જાય છે. હમણાં તો તેઓ એક છે. પરંતુ આગળ જતા એમાં ભેદ પડવાથી તેઓ જરૂર નીચે પડશે અને મારા હાથમાં આવશે. આ વિચાર કરી એ એમની પાછળ પાછળ દોડવા લાગ્યો.

શિકારીને પાછળ દોડતો આવતો જોઇ ચિત્રગ્રીવ કબૂતરોને વિશેષ સાવધાન કરવા માટે કહેવા લાગ્યો, "જુઓ, શિકારી આપણી પાછળ પાછળ આવી રહ્યો છે. જો આપણામાથી એક કબૂતર પણ ગફલતમાં રહેશે, અને "સૌ પોતપોતાનું જોર અજમાવે છે, એમાં હું એક જ નહિ અજમાવું તો શું ખોટ પડવાની છે ?" એવો વિચાર કરી પરસ્પર સહકાર આપવામા નહિ આવે તો આપણે બધાં નીચે પડીશું અને શિકારીના હાથમાં માર્યાં જઈશું.

ચિત્રગ્રીવના આ શબ્દો સાંભળીને સૌ કબૂતર એકદમ સાવધાન બની ગયા અને સંગઠિત થઇ જાળ ઉઠાવી વધુ

વેગથી ઊડવા લાગ્યા. થોડે દૂર સુધી તો શિકારી પાછળ પાછળ ગયો, પરંતુ છેવટે એ થાકયો અને નિરાશ થઇ પાછો વળ્યો.

શિકારીના ગયા પછી ચિત્રગ્રીવે કહ્યું, ' એક સંકટ તો દૂર થયું. હવે આપણું બંધન તોડવાનો પ્રશ્ન છે. એનો ઉપાય એ છે કે આપણે સૌ ગંડકી નદી તરફ ઊડીએ. ત્યા મારો પરમ મિત્ર હિરણ્યક નામનો મૂષક(ઉંદર)રાજ રહે છે. એ આપણા બંધન કાપી નાખશે.' નાયકના કહેવા પ્રમાણે સહુ સંગઠિત બનીને ગંડકી નદીના કાઠા પર આવ્યા અને હિરણ્યકે સૌને બંધનમુકત કર્યાં.

એકતાની આવશ્યકતા કેટલી બધી છે એ આ કથા પરથી સહજ સમજી શકાય છે, એકતાને પ્રતાપે જ કબૂતરો કાળના મોંમાથી છુટકારો મેળવી શકયા. તુચ્છમા તુચ્છ વસ્તુઓનું સંગઠન મોટા મોટાં કાર્યો સિદ્ધ કરી શકે છે. એથી જ ઉન્નતિને માટે એકતાની આવશ્યકતાને પ્રથમ સ્થાન આપવામા આવ્યું છે.

અનૈક્યનાં દુષ્પરિણામ

આજે ભારતવર્ષ ધાર્મિક, આર્થિક અને રાજનૈતિક દૃષ્ટિએ પાછળ છે, એનું કારણ એજ છે કે આપણે ત્યાં પરસ્પર પ્રેમ તેમજ સદ્‌ભાવનાનો અભાવ છે. જ્યાં ફાટફૂટનાં મૂળ ઊંડા ગયેલાં હોય છે, ત્યા સર્વ પ્રકારનો અધ:પાત જોવામા આવે છે. પ્રાચીન અને અર્વાચીન ઈતિહાસ આ વાતની સાક્ષી પૂરે છે. રાવણ સોનાની લંકાનો સ્વામી હતો. સર્વ પ્રકારના ભૌતિક સાધનોથી એ સંપન્ન હતો. એની પાસે શસ્ત્રો અને અસ્ત્રોનું,

વિશાળ સેનાઓનું તથા અનેક વિદ્યાઓનું બળ હતું. છતાં એ જ રાવણ જેમની-પાસે ભૌતિક સાધનોનો અભાવ હતો એવા રામને હાથે પરાજિત થયો. એનું કારણ માત્ર એજ છે કે રાવણ અને વિભીષણની વચ્ચે એકતા ન હતી. ઘરની જ ફાટફૂટ લંકાના વિનાશનું કારણ બની, રાવણ અને વિભીષણની અંદર-અંદરની ફાટફૂટથી જ સોનાની લંકા ધૂળમાં મળી ગઇ.

જગમેં ઘરકી ફૂટ બૂરી,
ઘરકી ફૂટસે બિનસાઇ સુવરન લંકપુરી;
ફૂટહીં સો સબ કૌરવ નાસે, ભારત યુદ્ધ ભયોરી,
જોકો ઘાટો યા ભારતમેં, અવલો નાહિ પુરયોરી.

એવી જ રીતે કૌરવો અને પાંડવો વચ્ચેના કુસંપને કારણે આ ભવ્ય ભારતવર્ષમા એકવાર પ્રલય મચી રહ્યો હતો. જો મહાભારત યુદ્ધમા ભારતની એ વખતની સમૃદ્ધિનો સર્વનાશ ન થયો હોત તો ભારતનું સ્વરૂપ કંઇક જુદું જ હોત.

જૈન શાસ્ત્રોમાં કોણિક અને તેના ભાઇઓની વચ્ચે હાર અને હાથીને માટે થયેલા ભયંકર સંગ્રામનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. ભાઈ ભાઈ વચ્ચે પડેલી ફાટફૂટજ એ સંગ્રામમા થયેલા ભયંકર નરસંહારને માટે કારણભૂત હતી. અંદરઅંદરના આ કુસંપને લીધે કરોડો મનુષ્યોનો સંહાર થયો અને અપાર ધનરાશિનો વ્યય થયો. અને પરિણામ એ આવ્યું કે જે હાર અને હાથીને માટે આ ભયંકર યુદ્ધ ખેલાયું એ આ લડનારાઓમાંથી કોઇના હાથમા આવ્યા નહિ.

ભારતની પરાધીનતા

ભારતનો ઇતિહાસ જેમ એના ભૂતકાળના ગૌરવને સ્પષ્ટ

રીતે આલેખે છે, તેમ સાથોસાથ એની પરાધીનતાના વૃત્તાન્તને પણ પ્રગટ કરે છે. હિંદ સમ્રાટ્ પૃથ્વીરાજ ચૌહાણના સમય સુધી ભારતવર્ષ આઝાદીની ગોદમા સુખની નિંદર લેતો હતો પરંતુ દુર્ભાગ્ય આ દેશનું કે પૃથ્વીરાજ અને જયચંદની વચ્ચે કુસંપ પેદા થયો અને એ કુસંપને કારણે ભારતની સ્વતંત્રતાને આપણે ખૂબ લાબા સમય સુધી ખોઈ બેઠા. પૃથ્વીરાજ ચૌહાણ એક મહાન્ વીર અને પરાક્રમી સમ્રાટ હતો એણે ગઝનીના બાદશાહ મહમ્મદ ઘોરીને કેટલીયેવાર પરાજિત કર્યો અને કેટલીયે વાર કેદ પણ કર્યો, પરંતુ છેવટે એણે પોતાની ઉદારતાને કારણે છોડી પણ દીધો. મહમ્મદ ઘોરી ફરીને ચઢાઈ લઈ આવ્યો. થાણેશ્વર અને કર્નાલની વચ્ચે તરાઈન નામના ગામની પાસે એક ભયંકર યુદ્ધ ખેલાયું. મહમ્મદ પોતે ઘાયલ થયો અને ઘોડા ઉપરથી પડી ગયો. એના સાથીઓએ મહા મુશ્કેલીએ એના પ્રાણ બચાવ્યા

આ બનાવ બન્યા પછી પણ ઘોરી એવી વેતરણમા હતો કે ફરીથી ક્યારે મોકો આવે અને હું ચઢાઇ કરું, ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિથી એ લોભાયો હતો અને પરાજયના અપમાનનો બદલો લેવા ચાહતો હતો.

મહમ્મદ ઘોરીને એક સુંદર મોકો પ્રાપ્ત થયો. આ વખતે પૃથ્વીરાજ અને જયચંદની વચ્ચેનો વિરોધ પરાકાષ્ઠાએ પહોચ્યો હતો. જયચંદને સંયોગિતા નામે એક કન્યા હતી. એનો સ્વયંવર રચવામા આવ્યો. જયચંદે આ પ્રસંગે સર્વ રાજા

ઓને નિમંત્રણો મોકલ્યાં, પરંતુ દિલ્હી સમ્રાટ્ પૃથ્વીરાજને ન મોકલ્યું. એટલું જ નહિ, પરંતુ પૃથ્વીરાજનું અપમાન કરવા માટે સ્વયંવર મંડપના દરવાજા પર એનું પૂતળું ઊભું રખાવ્યું. આ સમાચાર ગુપ્તચરોદ્વારા પૃથ્વીરાજે જાણ્યા અને સંયોગિતા અંતઃકરણપૂર્વક પોતાને ચાહે છે, એ સમાચાર પણ એને મળ્યા. સંયોગિતા પૃથ્વીરાજને ખરેખર ચાહતી હતી જ. સ્વયંવરના કાર્યનો પ્રારંભ થયો. સંયોગિતા હાથમાં વરમાળા લઈને ભાટ લોકોદ્વારા એક પછી એક રાજાની પ્રશંસા સાંભળતી ધીમે ધીમે આગળ વધી રહી હતી. સૌને આશા હતી કે સંયોગિતા એમના ગળામાં જ વરમાળા આરોપશે. પણ સંયોગિતા તો આગળ વધતી ગઈ અને દરવાજાની નજીક આવી. પૃથ્વીરાજના પૂતળાના ગળામાં વરમાળા પહેરાવી ન પહેરાવી ત્યાં તો યોદ્ધાઓ સહિત પૃથ્વીરાજ ત્યાં છતો થયો અને સંયોગિતાને ઉઠાવી ગયો. બન્ને પક્ષના યોદ્ધાઓ વચ્ચે તુમુલ યુદ્ધ થયું. અંતે જયચંદ હાર્યો.

જયચંદ આ ભયંકર અપમાનનો બદલો લેવા માગતો હતો. એના પોતાનામા તો એટલી શક્તિ ન હતી કે એકલો એ પૃથ્વીરાજનો સામનો કરી શકે, છતાં હૃદયમા ઇર્ષાની આગ તો તીવ્રતાથી પ્રજળી રહી હતી. કોઈને કોઈ રીતે એ પૃથ્વીરાજ પર વેર વાળવા ઇચ્છતો હતો. આ વૈરભાવનાને કારણે એ અંધ બની ગયો હતો. દૂરદર્શિતા અને વિવેકબુદ્ધિને જાણે એ પરવારી ચૂકયો હતો. આને પરિણામે અંતે એણે મહમ્મદ ઘોરીને આમંત્રણ આપી ભારત પર ચઢાઈ કરવાને લલચાવ્યો મુહમ્મદ તો આવા કોઈ મોકાની રાહ જોઈને જ

બેઠો હતો. આ સુવર્ણ અવસર એને મળી ગયો. એણે માની જ લીધું કે આ વખતે તો મારો વિજય નિશ્ચિત જ છે. કનોજના રાજા જયચંદનો મને સાથ મળી રહ્યો છે તો એ હિંદુ રાજાના સહયોગથી જ શા માટે હિંદ પર વિજય ન મેળવું ? આવો અવસર ફરીથી ક્યારે આવવાનો છે ? વિચાર ન કરતાં એણે તરત જ ભારત પર આક્રમણ કરી દીધું. પૃથ્વીરાજે અત્યંત વીરતાપૂર્વક એનો સામનો કર્યો, પરંતુ આ વખતે રાજાઓમાં પરસ્પર ફાટફૂટ ઘર કરી ચૂકી હતી એથી પૃથ્વીરાજ હારી ગયો. અને પૃથ્વીરાજનો પરાજય થતાં જ હિંદુરાજનો અંત આવી ગયો.

જયચંદે વિચાર કર્યો હતો કે મુહમ્મદ ઘોરીની સહાયતા થી પૃથ્વીરાજને હરાવીશ અને પછી દિલ્હી પર હું મારું રાજ્ય સ્થાપી શકીશ. પરંતુ ઘટના કંઈક જૂદી જ બની. મુહમ્મદ ઘોરીએ થોડા દિવસો બાદ કનોજ પર ચઢાઈ કરી અને જયચંદને પણ હરાવી એની સર્વ આશાઓ ધૂળમાં મેળવી. સમસ્ત ઉત્તર ભારત પર વિદેશીઓની સત્તા સ્થાપિત થઈ. અરે ! અંદર અંદરની ફાટફૂટનું એવું પરિણામ આવ્યું કે નંદનવન સમાન ખીલેલો અને સ્વર્ણભૂમિ નામથી પ્રસિદ્ધ થયેલો આ દેશ લાંબા કાળ સુધી પરાધીનતાની બેડીઓમાં જકડાઈ ગયો. એની સ્વતંત્રતાનો સૂરજ આથમી ગયો. સ્વાતંત્ર્યસૂર્ય અસ્ત થતા જ નિશાચરોની બોલબાલા થઈ ગઈ અને ભારત અત્યાચાર, લૂંટ, બળજબરીથી ધર્મપરિવર્તન વગેરે અનિષ્ટોનો શિકાર બની ગયો. આજે પણ એ એ જ દશામાં જીવી રહ્યો છે.

બંધુઓ! જોઈ લીધું કુસંપનું પરિણામ? ભારતવર્ષના ક્ષત્રિય રાજાઓમાં કુસંપ ન થયો હોત તો ખરેખર જ ચંગીઝખાન અને ઔરંગઝેબના અત્યાચારો ભારતને સહન ન કરવા પડ્યા હોત. અને ઇતિહાસ પણ કોઈ જૂદા જ રૂપમાં લખાયો હોત. અહાહા! વિધિને એ જ મંજૂર હતું!

મુસલમાન શાસકો બાદ અંગ્રેજી હકૂમત સ્થાપિત થઈ. એને આજે લગભગ બસો વર્ષ થઇ ચૂકયાં છેઃ આ હકૂમતને કારણે ભારત સમક્ષ એક નવી ગૂંચવણભરી સમશ્યા પેદા થઈ છે. આ સમશ્યા છે, હિંદુમુસ્લીમ સમશ્યા.

કોમી એકતા.

ભારતની પરાધીનતાને હંમેશને માટે સ્થાયી બનાવનાર કોમી કુસંપ જ છે. ભારતની બે મુખ્ય કોમો હિંદુ અને મુસલમાન જો સાથે મળીને આઝાદ બનવાનો પ્રયત્ન કરે તો આઝાદી એમને બારણે જ ઊભી છે. પરંતુ દેશનું એ દુર્ભાગ્ય છે કે લાંબા સમયના પ્રયત્નો છતાં આ સમશ્યાનો ઉકેલ આવ્યો નથી. ભારતના હિંદુઓ અને મુસલમાનોએ કોમી એકતા સ્થાપિત કરીને પોતાના દેશની આઝાદી હાસલ કરવા માટે સંગઠિત રીતે કટિબદ્ધ બનવું જોઈએ. કોઇ ત્રીજી સત્તાની દખલગીરી અથવા એનાં બનાવેલાં પ્રલોભનોથી બહેકાઇ જઈ પોતાના અસલ લક્ષ્યને ભૂલવું ન જોઇએ. ભારત ભૂમિ બન્નેની જન્મભૂમિ છે. આ જન્મભૂમિને માટે બન્નેએ સંગઠિત બનવું જોઇએ.

અમારું તે તમારું છે, તમારું તે અમારું છે,
અમારા ને તમારામાં, પ્રભુનું નામ પ્યારું છે;
અમે જગદીશને ભજીએ, તમે અલ્લા ઉચ્ચારો છો,
અમે શ્રીરામને રટીએ, તમે રહિમાન ધારો છો
અરે રે! ધર્મને લીધે, જણો જૂદાઈ કા પ્યારા?
કુસપે કલેશ કાં માંડો, અરે ઓ, બંધુઓ મારા?

આપણો ફેંસલો ત્રીજી સત્તા કરી આપશે એવી આશા રાખવી વ્યર્થ છે. બે બિલ્લીઓના રોટલાના ઝઘડામા વાંદરો શો ઈન્સાફ આપી શકે? એ પોતે રોટલો ખાઈ જાય અને બન્ને બિલ્લીઓ એની સામે જોતી બેઠી રહે એ જ એનો ઈન્સાફ હોઇ શકે.

માટે દેશમા કોમી એકતાનું વાતાવરણ વધુ ને વધુ દૃઢ કરવું એ પ્રથમ આવશ્યકતા છે. કોમી એકતા સ્થાપિત થવાથી તમારું સ્વાગત કરવા માટે આઝાદી બારણામા ખડી રહેશે.

ધર્મ અને સમાજની દશા

આ તો દેશની વાત થઈ. હવે જરા ધર્મ અને સમાજ પ્રત્યે તમારું લક્ષ ખેંચવા માગું છું.

મિત્રો! તમે જરા તમારા ધર્મના ભૂતકાલીન ગૌરવ પ્રત્યે દૃષ્ટિપાત કરો અને પછી એના વર્તમાન સ્વરૂપને પણ નિરખો. જ્યારે જૈનોની સંખ્યા ૪૦ કરોડ કહેવામા આવતી હતી એ જમાનો કયા અને કયા આજના માત્ર અગિયારથી બાર લાખ જૈન? કયા આકાશ અને કયા પાતાળ? તમારી ઘટતી જતી સંખ્યાનો તમે વિચાર કર્યો છે ખરો? એક વિદ્વાને હિસાબ લગાવ્યો છે કે હરરોજ ૨૫ જૈન ઓછા થતા જાય છે. ભૂત-

કાળના જૈનોની સંખ્યા અને આજના જૈનોની સંખ્યા એ બન્નેનો હિસાબ કરતાં ઉપર પ્રમાણે રોજનો સરેરાશ ઘટાડો થાય છે. આ વાત સાચી હોય, અને એ જ રીત ચાલુ રહે તો થોડાં જ વર્ષોમા જ જૈન ધર્મનું વિસર્જન થવાની જ રાહ જોવી રહી.

બંધુઓ! તમે ક્યા પ્રકારની ગાઢ નિદ્રામા હજી ઊંઘી રહ્યા છો? અન્ય ધર્માનુયાયીઓની સંખ્યા જોતજોતામા કરોડોની સંખ્યા સુધી પહોંચી ગઇ. અને તમારી સંખ્યા દિનપ્રતિદિન ઘટતી જાય છે. એનું કારણ શું? શું વીરશાસનમાં કોઈ પ્રકારની ખામી છે? જો એમા ખામી હોત તો પૂર્વે એના અનુયાયીઓની સંખ્યા ૪૦ કરોડની કઇ રીતે થઈ હતી? માટે ખામી શાસનની નહિ, પરંતુ આપણી પોતાની જ છે; કારણ કે આપણે આપણા પૂર્વજોની સંપત્તિને સંભાળવામા અસમર્થ નીવડયા. પરિણામે એ સંપત્તિ દિનપ્રતિદિન ક્ષીણ થતી ગઈ.

ભાઈઓ! હજી પણ સમય છે. જે થઈ ચૂકયું એ માટે શોક કરવો વ્યર્થ છે. હવે તો ભવિષ્યનો વિચાર કરી જે કંઈ પૂંજી બાકી બચેલી છે, એની સુવ્યવસ્થા કરવાનો ઉપાય વિચારવો એ જ યોગ્ય છે. ધર્મ અને સમાજને જે રોગ લાગુ પડ્યો છે, એ રોગની ચિકિત્સા કરતાં પહેલા એનું નિદાન કરી લેવું એ પ્રથમ આવશ્યકતા છે. માટે પ્રથમ એ વિચાર કરો કે આવી પડતી દશા થવાનું કારણ શું? ધર્મ અને સમાજના શરીરમા કયો રોગી ઘૂસી ગયો છે? આ પ્રશ્ન પર વિચાર કરતાં જણાય છે કે ધર્મ અને સમાજરૂપી શરીરયંત્રના જૂદાજૂદા વિભાગો પરસ્પર સહયોગ કરવાનો ઇન્કાર કરે છે. અને તેથી જ એ શરીરયંત્ર મૃતવત્ બની ગયું છે. તમે કલ્પના કરો કે જો

શરીરના હાથ, પગ, પેટ વગેરે અવયવો પરસ્પર સહકાર ન કરે અને અલગ અલગ પ્રવૃત્તિ કરવા મંડી પડે તો શરીરની શી હાલત થાય? જો હાથ કામ કરવાનું બંધ કરે, પગ ચાલવાનું બંધ કરે, પેટ પચાવવાનું બંધ કરે અને સૌ અલગ ચોકો જમાવે તો શરીરના શા હાલ થાય? શરીર ક્ષીણ થઇ નષ્ટ થઇ જશે આવા જ હાલ ધર્મ અને સમાજના શરીરના છે. એના અવયવ છિન્નભિન્ન થઈ રહ્યા છે. તેઓ પરસ્પર મળીને કામ કરવા માટે તૈયાર નથી. તેઓ એક બીજાથી પોતાની સરખાઈ કરવા માટે છે. એક અવયવ અન્ય અવયવને પોતાનાથી હીન બતાવવા માગે છે. આથી જ ધર્મ અને સમાજનું શરીર ક્ષીણ બની રહ્યું છે. આજે જૈન સંઘ છિન્નભિન્ન થઇ રહ્યો છે. જ્યા પહેલા ચાલીશ કરોડ નરનારી એક જ ઝંડા હેઠળ હતા ત્યા આજે માત્ર બાર લાખ વ્યક્તિઓ અનેક ફિરકાઓમા વિભક્ત બની રહેલ છે. દિગમ્બર, શ્વેતામ્બર, સ્થાનકવાસી, તેરહપંથ, વીસપંથ અને કોણ જાણે કેવા કેવા પંથોમા આપણો ધર્મ વિભકત થઇ રહ્યો છે. આટલેથી જ વાત અટકી નથી. એક એક પંથમા અનેક સંપ્રદાયો અને અનેક જૂથ ફૂટી નીકળ્યા છે સૌ શુદ્ધ જૈનત્વના વારસદારો તરીકે દાવો કરે છે, અને પોતાના સિવાય અન્ય સૌને મિથ્યાત્વી કહી નાખવાનું સાહસ પણ કરે છે. જૈનધર્મના આવા ટૂકડા થઇ ગયા છે.

ભગવાન મહાવીરે પોતાના અનુયાયીઓને આ અખંડ ચમકતો અણમોલ હીરો આપ્યો છે પરંતુ અનુયાયીઓએજ એ હીરાના ટૂકડે ટૂકડા કરી એનું મૂલ્ય અને કાંતિ બન્ને

ઘટાડી દીધાં છે. જે મૂલ્ય અખંડ હીરાનું હોય છે, તે ટુકડાઓમાં વહેંચાયેલા હીરાનું કદાપિ નથી હોતું. જૈન સંઘની હાલત પણ તાણેતાણે વિંખાઈ ગયું હોય એવા વસ્ત્ર સમાન બની ગઈ છે. સાધુ સમાજમા સંપ્રદાય અને સંઘોના ભેદ તથા શ્રાવકવર્ગમા સામ્પ્રદાયિક અને સમાજમા જાતિ સંબંધી ભેદભાવ એટલી હદ સુધી વિકસી ગયા છે કે હવે એમને એક કરવાનું કાર્ય હિમાલય પહાડને ઉઠાવવા જેટલું કઠીન બની ગયું છે. સૌ લોકો પોતપોતાના પક્ષ અને વાડાબંધીને મજબૂત કરવામાં પોતાની શકિતને કામે લગાડી રહ્યા છે. પરંતુ આપણે સૌ વીરસંઘના રૂપમાં ભગવાન મહાવીરના ઝંડા હેઠળ સંગઠિત બની અખંડ જૈનત્વનો આદર્શ સિદ્ધ કરીએ એવો વિચાર કરવાની તો કોઇને પડી નથી.

વર્તમાનયુગ અપનાવવાનો છે, તિરસ્કાર કરવાનો નથી. આ યુગમા તો જે અપનાવવાનો સિદ્ધાંત ગ્રહણ કરી ચાલે છે તેજ સફળતા પ્રાપ્ત કરે છે. તમે અપનાવવાનુ શીખ્યા નથી. પરંતુ બહિષ્કાર અને તિરસ્કાર કરવાનું શીખ્યા છો. એજ કારણે તમારી સંખ્યા ઘટતી જાય છે અને અન્ય ધર્મીઓની સંખ્યા વધતી જાય છે તમે તો અંદરઅંદર લડવાનું, પરસ્પર વેરવિરોધ કરવાનું, ફિરકા બનાવવાનું, તડાં પાડવાનું અને લડી લડીને એકબીજાનો બહિષ્કાર કરવાનુંજ સમજ્યા છો. પરસ્પર સંપ વધારવો અને સંગઠિત થઇ ધર્મ અને સમાજનો અભ્યુદય થાય એવો પ્રચાર કરવો એવું કાર્ય તો તમે લક્ષમાં જ લીધું નથી ત્યાં ઉન્નતિની આશા તો ક્યાંથી જ રાખી શકાય ?

જૈન ધર્મ કેવો ઉદાર ધર્મ છે ! એનો સ્યાદ્વાદનો સિદ્ધાંત કેટલો વ્યાપક અને વિશાળ છે ! સ્યાદ્વાદ દુનિયાના સમસ્ત ધર્મો, દર્શનો અને પંથોનો સમન્વય કરી દે છે. એ સર્વને આંશિક તથા આપેક્ષિક સત્ય માને છે. આ સિદ્ધાત સમન્વયની ચાવી તથા વિવાદોનું શમન કરનારો અમોઘ લેપ છે. એને સમજી લીધા પછી વિરોધને માટે અવકાશ જ રહેતો નથી, પરંતુ મહાઆશ્ચર્યની વાત છે કે સ્યાદ્વાદમાં માનનારાઓમા પણ પરસ્પર ફૂટ, ઈર્ષા, વેરવિરોધ અને દુરાગ્રહ ફેલાઇ રહ્યા છે. સ્યાદ્વાદમા માનનારા, એકબીજાને એકાન્ત મિથ્યાત્વી કહી દે છે એ કેવી આશ્ચર્યની વાત કહેવાય ? આ કેવી પાણીમા આગ લાગી રહી છે ! અન્યના ઝઘડાઓને શાત કરનારા સ્યાદ્વાદના સિદ્ધાતમા માનનારાઓ પોતે જ આપસઆપસમાં લડે એ કેવી ઉપહાસજનક વાત કહેવાય ! આપણે પરસ્પર વેરવિરોધ રાખી સ્યાદ્વાદના ઉપદેષ્ટા ભગવાન મહાવીર અને એમના સિદ્ધાંતોનુ અપમાન કરી રહ્યા છીએ.

બંધુઓ, હવે આ લડાઇ ઝઘડાઓને છોડો અને સ્યાદ્વાદના સિદ્ધાતદ્વારા તમારા મતભેદોનુ નિરાકરણ કરી એકતાનાં સૂત્રોમાં બંધાઇ જશો તોજ ઉન્નતિની દિશામાં ગતિ કરી શકશો. નહિ તો યાદ રાખો, પાછળ જ રહી જશો.

આઉ જૈન કૌમ જાગ હુઆ અબ તો સબેરા,
ઘર ઘરમે દિવાલી હૈ તેરે ઘરમેં અંધેરા;
યે હિંદુ, આર્ય, પારસી, ઈસ્લામ, ઇસાઇ,
સબને તો અપને ધર્મ કી જડ ખૂબ જમાઇ,
આપસમે લડતે હૈ, જૈન કરતે બખેડા. ॥ ઘર ॥

હૈ પોરવાડ, ઓસવાલ, ઔર શ્રીમાલી,
રખતે હો, ભેદભાવ, રીત કહાંસે નિકાલી ?
એક વૃક્ષ કે હી ફૂલ કો કયોં હાય ! બિખરા. ॥ ઘર ॥

ઉપરનું ગીત રચનારે પોતાના હૃદયના દુ:ખને વ્યકત કર્યું છે. ધર્મ અને સમાજમાં ફેલાયેલી અનેકતા અને ઈર્ષાગ્નિને જોઈ એનું હૃદય રોઇ પડયું છે. એ કહે છે કે દુનિયા ઝડપથી આગળ વધે છે, ત્યારે જૈનકોમ હજી અંધારામાં સૂતી પડી છે. જૈનકોમ અંદર અંદર જ લડીને પોતાની શકિતનો અપવ્યય કરી રહી છે. સામાજિક સ્થિતિ જોતાં જણાય છે કે ઓસવાળ, દશા ઓસવાળ, વીસા ઓસવાળ, પોરવાડ, શ્રીમાળી વગેરે અનેક ભેદ અને તડાં જોવામા આવે છે. એક જ વૃક્ષની એ સર્વ ડાળીઓ હોવા છતા એમની વચ્ચે ભેદભાવ તીવ્ર સ્વરૂપે ફેલાઈ રહ્યો છે. વૃક્ષની ડાળીઓ ગમે તેટલી ફેલાય પરંતુ એથી વૃક્ષની શોભા ઘટતી નથી, વધે છે. એનું કારણ એ છે કે સર્વ ડાળીઓ જૂદી જૂદી હોવા છતા સંગઠિતરૂપમા મૂળ સાથે જોડાઈ રહેલી છે. એવી જ રીતે જાતિ અને ધર્મમાં અલગતા હોવા છતા પણ જો મૂળને પકડીને સર્વ ફિરકાઓ પરસ્પરના પ્રેમમા રહે તો કોઈ નુકસાન નહિ થાય. પણ અહીં તો જૂદી જ સ્થિતિ છે. પ્રેમનું તો નામનિશાન પણ નથી

બંધુઓ ! પશુઓ અને પંખીઓમા પોતપોતાની જાતિવાળાં પ્રાણીઓ પ્રત્યે પ્રેમ બતાવવામાં આવે છે. કાગડાઓમાં કેટલી એકતા છે ! એક જ કાગડો કા, કા કરે તો સેંકડો કાગડા એકઠા થઇ જાય છે. શું જાતિપ્રેમનો પાઠ એમની પાસેથી ન શીખવો જોઈએ ?

એક વાર ભોજરાજા જંગલમાં ગયા. ધનપાળ નામના એક પંડિત પણ એમની સાથે હતા. જંગલમાં એમણે આકાશ તરફ ઉછળતા એક મૃગને તથા જમીન ખોદતા એક વરાહને જોયા. આ જોઇને ભોજ ધનપાળને પૂછવા લાગ્યા કે આપત્તિને સમયે મૃગ આકાશ તરફ ઉછળે છે, અને વરાહ જમીન ખોદે છે એનું કારણ શું ? ધનપાળ પંડિત બોલ્યા, આપત્તિના સમયમાં મૃગ સજાતીય મૃગને શરણે જવા ઇચ્છે છે. આકાશમાં દેખાતા ચદ્રમામા મૃગ છે. એ મૃગનું શરણ લેવા માટે આ મૃગ આકાશ તરફ ઉછળે છે. એવી જ રીતે વરાહાવતાર નીચે છે માટે આપત્તિના સમયમાં આ વરાહ પેલા વરાહને શરણે જવા માગે છે, એથી જ એ જમીન ખોદી રહ્યો છે. તાત્પર્ય એ છે કે આપત્તિકાળમાં પશુ પણ પોતાના સજાતીય પ્રાણી-ઓનું શરણ લેવા ઇચ્છે છે. જો પશુપંખી જાતિઓમા પોતાનાં જાતિભાઇઓ પ્રત્યે આટલો પ્રેમ જોવામાં આવે છે, તો તમારે તમારા જાતિ ભાઇઓ પ્રત્યે કેટલો પ્રેમ રાખવો જોઇએ ?

યાદ રાખો મિત્રો ! ઉન્નતિનો મૂળ મંત્ર એકતા અને સંગઠન છે. ઇંટ અને ચૂનાના એકીકરણથી કિલ્લો બને છે, અને તે શત્રુઓ સામે રક્ષણ કરે છે. જો નિર્જીવ વસ્તુઓની એકતામાં પણ આટલી શકિત હોય છે, તો સજીવોની એકતામા કેવી અદ્ભુત શકિત હોવી જોઇએ ?

નિર્જીવ યંત્ર વીજળીના વેગનો સ્પર્શ થતાં જ ધડધડ અવાજ કરતુ ચાલવા લાગે છે. અંધકારમા પડેલા લોકો બટન દબાવતા જ ઝ્લોબના પ્રકાશથી ચમકી ઉઠે છે. બંધ પડેલા પંખા વિદ્યુતની ધારા આવતા જ ફરફર કરતાં ફરવા માંડે છે.

પ્રેમ એક સજીવ વીજળી છે. આ વીજળી જેના પર પડે છે, એને ગતિશીલ બનાવે છે.

વીર ભગવાનના સમવસરણમાં પ્રેમની અદ્‌ભુત શકિતનું કેવું અદ્‌ભુત પ્રદર્શન છે! સ્વાભાવિક શત્રુતા રાખનારાં પશુ-પક્ષીઓ પણ એ અખંડ પ્રેમપુંજથી પ્રભાવિત થઇ પોતાની શત્રુતાને ભૂલી જાય છે. ગાય અને હરણુાંઓનાં બચ્ચા સિંહણને પોતાની માતા સમજે છે અને સિંહણ પણ એમના પર વાત્સલ્ય ઢોળે છે. સર્પ અને નોળિયો, સિંહ અને મૃગ, ઉંદર અને બિલ્લી પણ વેરવિરોધનો ત્યાગ કરી એકત્ર બેસે છે. વીરના સમવસરણની કેવી વિચિત્રતા છે! બંધુઓ! આ વિચિત્રતા કેવળ નિર્મળ પ્રેમની જ છે. સાચા પ્રેમના પૂજારીમા એવી શકિત પ્રગટ થાય છે કે એની સામે અન્ય વ્યકિત વેરવિરોધ ભૂલી જાય છે. હવે તમે અહીંના સમવસરણની દશા દેખો. જે ધર્મના સ્થાન છે, તે જ આજે કલહના ધામ બની ગયા છે. આ ઘટના તો પાણીમાં આગ લાગવા જેવી છે. ખેર! ભાઇઓ! હવે જાગો, હવે એકતાના પાઠ ભણી લો. હવે તમે કાતરનું કામ ન કરતાં સાંધવાનું કામ કરો. સોય સાધવાનું કામ કરે છે તો એ દરજીના મસ્તક પર અથવા સ્ત્રીઓના મોઢામાં રહે છે. અને ટુકડા કરનારી કાતર જમીન પર પડી રહે છે અને પગ નીચે દાબીને રાખવામાં આવે છે. આ સુંદર દૃષ્ટાંતથી પણ તમે હળમેળની શિખામણ લો. એમનું જ આ આ જમાનામાં ચાલશે, જેઓ એક છે, સંગઠિત છે અને શક્તિશાળી છે.

તમે એકત્રિત થઇ સંઘને શકિતશાળી બનાવો. હવે સંઘને

છિન્નભિન્ન કરવાની ક્રિયા ન કરો. સંઘનો વિચ્છેદ કરવો એ સૌથી વધુ ભયંકર પાપ છે. ચતુર્થવ્રતનું ખંડન થતાં નવી દીક્ષા આપી સાધુને શુદ્ધ કરવામાં આવે છે, પરંતુ સંઘની શાંતિ અને એકતાને નષ્ટ કરનારને દસમા પ્રાયશ્ચિતનો અધિકારી માનવામાં આવ્યો છે. એથી હવે સંઘના વિચ્છેદનું કામ સ્થગિત કરો. એકતાના મૂળ મંત્રની આરાધના કરો.

મહાત્મા બુદ્ધે કહ્યું છે કે સંસારમા ધનહરણ કરનારા લૂટારાઓમા, પ્રાણ હરણ કરનારા હત્યારાઓમાં પણ એકતા હોય છે, અને એમના સમુદાય પણ બની શકે છે, તો એવું કયું કારણ છે કે ધાર્મિક અને સમજુ લોકોનો એક સમુદાય નથી બની શકતો ?

પ્રિય બંધુઓ ! અંતમાં એ જ કહેવા માગું છું કે હવે તમે સૌ ક્ષીર–નીરની પેઠે એક બની જાઓ. તમારી સંગઠિત શકિત વિશ્વના ખૂણે ખૂણામાં જૈન ધર્મનો પ્રચાર કરશે. આજના જમાનામા જૈન ધર્મનો સિદ્ધાંત દુનિયાને અનુકૂળ અને લાભદાયક છે. તમે જ્યારે એકત્રિત થઈ દુનિયાને એ બતાવી આપશો ત્યારે જ તમે શાસનની સાચી સેવા કરી લેખાશે.

તમે સંગઠિત થઈ જૈનધર્મનો અભ્યુદય કરો.

જૈનધર્મ ઝિંદાબાદ·



૯. સમાજ સુધારણા

धर्मो रक्षति रक्षितः

ધર્મ અને સમાજનો પરસ્પર ઘનિષ્ઠ સંબંધ છે ધર્મને લીધે સમાજ બળવાન બને છે. અને બળવાન સમાજ ધર્મની રક્ષા કરી શકે છે. જે સમાજ જેટલે અંશે અધિક ધર્મકર્તવ્યનું પાલન કરે છે, તેટલે અંશે અધિક ઉન્નત અને બળવાન બને છે.

: ૯ :

પ્રિય બંધુઓ,

આજનો યુગ ક્રાન્તિનો યુગ છે. દુનિયાના ખૂણે ખૂણામાં હરપ્રકારની ક્રાન્તિ અને ઉથલપાથલ થઇ રહેલ છે. વિશ્વના રંગમંચનાં દૃશ્યો અતિતીવ્રતાથી બદલાઈ રહ્યાં છે. રાજનૈતિક, આર્થિક, ધાર્મિક અને સામાજિક ક્ષેત્રમાં ક્રાન્તિનું મોજું તીવ્રગતિથી ફેલાઇ રહ્યુ છે. દુનિયાનું કોઈ ક્ષેત્ર એવું નથી, જેને ક્રાન્તિનો સ્પર્શ ન થયો હોય. આ બદલતી જતી દુનિયાનો પ્રભાવ તમારા અને અમારા પર પણ પડ્યો છે. એ પ્રભાવ પડ્યા વિના રહી શકે તેમ જ નથી. કાલનો પ્રભાવ ખૂબ હોય છે. આજથી વીસ પચીસ વર્ષ પહેલાંના જમાનામા અને આજના જમાનામા કેટલો મોટો તફાવત પડી ગયો છે, એનો તમે અને અમે સૌ અનુભવ કરી રહ્યા છીએ.

પરિવર્તન એ સંસારનો સ્વભાવ છે આપણને ગમતું હોય કે નહિ, પરંતુ પરિવર્તન તો હંમેશા થતું જ રહે છે. એ માટે જ તીર્થંકર મહાપ્રભુએ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને ભાવનો પૂર્ણ વિચાર કરીને પ્રવૃત્તિ કરવાનો આદેશ આપ્યો છે સાધુ હોય કે શ્રાવક હોય, પરંતુ એ સર્વને દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને ભાવનો વિચાર રાખવો જોઇએ. આ બાબતોનો વિચાર જે માણસ કરી શકે છે, એ જ ધર્મપાલનમા સમર્થ થઇ શકે છે. અને જેને એનો વિવેક નથી એ યથાતથ્યં આગમો અને જિનેન્દ્ર-દેવની આજ્ઞાઓનું પાલન કરી શકતો નથી.

ધર્મ અને સમાજ

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવને લક્ષમાં રાખીને જ ત્યાગી મુનિઓને સામાજિક વિષયો પર ઉપદેશ દેવો પડે છે. જે મુનિએ સંસારનો ત્યાગ કર્યો છે, એમને સામાજિક વિષયો સાથે કાંઇ સંબંધ નથી. છતાં દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની પરિસ્થિતિને જોઇને સામાજિક સુધારાઓ સંબંધી ઉપદેશ આપવાનું એમને માટે અનિવાર્ય બની ગયું છે.

ધર્મ અને સમાજનો પરસ્પર ઘનિષ્ટ સંબંધ છે. ધર્મને કારણે સમાજ બળવાન બને છે. અને માત્ર બળવાન સમાજ ધર્મની રક્ષા કરી શકે છે. જે સમાજ જેટલા અંશમાં વધુ ધર્મ-કર્તવ્યનું પાલન કરે છે, એટલો જ એ વધુ ઉન્નત અને બળવાન બને છે. એક ઉક્તિ છે કે—

ઘર્મો રક્ષતિ રક્ષિતઃ ।

અર્થાત્-આચરણમા મૂકાયેલો ધર્મ જ સારી રક્ષા કરી શકે છે. તાત્પર્ય એ છે કે ધર્મ પાલનથી સમાજની રક્ષા થાય છે, અને સમાજથી ધર્મની રક્ષા થાય છે. કારણ કે બળવાન સમાજ જ પોતાના ધર્મનું રક્ષણ કરી શકે છે. ધર્મ અને સમાજનો પરસ્પર ઘનિષ્ઠ સંબંધ હોવાથી ધર્મની ઉન્નતિને માટે સામાજિક રીતરિવાજો અને નિયમોના સંબંધમાં ત્યાગી મુનિઓને ઉપદેશ આપવાની આવશ્યકતા જણાતી હોય છે. સામાજિક નિયમો અને રીત રિવાજો સારા હોય તોજ સમાજ બળવાન થાય છે અને એનાથી જ ધર્મની ઉન્નતિ થાય છે. એવી જ રીતે જો સામાજિક રીતરિવાજો ખરાબ હોય તો

સમાજ કમજોર થાય છે, અને કમજોર સમાજ પોતાના ધર્મની રક્ષા કરી શકતો નથી. આ હેતુથી જ સામાજિક રીતરિવાજો-ના સંબંધમા કંઇક પણ કહેવાની મને અધિક આવશ્યકતા જણાય છે.

વર્તમાનના છિન્નભિન્ન થયેલા સમાજને માટે તાકીદની જરૂર એ છે કે સમાજના શરીરમાં ઘૂસેલા સેંકડો રોગોના મૂળ કારણોની તપાસ કરવામાં આવે અને યોગ્ય તપાસ બાદ એ રોગોને નષ્ટ કરવા માટે તેમની ચિકિત્સા કરી સમાજના શરીર-ને ફરીથી હંમેશને માટે સ્વસ્થ અને નીરોગી કરવામા આવે. વૈદક શાસ્ત્રનું કહેવું છે કે શરીરમાં એક વ્યાધિ ઉત્પન્ન થતાં એ વ્યાધિ અનેક વ્યાધિઓને લઇ આવે છે, માટે આ બધા વ્યાધિ-ઓની અલગ અલગ ચિકિત્સા કરવાને બદલે એમને ઉત્પન્ન કર-નાર મૂળ વ્યાધિને શોધી કાઢી તેનો નાશ કરવાના પ્રયાસો સૌથી પ્રથમ કરવા જોઇએ આવી જ રીતે સમાજના શરીરમા પણ સેંકડો વ્યાધિઓ ઉત્પન્ન થયેલા છે આપણા સમાજનું શરીર અસ્ત-વ્યસ્ત અને બેહાલ બની રહ્યુ છે. એને ફરીથી નીરોગી કરવા માટે એ રોગોના ઝેરી મૂળને શોધી કાઢવાં જોઇએ. પરંતુ આ પ્રકારની અધોગતિ અને દુર્દશાનું મૂળ કારણ શું છે? શું તમે ક્યારેય એનો વિચાર કર્યો છે? તમને એ ખબર છે કે તમારો સમાજ વ્યાધિગ્રસ્ત છે અને કુરૂઢિઓના પ્રહારોથી વધુ ને વધુ જર્જરિત થતો જાય છે? જો કદાચ તમને ખબર હોય કે તમારા સમાજની પડતી થઈ છે, તો તમે એ અવનતિના મૂળ પ્રત્યે કદી લક્ષ આપ્યું છે? એ

મૂળને દૂર કરવા માટે તમે કંઈ સક્રિય પ્રયત્ન કર્યા છે? આ સર્વ પ્રશ્નોના ઉત્તર તો તમારા તરફથી નકારમાં જ મળશે. એનું કારણ એ છે કે તમે તમારી જાતને સમાજના એક અંગ તરીકે માનેલ નથી. સમાજ પ્રત્યે તમો દુર્લક્ષ અને ઉપેક્ષા સેવી રહ્યા છો.

તમારા શરીરમાં જો નાની એવી એકાદ ફોલ્લી થાય તો તેને મટાડવા માટે તમે તત્કાલ ઉપાયો લેવા માડો છો. નાની એવી એકાદ ફોલ્લી પણ તમારા શરીર પર ન હોય એ માટે તમે દરકાર રાખો છો. પરંતુ સમાજનું શરીર ભયંકર વ્યાધિ-ઓથી પીડાઈ રહ્યુ છે, એના તરફ તમારું જરા પણ લક્ષ નથી ગયું. શું આ પરથી એ સાબિત નથી થતું કે શરીર પ્રત્યે તમારું આટલું બધું મમત્વ છે પણ સમાજ પ્રત્યે તો તમે એટલી જ ઊંડી ઉદાસીનતા સેવી રહ્યા છો! તમારી પોતાની ઉપેક્ષાને કારણે જ સમાજનું શરીર રોગોને અંગે જીર્ણશીર્ણ થઈ ગયું છે, એમ કહેવું જરા પણ અનુચિત નથી. જો તમે પહેલાથી જ સાવધાન હોત અને રોગને મૂળમાંથી જ ડામ્યો હોત તો આજે આ રોગ આ સ્થિતિ સુધી ન પહોચ્યો હોત. ખેર જે થયું તે થયું. હજી પણ સમાજના શરીરને લાગુ પડેલા રોગોનું નિવારણ શોધો. રોગોને વધાર-નાર ઝેરી મૂળને ત્વરાથી શોધી કાઢો.

અશિક્ષા

તમે ધ્યાનપૂર્વક અવલોકન કરશો તો તમને જણાશે કે સર્વ રોગોનું ઝેરી મૂળ શિક્ષણનો અભાવ જ છે. અશિક્ષાનો પ્રભાવ એટલો તો વ્યાપક છે કે તમે ક્યા ઊભા છો, એની

પણ તમને ખબર નથી. દુનિયામા તમારું સ્થાન કયું છે? દુનિયા તમને કઇ દૃષ્ટિથી જુએ છે? શરાબ પીને ખૂબ બેભાન થયા પછી શરાબી જેમ પોતાની જાતને પણ ભૂલી જાય છે તેમ અજ્ઞાનનો નશો પણ એવો હોય છે કે મનુષ્ય પોતાને ભૂલી જાય છે. કઈ વસ્તુ તમારે માટે હિતકર છે અને કઇ વસ્તુ હાનિકર છે એ અજ્ઞાનને કારણે તમારા સમજવામાં નથી આવતું અજ્ઞાનને કારણે સમાજના રોગના કારણો તમને સ્વાસ્થ્યના કારણો જણાય છે, અને સ્વાસ્થ્યના કારણો એ રોગનાં કારણો જણાય છે. માટે સૌથી પ્રથમ દૃષ્ટિની વિશુદ્ધિ કરવાની આવશ્યકતા છે. આ માટે તમારામા વ્યાપેલી અજ્ઞાનતા દૂર કરવાની અને જ્ઞાનની જ્યોતિ પ્રગટાવવાની સૌપ્રથમ અનિવાર્ય આવશ્યકતા છે તમે કયા ઊભા છો એનો સાચો ખ્યાલ તમને જ્ઞાનના પ્રકાશમા આવી શકશે. એ પછી તમારે કયે માર્ગે આગળ વધવું એ આપોઆપ જણાઈ આવશે.

કોઇપણ દેશની ઉન્નતિ અને અવનતિનો આધાર એમા રહેતા લોકોના શિક્ષણ કે અજ્ઞાન પર રહેલો છે. દુનિયાનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ એ કહે છે કે જે પ્રજા અને સમાજ શિક્ષિત છે. એનો સર્વાંગી અભ્યુદય થાય છે. આજે યુરોપીય રાષ્ટ્રો આર્થિક, રાજનૈતિક અને વૈજ્ઞાનિક દૃષ્ટિથી આટલા બધા આગળ આવ્યાં છે, એનું કારણ એ છે કે ત્યા લગભગ સોએ સો ટકા લોકો શિક્ષિત છે. શિક્ષાના પ્રભાવથી જ એમનું રાજનૈતિક અને વ્યાપારિક વર્ચસ્વ રહ્યું છે. ઔદ્યોગિક ક્ષેત્રમા ઉન્નતિ કરવા માટે પણ શિક્ષણની અનિવાર્ય જરૂર છે. ભારતમા શિક્ષણનું પ્રમાણ ખૂબ ઓછું છે. આપણે ત્યા શિક્ષિતોની સંખ્યા બહુ જ

ઓછી છે. જે કંઈ શિક્ષણ આપવામાં આવે છે, એ દૂષણવાળું છે. આથી જ ભારત સર્વ દૃષ્ટિએ પછાત રહી ગયો છે.

શિક્ષણની દૃષ્ટિએ તો આપણો જૈન સમાજ ભારતના અન્ય સમાજો કરતાં પણ પછાત છે. એથી જ જૈન સમાજનું વર્ચસ્વ કોઈ પણ ક્ષેત્ર પર નથી. રાજનીતિમાં એનો જરા પણ અવાજ નથી. ઔદ્યોગિક ક્ષેત્રમાં એનું કોઇ મહત્ત્વનું સ્થાન નથી. આ કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે શિક્ષણને અભાવે જૈન સમાજની ઉન્નતિ તો રૂંધાઇ છે, પરંતુ સાથે સાથે એની પડતી પણ થઇ રહી છે.

બંધુઓ ! શિક્ષણના મહત્ત્વને સમજો. શિક્ષણ પ્રત્યે તમે ખૂબ દુર્લક્ષ કર્યું એનું આ પરિણામ છે. માટે જો તમે ઉન્નત બનવા માગતા હો, જો તમે તમારા અવાજને બુલંદ બનાવવા માગતા હો, જો તમે વ્યાપારિક, ઔદ્યોગિક અને રાજનૈતિક ક્ષેત્રમા તમારું ઉચ્ચ સ્થાન બનાવવા માગતા હો, અને તમે તમારા ધર્મનો પ્રસાર–પ્રચાર કરવા માગતા હો તો તમારે શિક્ષણ પ્રત્યે લક્ષ આપવું પડશે. શિક્ષણ વિના ઉન્નતિની આશા કરવી એ દુરાશા સમાન જ છે.

પ્રાચીન કાળમાં જ્યારે ભારતમાં આશ્રમપ્રણાલી વિદ્યમાન હતી, ત્યારે પ્રત્યેક બાળકને પ્રારંભનાં પચ્ચીસ વર્ષો સુધી વિદ્યાધ્યયન કરાવવામા આવતું હતું. એટલા સમયમાં એ બાળક બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરી પવિત્ર વાતાવરણમા શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરતો અને પોતાની જાતને ભાવિ ગૃહસ્થાશ્રમને માટે સર્વ પ્રકારે તૈયાર કરતો. એટલા સમયમાં એ શારીરિક, માનસિક અને બૌદ્ધિક

શક્તિઓનો વિકાસ કરી લેતો અને પછીજ ગૃહસ્થાશ્રમમાં પ્રવેશ કરતો. એથી જ પ્રાચીન કાળમાં ભારતવર્ષમા મોટા મોટા વિદ્વાનો, શૂરવીરો, મહાત્માઓ અને તેજસ્વી પુરુષો થઇ ગયા. એજ કારણે ભારત એ વખતે સર્વ પ્રકારે સમૃદ્ધ હતો. પરંતુ દુઃખની વાત છે કે હવે એ પ્રણાલી નથી રહી અને પોતાને જગદ્ગુરુ કહેવડાવનાર ભારત ઘોર અજ્ઞાનના અંધકારમાં ડૂબી ગયો છે. અફસોસ છે કે વીરોની ખાણ સમાન ભારતભૂમિ આજે દીન તેમજ હીન બની રહેલી છે.

બન્ધુઓ ! તમે શિક્ષણના મહત્ત્વને સમજ્યા નથી એથી જ જો તમારો પુત્ર થોડુંક અક્ષરજ્ઞાન અને હિસાબોનું સાધારણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી લે છે તો તમે જાણે એ ખૂબ ભણી ઉઠયો હોય એમ સંતોષ માની લો છો. મામૂલી અક્ષરજ્ઞાનમા જ તમે એના શિક્ષણની સમાપ્તિ કરી દો છો અને ધન પેદા કરવા માટે દુકાન પર બેસીને જેવું તમે કરો છો, એવું જ કરવાને તેને પણ લાચાર કરો છો. કદાચ સમયના પ્રભાવને કારણે તમે પુરુષો તો બાળકોને શિક્ષણ દેવા માગતા હશો, પરંતુ માતાઓ તો આ વિષયમા બિલકુલ બેપરવા છે. ખોટા લાડ લડાવવામા તેઓ પોતાના બાળકોને શિક્ષણથી દૂર રાખે છે, કવિ કહે છે—

શ્રીમાન શિક્ષા દે ઉન્હે તો શ્રીમતી કહતી વહીં,
ઘેરા ન લલ્લાકો હમારે નૌકરી કરની નહીં
શિક્ષે ! તુમ્હારા નાશ હો તુમ નૌકરી કે હિતબની,
લો મૂર્ખતે ! જીતી રહો રક્ષક તુમ્હારે હૈ ધની.

જો શ્રીમાન્ પોતાના બાળકને શિક્ષણ આપવાનો પ્રયત્ન

કરે છે તો શ્રીમતીજી કહે છે કે "મારા લાડકવાયા પુત્રને હેરાન ન કરો. વાંચી લખીને એણે નોકરી થોડી કરવી છે"

ભાઇઓ ! કેટલાયે ધનવાનો અને ધનવતી શેઠાણીઓ એવું સમજે છે કે શિક્ષણનો ઉદ્દેશ માત્ર નોકરી કરવાનો છે. તેઓ પોતાના પુત્રો પાસે નોકરી કરાવવા માગતા નથી, એથી તેઓ એમને ભણાવતા નથી. આ માન્યતા કેવી ભ્રામક અને અજ્ઞાનથી ભરેલી છે ! શિક્ષણનો ઉદ્દેશ નોકરી કઇ રીતે હોઇ શકે ? શિક્ષણનો આશય તો બાળકની શારીરિક, માનસિક અને બૌદ્ધિક ઉન્નતિ કરવાનો છે. જેનાદ્વારા બાળકનો શારીરિક, માનસિક અને બૌદ્ધિક વિકાસ થાય, એ જ સાચું શિક્ષણ છે જે શિક્ષણથી આ આશય પરિપૂર્ણ નથી થતો એ શિક્ષણ કુશિક્ષણ છે. કોણ એવો હશે જે પોતાના બાળકની આ પ્રકારની ઉન્નતિ નહિ ચાહતો હોય ? માટે બંધુઓ ! શિક્ષણના સુહેતુને સમજીને તમારા બાળકોમા જ્ઞાનનો પ્રકાશ ફેલાય એવા પ્રયાસો કરો તમે એ ન સમજો કે અમારે વેપારીઓને શિક્ષણની શી જરૂર છે ? તમારા બાળકો સુશિક્ષિત હશે તો વેપારને વધુ સરલ રીતે ચમકાવી શકશે. એથી ઉલટું જો બાળક શિક્ષિત નહિ હોય અને એવા સારા સંસ્કાર પ્રાપ્ત કરેલા નહિ હોય તો, તમે ભલે એને માટે લાખોની સંપત્તિ એકઠી કરેલી હશે, તો પણ થોડાક જ દિવસોમાં એને બરબાદ કરી દેશે અને પછી પોતે દુઃખી થશે. માટે પ્રત્યેક માતાપિતાનું એ કર્તવ્ય છે કે તે પોતાનાં સંતાનોને સુશિક્ષિત બનાવે. જે માતાપિતા એમ નથી કરતાં, તેઓ બાળકનાં શત્રુ છે.

બંધુઓ ! સમાજમાં જ્ઞાનની જ્યોતિ ઝગઝગી ઊઠે એ

માટે પાઠશાળાઓ, ગુરુકુલો, વિદ્યાલયો, વગેરે સંસ્થાંઓ સ્થાપિત કરી તમારા દ્રવ્યનો સદુપયોગ કરો અને સમાજની ઉન્નતિમા તમારો હિસ્સો આપો.

સ્ત્રીશિક્ષણ

છોકરાઓના શિક્ષણ પ્રત્યે તમારું લક્ષ નથી તો બાલિકાઓ અને સ્ત્રીઓના શિક્ષણ સંબંધમાં તો તે કેમ હોઈ શકે ? કારણ એ છે કે તમારામાના મોટા ભાગના લોકોની એવી જ માન્યતા છે કે વાચવું લખવું એ તો પુરુષોનું કામ છે એથી સ્ત્રીઓને શિક્ષણ આપવાની કોઈ જરૂર નથી. એક ઘરમા બે કલમ ન ચાલી શકે બંધુઓ ! તમારા દિલમા જો આવી ભાવના હોય તો આવી ભાવના સેવવાવાળા પુરુષો સ્ત્રીઓને ભયંકર અન્યાય કરી રહ્યા છે. જે લોકો સ્ત્રીઓને તુચ્છ સમજીને એમને શિક્ષણના અધિકારથી વંચિત રાખે છે તેઓ મિથ્યાભિમાની છે. સ્ત્રીઓ અને શૂદ્રોને શિક્ષણના અધિકારી ન માનવાની ધૃષ્ટતા કરનારા એ સ્વાર્થી લોકો ન્યાયની હત્યા કરી રહ્યા છે

ભગવાન ઋષભદેવે યુગના પ્રારંભમા જ પોતાની પુત્રી બ્રાહ્મીને શિક્ષણ આપ્યું હતું. એમના નામ પરથી તો બ્રાહ્મી લિપિ પ્રસિદ્ધ થઇ છે. આ પરથી એ સિદ્ધ થાય છે કે પુરુષો કરતા સ્ત્રીજાતિને શિક્ષણ આપવાની વધારે આવશ્યકતા છે. એથી જ ભગવાને બ્રાહ્મી અને સુંદરીને પોતાના પુત્રો કરતાં પણ વહેલું શિક્ષણ આપ્યું.

મિત્રો ! તમે જરા ઊંડો વિચાર કરો કે ભગવાને પોતાના પુત્રોની પહેલા પુત્રીઓને વિદ્યા આપી એનું કારણ શું ? એનું

કારણુ એ જ કે સ્ત્રીઓની જ ગોદમાં મહાપુરુષો પાકે છે. કોઇ પણુ જાતિ, સમાજ કે રાષ્ટ્રનું નિર્માણુ એનાં ભાવી સંતાનોના હાથમા રહેલું છે અને સંતાનોને યોગ્ય કે અયોગ્ય બનાવવાં એ માતાના જ હાથમાં રહેલું છે. માતાની ગોદમાં બાળક જેવા સંસ્કાર મેળવે છે, એવું જ એનું જીવન બને છે. માતા જો સુશિક્ષિત અને સંસ્કારી હોય તો તે પોતાનાં સંતાનોમા એવા સંસ્કાર સિંચે છે, કે એ વડે એ બાળક ભવિષ્યમા રાષ્ટ્રનિર્માતા બની શકે છે. એવી જ રીતે જો માતા અશિક્ષિત હોય તો બાળકના જીવનને ખરાબ પણુ કરી શકે છે. આનું તાત્પર્ય એ છે કે સ્ત્રી–જાતિના ઉપર જ જાતિ, સમાજ અને રાષ્ટ્રનું ભાગ્ય નિર્ભર છે. સ્ત્રીજાતિનું આ મહત્ત્વ છે. એ મહત્ત્વને સમજીને ભગવાને પુત્રોના પહેલાં પુત્રીઓને શિક્ષણુ આપ્યું. ક્યાં પુત્રીઓને પ્રથમ વિદ્યા આપનાર પ્રભુ ઋષભદેવ અને ક્યા સ્ત્રીઓના શિક્ષણુનો વિરોધ કરનાર એમના જ અનુયાયીઓ ? બન્નેનાં કાર્યોમાં કેટલો તફાવત ?

પ્રાચીન ઇતિહાસ એ બતાવે છે કે પ્રાચીન કાળમાં સ્ત્રીઓ ખૂબ વિદુષી અને શિક્ષિત હતી. વેદાન્તઆચાર્ય શ્રી શંકરાચાર્ય અને પ્રસિદ્ધ વિદ્વાન પંડિત મંડનમિશ્ર વચ્ચે થયેલી શાસ્ત્ર ચર્ચાનો નિર્ણુય આપનાર પંડિત મંડનમિશ્રની પત્ની સરસ્વતી હતી. બન્ને પ્રસિદ્ધ વિદ્વાનોના શાસ્ત્રાર્થમાં નિર્ણાયિકાની જવાબદારીભર્યું પૂર્ણુપદ સુશોભિત કરનારી મહિલા શું ઓછી વિદુષી હશે ?

લીલાવતીએ ગણિતશાસ્ત્રમાં કેવી નિપુણુતા પ્રાપ્ત કરી તી ! લીલાવતીનું ગણિત ગણિતશાસ્ત્રમાં ખૂબ જ મહત્ત્વપૂર્ણ

સ્થાન ધરાવે છે. એથી એ સિદ્ધ થાય છે કે પ્રાચીન કાળમાં સ્ત્રીઓ વિદુષી હતી.

ભારતવર્ષમા જ્યા સુધી સ્ત્રી જાતિનું સન્માનપૂર્ણ સ્થાન રહ્યુ ત્યાં સુધી ભારતનું સામાજિક જીવન ખૂબ ગૌરવપૂર્ણ અને શાનદાર રહ્યું. આજે તમારું સામાજિક અને કૌટુમ્બિક જીવન વિકૃત બની રહ્યું છે એનું કારણ એ જ છે કે તમારી દૃષ્ટિમા સ્ત્રી–સન્માનનું કોઈ મૂલ્ય રહ્યું નથી. તમે એને અબળા કહીને એનું અપમાન કર્યું છે. એની સર્વ રીતે યોગ્ય સ્વતંત્રતાનું હરણ કરી એને દાસીનુ સ્થાન આપ્યું. નારીવર્ગનું આ અપમાન તમારા સામાજિક જીવનને નષ્ટ કરનારું છે. તમે સ્ત્રીઓની સ્વાધીનતાનું અપહરણ કર્યું તો તમારી સ્વાધીનતા પણ ચાલી ગઈ. તમે સ્ત્રીઓને અબળા બનાવી તો તમે પોતેજ નિર્બળ બની ગયા. યાદ રાખો, મિત્રો ! નારીના અપમાનનું ફળ તમને તમારા અપમાનના રૂપમા મળી રહ્યું છે. જો તમે તમારી જાતિ, સમાજ અને દેશની ભલાઇ ચાહતા હો, તો સ્ત્રીઓનું સન્માન કરો, એમને અધિકાર આપો, એમને સુશિક્ષિત બનાવો. જ્યારે તમે નારીનું સન્માન કરતા શીખશો ત્યારે ઉન્નતિની આશા રાખી શકાશે. કહ્યું છે કે—

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः "

જ્યા નારીઓની પૂજા થાય છે ત્યા દેવતાઓ રમણ કરે છે.

નારી તીર્થંકરોની માતા છે. અવતારી પુરુષો અને પેગંબરોની જન્મદાત્રી પણ નારી જ છે. નારીએ જ વીરોને જન્મ આપ્યા છે. નારીની કૂખમાં જ મહાવીર, કૃષ્ણ અને રામ જેવા

અવતારી પુરુષો અને શિવાજી તથા પ્રતાપ જેવા શૂરવીરો ઉત્પન્ન થયા છે. આવાં રત્નોની ખાણુ જેવી પુણ્યાત્મા જાતિને અબળા કહી એનું અપમાન કરવું એ કેવી ભયંકર કૃતઘ્નતા અને નીચતા છે? શાસ્ત્રકારોએ "રત્નકૂખધારિણી" કહીને સ્ત્રી-જાતિનું સન્માન કર્યું છે.

યાદ રાખો બંધુઓ! જ્યા સુધી તમે નારીવર્ગનો ઉદ્ધાર નહિ કરો ત્યા સુધી કોઈ પણુ પ્રકારનો સુધારો થવો મુશ્કેલ છે. જેમ મૂળને તજી પાંદડાંને પાણી પાવાનો કોઈ અર્થ નથી, એવી જ રીતે સ્ત્રીઓના ઉદ્ધાર વિના કોઈ પણુ સુધારો ફલિભૂત ન બની શકે. સ્ત્રીવર્ગને સુધારવો એ સર્વ સુધારાનું મૂળ છે. સ્ત્રીઓ સુધરવાથી એમનાં સંતાનોની પરંપરા સુધરી જશે અને તેથી કુટુમ્બ, જાતિ, અને દેશનો સુધારો થઈ જશે માટે સુધારકોનું એ કર્તવ્ય છે કે સર્વ પ્રયત્ને નારીજાતિના ઉદ્ધારનું કાર્ય તેઓ હાથ ધરે.

નારીજાતિના ઉદ્ધાર માટે તેમનામા શિક્ષણુનો પ્રચાર કરવો એ સર્વપ્રથમ આવશ્યક છે બાલિકાઓને બચપણુમાંથી જ સંસ્કારપૂર્ણ સુશિક્ષણુ આપવુ જોઈએ, કારણુ કે એથી તેઓ ભવિષ્યમા સંસ્કારી ગૃહદેવીઓ બની શકશે.

આટલા વિવેચન પછી એ તો સ્પષ્ટ જ થઇ ગયું છે કે, સમાજસુધારો, દેશસુધારો, વગેરે સુધારાઓના મૂળસ્વરૂપ સ્ત્રી-શિક્ષણુની અનિવાર્ય આવશ્યકતા છે. પણુ સાથોસાથ સ્ત્રીશિક્ષણુ-નો અર્થ જાણુવો આવશ્યક છે. માત્ર પુસ્તકિયા જ્ઞાનમાં સ્ત્રીશિક્ષણુની સમાપ્તિ નથી થઇ જતી. સ્ત્રીઓના જીવનમાં ઉપયોગી બને

એવું શિક્ષણ એમને અપાવું જોઈએ. એમના કર્તવ્યોનું એમને ભાન રહે, તેઓ સીતા, સાવીત્રી અને ચંદનબાળા જેવી પ્રાતઃસ્મરણીયા સતીઓ બની શકે, તેમને પોતાની મહત્તા અને દિવ્યતાનું જ્ઞાન રહે, અને પોતાને અબળા ન સમજતાં પોતે શક્તિની પુત્રીઓ છે એવું ભાન જાગૃત રહે, તેઓ કલ્યાણી અને વરદાની બનીને ઘરની શોભા વધારી શકે એવું શિક્ષણ તેમને મળવું જોઈએ. માત્ર પુસ્તકિયા શિક્ષણ કે અક્ષરજ્ઞાનથી કામ ચાલી શકે નહિ. જીવનોપયોગી શિક્ષણદ્વારા સ્ત્રીઓનો વિકાસ કરવો જોઈએ.

આજકાલ સ્ત્રીશિક્ષણ અને સમાનાધિકારને નામે સ્વચ્છંદાચાર અને વિદેશી વેશભૂષા તથા રીતરિવાજોનું અંધ અનુકરણ થઇ રહ્યુ છે. આ શિક્ષણ કુશિક્ષણ છે. આવા શિક્ષણને ઉત્તેજન ન જ આપી શકાય. સ્ત્રીશિક્ષણ અને સ્ત્રીસ્વાતંત્ર્યનો અર્થ એ નથી થતો કે ભારતીય મહિલાઓ યુરોપિઅન "લેડીઝ" બની જાય જો આમ થતુ હોય તો આ શિક્ષણ ત્યાજ્ય છે. જે શિક્ષણથી પોતાના દેશનુ, પોતાની વેશભૂષાનુ અને પોતાના પરિવારનું ગૌરવ નષ્ટ થાય એ શિક્ષણ અર્થહીન છે. આપણે તો એવું શિક્ષણ જોઇએ છે કે એ વડે સ્ત્રીઓમા પોતાના વ્યક્તિત્વની, જવાબદારીની અને કર્તવ્યની ભાવના જાગૃત થાય. આ સાથે બીજી એક વાત પણ અનિચ્છનીય છે. સ્ત્રીઓને કઢંગી રીતે ઘૂઘટમા કેદ રાખવાની પ્રથા છોડી દેવી જોઇએ. કોઇ દેશકાળની પરિસ્થિતિને લક્ષમા રાખીને ઘૂઘટની પ્રથાને અપનાવવામા આવી હતી. હવે એ સ્થિતિ રહી નથી. એથી સ્ત્રીઓને બળજબરીથી પરદામાં ગોંધી રાખવી એ હાનિકારક છે. ઘૂઘટ

રૂઢવાની પ્રથાને કારણે સ્ત્રીઓમાં સાહસવૃત્તિ ઘણી ઓછી થઇ જઇ છે. તેઓ પોતાને માટીની નિર્જીવ પૂતળીઓની પેઠે અબળા માને છે. વર્તમાન યુગમાં આ પરદાની પ્રથા સ્ત્રીઓના વિકાસમાં એક મુખ્ય બાધારૂપ બની રહેલ છે. આ બાધાને દૂર કરો અને સ્ત્રીઓને તેમનો વિકાસ કરવાની તક આપો.

મિત્રો ! યાદ રાખો કે નર અને નારી એ બન્ને સમાજ-રૂપી રથનાં બે ચક્રો છે. એક ચક્ર મજબૂત હોય અને બીજું નબળું હોય તો રથની ગતિ થંભી જાય છે. એક જ ચક્રથી રથ ચાલી શકતો નથી. સમાજની ગતિને વેગવંતી કરવી હોય તો પુરુષોએ સ્ત્રીઓને પણ પોતાના સમાન બનાવવી જોઇએ.

નર અને નારી સમાજરૂપી શરીરનાં બે અંગ છે. શરીરનું એક અંગ પણ જો કમજોર બની જાય તો આખુંયે શરીર કમજોર બની રહે છે. શરીરનું એક અંગ કમજોર હોય અને બીજું બળવાન હોય એવું કયારેય બની શકતું નથી એક અંગની ક્ષીણતાથી આખું શરીર ક્ષીણતાનો અનુભવ કરે છે. આજે સ્ત્રીજાતિની ક્ષીણતાથી સમાજ ક્ષીણ બની રહ્યો છે. માટે મિત્રો ! નારીજાતિને પણ તમારા સમાન સમજીને એના વિકાસ પ્રત્યે લક્ષ આપો. નારીઓના વિકાસમાં સર્વનો વિકાસ છે.

બંધુઓ ! મારે ખૂબ દુઃખ સાથે કહેવું પડે છે કે પુરુષોએ સમાજવ્યવસ્થામા સ્ત્રીઓને ભારે અન્યાય કર્યો છે. પુરુષોના પોતાના સ્વેચ્છાચારોને અને નારીના ન્યાયોચિત અધિકારોનું અપહરણ કરનારી વ્યવસ્થાને પુરુષોએ નિર્બળ કરી છે. વિવાહ સંબંધી વ્યવસ્થા પુરુષોદ્વારા સ્ત્રીઓ પર થતા અન્યાયના નમૂના-

રૂપ છે. વૃદ્ધવિવાહ, બહુપત્નીત્વ, વગેરે ઘણીક પ્રથાઓ સ્ત્રી-જાતિનું ભયંકર અપમાન કરનારી છે.

વૃદ્ધવિવાહ.

વૃદ્ધવિવાહ અને બાળવિવાહ સમાજને ખોખરો બનાવી રહેલ છે. આ બન્ને રિવાજોને કારણે સમાજનું જીવનતત્ત્વ ભયંકર રીતે જોખમાઇ રહ્યું છે. સમાજશરીરના આ ક્ષય રોગ છે. એમને કારણે સમાજ દિનપ્રતિદિન અંદર ને અંદર ક્ષીણ થતો જાય છે. ભારતમા વિધવાઓની સંખ્યા હંમેશાં વધતી જાય છે એનું કારણ બાળ અને વૃદ્ધવિવાહ જ છે.

જે લોકો બાળ અને વૃદ્ધવિવાહ કરે છે, તેઓ આ વધતી જતી વિધવાઓની સંખ્યા માટે જવાબદાર છે. વિધવા-ઓની સંખ્યાવૃદ્ધિનું તેઓ ભયંકર પાપકર્મ કરી રહ્યા છે.

બધુઓ ! જરા વિચાર તો કરો, ૬૦ વર્ષના વૃદ્ધની સાથે ૧૨-૧૩ વર્ષની કન્યાનો વિવાહ કરવો એને વિવાહ કહી શકાય ? એ તો ભયંકર રાક્ષસી કૃત્ય છે. સમાજમા આજે આવા વિવાહ થઈ રહ્યા છે. આ સ્થિતિ જોઇને આત્મા કંપી ઊઠે છે. ધનનાં લોભી માતા પિતા ધનલોભમાં પોતાની અબુધ કન્યાઓને બુઢ્ઢાઓના હાથમાં સોંપી તેમને જીવનભર માટે ઊંડા અંધારા કૂવામા ધકેલી દે છે. હાય રે ! ધનલોલુપતા ! આના કરતાં પણ વધુ અપરાધી તે પેલા વૃદ્ધ લોકો છે, જેઓ આ દુનિયામાંથી વિદાય લેવાની તૈયારી કરતા હોય છે, છતાં પોતાની વાસનાએને રોકી નથી શકતા, અને ધનના નશામાં ચકચૂર બની અબુધ કન્યાઓના જીવનકુસુમોને નિર્દયતા-

પૂર્વક કચડી નાખે છે. અંતિમ વયમાં પણ પોતાની વાસના-ઓને ન રોકી શકનાર અને લગ્નને માટે તત્પર બનનાર એ બુઢ્ઢાઓને ધિક્કાર હો !

શાસ્ત્રકારોએ જે જે પ્રસંગે વિવાહનું વર્ણન કર્યું છે, ત્યાં ત્યા " सरित्तवया " એ વિશેષણનો ઉપયોગ કર્યો છે. આ શબ્દનો અર્થ " સમાન વયવાળા " એવો થાય છે. વરવધૂ સમાન વયનાં જ હોવા જોઈએ. બંધુઓ વિચાર કરો અને આનું રહસ્ય સમજો. વરવધૂની સમાન વય હોય છે, તો એ જોડીને સુંદર કહેવામા આવે છે નહિ તો " ઊંટના ગળામાં બકરી " એવો ઢંગ દેખાય વયની અસમાનતા વૈવાહિક જીવન-ને નીરસ બનાવે છે અને દુરાચારને પોષે છે ૬૦ વર્ષના બુઢ્ઢા સાથે ૧૩ વર્ષની કન્યાનો વિવાહ કરવો એ વિવાહની મશ્કરી કરવા જેવું અને દુરાચારને નિમંત્રણ આપવા જેવુ છે. જે બુઢ્ઢાઓ પોતાની પુત્રીઓ અને પૌત્રીઓની વયની કન્યાઓને પોતાની પત્નીઓ બનાવે છે, એ બુઢ્ઢાઓને શરમ આવવી જોઈએ.

વૃદ્ધવિવાહનું પાપ કરનારા મોટે ભાગે ધનવાન માણસો જ હોય છે. આવું કાર્ય કરવાની હિમ્મત ગરીબોમાં તો કયાથી જ હોય ? ગરીબોને તો ભર જૂવાનીમા પણ સ્ત્રી મળવી મુશ્કેલ છે, તો બુઢ્ઢાપામાં એને કોણ આપતું હતું ? ધનિકો પોતાના ધન વડે કન્યાનાં ગરીબ મા-બાપોને લલચાવે છે. અને એ મૂર્ખ માતપિતા ધનિકના ધનની ઝાકઝમકમા અંજાઇને કન્યાનું હિત વિચારતાં નથી. તેઓ સમજે છે કે અમારી કન્યા ખૂબ આભૂષણો પહેરશે અને સુખેથી રહેશે પરંતુ એ

વૃદ્ધ તો થોડા દહાડાનો જ મહેમાન છે, અને પછી કન્યા વિધવા થશે એ વિચાર તેઓ કરતા નથી. જો તેઓ એવો વિચાર કરે છે, તો ધનના લોભમા કન્યાની ચિંતા તેઓ કરતા નથી. આવાં માતાપિતા જાણી બૂઝીને પોતાની કન્યાને કૂવામા ફેંકે છે તેઓ પોતાની કન્યાનો વિવાહ વૃદ્ધની સાથે નહિ, પરંતુ વૃદ્ધના ધનની સાથે કરે છે. પૈસો જ એ કન્યાનો પતિ બને છે ધનને માટે કેવું ઘોર દુષ્કર્મ !

ધનના નશામા મસ્ત બનેલા ધનિકો માનવીના જીવનની, સમાજની કે દેશની પરવા કર્યા વિના જ પોતાની લાલસાની પૂર્તિ કરી લે છે. આવો ધનિક એ નથી સમજતો કે એક અબોધ બાલિકાની સાથે લગ્ન કરીને હું એની જીવનનાવ મઝધારમા જ ડૂબાડી રહ્યો છું. એ ધનિક કુમળી બાલિકાના જીવનની સાથે ખેલ ખેલી રહ્યો હોય છે. એનું જીવન બરબાદ થાય કે એ વૈધવ્યના ભયંકર મહાસાગરમાં ડૂબી જાય એની ચિંતા એને કયાથી હોય ? એને તો પોતાની વિલાસિતા અને કામુકતાની સાથે જ સંબધ હોય છે. આવી વ્યક્તિ દેશ અને સમાજનો ભયંકર દ્રોહ કરે છે. આવું થવા છતાં સમાજના આગેવાનો એની વિરુદ્ધ કંઈ પણ પ્રવૃત્તિ કરતા નથી. આજે દુનિયાના તમે સૌ ધનના મહત્ત્વનેજ જ સમજ્યા છો. એથી જ ધનિકોના ધનને કારણે એમના ભયકરમા ભયંકર અપરાધ સામે પણ સમાજ કંઇ બોલી શકતો નથી. આ પૈસાની ગુલામી છે. એજ કારણે ધનિકો પણ સુધારકોના અવાજને ઠોકરે મારી પોતાની ઈચ્છાને સંતોષે છે.

જે ધનિક લોકો હજી પણ વરરાજા બનવાની ઈચ્છા રાખે

છે, તેમને હું કહેવા માગું છું કે તેઓ પોતાના ધન વડે કોઇ પણ બાલિકાનું જીવન નષ્ટ કરવા માટે એને ખરીદે નહિ. તેઓ પોતાના ધન વડે પશુઓના કરતાં પણ બદતર ન બને. પરંતુ તેમના ધનનો અન્યત્ર સદુપયોગ કરે. વૃદ્ધાવસ્થા વિવાહ માટે નથી. એ તો પરલોકની યાત્રામાં ભાતું બનનાર ધર્મની આરાધના કરવા માટે છે આ અંતિમ વયમાં વાસનાનો ત્યાગ કરી ઈશ્વરની ઉપાસના કરવામા તેમણે પોતાનો સમય વ્યતીત કરવો જોઇએ.

બંધુઓ ! વૃદ્ધવિવાહ વિધવાઓની સંખ્યાને ઉત્તરોત્તર વધારી રહ્યો છે. વિધવાઓની વૃદ્ધિથી એક ભયંકર દારૂખાનું તૈયાર થઈ રહ્યું છે આ દારૂખાનું કયારે સળગી ઉઠશે તથા એની જવાળામા આપણું સર્વસ્વ કયારે ભસ્મીભૂત થઈ જશે એ કહી શકાય એમ નથી. માટે હમણાથીજ સાવધાન બનો અને વૃદ્ધવિવાહની આ અત્યંત ઘાતકી પ્રથાનો અંત લાવો.

બાળવિવાહ

આવી જ રીતે બાળવિવાહ પણ સમાજના મૂળને કોતરી રહેલ છે. આ પણ એક એવી ભયંકર ઘાતકી પ્રથા છે કે એનાથી સમાજ અને દેશ વીર્યહીન તેમજ કમજોર બની રહ્યા છે. નાની વયમા બાળકો અને બાલિકાઓનાં લગ્ન કરી દેવાં એ એમના જીવનવિકાસને સર્વથા રૂંધી દેવા બરાબર છે. નાનાં નાના બાલક બાલિકાઓને ગૃહસ્થાશ્રમના ભાર નીચે દબાવી દેવા એ ભયંકર ક્રૂરતા છે.

ગાડીના બળદ તથા ઘોડાઓ ઉપર પણ તેઓ ઉઠાવી શકે

તેટલો બોજો લાદવામા આવે છે. જો નિયમિત મર્યાદા કરતાં તેમના પર વધુ વજન લાદવામા આવે તો સુધરાઈ એ વજન લાદનારને અપરાધ ઠરાવી દંડે છે. પરંતુ તમે તો તમારાં નાનાં નાના બાલક બાલિકાઓ પર ગૃહસ્થાશ્રમનો ભારે બોજો નાખતાં જરાપણ વિચાર કરતા નથી! શું આ એક ભયંકર પાપ નથી?

હું તો એ કહેવા માગું છું કે જો બળદ અને ઘોડાઓ પર વધુ વજન લાદનારાઓને સરકાર અપરાધી માને છે, તો બાલક બાલિકાઓ જેવા માનવ આત્માઓ પર તેમની શક્તિ ઉપરાંત વધુ બોજો લાદનારાઓને તે શા માટે અપરાધી ઠરાવતી નથી? હરેક સરકારનું એ કર્તવ્ય બની રહે છે કે પ્રજામાં બળવીર્યની વૃદ્ધિ કરવા માટે બાળવિવાહ પર પ્રતિબંધ મૂકતા કાયદાનો એ અમલ કરે. અમારા જેવા ઉપદેશકોનું કાર્ય પ્રેમ અને નમ્રતાથી લોકોએ સમજાવવાનું છે. પ્રજાનાં સુખશાંતિ તથા બળવૃદ્ધિ માટે આથી વધુ સખત પગલાં લેવાનું કામ તે તે સ્થળોની સરકારોનું બની રહે છે.

બંધુઓ! વિવાહ શું છે એ ભલાં ભોળાં બાળકો સમજતાં નથી. એમની દામ્પત્ય ભાવના જાગૃત નથી હોતી. તેઓ વિવાહ-ને તો એક ખાવાપીવાનો સમારંભ સમજે છે. આવાં બાળકોને લગ્નબંધનમા બાંધી દેવાં એ ભયંકર અપરાધ છે. આ અપરાધનું ફળ દેશ, સમાજ અને કુટુમ્બને પ્રત્યક્ષ મળી રહ્યુ છે, કારણ કે એના ફળસ્વરૂપે રોગી, ક્ષીણ અને કમજોર સંતાનો પેદા થાય છે. જે દેશમાં અભિમન્યુ, લવ અને કુશ સમાન તેજસ્વી

સંતાનો ઉદ્ભવતાં હતાં તેજ દેશમાં આવાં રોગી સંતાનો જન્મે, એ આ ઘાતકી પ્રથાને જ આભારી છે.

પહેલાં હું કહી ચૂક્યો છું કે પ્રાચીન આશ્રમ–પ્રણાલીમાં પચ્ચીસ વર્ષો સુધી બ્રહ્મચર્યપૂર્વક વિદ્યાધ્યયન કરાવવામાં આવતું હતું. અને એ સમય સુધીમાં તો બાળકનો સર્વ પ્રકારે વિકાસ થઈ જતો હતો. એ પછી જ એને ગૃહસ્થાશ્રમમાં પ્રવેશ કરવા દેવામા આવતો હતો. એ કારણે એ સમયમાં દેશ અને સમાજ સર્વ રીતે સશક્ત અને દૃઢ હતા. એ વખતે મનુષ્યનાં આયુષ્યો પણ લાબાં હતા, એનું કારણ પણ એ જ હતું. પરંતુ આજે આપણા ભારતવર્ષમાં સરેરાશ આયુષ્ય ૨૩ વર્ષનું છે. અને આપણા દેશમાં જેટલાં બાળમૃત્યુ થાય છે એટલાં કોઇ દેશમાં નથી થતાં. આનું કારણ જો તમે જોશો તો તમને દીવા જેવું સ્પષ્ટ દેખાશે કે નાની ઉમરમાં વિવાહિત જીવન વ્યતીત કરનારાઓમાંજ સંતાનો અધિક સંખ્યામાં મરે છે. કારણ તેઓ કમજોર માતા-પિતાઓ દ્વારા ઉત્પન્ન થાય છે. તેઓ રોગ અને મૃત્યુનો શિકાર જલદી બને છે. આટલી મોટી સંખ્યામાં બાળકો મરે એ આપણા દેશનું ખૂબ મોટું દુર્ભાગ્ય કહેવાય. આ દુર્ભાગ્ય બાલ-વિવાહ પદ્ધતિનું જ પરિણામ છે. માટે બંધુઓ, આ અનિષ્ટ પ્રથાનો પણ નાશ કરો.

ભાઈઓ ! હું તમને પ્રશ્ન પૂછું છું કે નાની વયમાં બાલક–બાલિકાઓનાં લગ્ન કરીને તમે કયું સુખ મેળવો છો ? તમને જલદી પૌત્ર–પૌત્રીઓનાં મોઢાં જોવા મળે છે એ જ સુખ છે ને ? એથી વધુ શું ? યાદ રાખો ભાઈઓ ! જો તમે કેવળ એજ ભાવનાથી તમારાં સંતાનોનાં બાળલગ્નો

કરતા હશો તો તમે તમારા વિનોદને ખાતર તમારાં સંતાનો-નો સર્વનાશ કરી રહ્યા છો. તમારાં સંતાનોને તમે ભયંકર અન્યાય કરી રહ્યા છો.

તમે તમારા સંતાનોનું હિત ચાહો છો માટે વિવાહને સમયે તમે મંગળ વાજાં વગડાવો છો. સૌભાગ્યવતીઓની આશિષો લેવામા આવે છે અને અન્ય માગલિક ક્રિયાઓ પણ કરવામા આવે છે. પરંતુ યાદ રાખો કે બાળકની નાની અપરિપકવ ઉમરમાં આવાં કાર્ય કર્યાં તો તેમના પરિણામો અમંગળજ આવશે. નાની વયનાં લગ્નોથી જીવનશકિત ક્ષીણ બને છે, શરીર દુર્બળ બને છે, આયુષ્ય ઘટે છે અને અંતે હાહાકાર મચી રહે છે. માટે તમે સાવધાન બની આ પ્રથાનો અંત લાવો અને પ્રતિજ્ઞા કરો કે જયા સુધી બાળકોની ઉમર પરિપકવ ન થાય ત્યા સુધી તેમના પર દામ્પત્ય જીવનનો બોજો લાદવામા નહિ આવે. આમ કરશો તો જ તમે તમારાં સંતાનો પ્રત્યે તમારું કર્તવ્ય અદા કરી શકશો. બાળ લગ્નની પ્રથાને તજી દશો તો તમારાં સંતાનો વીર્યવાન, બળવાન, નીરોગી અને મહાન થશે, કારણ કે બળવાન પ્રજા ક્યારે ય દુઃખી અને પરાધીન નથી રહી શકતી. દેશ અને સમાજની વાતને બાજુએ રાખીને તમારાં પોતાનાં સંતાનોના હિતનો વિચાર કરી તેમને બાળવિવાહની આ ક્રૂર પ્રથાનો શિકાર બનતા અટકાવો.

વિધવાઓની દશા.

બાળ અને વૃદ્ધ વિવાહના ફલ-સ્વરૂપે ભારતમાં વિધવા-ઓની સંખ્યા હમેશાં વધતી જ રહી છે. સમાજની આ વિનાશક

પ્રથાઓની બલિવેદી પર આ ગરીબ અબલાઓનું બળજબરીથી બલિદાન આપવામાં આવે છે. પુરુષોની ભયંકર ભૂલોનું પરિણામ બિચારી વિધવાઓને ભોગવવું પડે છે.

“ વિધવા ” શબ્દ સાંભળતાં જ નજર સામે કારુણ્યની એક મૂર્તિ ખડી થાય છે. હિંદુ વિધવા ખરેખર એક મૂર્તિમતી કરુણા છે. વિધવાઓની દુર્દશા તથા સમાજદ્વારા થતી તેમની ઉપેક્ષા આત્માને કંપાવી દે છે. આ બિચારી નિરપરાધી અબળાઓ દુર્ભાગ્યની ઠોકરો ખાઈને કેવું કરણુભર્યું જીવન જીવી રહી છે ? વિધવાઓની દશાથી કઠોરમાં કઠોર હૃદય રડી ઊઠશે, પરંતુ તમારું હૃદય એમનાં દુઃખોથી દ્રવીભૂત થાય છે કે નહિ, એ તો તમેજ જાણી શકો. જો તમારાં હૃદયો વિધવાઓનાં દુઃખોથી જરા સરખાં પણ પીગળ્યાં હોત તો તમે ખરેખર જ તેમનાં દુઃખોનો ભાર હલકો કરવાના સક્રિય પ્રયાસો કર્યા હોત, ગરીબ વિધવાઓનાં ભરણુપોષણુ માટે કંઈ ને કંઇ વ્યવસ્થા કરી હોત, વિધવાઓનાં જીવન સાત્ત્વિક રીતે વ્યતીત થાય એવી કોઈ યોજના પણુ તમે કરી શક્યા હોત. પરંતુ હું જોઈ રહ્યો છું કે સમાજે એમને માટે કોઈ એવી વ્યવસ્થા નથી કરી કે જેથી વિધવાઓ સ્વાભિમાનપૂર્વક પોતાનાં પવિત્ર સાત્ત્વિક જીવન સરળતાથી વ્યતીત કરી શકે.

સંસારનું સૌથી વધુ કરુણ પાત્ર વિધવા છે. એના હૃદય પર પડેલા દુર્ભાગ્યના ફટકાને કારણે એ હંમેશાં અશાન્ત રહે છે. આ ઉપરાંત સગાંવહાલાંઓનાં મહેણાં કે કઠોર અપમાનજનક વ્યવહાર તેમના ઘા પર મીઠું છાંટવા સમાન બને છે. એને અમંગળકારી માની સમાજ એનો ભારે તિરસ્કાર કરે છે.

વિધવાને માટે સંસારમાં ચારે તરફ અંધકાર જ છવાયેલો હોય છે. એણે પોતાની જીવનયાત્રા અંધકારભર્યા અને કંટકપૂર્ણ માર્ગ પર ચાલીને પૂરી કરવાની હોય છે. પરમેશ્વર સિવાય અન્ય કોઇ એમની આશાનો સહારો નથી. આવી કરુણામૂર્તિ વિધવાઓના અંધકારભર્યા જીવનને પ્રકાશિત કરનારી કોઇ વ્યવસ્થા સમાજે કરી નથી. ગાયોને માટે ગોશાળાઓ અને બકરાઓ માટે અજાશાળાઓ તમે બંધાવી છે, કીડી મંકોડીઓની દયા તમને આવે છે. પરંતુ આ દલિત, પીડિત, ભાગ્યહીન વિધવાઓ માટે તમારી દયાના ક્ષેત્રમા ક્યાંય સ્થાન નથી! અફ્સોસ! મહાઅફ્સોસ!

મને કહેવા દો કે આ અભાગિની અબળાઓને વિધવાઓ બનાવવાની વધુમા વધુ જવાબદારી તમારી વિકૃત બાળવૃદ્ધ-વિવાહોને ચલાવી લેતી સમાજવ્યવસ્થા પર છે. તમે પ્રચલિત કરેલ આ ઘાતક પ્રથાએ એમનાં સૌભાગ્ય છિનવી લીધા છે, અને સાથેસાથે એમના સર્વ દુઃખોનું બળજબરીપૂર્વક અપહરણ કર્યું છે. અંતમાં તમે એમને દુઃખના સાગરમાં ડૂબવા માટે જ છોડી દીધી છે. એમની આવી દુર્દશા કરવા માટે સમાજના અગ્રગણ્ય નાયકો દોષપાત્ર છે. તમારી સમાજ-વ્યવસ્થા કેવી કે ૬૦ વર્ષનો બુઢ્ઢો બે વાર, ત્રણ વાર, અરે, ચાહે એટલી વાર કુંવારી કન્યા સાથે લગ્ન કરી શકે અને એક પત્ની મોજુદ હોવા છતાં સંતાનના બહાના હેઠળ બીજું લગ્ન પણ છડેચોક કરી શકે. આને કોઇ રોકનાર પણ નથી, પરંતુ સ્ત્રી ભલે દસ વર્ષની ઉમરે પણ વિધવા થાય, પણ એણે તો જીવન પર્યન્ત વૈધવ્યમાં જ જીવન વ્યતીત કરવું

પડે છે. જરા વિચાર તો કરો, ૬૦ વર્ષનો બુઢ્ઢો પોતાની વાસના પર વિજય મેળવી નથી શકતો અને એ ખુશીથી લગ્ન કરે છે. આ હકીકત છે તો પુરુષોને એવો કયો અધિકાર છે કે એ ૧૬–૧૭ વર્ષની યૌવનવતી વિધવા પાસે મનસા, વાચા અને કર્મણા શુદ્ધ બ્રહ્મચર્યની આશા રાખે ?

આજે વિધવાવિવાહનો પ્રશ્ન ઊઠી રહ્યો છે, એનું કારણ પણ પુરુષોની અમર્યાદિત સ્વચ્છંદતા જ છે. પુરુષોને માટે પણ સમાજ એવો નિયમ કરે કે પત્ની ગુજરી ગયા પછી એને પણ બીજાં લગ્ન કરવાની છૂટ ન હોવી જોઇએ. જો આમ બને તો ઉપરનો પ્રશ્ન ઊભો ન થાય. પરંતુ પુરુષોએ તો પોતાને માટે અમર્યાદિત સગવડો રાખી છે, અને નારીને કઠોર નિયમોનાં બંધનોમાં બાંધી દીધી છે. આ અસમાનતાને કારણે જ આવો પ્રશ્ન ઊભો થયો છે.

બંધુઓ ! એક પત્ની ગુજરી જતા બીજી વાર લગ્ન ન કરવુ એવો આદર્શ પુરુષો પણ જો અપનાવે તો આજ સુધી એમણે વિધવા બહેનો પર જે અન્યાય કર્યો છે, તેનું અંશતઃ પ્રાયશ્ચિત્ત થઈ જાય.

તમારામાંથી એવો કોઈ છે, જે આ પ્રકારની પ્રતિજ્ઞા કરી શકે ?

ધન્ય છે આ ત્યાગ અને સહિષ્ણુતાની મૂર્તિ સમાન વિધવા બહેનોને કે તેઓ સંયમી જીવન જીવી રહી છે, તેઓ ખરેખર વીરાંગનાઓ છે. કારણ કે તેઓ કઠોર તપોમય જીવન જીવે છે.

બંધુઓ ! આ મૂક ત્યાગમૂર્તિઓની દશા સુધારવા માટે બીડું ઉઠાવો. એવી રીતે યોજના તૈયાર કરો, જેથી વિધવા બહેનો પોતાનો જીવનનિર્વાહ સાત્વિક રીતે અને શાંતિપૂર્વક મેળવી શકે. જો તમે આ બહેનોને શિક્ષિત અને સંસ્કારી બનાવવા માટે તમારાં દ્રવ્ય અને શક્તિનો સદુપયોગ કરશો તો આ બહેનો સ્વયંસેવિકાઓના રૂપમા સમાજની ખૂબ સેવા બજાવી શકશે અને સહેલાઇથી સ્ત્રી–જાતિનો ઉદ્ધાર કરી શકશે. સાથે સાથે એ પણ ન ભૂલવું જોઇએ કે જો તમે આ પીડિત અભાગણી બહેનો પ્રત્યે કંઈ પણ લક્ષ નહિ આપો તો સમજી લેજો કે તમારી સાથે વિધવાઓના રૂપમાં દારૂખાનું તૈયાર થઇ રહ્યું છે. આ ક્યારે સળગી ઉઠશે એ કોઈ કહી શકે નહિ. એની જ્વાળાઓમાં સર્વસ્વ સ્વાહા થઈ જશે.

મિત્રો ! વહેલાસર ચેતી જાઓ એજ હિતકર છે. તમે આ અબળાઓ પ્રત્યે ઠીક ઠીક ઉદાસીનતા દાખવી છે અને એનું પરિણામ પણ ભોગવતા રહ્યા છો માટે તમે તમારી આ બહેનોની દશા સુધારવા માટે કમ્મર કસો.

વિધવા બહેનોને પણ મારું એમ કહેવું છે કે સાંસારિક પ્રપંચો અને વ્યર્થ વાતોથી તમે તમારી જાતને બચાવો અને પવિત્ર, સાત્વિક, ધર્મમય જીવન જીવો. જો વિધવા બહેનો શિક્ષિત બની સેવાનો માર્ગ અંગીકાર કરશે તો એમને પણ શાંતિ મળી શકશે. એમનાથી સમાજનું મહાનમા મહાન્ ભલું થઇ શકશે. વિધવા બહેનોનું મુખ્ય લક્ષ ધર્મ અને સેવા પ્રત્યે જ હોવું જોઇએ.

હજારો રૂપિયા લુંટાવી દો છો, પરંતુ ધર્મ અને સમાજની ઉન્નતિને માટે, જ્ઞાનના પ્રચારને માટે કે દેશભાઈઓ માટે તમારાથી ખર્ચ થઈ શકતો નથી. આ કેવો અવિવેક છે! જે પુત્ર કે પુત્રીના લગ્ન પાછળ તમે દસ-વીસ હજાર રૂપિયા ખર્ચ કરી નાખો છો, એ જ પુત્ર કે પુત્રીના શિક્ષણ પાછળ તમે એક હજાર તો શું, પાંચસો રૂપિયા પણ ખર્ચી શકતા નથી. વિવાહ સમારંભો વખતે તમે ધાર્મિક અને સામાજિક સંસ્થાઓને યાદ કરો છો? ના. અને કદાચ કરતા હો તો માત્ર નામને ખાતર જ કરતા હશો.

બંધુઓ! તમારે સમજવું જોઇએ કે વિવાહ વગેરે પ્રસંગો પર તમે તમારા ઐશ્વર્યનું પ્રદર્શન કરવા માટે જે ખર્ચ કરો છો, તે સાર્થક નથી થતો, પણ ધર્મ, અને જાતિ માટે જે કંઇ ખર્ચ કરવામાં આવે છે, તેજ સાર્થક થાય છે.

આભૂષણોની પાછળ પણ સમાજનું ખૂબ ધન ખર્ચાય છે. બહેનોને કોણ જાણે કયાંથી આભૂષણો પ્રત્યે આટલો બધો મોહ થાય છે! જડ આભૂષણોથી શોભા વધતી નથી. સુંદરતા તો પ્રકૃતિની સ્વાભાવિક બક્ષિસ છે. સમાજની આજે એવી દશા છે કે અનેક વ્યક્તિઓ આજે વસ્ત્રાભૂષણો પાછળ હજારો રૂપિયાનો ખર્ચ કરી રહેલ છે, પરંતુ બાળકો અને બાલિકાઓના શિક્ષણ પાછળ તેઓ થોડો ખર્ચ પણ કરતા નથી. શિક્ષણ પાછળ પૈસા ન ખર્ચવાના બહાનામાં પોતે ગરીબ છે એવું જણાવે છે. વસ્ત્રાભૂષણો માટે ખર્ચ કરવા માટે એમને દ્રવ્ય મળી જાય છે, પરંતુ બાળકના શિક્ષણ પાછળ ખર્ચ કરવા માટે એની પાસે પૈસા નથી! કેવું આશ્ચર્ય!

બહેનોને આભૂષણો એટલાં પ્રિય લાગે છે કે અનેક બહેનો એની પાછળ પોતાના ધર્મકર્મનો પણ વિચાર કરતી નથી, યાદ રાખો બહેનો ! ઘરેણાંઓથી તમારી શોભા નથી વધતી. તમારી શોભા તમારા પતિવ્રત ધર્મમાં છે. તમારો ધર્મ એ જ તમારું આભૂષણ છે. ધર્મ વિના અન્ય કોઇ આભૂષણોની કિંમત જરા સરખીયે નથી. તમે આભૂષણોનું જેટલું ધ્યાન રાખો છો, એટલું ધ્યાન જો ધર્મનું રાખો તો તમારું કલ્યાણ થવામાં જરા પણ વાર લાગવાની નથી.

તમારી આભૂષણપ્રિયતાને કારણે તમે બાળકોને પણ ઘરેણાંઓથી લાદી દો છો. આ ખૂબ જ હાનિકારક પ્રથા છે. આ ઘાતક પ્રથા બાળકોનાં જીવન ખતરામાં નાખે છે. ઘરેણાંઓને કારણે નિર્દોષ બાળકોની હરામખોરોને હાથે હત્યાઓ થવાની વાર્તા પણ આપણને ઘણીવાર સાંભળવા મળે છે. આવું જાણવા છતાં પણ બાળકોને ઘરેણાંઓથી લાદવામાં આવે છે. શું તમને બાળકોનું કુદરતી સ્વરૂપ સારું નથી લાગતું કે તમે એમને કૃત્રિમ આભૂષણોથી સજાવવા માગો છો ? ઘરેણાંઓથી એ સુંદરતા વધતી નથી, ઘટે છે. તમારી શ્રીમંતાઈ બાળકોને ઘરેણાં પહેરાવીને પ્રગટ ન કરો. એ શ્રીમંતાઇ પ્રગટ કરવાના બીજા ઘણા રસ્તા છે. માટે બાળકોને ઘરેણાં પહેરાવવાં છોડી દો. તમારી આભૂષણપ્રિયતાને ઓછી કરો અને ધર્મપ્રિયતા પ્રત્યે ધ્યાન આપો.

પ્રેતભોજન.

વિવાહની વાત બાજુ પર મૂકીએ તો પણ પ્રેતભોજનોમાં

મોટી મોટી રકમોનો વ્યર્થ ખર્ચ કરવામાં આવે છે. પ્રેતભોજન ઘાતકી અને રાક્ષસી પ્રથા છે. આ પ્રથાએ સમાજના ગરીબ વર્ગને અધિક ગરીબ બનાવી દીધો છે. એને કારણે સમાજનાં કેટલાંયે સુખી કુટુમ્બો બરબાદ થઈ ગયાં છે.

ભાઈઓ! જરા વિચાર તો કરો કે જેને ઘેર કોઈ પ્રિય સ્વજનનું મૃત્યુ થઈ ગયું હોય એને ઘેર લાડુ ઉડાવવાનું કાર્ય એના પ્રત્યે શું સંવેદના પ્રગટ કરવાનું સાધન છે? એના કુટુંબીઓ તો શોકમગ્ન હોય છે. અને બીજાઓ એને ઘેર આવી માલ પર હાથ મારે એ કેવી હલકી રીત છે! પ્રેત-ભોજન અતિ તિરસ્કારયુક્ત ભોજન છે. એ ભોજન પાપિષ્ટ છે. માનીલો કે કોઈ એક કુટુમ્બના આધારરૂપ વ્યક્તિનું અવ-સાન થયું એની પાછળ એક વિધવા અને નાનાં નાનાં બાળ-બચ્ચાં છે. એ બાળકોના પોષણની જવાબરી હવે આ વિધવા પર પડી છે. આવી અવસ્થામાં પણ સમાજની કુરૂઢિને કારણે પ્રેતભોજન કરાવવું પડે છે. એ વિધવાના દુઃખોની કલ્પના સહજ કરી શકાય છે. એક તો એને પતિવિયોગનો આઘાત લાગ્યો છે, બીજી બાજુ ભવિષ્યની ચિંતા એને કોતરી રહી છે, ત્રીજી બાજુ બાળબચ્ચાના પોષણની જવાબદારી અને એમના વિષેની ચિંતા એને સતાવી રહેલ છે. આ બધા કરતાં એને સૌથી વધુ ચિંતા તો એના જ્ઞાતિજનોને જમાડવાની કરવી પડે છે. એને આ પ્રથાનું પાલન કરવું પડે છે ઘરમાં પૈસા હોય તો ઘરેણા વેચીને મકાન, મિલ્કત વગેરે ગીરો રાખીને, માથે દેવું કરીને પણ સમાજના ભયથી એને મૃત્યુ-ભોજન કરાવવું પડે છે. એક જ આવું ભોજન આપતાં એનાં

બાળબચ્ચાંનું જીવન અંધકારમય બની જાય છે. અને તેઓ જીવનભરને માટે કરજના બોજ હેઠળ દબાઈ જાય છે, તો મિત્રો, બોલો, તમને મૃત્યુભોજ આપનારની આવી દશા થતી હોય તો પણ તમે ત્યાં ભોજન કરવા જવાનું યોગ્ય માનો છો એ કયા પ્રકારની માણુસાઇ છે ? સમાજના લોકો એ વિધવાને ત્યા ભોજન કરવા માટે–માલ ઉડાવવા માટે જાય છે પરંતુ ત્યારપછી એને કોઇ પૂછતું નથી કે બાઈ ! તું સુખી છો કે દુ:ખી ? સમાજના પંચોને એની ચિંતા નથી. એમને તો લાડુઓ સાથે મતલબ છે. કેવી ઘાતકી અને બરબાદી કરનારી પ્રથા તમે લોકો ચલાવી રહ્યા છો ?

સમાજના ધનવાનોને હું કહીશ કે તમારે ઘેરથી જ આ ઘાતક પ્રથાનો અંત લાવો અને તમારા ધનનો સદુપયોગ જાતિના અભ્યુદયના કામમાં કરો. સમાજનો અગ્રગણ્ય માણુસ જ્યારે કોઈ કાર્યનો આરંભ કરે છે તો તેની પાછળ બીજાઓ ચાલે છે, માટે ધનવાનોને હું કહું છું કે સમાજની ભલાઇને માટે આ પ્રથાનો નાશ કરવાનો આદર્શ તમારાં પોતાનાં જ કુટુમ્બોમાં ઊભો કરો. ખુશી થવા જેવી વાત છે કે આ પ્રથા થોડા સમયથી કંઇક ઓછી થઇ છે. એ પ્રથા સર્વથા બંધ થાય તેવી વ્યવસ્થા કરવી જોઇએ.

ભાઇઓ ! સમાજમાં અનેક કુરૂઢિઓ છે. એમાંથી કઇ કઇનું વર્ણન હું કરું ? અહીં તો સંક્ષેપમાં મેં મુખ્ય મુખ્ય બૂરાઇઓનો ઉલ્લેખ કર્યો છે. આ વક્તવ્યને સાંભળીને તમે ા બૂરાઇઓને દૂર કરવા માટે કટિબદ્ધ થઈ જાઓ. રૂઢિઓની નામીને તોડી નાખી સ્વતંત્ર હિતકારી બુદ્ધિથી અવલોકન

કરો, અને જે પ્રથાઓ તમને હાનિકર લાગે એનો નિઃસંકોચ નાશ કરો. જ્યાં સુધી તમે આ વ્યાધિઓની ચિકિત્સા નહિ કરો, ત્યાસુધી સમાજનું સ્વાસ્થ્ય નહિ સુધરી શકે અને સમાજ બળવાન નહિ બની શકે. સમાજની ઉન્નતિ તમે ચાહતા હો તો તમારે કુરીતિઓનો મૂળમાંથી બહિષ્કાર કરવો પડશે.

ભાઈઓ ! સમાજની સાચી ચિકિત્સા કરી એના રોગોને દૂર કરો અને સમાજને આરોગ્યમય નવજીવન પ્રદાન કરો. તમે સૌ સંગઠિત થઈને નવા સમાજનું નિર્માણ કરો. તમે સર્વાંગસુંદર સમાજવ્યવસ્થા કરવામાં ફળિભૂત થાઓ એ જ મંગલ કામના.

॥ ॐ शान्ति ॥



યાદી

યાદી